यन्त्रालय में जोकाव्यकीपुस्तकेंछपीहैं उनमेंसेकुछ नीचेलिखीहैं

नानार्थसंग्रहावली ॥

पण्डित [illegible]ादीन शुक्ल रचित सातपोथी का संग्रह है) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक) [illegible]नदोहावली (५) रससारिणी (६) तिथिबोध (७)मात्र [illegible]कृतपिंगल अक्षर बहुतपुष्टहैं कि वृद्ध और बालकभी पढ़ [illegible] हैं ॥

कृष्णप्रिया ॥

मंगलीप्रसाद विरचित व्रजविलास की तरहपर श्रीकृष्ण जीका जन्मसे वैकुण्ठ गमन पर्य्यन्त चरित्र है यहकाव्यालंकारयुक्त बहुतही सुन्दर पुस्तकहै ॥

छन्दोर्णव पिंगल ॥

जिसमें मात्रावृत्त,वर्णवृत, मेरु,मर्कटी,पताका,लघुगुरुस्थ पनरीति और सब छन्दोंके दृष्टांत सहित रूपहैं ॥

रसराज ॥

मतेरामजी कविरचित जिसमें अतिमनोहरतासेकाव्यालंकार संयुक्तनायकाभेदका वर्णनहै ॥

कविकुलकल्पतरु ॥

भूषणचिन्तामणिजी रचित जिसमें अतिरुचिर छन्दों में नायकाभेदकी पूरीबातें लिखीहैं ॥

शतसयीसटीकविहारीलालजी रचित ॥

श्रीकृष्ण राधाजीके विषयमें सम्पूर्ण नायकाभेदकावर्णन सातसौ दोहोंमेंहै और दोहोंके भावार्थ के सवैये और कवित्त भी हैं ॥

सभाविलास ॥

जिसमें सभाकी चतुरताकेलिये चुनीहुई बातेंजैसेनीति



कविप्रिया सटीक ॥

अथ मंगलाचरण ॥

दो० श्रीराधा बाईं तरफ तुलसि कंज पद माहँ ।
कूलकलिंदी के लसत कहूं कदम की छाहँ १

कवित्त । आवति रमन साथ कुंजते भवन प्रात सुखपैम यूषै फैली कंचन किनारी की । अरसाने गात रससानी कहै बात चाहि चाहभरी आंखैं लखिजाति नगवारीकी ॥ शोभा ते सुधारी किधौं चंदते निकारी विधि जाके न समान छवि कामहू की प्यारीकी । राजैरूप भारी नैन नींदकी खुमारी तूल शची न उमारी वृषभान की कुमारीकी २ ॥ सवैया ॥ राधाके पांवन के नखकी सुखमा लखि होतहै चंद मलीनो । रूपअतोल अमोलककी उपमा लहि कंज महामद भीनो ॥ सोनहिं नेकसह्यो करतार विचारसों जानतहै परवीनो । देखौ वराटकके छलसों विधि मोलकै ताहि वराटक दीनो ३ लोक चतुर्दशकी जननी हरि पांवपयोजशिरी निरधारी । आठ सुसिद्धिनवो निधि औ विधिकी वनिता तुव सेवनिहारी ॥ तू करुणामय की दयिता तुलसी करुणामय देहतिहारी । भीरपरे इमि आवति आगे करै करज्यों धरकी रखवारी ४ पांचन में बिलसै तुलसी हरिकाज सबै उनहींसों सरैगो । लायसों ज्यों तृणतूल बिलापति तैं सुमिरे सबविघ्नजरैगो ॥ साजिहै काज

सेवे निजदासके जानतहौं न कवै विसरैगो । श्याम शरीर हरे परपीर अहीरको नंदन भीरकरैगो ५ ॥ कवित्त ॥ परमउदार दशरथकोकुमार सवअंगसुकुमार कामरूपमदकोहरैं । करुणा-निकेतकरै दीननसोंहेत मुंहमांग्यो सुखदेत जाको सेवन रमा करैं ॥ उदधिवँधाय लरिलंकहि छिनायलीनी दीनीहै विभीषण को अवरज को धरैं । विधि पूजैंपाय ऐसो चाहैं रघुराय केती लंकनवनाय रोज रंकनको वितरैं ६ (हमारो कियो श्रीमोहन लीला को कवित्त वृंदावन वर्णन) सवैया ॥ कूजत कोकिलके गन कुंजमें मत्त मधुव्रत गुंजसुहायो । चारुलता लपटीतरुसों सुकिधौं तरुणी पियकंठ लगायो ॥ धारलखे यमुना जलकी चहुंओर विचार यहैचितआयो । नीलमकोर विहार मनो कर-तारलै श्रीवनको पहिरायो ७ ॥ दोहा ॥ सुगमछाँड़िकै कठिन को अर्थकरौं विस्तार । सवको अर्थकरे इहां वाढ़ैग्रंथ अपार ८ (अन्वय सों ग्रंथ लागैगो यातें अन्वयको लक्षण) अन्वय पद संवंधपद निकटरहैके दूरि । अर्थकरत मिलिजातहै यहजानौ सवसूरि ९ पदजाहि पदसों अन्वितहोय ताके निकटरहै किंवा दूररहै अलंकार ग्रंथ जानि अलंकार और नहीं निकारे अलं-कार और भी हैं ॥

इति मंगलाचरण ॥

दो० ॥ गजमुखसनमुखहोतही विघनविमुखव्है जात ॥
ज्योंपगपरतप्रयागमग पापपहारविलात १ ॥

गजमुख गणेश ताके सन्मुख सामनेहोतकै सानुकूल होत कै किंवा गजमुखसों संमुखहोतकै गजमुख के सामने देखत ताही समय विघनजाहै सो विमुख व्है जात है विमुखको अर्थ विनष्टभयोहै मुखजाको यहअर्थ विनामाथाको व्हैजातहैं ऐसो अर्थ कियेविना आगे दृष्टान्तसों नहीं मिलैगो १ ॥

दो० ॥ बाणीजूकेबरणयुग सुबरणकणपरमान ॥
सुकबिसुमुखकुरुखेतपरि होतसुमेरुसमान २॥

बाणी सरस्वती तिनके द्वैवरण अक्षर गुरु औ लघु सो वै कैसेहैं सुबरणकी कणिका परमाणहैं सुकविजेहैं सुमुख गणेश जी सोहैं कुरुखेत याको रूपक कियो तामें परिकै प्राप्तह्वैकै सुमेरु समान होत हैं मेरु मर्कटी पताका सुन्दर जो मेरु तामें समता पावैहै सुमुख एकदंत कपिल इत्यादि गणेशके बारह नाम हैं श्लेष में सुवर्ण की कणिका कुरुक्षेत्र में गाड़िकै गुप्त दानदेय तौ सुवर्ण बहुतवृद्धि को प्राप्तहोय पीछे आगे गणेश कीस्तुति बीचमें सरस्वती की स्तुति कैसेहोय औ सरस्वती की स्तुति नहीं निकरै कवि की स्तुति निकरै है २ ॥

(गणपतिदन्तबर्णनं) कवित्त ॥ सत्वसत्वगुणकोकि सत्यहीकीसत्ताशुभसिद्धिकीप्रसिद्धकीसुबुद्धिवृद्धिमानि ये। ज्ञानहींकीगरिमाकिमहिमाबिबेकहीकीदरशनहीको दरशनउरआनिये ॥ पुण्यकोप्रकासवेदविद्याकोविलास किधौंयशकोनिवासकेशौदासजगजानिये।मदनकदनसु तबदनरदनकिधौंविघनबिनाशनकीविधिपाहिंचानिये ३

गणेश को दांत बर्णत हैं सत्व गुणको सत्व कहिये प्राप्त है किंवा सत्व गुण देखिबेमें नहीं आवै है ताको सत्व कहिये विद्यमानता हैं मूर्त्तिमान सत्वगुण है यहअर्थ हेमी नानार्थमें सत्वनाम सत्ताको औ प्राणीको औ प्राणको किंवा सत्य जो पदार्थहै ताकी सत्ता विद्यमानताहै किंवा सत्यकोसारहै सत्ता सारको भी भाषा में कहत हैं ज्ञानकी गुरुता है विवेक बड़ाई विचार ताकी बड़ाई है हेमीनानार्थ में दरशन नाम शास्त्रको औ नेत्रको भी है दरशन शास्त्र ताको नेत्र है किंवा दरशन शास्त्र ताको शास्त्रहै किंवा षट्दरशन योगी संन्यासी आदि ताको दरशन दरशनीय जानिये मदन काम ताको जिन क-

दन कहते नाश किये है को शिव तिनको सुत गणेश ताको दांत है किधौं विघ्न विनाशिवे की विधि क्रिया मूर्त्तिमान है यहजानिये सवपदकी जो धुनिनिकारिये तौ ग्रंथवहुतवढ़े ३ ॥

दो० ॥ प्रकटपंचमीकोभयो कविप्रियाअवतार ॥
सोरहसैअट्ठावनो फागुनसुदिवुधवार ४ ॥

कविप्रियारूप जो अवतारकवि ताको प्राप्तहोनेकी सीढ़ी ४ ॥

दो० ॥ नृपकुलवरणौंप्रथमही अरुकविकेशववंश ॥ प्रकटकरीजिनकविप्रिया कविताकोअवतंश ५ (नृपवंश वर्णनं) ॥ ब्रह्मादिककीविनयते हरणसकलभुविभार ॥ सूरजवंशकरयोप्रकटरामचन्द्रअवतार ६ ॥

सूर्य्यवंशमें श्रीरामचन्द्रजी अपनोअवतार प्रकटकरयोहै ६ ॥

दो० ॥ तिनकेकुलकलिकालरिपुकहिकेशवरणधीर ॥ गहरवारविख्यातजग प्रकटभयेनृपवीर ७ करणनृपति तिनकेभये धरणीधर्म्मप्रकास ॥ जीतिसबैजगतीकरयो वाराणसीनिवास ८ प्रकटकरणतीरथभये जगमेंतिनके नाम ॥ तिनकेअर्जुनपालनृप भयेमहोनीग्राम ९ ॥

करण तीर्थनाम है ९ ॥

दो० ॥ गढ़कुठारतिनकेभये राजाशाहनृपाल ॥ सहजकरणतिनकेभये कहिकेशवरिपुकाल १० राजानौनिकदेभये तिनकेपूरणसाज ॥ नौनिकदेकेसुतभये पृथुज्यों पृथ्वीराज ११ ॥

नौनिक कहूं नौगद भी पाठ है ११ ॥

दो० ॥ रामसिंहराजाभये तिनकेशूरसमान ॥ राजचन्द्रतिनकेभये राजाचन्द्रप्रमान १२ राजमेदनीमल्ल

भये तिनकेकेशवदास ॥ अरिमर्दमरदनमेदिनी कीन्हयो धर्मप्रकास १३ राजाअर्जुनदेभये तिनकेअर्जुनरूप ॥ श्रीनारायणकोसखा कहैसकलभवभूप १४ महादानषोडशदये जीतीजगदिशिचारि ॥ चारौवेदअठारहो सुने पुराणबिचारि १५ रिपुखण्डनतिनकेभये राजाश्रीमलखान ॥ युद्धजुरेनमुरेकहूं जानतसकलजहान १६ नृपप्रतापरुद्रसुभये तिनकेजन्नुरणरुद्र । दयादानकोकल्पतरु गुणनिधिशीलसमुद्र १७ ॥

जनुको अर्थ मानो रणविषे रुद्र शिव है १७ ॥

दो० ॥ नगरओरछोजिनरच्यो जगमेंजागतकृत्ति ॥ कृष्णदत्तमिश्रहिदई जिनपुराणकीवृत्ति १८ भरतखण्डमंडनभये तिनकेभारतचन्द ॥ देशरसातलजातजिहिं फेरयोज्योंहरिचन्द १९ शेरशाहिअसलेमके उरशालीशमशेर। एकचतुर्भुजहूनयो ताकोशिरतेहिवेर २० ॥

उरमें शाले है ऐसी जाकी तरवारि है २० ॥

दो० ॥ उपजिनपायोपुत्रतिहिं गयोसुप्रभुसुरलोक ॥ सोदरमधुकरशाहतब भूपभयेभुवलोक २१ जिनकेराजरसाबसे केशवकुशलकिशान ॥ सिन्धुदिशानहिवारहूं पारबजाइनिशान २२ ॥

जिनके राज्य की रसाभूमि तामें बसेहैं किसानभी प्रवीण भी सिंधुनदी लहाउर की तरफ है सिंधु जो नदी ताकी जो तरफ दिशा सिंधु की तरफ सिंधुके वारहीनहीं निशानबजाये पार भी निशान नगारा बजाये सिंधु के पार भी जीते हैं जो सिंधु समुद्र लीजिये तो वाके पार मनुष्यकी गतिनहीं २२ ॥

दो० ॥ तिनपरचढ़िआयेजुरिपु केशवगयेतेहारि ॥ जिनपरचढ़िआपुनगये आयेतिन्हेंसँहारि २३ सबल शाहअकबरअवनि जीतिलईदिशिचारि ॥ मधुकरशाहनरेशगढ़ तिनकेलीन्हेमारि २४ खानगनैसुलतान को राजारावतवादि ॥ हारेमधुकरशाहसों आपुनशाहमुरादि २५ ॥

सुलतानबादशाह तिनके गने गणना लायक उमरावबादि को अर्थ फेरि २५ ॥

दो० ॥ साध्योस्वारथसाथही परमारथसोंनेह ॥ गयो सोप्रभुवैकुंठमग ब्रह्मरन्ध्रतजिदेह २६ तिनकेदूलह रामसुत लहुरेहोरिलराव ॥ रिपुखण्डनकुलमण्डनो पूरणपुहुमिप्रभाव २७ रणरूरोरणसिन्धुपुनि रत्नसेनिपुनिईश ॥ बांध्योआपजलालदी वानेजाकेशीश २८ ॥

रणमें रूरो आछो २८ ॥

दो० ॥ इंद्रजीतरणजीलपुनि शत्रुजीतबलबीर ॥ बिर सिंहदेवप्रसिद्धपुनि हरसिंहभोरणधीर २९ मधुकरशाहनरेशके इतनेभयेकुमार ॥ रामशाहराजाभये तिनमेंबुद्धिउदार ३० घरबाहरजहँईतहीं केशवदेशविदेश ॥ सबको उथहईकहै जीत्योरामनरेश ३१ रामशाहसोंशूरता धर्मनपूजैआन । जाहिसराहतसर्वदा अकबरसोसुलतान ३२ करजोरेठाढ़ेजहां आठौदिशिकेईश ॥ ताहितहांबैठकदई अकबरसेअवनीश ३३ ॥

इतने मधुकरशाह के पुत्रभये २९।३०।३१।३२।३३ ॥

दो० ॥ जाकेदरशनकोगये उघरेदेवकिवार ॥

उपजीदीपतिदीपकी देखतएकहिबार ३४॥

बद्रीनाथजी के दर्शनको गये तहां मंदिर के किवार खुले दीप बरिउठ्यो ३४॥

दो०॥ ताराजाकोराजअब राजतजगतीमाहँ॥राजारानारावसबसोवतजाकीछाहँ ३५ तिनकेसुतग्यारहभयेजेठेशाहसंग्राम॥दक्षिणदक्षिणराजसो तिनजीत्योसंग्राम ३६ भरतखण्डभूषणभये तिनकेभारतशाहि॥भरतभगीरथपारथहि उनमानतसबताहि ३७ सुतसोदरनृपरामके यद्यपिबहुपरिवार॥तदपिसबैइंद्रजीतशिर राजलाजको भार ३८ कल्पवृक्षसोंदानदिन सागरसोंगंभीर॥ केशव शूरोशूरसों अर्जुनसोरणधीर ३९ ताहिकछोवाकमलसो गढ़दीन्होंनृपराम॥ बिधिज्योंसाधतबैठितहँ केशवबाम अबाम ४०॥

कछोवा कमल नाम हैं बाम अबाम भला बुरा ४०॥

दो०॥कह्योअखारोराजको शासनसबसंगीत॥ताको देखतइंद्रज्यों इंद्रजीतरणजीत ४१ बालवयक्रमबालसब रूपशीलगुणबृद्ध॥यदपिभरचोअवरोधपट पातुरपरमप्रसिद्ध ४२॥

नववय बालास्त्री सब हैं अवरोध अंतःपुरनाम (प्रवीणराय १ नवरंगराय २ विचित्रनयन ३ तानतरंग ४ रंगराय ५ रंग मूर्त्ति ६ षट्पातुरनाम) ४२॥

दो०॥ रायप्रबीणप्रबीणअति नवरंगरायसुवेष॥अति विचित्रनयनानिपुनि लोचनललितसुदेष ४३ सोहतसागररागकी तानतरंगतरंग॥ रंगरायरँगबलितगति रँगमूरतिअँगअंग ४४॥

रागके सागर की तरंगसी ताने, तरंग सोहतिहै ४४ ॥

दो० ॥ तंत्रीतुंबरुसारिका शुद्धसुरनसोंलीन ॥
देवसभासीदेखिये रायप्रवीनप्रवीन ४५ ॥

राय प्रवीणकी प्रकृष्ट अच्छी जो बीणाहै सो देवसभा सी सोहति है देवसभा कैसी है हेममें तंत्रनाम सिद्धांतकोहै तंत्र को जाननवाला तंत्री वृहस्पति है जहां तुंबरु गंधर्व है जहां सारिका अप्सरा सो शुद्ध अच्छे जे सुर देवता तासों लीनहै मिलीहै बीणा कैसी है तंत्री तार तुंबर तोंबा औ सारिका वा में घोड़ीलागतिहै औ सुर जे स्वर निषाद ऋषभ गांधार खरज मध्यम धैवत पंचम यासों युक्त है ४५ ॥

दो० ॥ सत्यारायप्रवीणयुत सुरतरुसुरतरुगेह ॥
इंद्रजीततासोंबंधे केशवदासहिदेह ४६ ॥

रायप्रवीणकैसीहै सत्याहै सांचीबात बोलतिहै जो ऐसो अर्थ करै सत्यासत्यभामा सरीखीराय प्रवीणहै तौ अधिक उपमा दोषहै हमारे किये कवि वल्लभमें स्पष्टहै फेरि कैसी है सुरत युक्त है सुन्दर जो रत रमनकाम क्रीड़ा तासों युक्त है वाको सुरतक्रीड़ा अच्छी आवैहै सुरतरुगेहको अर्थ तरको अर्थ श्रेष्ठ अच्छो जो स्वरानिषादआदि ताको गेहहै अच्छास्वर गावैहै ताहि प्रवीणराय सो इन्द्रजीत बँध्यो है आसक्त है तहां सन्देह करैहै महाविषयी है परमारथको नहीं पिछानैहै ताको उत्तर देतहैं केशवदासहि देह याकोअर्थ जाकोहि कहिये हृदयमन औ देह सबसों केशव जोहैं भगवान् तिनको दास है मनसों देहसों भगवान्की सेवाकरैहै यह अर्थ सत्यासत्यभामा कैसी है रायकहिये सरदार तिनमें प्रवीण जो श्रीकृष्ण तिनको जो सुरतप्रीति किंवा रमण कांतकरि युक्तहै किंवा सत्याकैसीहै प्रवीण विप्रराय सरदारहै औ सुरतरमन तासों युक्तहै सत्याराय प्रवीणयुत सुरत इतनेको अर्थ कियो रुक्मोंके

अर्थमें सुरतरु कल्पवृक्ष सो जाके गेहमेंहै फेरि सत्या कैसीहै केशवभगवान् इन्द्रको जीतिकै तासों वँधे हैं आसक्तभये हैं तहां सन्देह भक्तनपास भगवान् कोईनहीं एक सत्याही पास है तहां कहत हैं कि उनकी अचिंत्य शक्ति है दासके हियमें जाको गेहहै भक्तके हृदयमें सदा विराजतहैं ४६ ॥

दो० ॥ नरीकिन्नरीआसुरी सुरीरहतशिरनाय ॥
नवरसनवधाभक्तिसों राजतनवरँगराय ४७ ॥

ये सव जाको रूपदेखिकै शिरनाय रहतीहैं अर्थात् माथा नीचा करतीहैं नवरस नवीन जो रसनायक विषे रागभगवान् बिषे नवप्रकारकी भक्ति श्रवण १ कीर्त्तन २ स्मरण ३ चरणसेवन ४ अर्चन ५ बन्दन ६ दास्य ७ सख्य ८ आत्मानिवेदन ९ यह नवधा भक्ति ४७ ॥

दो० ॥ हावभावसंभावना दोलासमसुखदाय ॥
पियमनदेतिभुलायगति नवरँगनवरँगराय ४८ ॥

हाव जो स्त्रीको बिलास बिब्बोक आदि भाव जोहै क्रिया तासों जोहै संभावना आपनी शक्ति अर्थात् उत्कर्षको प्रकाश करनो मैं नायकके मनको हावही सों खैंचिलेउँगी कोई ऐसी क्रिया बिशेषकरौंगी जासों पियके मनको खैंचिलेउँगी तासों दोला झूलासमान सुखदानि है पियके मनको झुलायदेति है चंचल करति हैं कवहूं हावमें आवै है कवहूं भावमें कटाक्ष आदिमें आवतहै नवरंगराय नाचमें नवीनगति लेतिहै तासों किंवा नवगति नवीन है गति दशा तरह जाकी ऐसी तरह और में नहीं ४८ ॥

दो० ॥ भैरवयुतगौरीसँयुत सुरतरंगिनीलेखि ॥
चंद्रकलासीसोहिये नयनबिचित्रादेखि ४९ ॥

कोई कहत है चन्द्रमाकी कलासी नयनाविचित्रा सोहतिहै

सो तू देखि चन्द्रकला भैरव शिव तासों युक्तहै औ गौरीसों संयुक्तहै चन्द्ररेखाविभूषणा । दुर्गामें है पार्वतीके भी चन्द्रमा माथेमें है सुरतरंगिनी श्रीगंगाजी तासों भी युक्तजानो नयन विचित्रा केसीहै भैरवराग औ गौरीराग सों युक्तहै किंवा भैरवआदि जे दिनकेराग गौरीआदि जे रातिकेराग तासों युक्त है सुरतरंगिनी जानों सुरत जो रमन ताकी रंगिनी है सुरत में रंगकरे है किंवा सुर जो निषादआदि ताकी तरंगिनी नदी है ४६ ॥

दो० ॥ नयनवयनरातिसयनसम नयनविचित्रानाम ॥
जयनशीलपतिमैनमन सदाकरतिविश्राम ५० ॥

नयन विचित्रानाम जो पातुरिहै ताके नयन औ वचन सों रतिकेलिये जो सयनहै ताके समानहै वाके नेत्र देखत औ वचन सुनत रतिमें जो सुखहोतहै तैसो सुखहोतहै पतिरूप जो मदन ताको मन जीतिवेको आपने अधीन करिवेको शीलस्वभाव है जाको औ सदा पतिके मनमें वसैहै ५० ॥

दो० ॥ नागरिनागररागकी सागरतानतरंग ॥
पतिपूरणशशिदरशदिन वाढ़तितानतरंग ५१ ॥

नागरिप्रवीण जो नायका है ता विषे नागर अच्छेराग की सागरता है या विषे समुद्रपनो है किंवा तानागरि वे जो नागरि पिछले दोहा में कहीहैं नयन विचित्रा सुंदरराग की सागर है नत रंग नतकहिये नम्रतामें रंगकहिये राग यहचाह है जाको ऐसो गुण है तौभी नम्र है आपनी वड़ाई नहीं करति आपनी गति जो प्रतिष्ठा सोई पूरण शशि है ताको देखिकै जातिकै ताकी तान सोई तरंगहै सो वाढ़तिहै सूधो अर्थकिये पुनरुक्ति आवै रसाभासहोय नैयार्थदोष तौ कोईनहींछूटै ५१ ॥

दो० ॥ तानतानतरंगकी तनुतनुवेधतिप्रान ॥
कलाकुसुमशरशरनकी अतिअयानतनत्रान ५२ ॥

तानतरंग पातुरिकी जे तानैं हैं तनतन विषे सब के देह विषे प्राणको बेधति है किंबा तनुसूक्ष्म है तनुसूक्ष्म जो प्राण ताको तनुविषे बेधतिहै किंबा तनुसूक्ष्म जो प्राण ताको बेधत है कामके बाणकीकला चातुरीहै किधौं अति अज्ञान जे राग में कछु नहीं समुझैं ताके मनमें त्रानहै बचात्र है किंवा अति अयानता है सोई तनत्रान है जिरहहै ५२ ॥

दो० ॥ रंगरायकरआंगुरीसकलगुणनिकीमूरि ॥
लागतमूढ़मृदंगमुख शब्दरहतभरिपूरि ५३॥

मूढ़ जड़ ५३ ॥

दो० ॥ रंगरायकरमुरजमुख रँगमूरतिपदचारु ॥
मनोपढ्योहैसाथही सबसंगीतबिचारु ५४ ॥

मुरजमृदंग बजायबे की नाचिबेकी बड़ाई ५४ ॥

दो० ॥ अंगजितेसंगीतके गावतगुणीअनंत ॥ रँग मूरतिअँगअंगप्रति राजतमूरतिवंत ५५ नाचतिगावतिपढ़तिसब सबैबजावतबीन ॥ तिनमेंकरतिकवित्तइक रायप्रबीनप्रबीन ५६ ॥

अंगजिते स्पष्ट ५५ । ५६ ॥

दो० ॥ रायप्रबीनप्रबीनसों परबीननकोसुःख॥
अपरबीनकेशौंकहा परबीनानिमनदुःख ५७॥

प्रवीणराय जो प्रवीण निपुण है तासों प्रवीणनको सुख है अप्रबीण जे अज्ञानहैं राग में नहीं समुझैं तिनको कहा कछु नहीं किंवा अप्रवीणके आगे ऐसी सौ को अर्थ सैकराहोहि तो कहा कछुनहीं औ पर जो शत्रु पातुरिको नहीं चाहतहै औ बीनकहिये बीनाहै समुझवारहै तिनके मनमेंदुःखहै ॥ दो०॥ लघुगुरुगुरुलघुहोतहै निजइच्छाअनुसार ५७ ॥

दो० ॥ रतनाकरलालितसदा परमानंदहिलीन ॥
अमलकमलकमनीयकररमाकिरायप्रवीन ५८ ॥

रमा लक्ष्मीहै किंवा रायप्रवीण है लक्ष्मी कैसीहै रत्नाकर समुद्र तासों लालित समुद्रने जाको दुलाराकियोहै सदा अखण्डित परमानन्दहै जिनको ऐसे भगवान् तिनविषे लीन है मिली है वक्षस्स्थलमें रहति है अमल निर्मल कमल है जाको कमलानाम है याते फेरि कमनीय चारो जो मनोरथ ताकी करनवाली है किंवा सुन्दर है करजाको प्रवीणराय कैसी है रतनके आकर समूह ताको जिनने लाड़कियोहै सदा रतननिको आदरकियो है किंवा राजाने बहुत रत्नदेके लड़ाईहै परम आनन्द सों मिलीहै अमल जो कमल सो है कमनीय सुन्दर कराविषे जाके ५८ ॥

दो० ॥ रायप्रवीनकिशारदा शुचिरुचिरंजितअंग ॥
वीणापुस्तकधारिणी राजहंससुतसंग ५९ ॥

रायप्रवीणहै किंवा शारदा सरस्वती है रायप्रवीण कैसीहै शुचिपवित्रता किंवा शिंगार तासों भईहै जो रुचि कांति तासों रंजित शोभायुक्त अंगहै वीणाके भेद जामें लिख्योहै ऐसी जो पुस्तक संगीत शास्त्र ताको लिये है फेरि राजनि विषे जो हंस सूर्यसरीखो प्रताप करिके है ताकोसुत इन्द्राजित तिनके संगमें है शारदा कैसी है शुचि नाम सूर्यको है शुचि सप्ताश्ववाहनः नामस्तवराजमें है शुचिकीसी रुचि कांति तासों भूपित अंग है औ वीणा औ पुस्तक को लिये है राजहंस जो वाहनहै ताको सुत संगमेंहै जो सफ़ेदहोय चंचु औ पाँव लाल होय सो राजहंस ५९ ॥

दो० ॥ वृषभवाहिनीअंगउर वासुकिलसतप्रवीण ॥
शिवसँगसोहैसर्वदा शिवाकिरायप्रवीण६० ॥

शिवा भवानी है किंवा प्रवीण राय है शिवा कैसी है शिव के आधे अंगमें रहति है याते वृषभ बैल सोहै वाहन जाको काहूको संबोधन देके कवि कहत है हे अंग हे मित्र उरविषे वासुकि नाग लसतुहै औ प्रवीणहै शिवके अंगमें सर्वदा शोभति है राय प्रवीण कैसीहै वृषभ जो धर्म ताको लियेहै अंग विषे उर कहिये बहुत जाके वासुकि फूलकी माला है फेरिप्रवीण है उत्तम वीणा है जाके ६० ॥

दो० ॥ सबिताजूकबितादई ताकहँपरमप्रकास ॥
ताकेकाजकबिप्रिया कीन्हीकेशवदास ६१ ॥

इतिश्रीमद्विभूषणाबिभूषितायांकबिप्रियायांराजवंश
बर्णनंनामप्रथमप्रभावः १ ॥

सविता सूर्य नाम औ सहस्रनाम में भगवान्को नाम है मंगलाचरण में विष्णुको नाम गणेश अवतार ताकी स्तुति करी है ६१ ॥

इतिश्रीहरिचरणकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकवि
प्रियाटीकायांप्रथमप्रभावव्याख्या १ ॥

दो० ॥ ब्रह्माजूकेचित्तते प्रगटभयेसनकादि ॥
उपजेतिनकेचित्तते सबसनौढियाआदि १ ॥

नामके आगे टेढ़ी लकीर यह दूसरे प्रभावकी टीका ॥

दो० ॥ परशुरामभृगुनन्दतब तिनकेपायँपखारि ॥
दयेबहत्तरिग्रामतब उत्तमविप्रविचारि २ जगपावन बैकुंठपति रामचन्द्रयहनाम ॥ मथुरामण्डलमेंदये तिन्हैंसातसैग्राम ३ सोमवंशयदुकुलसकल त्रिभुवन

पालनरेश ॥ फेरिदियेकलिकालरिपु तेईतिन्हैंसुदेश ४ कुम्भवारउद्देशकुल प्रकटेतिनकेवंश ॥ तिनकेदेवानन्द सुत उपजेकुलअवतंश ५ तिनकेसुतजयदेवजग थापे पृथ्वीराज॥तिनकेदिनकरसुकुलसुतप्रकटेपण्डितराज६ दिल्लीपतिअल्लावदी कीन्हींकृपाअपार ॥ तीरथगया समेतजिन अकरकरेवहुवार ७ गयागदाधरसुतभये तिनकेआनँदकन्द ॥ जयानंदतिनकेभये विद्यायुतजग वन्द ८ भयेत्रिविक्रममिश्रतव तिनकेपण्डितराय ॥ गोपाचलगढ़दुर्गपति तिनकेपूजेपाय ९ भावशर्मतिन-केभये तिनकेबुद्धिअपार ॥ भयेशिरोमणिमिश्रसुत षट दरशनअवतार १० मानसिंहसोंरोषकरि जिनजीती दिशिचारि ॥ग्रामवीसतिनकोदये रानापावँपखारि ११ तिनकेपुत्रप्रसिद्धजग कीन्हेंहरिहरनाथ ॥ सोपुरपति तजिऔरसों भूलिनवोल्यउहाथ १२ पुत्रभयेहरिनाथ के कृष्णदत्तशुभवेष ॥ सभाशाहसंग्रामकी जीतीगढ़ी अशेष १३ ॥

संग्राम शाहिके पण्डित तिनकी सभा गढ़गावँमें १३ ॥

दो० ॥ तिनकोवृत्तिपुराणकी दीन्हींराजारुद्र ॥ तिनकेकाशीनाथसुत सोभेबुद्धिसमुद्र १४ जिनकोमधुकर शाहनृप वहुतकरयोसनमान ॥ तिनकेसुतबलभद्रशुभ प्रकटेबुद्धिनिधान १५ बालहितेमधुशाहनृप जिनपै सुनैपुरान ॥ तिनकेसोदरद्वैभये केशवदासकल्यान १६ भाषाबोलिनजानई जिनकेकुलकेदास ॥ भाषाकविभो मन्दमति तिहिकुलकेशवदास १७ इन्द्रजीततासोंक-

ह्यो मांगनमध्यप्रयाग ॥ मांग्योसबादिनएकरस कीजै कृपासभाग १८ योहींकह्योजुबीरबर मांगिजुमनमेंहोय॥ मांग्योतवदरबारमें मोहिंनरोकैकोय १९ गुरुकरिमान्यो इन्द्रजित तनमनकृपाबिचारि ॥ ग्रामदयेइकवीसतव ताकेपायँपखारि २० इन्द्रजीतकेहेतपुनि राजारामसुजान॥ मान्योमन्त्रीमित्रके केशवदासप्रमान २१ ॥

इतिश्रीमद्विबिधभूषणभूषितायांकविप्रियायांकवि
वंशवर्णननामाद्वितीयप्रभावः २ ॥

अथ कवित्त दोष ॥

दो० ॥ समुझैबालाबालकन बरणनपन्थअगाध ॥
कविप्रियाकेशवकरी क्षमिहौकबिअपराध १॥

बाला स्त्री औ बालक नहीं समुझै बाला बालको यह भी पाठ है अगाध पंथको अज्ञानको समुझायो जो कविन को जानिबे की बात सो सबको समुझाई है यह अपराध किंवा लोग सब कविन की कवितामें दोष देहिंगे यह अपराध १ ॥

दो० ॥ अलंकारकवितानके सुनिसुनिबिबिधबिचार ॥
कविप्रियाकेशवकरी कविताकोशृंगार २ सगुणपदारथ अर्थयुत सुबरणमयशुभसाज ॥ कंठमालज्योंकविप्रिया कंठकरौकविराज ३ ॥

हे कविराज कंठमाला की तरह कविप्रियाको कंठकरो यामें भी श्लेष कंठमाला कैसी है सगुण पदार्थ है सगुणवस्तु है गुण डोरा जामें लाग्यो है दुर्लभ वस्तुको भाषामें पदार्थ कहत हैं सुबरणमय याको अर्थ बहुत सुवर्णमय अर्थ रत्न लीजिये बहुत सुवर्ण युत रत्नहै जामें अर्थ नाम अर्थको धन

को औ वस्तुको औ प्रयोजनको फेरि शुभसाज. सुंदर साजी बनाई है ।किंवा सुंदर जो भा कहिये नक्षत्र ताको सो साज है लक्षणा सो तरह लीजिये कविप्रिया कैसीहै गुण जो ओज प्रसाद माधुर्य ताहि सहित पद है अर्थ है जामें औ अर्थ युत है औ सुंदरवर्ण अक्षरमयहै औ फेरि शुभकल्याणको साजैहै सिद्धकरैहै पुराण वचन है । धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राप्तिर्भवति काव्यतः ।काव्यते धर्म अर्थ मोक्षकी प्राप्ति होतिहै औ राजा जैसे कंठमालको कंठमें करैहै ऐसे कविप्रियाको कंठकरो यह भी अर्थ इहां कंठमाला रोगकी प्रतीति नहीं करावै है याते दोप नहीं ३ ॥

दो० ॥ चरणधरतचिंताकरत नींदनभावतशोर ॥
सुवरणकोशोधतफिरत कविव्यभिचारीचोर ४॥

कवि औ व्यभिचारी औ चोरकी समता करतहैं कविकवित्वके चरण व्यभिचारी स्त्रीके चरण औ चोर अपने चरण धरतके चिंताको करतुहै नींद शोर नहीं भावै सुंदरवर्ण अक्षर औ सुंदरहै वर्ण रंग जाको औ सुवरण सोना ताको खोजत फिरत हैं यह दोहा केतनिउँ पुस्तकनमें नहीं है अरु केतनिउँमें है ४ ॥

दो० ॥ राजतरंचनदोषयुत कवितावनितामित्र ॥
बुन्दकहालापरतज्यों गंगाघटअपवित्र ५ ॥

एक बुंद हाला मदिरा परै ५ ॥

दो० ॥ विप्रननेगीकीजिये मूढ़नकरियेमित्र ॥
प्रभुनकृतघ्नीचाहिये दोपनिसहितकवित्त६ ॥

ब्राह्मणको नेगी नहीं करिये नेगी कोई मामिलाको हवालदार नहीं करिये जो चोरिखाय तौ लेतके पेट चीरै ६ ॥

(अथ दोषनाम औ दोषलक्षण) दो० ॥ अंधव-धिरऔपंगुताजि नग्नमृतकमतिशुद्ध ॥ अंधविरोधीपंथ को बधिरसुशब्दविरुद्ध ७ छंदाविरोधीपंगुगति नग्नजुभू षणहीन ॥ मृतककहावैअर्थविनु केशवसुनहुप्रवीन ८ ॥

अथ पंथ विरोधी कविन के बांधे पंथपर नहीं चलै ८ ॥

(अथपंथविरोधीअंध) सवैया॥ कोमलकंजसेफूलिर हेकुचदेखतहीपतिचंदाबिमोहै । बानरसेचलचारुविलो चनकोथिरेचरुचिरोचनकोहै ॥ माखनसोमधुरोअधरामृ तकेशवकोउपमाकहुंटोहै । ठाढ़ीहैकामिनिदामिनिसीमृ गभामिनिसीगजगामिनिसोहै ९ ॥

कोमल कमलकी उपमा कविने नहींकही है कुच कठोर बरणतहैं औ कमलसों चन्द्रमाको मोहकोश्रा नेत्र गोलकको कहत हैं औ रोचन गोरोचन ताकी रुचिकांति तासों रचे हैं हे सखि सो कोहै कौनहै ९ ॥

(अथबधिरशब्दविरोधी) सवैया ॥ सिद्धशिरोमणिशं करसृष्टिसंघारतसाधुसमूहभरीहै । सुंदरमूरतिआतमभू तकीजारिधरीकमैंक्षारकरीहै ॥ शुभ्रविरूपविलोचनसोंम तिकेशवदासकेध्यानअरीहै । बंदतदेवअदेवसबैमुनिगो त्रसुताअरधंगधरीहै १० ॥

बन्दत देव अदेव याके अनुकूल शब्दनहीं है सिद्धि शि-रोमणि कहिकै साधुसमूह इत्यादि नहीं कह्यो चाहिये आतमभूत पुत्रकोनामहै काम कह्योचाहिये विरूप यह विशे-ष नहींचाहिये औ गोत्रपर्वतको नाम ताकी सुता पार्वती गो-त्रकी सुताकहे विरुद्धमति होतिहै ऐसे जानिये १० ॥

(अथछंदविरोधीपंगु) दो० ॥ तोलततूलरहैनज्यों कनकतुलातिलआधु ॥ त्योंहीछंदोभंगको सुनिनसकैअ तिसाधु ११ ॥

ज्यों कनककीतुला आधतिल अधिकहोय तौ तूल बरोबरि नहींरहै ११ ॥

(यथा) सवैया ॥ धीरजमोचनलोचनलोलबिलोकि कैलोककीलीकातिछूटी । फूटिगयेश्रुतिज्ञानकेकेशवआं खिअनेकविवेककीफूटी ॥ छोड़िदईसरितासबकाममनो रथकेरथकीगतिखूटी । त्योंनकरैकरतारउबारकज्योंचि तवैवहवारवधूटी १२ ॥

लोकलीकाति लोककी मर्यादा छोड़िदई सरिता सबकाम याकोअर्थ कामने सरिता तीरंदाजी छोड़िदीनी शरबानराखै सोशरी सखीसों सखी वचन है और पासजाने को मनोरथ इन्हैं नहीं रह्यो त्यों न करै करतार उबारक ज्यों चितवै वह वारवधूटी वह वारवधूटी वेस्याने ज्यों जाहितरह चितयो है तातरह करतार फेरि एकबारभी न करै वानेदेख्यो तासों इन- की यह दशाभईहै सात भगन सवैयामें चाहिये ताको निर्वाह नहीं है औ चौथीतुक नीकेनहीं १२ ॥

(अथ अलंकारहीननग्नवर्णनं) सवैया ॥ तोरितनी टकटोरिकपोलनिजोरिरहेकरत्योंनरहोगी । पानखवाय सुधाधरपानकै पायगहेतसहोनगहोंगी ॥ केशवचूकसवै सहिहौंमुखचूमिचलैयहपैनसहोंगी । कैमुखचूमनदैफि रिमोहिंकिआपनीधायसोंजायकहोंगी १३ ॥

इहां वचनरचना नहीं सूधी बोलतिहै चमत्काररूप भूषण

नहीं तनीतोरिबो कपोलटकटोरिबो हेतु याते करजोरिबो है सो हेतु मान हेतु अलंकारनिकरै है १३ ॥

(अथअर्थहीनमृतक) सवैया ॥ कालकमालकरील चुरीलतिशालबिशालतिचालचलीहै । हालबिहालति तालतमालप्रबालकमालकबाललली है ॥ लोलबिलो लकपोलअमोलकचोलकमोलकलोलकलीहै । बोलनि बोलकपोलनिटोलतिगोलनिगोलकलोलगलीहै १४ ॥

अथ मृतक जामें अर्थनहीं निकरै काल इत्यादि अनर्थक-तों पदको दोष है इन वाक्य समूहमें कह्यो १४ ॥

दो० ॥ अगननकीजैहीनरस अरुकेशवजतिभंग ॥
व्यर्थअपारथहीनक्रमकबिकुलतजोप्रसंग १५ ॥

पांच दोष पीछे कहे अंध १ बधिर २ पंगु ३ नग्न ४ मृतक ५ षटदोष फेरि कहत हैं अगन १ हीनरस२ जतिभंग३ व्यर्थ ४ अपार्थ ५ हीनक्रम ६ ये ग्यारहदोष १५ ॥

दो० ॥ बर्णप्रयोगनकर्णकटु सुनहुसकलकबिराज ॥
सबैअर्थपुनरुक्तिके छाड़हुसिगरेसाज १६ ॥

फेरि सात दोष कहत हैं कर्णकटु १ पुनरुक्ति २ देशबिरोध ३ कालबिरोध ४ लोकबिरोध ५ न्यायबिरोध ६ आगम बिरोध ७ ये ग्यारह पीछे सात ये अठारह दोष जानिये कर्ण कटु जो कानको उत्कटलागै ताको प्रयोग जोहै सो न वर्णतिवर्णनकरै औशब्द पुनरुक्ति औ अर्थ पुनरुक्ति १६ ॥

दो० ॥ देशबिरोधनबर्णिये कालबिरोधनिहारि ॥
लोकन्यायआगमनके तजौबिरोधबिचारि १७ ॥

न्यायनीति आगमशास्त्र १७ ॥

(अथगनअगनबर्णन) दो० ॥ केशवगनशुभसर्वदा

अगनअशुभउरआनि ॥ चारिचारिविधिचारुमति गन अरुअगनवखानि १८ ॥

शुभगन मगन आदि चारिविधिके सर्वदा अच्छेहैं अगन जो अनिष्टगन जगनआदि चारिविधिके ताको उर हृदय में अशुभ आनों हे चारुमति सुबुद्धि गनको अर्थ अच्छा औअ-शुभगन वखानों जहां चारि अक्षर पंचअक्षर के छंद हैं तहां मगनआदि शुभगनधरिये औ रगन सगन शत्रुहैं ताके आगे मित्रगनआवै ताको फलाफल नहीं कह्योहै तहां बड़े छंद में भी रगनसगन आदिमें नहीं धरिये मगनआगे मगन नगन आगे नगन भगन आगे भगन यगन आगे यगन छः अक्षर में विचारिकै धरिये छः अक्षरसों आगे विचार नहीं औ देव-तावाचक कल्याणवाचक शब्दमें तौ गनकोविचार औ शुभ अशुभ अक्षरको विचार नहीं इनते और ठौर मानुषी कवि-त्तमें द्विगुन विचारिये १८ ॥

दो० ॥ मगननगनभानिभगणअरुयगनसदाशुभजानि ॥ जगनरगनअरुसगनसुनि तगनहिअशुभबखानि १९ ॥

चारि शुभ चारि अशुभ १९ ॥

दो० ॥ मगनात्रिगुरुयुतात्रिलघुमय केशवनगनप्रमान ॥ भगनआदिगुरुआदिलघु यगनवखानिसुजान २० ॥

तीनि जामें गुरुहोयँ सो मगन और स्पष्टहै २० ॥

दो० ॥ जगनमध्यगुरुजानिये रगनमध्यलघुहोय ॥ सगनअंतगुरुअंतलघुतगनकहैसबकोय २१ ॥

ऐसै जानिये २१ ॥

दो० ॥ आठोगनकेदेवता अरुगुणदोषविचार ॥ छंदोग्रंथनिमेंकह्यो तिनकोवहुविस्तार २२ ॥

मही आदि २२ ॥

(अथगनदेवता) दो० ॥ महीदेवतामगनकी नाक नगनकोदेखि ॥ जलजियजानहुयगनको चंदभगनको लेखि २३ ॥

मही पृथ्वी २३ ॥

दो० ॥ सूरजजानहुजगनको रगनशिखीमयमान ॥
बायुसमुझियेसगनको तगनअकाशबखान२४॥

सगनको वायुदेवता कहूं कालदेवता कहतहैं २४ ॥

(अथगनमित्रामित्र) दो० ॥ मगननगनकोमित्रग नियगनभगनकोदास ॥ उदासीनजतजानिये रंसरिपु केशवदास २५ ॥

रसको अर्थ रगन सगन २५ ॥

(अथगनागनफलाफल)छप्पै॥भूमिभूरिसुखदेयनी रनितआनंदकारी। आगिअंगदिनदहैसूरसुखसोखैभा री॥ केशवअफलअकाशबायुकिलदेशउदासै।मंगलचं दअनेकनाकबहुबुद्धिप्रकासै ॥ यहिविधिकवित्तसवजा नियहुकर्त्ताअरुजाकेकरै । तजिप्रबंधसबदोषगनसदा शुभाशुभफलधरै २६ ॥

भूमि बहुत किल निश्चय जैसे गनको नाम कह्योहै ताही क्रमसों फलकह्यो चाहिये सो इहां नहींहै प्रबंध में दोपनहीं है देवता वर्णनमें दोष नहीं २६ ॥

(अथद्विगन) दो० ॥ जोकहुंआदिकवित्तकेअ- गनहोयबड़भाग ॥ तातेद्विगनविचारचितकीन्होवासु- किनाग २७॥

अथ द्विगन विचार चाहिये तौ मगन इत्यादि के आगे मगन इत्यादि धरै जो आदि में अगन आवै तौ वाके आगे दूसरोगन अच्छोधरै मित्र आगे मित्र धरै किंवा दास आगे मित्रधरैं जगन तगन अशुभ गनहैं औ उदास हैं कहूं कवित्त के आदि में आवै तौ ताके आगे यगन भगन दास है ताको धरै तौ जगन तगनको दोष मिटिजाय प्रभुताहोय औ द्विगन जे शुभकहेहैं ते शुभहीहैं ऐसे और भी विचारि लीजिये२७॥

दो० ॥ मगननगनकोमित्रगन यगनभगनानितदास ॥
उदासीनजतजानिये रसरिपुकेशवदास २८॥

कवित्त ॥ मित्रतेजुहोयमित्रबाढ़ैबहुबुद्धिरिद्धिमित्रतेजु दासत्रासयुद्धतेनजानिये । मित्रतेउदासगनहोतगोतदुःखदौमित्रतेजुशत्रुहोयमित्रबंधुहानिये ॥ दासतेजोमित्र गनकाजसिद्धिकेशवदासदासतेजो दासवशजीवसनमानिये । दासतेउदासहोतधननासआसपासदासतेजो शत्रुमित्रशत्रुसोवखानिये २९॥

कवित्त ॥जानियेउदासतेजोमित्रगनतुच्छफलप्रकट उदासतैजोदासप्रभुताइये । होइजोउदासतैउदासतौन फलाफलजोउदासहीतेशत्रुतोनसुखपाइये ॥ शत्रुतेजो मित्रगनताहिसोअफलगनशत्रुतेजो दासआशुवनिता नशाइये।शत्रुतेउदासकुलनाशहोयकेशवदासशत्रुतेजो शत्रुनाशनायककोगाइये ३० ॥

इहां गन कथन अप्रस्तुतईहै पिंगल में चाहिये ३० ॥

(गनागनकोउदाहरण)दो०॥राधाराधारमनकेमनपठयोहैसाथ ॥ उद्धवह्यांतुमकौनसोंकहायोगकीगाथ३१ ॥

राधा इति राधाने राधारमण श्रीकृष्ण तिनके साथ मनको पठायो है ३१ ॥

दो० ॥ कहौंकहांतुमपाहुने प्राणनाथकेमित्त ॥
फिरिपीछेपछितातहुगेउद्धवसमुझौचित्त ३२ ॥

कहाकहौं कहिबे मुआफिक नहीं कंसकी दासी कुबरी तासों आसक्तभये हैं ऐसी बात अपने मित्रकी सुनिकै पछितातहुगे मैं क्यों उपदेश करि निंदाकराई मित्रकी दोऊ दोहामें आठौगनआये कहूं एकगन दोयबारभी आयेहै ३२॥

दो० ॥ दोहादुहूंउदाहरण आठौंआठौंपाय ॥
केशवगनअरुअगनके समुझौबुद्धिसुभाय ३३ ॥

आठो चरण में ३३ ॥

(अथगुरुलघुभेद) दो० ॥ संयोगीकिआदियुत बिंदुजुदीरघहोय ॥ सोईगुरुलघुऔरसबकहैसुकबिसुनि लोय ३४ ॥

संयोगीके आदि गुरु जानिये बिंदुः अनुस्वार विसर्ग तासोंयुत गुरु जानिये ३४ ॥

दो० ॥ दीरघहूलघुकरिपढ़ै सुखहीमुखजिहिठौर ॥
सोईगुरुलघुऔरसबकहैंसुकबिशिरमौर ३५ ॥

दीरघभी लघुकरि पढ़े लघु होतहै सोवाही तरहसों लघुभी चरणके अंतमें गुरु होतहै औरसब जे कविशिरोमणि हैं ते कहतहैं ३५ ॥

(यथा)सवैया ॥ पहिलेसुखदैसबहीकोसखीहरिहीहि तकैजुहरीमतिमीठी । दूजेलैजीवनमूरअक्रूरगयोअंग अंगलगायअंगीठी ॥ अबधौंक्यहिकारणयेउठिधायेहैं

उद्धवलेकरभूंठिवसीठी। माथुरलोगनकेसंगकीयहवैठ-कतोहिंअजौंनउवीठी ३६ ॥

पहिले सुखदे हे सखि हरिने हमारी मीठी अर्थात् आछी मतिको हरी अंगीठीसी गढ़ी पूरव में वोरसी कहत हैं वसीठीहू तपना पहिलीतुक तीसरीतुक पचीस पचीस आखरकी हैं आठ सगन दोयगुरुहोय सोसुखदा सवैयाको सखी इहांरगन आयो दूसरी चोथी तुक तेईसतेईस आखरकी हैं तहां सात भगन दोय गुरु अंतमें चाहिये दूजेलै इहां सगण आयो औ सुखदा इहांको शंकर कर्यो नहीं है अक्रूर इहां अकार उद्धव इहां उकार संयोगीकी आदिहै गुरु जानिये एक अंगको लघु पढ़्योदूसरोअंग अनुस्वार सहितहैगुरुपढ़्योऐसे विचारिये ३६ ॥

दो० ॥ संयोगीकीआदियुत कवहुंकवर्णविचारि ॥
केशवदासप्रकाशवश लघुकरितांहिनिहारि ३७ ॥

संयोगीकी आदिसोंकहूं लघुवर्ण युक्तहोय ताको छंदके लिये लघु पढ़िलीजिये ३७ ॥

दो० ॥ अमलजुन्हाईचंद्रमुखि ठाढ़ीभईअन्हाय ॥
सौतनकेमुखकमलज्यों देखिगयेमुरझाय ३८ ॥

जुन्हाई इहां नकार हकारको संयोगहै जुको लघु पढ़्यो ऐसे अन्हाय कमल ज्यों जानिये चंद्रमुख है याते सौतिनके मुख कमल कुम्हिलाने ३८ ॥

(अथहीनरसवर्णनं)दो०॥वर्णतकेशवदासरसजहांविरसह्वैजाय॥ताकवित्तसोंहीनरसकहतसवैकविराय ३९ ॥

जहां कोईकी उक्तिकरिविरस होय ३९ ॥

(रसिकप्रिया) सवैया॥ दैदधिदीन्होउधारहोकेशवदानकहाअरुमोललैखैहैं। दीन्हेविनातौगईजुगईनगईनग

ईघरहीफिरिजैहैं। गोहितबैरकियेहितहोकवबैरकियेवर नीकेह्वैरैहैं। बैरकैगोरसबेंचहुगीअहोवेंच्योनवेंच्योतोढा रनदैहैं ४० ॥

यह कवित्त रसिकप्रियामें दुःसन्धानको उदाहरण है एक अनुकूल बोलै एकप्रतिकूल बोले सो दुःसन्धान जहां दोऊ प्रतिकूल बोलैंसो हीनरस नायक बोल्योहै देदधि नायका वचन कहाहमैं उधार दीन्होंहै तब नायक बोल्यो दान जगाति नायकावचन तुमदही छीनिकै खाहुगे और कहा मोल लैखाहुगे अवताईं दीन्हेबिना तुमगई सोतो गई किंवा मैंगई करी अर्थात् क्षमाकरी अबतो लैकर जांनदेहिंगे यह फलितार्थ नायक वचन गोहित बैरकियो नायकावचन हितहो कबबैराकियो वरनीके ह्वैरैहैंरहैंगी तब नायक रोषकरि प्रतिकूल बोल्यो हमसों बैरकरि अहो अहीरी गोरस बेंचहुगी तब नायका प्रतिकूलबोली जो न बेंच्यो तों ढारिभीं तौ न देहिंगी ऐसे लगाये चौथीतुकमें बिरसभयो ४० ॥

(अथजतिभंग) दो० ॥ औरचरणकेवरणजहं औरचरणसोंलीन ॥ सोजतिभंगकबित्तकहि केशवदा सप्रवीन ४१ ॥

और चरणके वरण और मात्रा और चरण सों मिलीहोय सो जानिये ४१ ॥

दो० ॥ हरहरिकेशवमदनमोहन घनश्यामसुजान ॥
ज्योंब्रजबासीद्वारिका नाथरटतदिनमान ४२ ॥

पहिले छः मात्रा फेरि चारिमात्रा फेरि तीनिमात्रा चाहिये आधे दोहामें चौबीसमात्रा हैं मदनमोहन इहां चौथीमात्रा पांचइं मात्रासों मिली है आगे तीनमात्राकी ठौर दोय

मात्राहू ज्यों जैसे ब्रजवासी रटतहैं तैसे द्वारकामें नाथ यहि नामको लोग रटतहैं यह मानों ४२ ॥

अथव्यर्थ दो० ॥ एककवित्तप्रबंधमेंअर्थविरोधजुहोय ॥ पूरबपरअनमिलसदा व्यर्थकहैसबकोय ४३ ॥

एक कवित्तमें और एक प्रबन्धमें पहिले ग्रन्थमें कछु और कह्यो वासों विरोधपरै ऐसीबात फेरिकही औ पूर्वपरको अर्थ नहींमिलै ४३ ॥

अथछंदमरहट्टा ॥ सबशत्रुसंहारहुजीवनमारहुसाजियोधाउमराव । बहुबसुमतिलीजैमोमतिकीजैदीजैआपनदाव । कोउनरिपुतेरोसबजनहेरोतुमकहियतुअतिसाधु।कछुदेहुमँगावहुभूखभगावहुहौपुनिधनीअगाधु४४॥

सब शत्रु संहारहु याको विरोधी जीव न मारहु जीवमारे विना संहार नहींहोय अनमिलसजि योधा उमराव योधा उमरावको साजो फौज तय्यारकरौ तब शत्रुको मारौ ऐसेहोय तब अर्थको मेल सो नहीं है याते अनमिल पहिले चाहिये हमारो मतकरौ शत्रुनको आपने करिकै दावँ दगादेहु तब उनकी बहुत बसुमती पृथ्वीलेउ तुम्हैं अतिसाधु कहियेहै जगत में देखो कोई तुम्हारो रिपुनहीं ऐसे चाहिये तुम अगाधधनी हौ कछु मँगावो हमेंदेहु हमारी भूख भगावो ४४ ॥

(अपार्थलक्षण) दो० ॥ अर्थनजाकोसमुझिये ताहिअपारथजानि ॥ मतवारोउनमत्तशिशु केसेवचनबखानि ४५ ॥

अर्थइति अपार्थ गयो अर्थजाको सो अपारथ मतवारा मदिरादिकसों उन्मत्त वायु भूतसों शिशुबालकेसे वचन जहां बखानिये कहिये सो अपार्थ ४५ ॥

दो० ॥ पियेलेतनरासिंधुकहँ हैअतिसज्वरदेह ॥
ऐरावतहरिभावतो देख्योगर्जतमेह ४६ ॥

हे नर तू सिंधुको पियेलेत है तेरी देह अतिसज्वर सहित है हरि इंद्र ताको भावतो प्रिय ऐरावत हाथी तापर मेहको गर्जत देख्यो इहां उन्मत्त केसे वचन हैं ४६ ॥

(अथक्रमहीन) दो० ॥ क्रमहींगुणनिबखानिकै गुणीगनैक्रमहीन ॥ सोकहियेक्रमहीनजग केशवदासप्रवीन ४७ ॥

क्रमसों गुननिको कहै तिन गुणीनकी वह क्रियाहोय ताकी गणनामें क्रम नहीं रहै ४७ ॥

तोटकछं० ॥ जगकीरचनाकहिकौनकरी । किहिराखनकीजियपैजधरी ॥ अतिकोपिकैकौनसँहारकरै । हरिजूहरजूबिधिबुद्धिररै ४८ ॥

कौनने राखिबेकी पैज प्रतिज्ञाकरी विधि हरिहर ऐसे चाहिये गुणीविषे क्रम नहीं है ४८ ॥

(अथकटुकर्णप्रयोग) दो० ॥ कहतननीकोलागई सोकहियेकटुकर्ण ॥ केशवदासकवित्तमें भूलिनताको बर्ण ४९ ॥

कहतके अर्थ औ सुनतके जो अक्षर नीको न लागै शृंगार में टवर्ग आदि सो कटुकहावै ताको वर्णन मतिकरौ अर्थ को उदाहरण दियोहै अक्षर को नहीं ४९ ॥

दो० ॥ बारनबन्योबनावतन सुवरणवलीबिशाल ॥
चढ़ियेराजमँगायकै मानौंराजतकाल ५० ॥

वारन हाथी तन शरीरके वनावसों वन्योहे शरीर बहुत सुंदर लागैहै वारनविषे कालकी संभावना नीकी नाहीं ला-

गो इहां अर्थ दोषहै जो वाकी पर्याय और शब्द कहिये दोष नहीं मिटै सो अर्थ दोष शब्द के फेरे दोष मिटै सो शब्द दोष ५० ॥

(अथपनरुक्ति) दो० ॥ एकबारकहियेकछू वहुरिजुक हियसाय॥अर्थहोयकैशब्दअव सुनिपुनरुक्तिसुहोय ५१

एकवार इति अर्थ किंवा शब्द ५१ ॥

सो० ॥ मघवाघनआरूढ़ इन्द्रआजुअतिसोहिये ॥ व्रजपरकोप्योमूढ़ मेघदशौदिशिदेखिये ५२ ॥

मघवा घन इंद्र सो घन मेघपर आरूढ़ चढ़्योहै तासों इंद्र शोभैहै मघवाघन आरूढ़ सुतौ आजु अति सोहिये ऐसो चाहिये मघवा इंद्र घन मेघ इहां अर्थ पुनरुक्तिहै शब्द पुनरुक्ति जानिलीजिये जलमें मेघको प्रतिविंव परयो तासों दशौदिशा कही है ५२ ॥

दो० ॥ दोषनहींपुनरुक्तिको एककहतकविराज ॥ छौड़िअर्थपुनरुक्तिको शब्दकहौइतिसाज ५३ ॥

एकहीं अर्थ के शब्दसों जहां कहै अर्थ की पुनरुक्ति को छांड़े या साज ऐसीतरह शब्दको कहो ५३ ॥

दो० ॥ लोचनपैनेशरनते हैकछुतोकहँसुद्धि ॥ तन वेध्योवेध्योसुमन वेधीमनकीवुद्धि ५४ ॥

सखी वचन नायकासों तनको मनको वेध्यो शब्दसों कह्यो दोष नहीं ५४ ॥

(अथदेशविरोध) दो० ॥ मलयानिलमनहरतहठि सुखदनर्मदाकूल ॥ सुवनसघनघनसारमय तरवरतर लसुफूल ५५ ॥

नर्मदाके तटमें जो मलयको पर्वत ताको जो अनिलपवन सो मनको जोरावरीसों हरै है पवनसों तरल चंचल जे तरवर वृक्ष ते घनसार कपूरमय हैं नर्मदाके तीरमें मलय चंदन पवन नहीं है औ जहां चंदन है तहां कपूर नहीं कपूर तौ कदली बनमें बरणतहैं याते देश बिरोध ५५ ॥

दो० ॥ मरुसुदेशमोहनमहा देखहुसकलसभाग ॥
अमलकमलकुलकलितजहँ पूरणसलिलतड़ाग ५६॥

मारवाड़में सलिल जलसों पूरण तलाव भरेहैं अमलकमलकुल सों युक्त हैं मरुको अर्थ जहां जल बिन मरै सो मरु कहावै तहां तड़ाग कमल कुल बरणौं याते देश बिरोध ५६ ॥

(अथकालबिरोध) दो०॥ प्रफुलितनवनीरजरजनि बासरकुमुदबिशाल ॥ कोकिलशरदमयूरमधु बरषामुदितमराल ५७॥

रजनी रातिमें कमल फूलै यह कालबिरोध और स्पष्ट ५७॥

(अथकालबिरोध लोकबिरोध) दो० ॥ स्थाईवीर शिंगारके करुणाघृणाप्रमान ॥ ताराअरुमंदोदरी कहतसतीसममान ५८ ॥

जाहि बारमें बीररस उपजैहै ताहि कालमें करुणा स्थाई बरणौं तौ उत्साह स्थाई जातोरहै वीर रस नहीं होय जैसे अर्जुनको भारतके समय आरंभमें औ शृंगारमें घृणा ग्लानि बरणैं तौ वा कालमें शृंगार जातोरहै यह प्रमाण है तारा सुग्रीवकी स्त्री बालिने लीन्हीं औ कितने रावणभयेहैं मंदोदरी एकहीहै ताको सती पतिव्रतासमान कहनो लोकविरुद्ध है ५८॥

(अथन्यायआगमाविरोध) दो० ॥ पूजैतीनौंवर्णजग करिविप्रनसोंभेद ॥ पुनिलीबोउपवीतहम पढ़िलीजै सबबेद ५९ ॥

विप्रनिको भिन्नकरिकै तीनि वर्णको पूजै विप्रको कहापूजै तीनि वर्णको पूजै जगतमें यह नीति विरोध किंवा नीतिवर्णी विप्रनिको भेदकरिकै पूजै फलाने कुल के ब्राह्मणको मति पूजो फलाने कुल के ब्राह्मणको पूजो ब्राह्मण सव पूज्यहैं यह नीति विरोध पहिले वेद पढ़ै पीछे जनेऊ लेय यह शास्त्र विरोध दोऊमें भेद थोरोई है शत्रुको विश्वास करौ ऐसे नीति विरोध चाहिये शास्त्रसों वहुत विरोध न होय व्यवहारसों मुख्य विरोध होय सो नीति विरोध ५९ ॥

दो० ॥ इहिविधिऔरौजानियहु कविकुलसकलबिरोध ॥ केशवकहेकछूकअव मूढ़निकेअनुरोध ६० ॥

इतिश्रीमद्विविधभूषणभूषितायांकविप्रियायांकवित्त दूषणवर्णननामतृतीयप्रभावः ३ ॥

विरोध तौ कवि कुल जानहिंगे प्रसिद्ध है इहां मैं मूढ़नि के अनुरोध चाहसों कछु कह्योहै कहूं पाठ अवरोध है मूढ़की मति याते नहीं पैठिसकै ६० ॥

इतिहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकविप्रियाटीकायांतृतीयप्रभावव्याख्या ३ ॥

(अथकविभेदवर्णन) दो० ॥ केशवतीनिहुँलोकमें त्रिविधकविनकेराय ॥ मतिपुनितीनिप्रकारकी वरणत सवसुखपाय १ ॥

कविन के राय सरदार हैं ते कवि तीनप्रकार के औ मति तीन प्रकार की १ ॥

दो० ॥ उत्तममध्यमअधमकवि उत्तमहरिरसलीन ॥ मध्यममानतमानुषनि दोषनिअधमप्रवीन २ ॥

मानस मानत याको अर्थ जो मनहीं को मानै जैसो मन में आवै तैसो बरणै सो मध्यम किंवा मनुष्यको मानै मनुष्य को बरणैं जो दोष बरणैं सो अधम २ ॥

(यथा) सवैया ॥ जोअतिउत्तमतेपुरुषारथजेपरमारथकेपथसोहैं । केशवदासअनुत्तमतेनरसंततस्वारथ संयुतजोहैं ॥ स्वारथहूपरमारथभोगनमध्यमलोगनिके मनमोहैं । भारथपारथमित्रकरयोपरमारथस्वारथहीन तेकोहैं ३ ॥

कोऊ भगवान्को भजन करैहै औ संसारको भी कारज करैहै सो औरन सों उत्तमहै जे भगवान्के रसहीमें लीन हैं तिन्हैं फेरि अतिउत्तम करि कहतहैं जो स्वारथ सों मिल्यो सो पुरुष जो भगवान् तिनके अर्थ तिनके लिये परमारथ परम श्रेष्ठ ऐसी जो मुक्ति ताके पंथमें शोभतहैं जो स्वारथ सों मिल्यो सो अनुत्तम कहिये मध्यम जैसो आपने मनमें आवै तैसोई बरणत हैं स्वारथ भी नहीं परमारथ भी नहीं मध्यम लोग नीचलोग मध्यम भाषामें नीचको भी कहत हैं ताको काहूकी निन्दाकरि राजी करंतहैं सो अधम कहिवेकोहैं ताको लक्षण कहत हैं भारथमें पारथ अर्जुन तिनको मित्र श्रीकृष्ण ने करयो है स्वारथभी नहींसाधैं परायेकी निन्दाहीकरैं वे पुरुष कौनहैं नहींजानिपरै अधमाधम हैं ३ ॥

(अथकबिरीतिबर्णन) दो० ॥ सांचीबातनबरणहीं झूठीबरणैंबानि ॥ एकनिबरणैंनियमकै कबिमतित्रिबिधबखानि ४ ॥

सांची वातानिको वरणत हैं औ झूठीवात वरणिवे की वानिहे औ एकको नियमकरि वरणतहैं जहां जौनको वरणैं तहां त्रिविध वरणतहैं ४ ॥

(सत्यवर्णन) दो० ॥ केशवदासप्रकासवश चन्दन केफलफूल ॥ कृष्णपक्षकीजोह्नज्यों शुक्लपक्षतमतूल ५ ॥

चन्दनके फूल फल सांचहैं औ प्रकाश केवशकरि प्रकाश की अपेक्षाकरिकै जितनी कृष्णपक्षमें चांदनी है ताहीकी वरोवरि शुक्लपक्ष में अन्धकार हैं यह सत्यहै किंवा प्रकाशवश जो चन्दनके फूल फल न होयँ तौ चन्दनको प्रकाश उत्पत्ति कहांसों होय ५ ॥

(झूठवर्णन)दो० ॥ जहँजहँवरणतासिंधुसब तहँतहँ रत्ननिलेषि ॥ सूक्षमसरवरहूकहैं केशवहंसबिशेषि ६ ॥

जहँ जहँ इति स्पष्ट ६ ॥

दो० ॥ लेनकहैभरिमूठितम सूजनिसियनिवनाय ॥ अंजुलिभरिपीवनकहै चन्द्रचन्द्रिकापाय ७ ॥

तम अन्धकार सुईसोंवनाय अच्छीतरह सियोंजाय औ कवि जो नेम यमसों वरणत हैं सो आगे कहैंगे ७ ॥

दो० ॥ सबकेकहतउदाहरण वाढ़ैग्रंथअपार ॥ कहूं कहूंतातेकह्यो कविकुलचतुरविचार ८ ॥

(तमकोउदाहरण) कवित्त ॥ कंटकनअटकैनफाटत चरणचापिवाततेनजातउडिअंगनउघारिये । नेकहूंन भीजतमुशलधारवरषत कीचनरचतरंचचित्तमेंविचारिये ॥ केशौदाससावकासपरमप्रकासनउसारियेपसारियेनपियपैविसारिये । चालियेजूओढ़िपटतमहींकोगाढ़ो तनपातरोपिछौराश्वेतपाटकोउतारिये ९ ॥

सावकास याको अर्थ या पटको कोई रोकनवाला नहीं जहां जाइ तहांहीं श्वेत पिछौरा है काहूकी नजरिमें आवेगो याते सखी उतरावै है और पोशाक श्यामहै जानिपरैहै बड़ो जाको प्रकाश पसरिबोहै याते तमकोपट ओढ़िचलिये ९ ॥

(चन्द्रिकाकोउदाहरण)कवित्त॥ भूषणसकलघनसारहीकेघनश्यामकुसुमकलितकेशरहीछबिछाईसी । मोतिनकीलरीशिरकंठकंठमालहार औररूपज्योतिजातहेरतहिराईसी ॥ चन्दनचढ़ायेचारुसुन्दरशरीरसवराखीशुभशोभासबबसनबसाईसी । शारदासीदेखियतदेखोजायकेशौरायठाढ़ीवहकुवँरिजुह्नाईमेंअह्नाईसी १० ॥

भूषण इति मिथ्या वर्णनकेलिये घनसारहीके भूषण घनसारहीके बनाये फूल तासों कलित युक्तकेश औ मोतिनकी लरी शिरपै मोतिनकी लरी आदि और भी जे भूषण हैं ते सब अंगके रूपकी ज्योतिमें हेरतकै निहारतकै हिराई सो होतिहै भूषणकी ज्योति नजरि नहींआवै चन्दनको वस्त्र बतायो सो झूंठ औ चांदनीमें स्नान १० ॥

(अथकबिनियम) दो० ॥ बरणतचन्दनमलयहीहिमगिरिहीभुजंपात ॥ बरणतदेवनचरणते शिरतेमानुषगात ११ ॥

काश्मीर देशमें भोजपत्र सों घरछावतेहैं तौभी हिमालयहीमें बरणतेहैं ऐसे नियम जानिये ११ ॥

दो० ॥ अतिलज्जायुतकुलवधू गणिकागतिनिर्लज्ज ॥ कुलटनिसोंकोबिदकहत अंगअलज्जसलज्ज १२

अति इति स्पष्ट १२ ॥

दो० ॥ बरणतनारीनरनते लाजचौगुनीचित्त ॥ भै

रुद्रिगुणसाहसकेगुण कामश्राठगुणमित्त १३ कोकिलकोकवोलिवो वरणतहँमधुमास ॥ वरषाहीहरषितकहे कैकीकेशवदास १४ दनुजानिसोंदितिसुतनिसों असुरकहतवखानि ॥ ईशशीशशशिवृद्धिको वर्णतबालवखानि १५ ॥

वरणन वकोकिल इति स्पष्ट १३ । १४ ॥

दनुज कश्यपकी स्त्री तासों उपजै सो दानव औ दितिसों उपजै सो दैत्य वृद्धिहूकी तिथिमें महादेवके माथेमें चंद्रमाहै ताको वाल कहत हैं कहूं वृद्ध ऐसो पाठ है तहां वृद्ध वहुत काल के शशिको बालक कहतहैं १५ ॥

दो० ॥ सहजशृँगारतसुंदरी यद्यपिशृँगारअपार ॥ तदपिवखानतसकलकवि सोरहईशृंगार १६ ॥

सहज इति स्पष्ट १६ ॥

(सोरहशृंगार)क०॥प्रथमसकलशुचि १ मज्जन २ अमलवास ३ जावक ४ सुदेशकेश पासनिसुधारिवो ५ अंगराग ६ भूषण ७ विविधसुखवास ८ राग ९ कज्जल १० कलितलोललोचननिहारिवो ११ वोलनि १२ हँसनि १३ चितचातुरी १४ चलनिचारु १५ पलपल प्रतिपतिव्रतप्रतिपारिवो १६ केशौदाससविलासकरहु कुवँरिराधे इहिविधिसोरहशृँगारनिशृँगारिवो १७ ॥

सकल शुचिस्नान आदि १ मज्जन उवटना २ अमल वस्त्र ३ जावक ४ केशकी रचना ५ अंगराग केशरि आदि ६ औ भूषण अनेक तरह के ७ मुखवास पान लवंग आदि ८ राग मेंहदी औ दाँत ओंठको रंगिवो ९ औ कज्जल १० औ चंचल नेत्रनिसों देखिवो ११ बोलनि रसीली १२ औ

हँसनि १३ औ चित्तकी चतुराई १४ औ चारु चलनि १५ औ पतिव्रता के धर्म को पालन करनो १६ परकीयाके प्रेम को प्रतिपालन करनो परकीयाको लक्षण बहुत ग्रंथन में है आपने पतिसों रति नहीं परपतिहीसों रति सो परकीया औ जो पतिसों औ उपपतिसों समान प्रेमहोय सोतौसामान्या १७

दो० ॥ कुलटाकोपतिप्रेमवश वारवधुनकोदान ॥
जाहिदईपितुमातुसो कुलजाकोपतिमान १८ ॥

कुलटाको और वारवधूको पतिको नियम नहीं कोई नायक जो प्रेमसों वशहोय तौ वाको लोग कुलटाके पति और वारवधूके पति कहत हैं किंवा कुलटाको कौन ऐसो पति है जो प्रेमसों वशहोय वो तौ अनेक घरफिरै और वारवधूके ऐसे जानों यह दोहा बहुत पुस्तकनमें नहीं है १८ ॥

दो० ॥ महापुरुषकोप्रगटही वरणतवृषभसमान ॥
दीपथम्भगिरिगजकलश सागरसिंहप्रमान १९ ॥

बड़े आदमीको वृषभ आदि कहत हैं १९ ॥

(यथा) कवित्त ॥ गुणिमणिवैरागरधीरजकोसागर उजागरधवलधरिधर्मधुरधायेजू । खलतरुतोरिवेकोरा जैगजराजसमअरिगजराजनिको सिंहसमगायेजू ॥ वा लिनकोवासदेवकामिनकोवासदेव रणजयथम्भरामनेन मनभायेजू । काशीकुलकलशवृद्धजम्बूदीपदीपकेसो दासकोकलपतरुइन्द्रजीतआयेजू २० ॥

गुणरूप जो मणि ताको वैरागर कहिये खानिहै औ धीरज को समुद्र है औ उजागर सब देशमें प्रसिद्ध है औ धवलवृषभहै धर्म को धुर भारधरिकै स्वर्गते धायेहैं धवल वृषभ को कहतहैं प्रमाण सोतिन सरिततीर गाराके गसांई टेट धोरा

अलिन्दर्यो जहां पावं थिरना रहै किंवा धवल उज्ज्वल निर्मल जो धर्म ताको धुर भारभरिके ध्वनिमें वृषभ वामजवक्र आप नेधर्ममें नहीं चल ताके मारिवेको वामदेव शिव हैं २० ॥

दो० ॥ वृषभकंधस्वरमेघसम भुजधुजअहिपरमान ॥ उरसमशिलाकपाटअँग औरत्रियानिसमान २१ ॥

पुरुषको मेघ सो स्वर वरणिये भुजाको ध्वजसम सर्पसम कहिये उर छाती कपाटसम शिलासम कहिये और अंग नेत्र आदि स्त्रीके पुरुष के सम वरणिये २१ ॥

कवित्त ॥ मेघज्योंगंभीरवाणसुनतसखाशिखीनसुखअरिउरनिजवासेज्योंजरतहैं । जाकेभुजदण्डभुवलोककेअभयध्वजदेखिदेखिदुर्ज्जनभुजंगज्योंडरतहैं ॥ तोरिवेकोगढ़तरुहोतहैं शिलास्वरूपराखिवेकोद्वारनिकिवाँरज्योंअरतहैं । भूतलकोइन्द्रइन्द्रजीतराजेयुगयुगकेशौदासजाकेराजराजसेकरतहैं २२ ॥

इतिश्रीमद्विविधभूपणभूपितायांकविप्रियायांकविव्यवस्थालंकारवर्णननामचतुर्थप्रभावः ४ ॥

मेघ सरीपी जो गंभीर वाणीहै ताको सुनिकै सखा जे हैं शिखी मोर सो सुखपावतहैं अरिके उरनिको जवासनिकी तरह जारतहैं यह अर्थ भुजको सर्प समान देखिकै दुर्जनडरतहैं जाको वक्षस्थल गढ़तरवटोगढ़ तोरिवेको शिला स्वरूप होतहैं तोरिवेको गढ़ उरहोतहै शिलास्वरूप ऐसो भी पाठहै आपन गढ़को दरवाजा राखिवेको कपाटसों अड़ेहै भूतलको इंद्र इंद्रजीत युग युगराजे २२ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायां चतुर्थप्रभावव्याख्या ४ ॥

(अथकवितालंकारवर्णन) दो० ॥ यदपिसुजातिसु लक्षणीसुबरणसरससुवृत्त ॥ भूषणविनुनविराजई कविताबनितामित्त १ ॥

कवीश्वरन जो बात ठहरायराखीहै सोभी कविताकोभूषणहै सो दिखावैहैं हे मित्र भूषण विना कविता औ वनिता न सोहाति है कविता कैसी है सुजाति है सुंदर जामें जाति तरहैं जो अनुप्रास लैचलै ताको कहूं भंग न होय औ सुलक्षणी सुंदर जामें लक्षणा है लक्षणासों अर्थ चमत्कारहोतहै खैंचिकै जामें लक्षणा न करनी परै किंवा सुंदरीतरह जामें रस अलंकार के लक्षण लागतहैं फेरि सुबरण सुंदरजामें रस के अनुकूल बरणअक्षर हैं फेरि सरस शृंगारवीर आदि जामें रसहैं सुवृत्त सुंदर जामें रसके अनुकूल वृत्तछंदहैं यथा शृंगार रससें सवैया मनहरणआदि और वीरसेंउद्यत भुजंगी छप्पय मोतीदामआदि भूषण उपमाआदि वनितास्त्री कैसीहै सुजाति उत्तम कुलकीहै औ सुलक्षणी अर्थात् सामुद्रिकानुसार सुन्दर जाके लक्षणहैं औ सुबरण सुन्दर जाको वरणरंगहै औ वृत्त सुन्दर जाकी वृत्तबात है कोई जाकी निंदानहींकरत सब तारीफ़ करतहैं १ ॥

दो० ॥ कबिनकहेकवितानिके अलंकारद्वैरूप ॥ एक कहैंसाधारणैं एकबिशिष्टस्वरूप २ ॥

कबिन इतिस्पष्ट २ ॥

(अथसामान्यालंकारवर्णन) दो० ॥ सामान्यालंकारको चारिप्रकारप्रकास ॥ वर्णवर्ण्यभूराजश्री भूषणकेशवदास ३ ॥

एकवर्णराग सो आगे कहैंगे औ दूसरो वर्ण्य जाको वर्णन

फरिये नीलगे सू चौथो राजश्रीभूषण बहुत ठौररहै सो सामान्द सामानको अर्थ जाति उपमादि विशेषः ३ ॥

(अथवर्णालंकार) दो० ॥ श्वेतपीतकारेअरुण धूम्रनीलवर्ण ॥ मिश्रितकेशवदासकहि सातभांतिशुभकर्ण ४ ॥

मिश्रितचित्ररंग शुभके करनवाले श्वेतरंग अनेक विषे हैं याते सामान्य ४ ॥

(अथश्वेतवर्णन) दो० ॥ कीरतिहरिहयशारदघन जोन्हजरामंदार ॥ हरिहरहरगिरिसूरशशि सुधासौध घनसार ५ ॥

हरिहयनाम इन्द्रको जरा बुढ़ाई हरिविष्णु किंवा कपिलदेव किंवा श्वेतवाराह कोई २ पुराण में हरिको भी श्वेतकह्यो है (यथा) नंदजीसों गर्गमुनिकेवचन ॥ शुक्लोरक्तस्तथापीतइदानींकृष्णतांगतः याकोअर्थ शुक्लरूपभीहैं लालरूपभीहैं पीतरूप भीहैं अब कृष्णभये हैं श्रीभागवत है हरमहादेव हरगिरिकैलाश सौधचूनालगायोघर घनसारकपूर ५ ॥

दो० ॥ बलबकहीराकेवरोकौड़ीकरकाकांस ॥ ऊंट कांचलीकमलाहिमासिकताभस्मकपास ६ ॥

बलदेवजी करकामेघसों जो पत्थरपरैं जिन्हें ओलाकहत हैं औ काँसपूरबमें कसौंजा कहतहैं काँचलीसर्पकी कमलपुंडरीक किंवा कुमुद सिकतारेत ६ ॥

दो० ॥ खांड़हाड़निर्भरचवँरचन्दनहंसमुरार ॥ छत्र सत्ययुगदूधदधिशंखसिंहउड़सार ७ ॥

निर्भरभरना मुरारकमल की जर गौसिंह श्वेतहै उड़माग

क्षीरसमुद्र उड़मालाको किंवा उर्मिमाली को अपभ्रंश शब्द उड़मार कहत हैं उड़पतारा की माला समूह है जामें ऐसे जानिये ७॥

दो० ॥ शेषसुकृतिशुचिसत्वगुणसन्तनकेमनहास॥
सीपचूनभोड़रफटिकखाटिकाफेनप्रकास ८ ॥

शुचिपवित्रवस्तु किंवा शुचिनाम श्वेतकोहै शेषको शुचि श्वेतवर्णिये सुकृति पुण्य श्वेतवर्णिये खटिकाखरी किंवा खाट भी श्वेत वर्णिये है खटूविका को खाटिकाअपभ्रंश ८ ॥

दो० ॥ शुक्रसुदर्शनसुरसरितवारणवाजिसमेत ॥
नारदपारदअमलजलशारदादिसवश्वेत ९ ॥

शुक्रग्रह औ श्री सुदर्शनचक्र और सुरसरित श्रीगंगाजी औ सुरको वारणहाथी ऐरावत औ सुरकोवाजी उच्चैश्रवाइति सहित श्वेत वर्णिये औ अमलजल निर्मलजल औ शारदा सरस्वती औ शरदऋतु ऐसे जानिये ९ ॥

कवित्त ॥ कीन्हेछत्राक्षितिपालिकेशवदासगणपतिद सनवसनवसुमतिकह्योचारुहै । विधिकीन्होंआसनशारा सनअससमसरआसनकोकीन्होंपाकशासनतुपारुहै ॥ हरिकरीसेजहरिप्रियाकरोनाकमोती हरकरयोतिलकह राहुकरयोहारुहै ॥ राजादशरथसुतसुनोंराजारामचन्द्र रावरोसुयशसवजगकोशृंगारुहै १० ॥

हे श्रीरामचन्द्र तुम्हारो सुयश सम्पूरण जगत को शृंगार भूषण है क्षितिपाति राजाओंने छत्रकिये जो तिनके ऊपर राजत है छत्र श्वेत जानिये वसुमती पृथ्वीने वसनवस्त्र कीन्हों अर्थात् समुद्ररूप सागरावरी भूमिको नाम है असमसरकाम ताको धनुष श्वेतहै पाकशासन इंद्र आपने आसनको चढ़िवे

को नृपार घोडाकियोहै उच्चैश्रवा हरिकी सेजनागरवेतहै हरि प्रिया लक्ष्मीजी तिनने नाकमें पहिरिवेको मोतीकरयो है भस्म अंग है ताको हर ने तिलक कियो है हरापार्वती तिनने हार कियो है सब जग को शिंगार है तीनहुंलोकको भूपितकरतहै जो कोई यश कहत है सो आछो लागत है १० ॥

(पुनः)देहद्युतिहलधरकीन्हींनिशिकरकरजगकरवा णीचारुविमलविहारहै । मुनिगणमनमानिद्विजनजनेऊ जानिशंखशंखपानिपानिसुखदअपारहै ॥ केशवदास सोविलास विलसैविलासिनीनसुखमुखमृदुहासउदयउ दारहै । राजादशरथसुतसुनौराजारामचन्द्ररावरोसुय शसबजगकोशृंगारहै ११ ॥

हलधर श्रीबलदेवजी तिनने आपनी देहकी द्युति करी है निशिकर चंद्रमाने करकिरण कियेहैं जगकर ब्रह्मा तिनने विमल निर्मल चारु सुंदर वाणी सरस्वती को करीहै सुनिग- णकेमन उज्ज्वलजानो औ जनेऊभी उज्ज्वलजानौ शंखपाणि नारायण तिनके पाणि हाथ तामें शंख विलास सहित जेवि- लासिनी स्त्री जासमय में नायकसों विलास करैहैं तासमयमें विशेष करिके लसैहै सोहैहै मुखसों मुखमें मृदुहासको उदय विलासिनी कैसी हे उदार है निपुण है विलास में प्रवीण है हेममें उदार नाम प्रवीणको औ दाताको औ बड़े को ११ ॥

कवित्त ॥ नारायणकीन्हीमनिउरअवदातगानिकम लाकीवाणीभनिशोभाशुभसारहै । केशवसुरभिकेशशा रदासुदेशवेशनारदकेउपदेशाविशदविचारहै ॥ शौनक ऋषीविशेखिसीसपसिखानिलेखि गंगाकीतरंगदेखिवि मलविहारहै । राजादशरथसुतसुनौराजारामचन्द्राव रोसयशसबजगकोशृंगारहै १२ ॥

श्रीरामचंद्रजी के सुयशको श्रीनारायण मणि कीन्हीं है उर छाती ताको अवदात गौरवर्ण जानिये मणिको छातीको एक रंग मिलैहै याते इनके मतमें नारायण श्वेत जानिये कौस्तुभ पीत है कोई और मणि लीजिये कमलाकी वीणा प्रसिद्ध नहीं इनके मतमें उज्ज्वल मणिकहौ किंवा कमलाकी जो वीणा सो वीणाके मधुर स्वरसी जो भनि कहिये ध्वनि शब्द वाणी सो उज्ज्वल है कहूं कमलाकी वाणी भनि ऐसो पाठहै शारदादिकहै आदि पदसों वचन भी लीजिये शौनक आदि जे वृद्ध वृद्ध विशेष ऋषिहैं तिनके शिरविषे शिखा है सोभी उज्ज्वल तुम्हारो यश है १२ ॥

(अथजरावर्णन)सवैया ॥ विलोकिशिरोरुहश्वेतसमे ततनूरुहकेशवयोंगुणगायो । उठेकिधौंआयुकिऔधि केअंकुरशूलकिसुःखसमूलनशायो ॥ लिख्योकिधौंरूप केपाणिपराजयरूपकोभूपकुरूपलिखायो । जरासरपंज रजीवजरयोकिजराजरकंबरसोंपहिरायो १३ ॥

शिरोरुह माथेके केश समेत तनूरुह शरीरके रोम तिनको श्वेत बिलोकिकै केशव कविने यातरह वाको गुण कह्योहै केश की उत्प्रेक्षा करत है केशव कवि किधौं शूलहै जासों मूलस-हित सुख नष्टभयोहै शूल यौवनके सुखको वेधिकरि निकरेहै किधौं रूपको जो भूपहै यौवन समय में श्रेष्ठरूपहै ताने कुरूप जो कोई भूपहै तासों रूपके पाणिसों पराजय लिखाईहै रूप को भूप हारयो यह अर्थ किधौं विधाताने जरानुढाई रूप जो है सरपंजरको पींजरा तामें जीवको जरयोहै रोक्योहै किधौं जरारूप जो जरकंवररूपा को वस्त्र जरनाम रूपाको सोनाको सो पहिरायोहै किंवा जराने ज्वररूप जो कंवलहै सो पहिरायो है वृद्धतामें ज्वरहोतहै जाको बहुत दिन ज्वररहै है सो श्वेत होय जात है १३ ॥

सवैया ॥ अभिरामसचिक्कणश्यामसुगन्धकेधाम हुतेजसुभायकके। प्रतिकूलभयेदुखशूलसबैकिधौंशाल शृंगारकेघायकके ॥ निजदूतअभूतजराकेकिधौंअफता लीजगजनुलायकके । सितकेशहियेयहिवेशलसेजनु शायकअंतकनायकके १४ ॥

जे अनुकूलथे केश ते प्रतिकूलभये विरुद्धभये जे नेत्रनिको आह्लादथे ते नेत्रनिको शूलभये ।किधौं शृंगारको जो कोई घातक मारणहारहै ताके शाल शस्त्र विशेष हैं शाल मत्स्य मारिवेको शस्त्र हैननानार्थमेंहै पूरवमें सरहथ कहतहैं जराके लायक योग्य अफतालीहै केको अन्वय जरासों किंवा के पाद पूरणार्थ जो आमिलके आगेजाय पहिले अमलकरै सो अफ- ताली कहावै १४ ॥

सवैया ॥ लसैशितलोमशरीरसबैकिजरायशरूपके पानीलिखायो।स्वरूपकोदेशउदासकीकीलनिकीलितकै किकुरूपनशायो ॥ जरैकिधौंकेशवव्याधिनिकीकिधौंओ धिकेअंकुरअन्तनपायो।जरासरपंजरजीवजरयोकिजरा जरकंबरसोंपहिरायो १५ ॥

सुंदररूपको देश ठिकाना जो था ताको उदास उद्वेगरूप जो कील मन्त्र तासों कीलिके बांधिके जैसे गांवकीलहै मंत्रसों सखगाड़ेहै नाहर उहां नहीं आवै रूपको नशायो नष्ट कियो कुरूप बसायो एसा भी पाठहै तहां जराने कुरूपको बसायोहै और अर्थ वैसेही व्याधिनिकी जरमूलहै किधौं आधि मनको दुःख ताको अंकुरहै सो कैसोहै जाको अंतनाम स्वरूप कोहै सो नहीं पायो नहीं जान्योहै किंवा अंत नाशकोहै सो जाको नहींपायोहै दिनदिनमेंबढ़ैहै किंवाजाको अंतनहींपायोहै१५॥

(अथपानिवर्णन) दोहा ॥ हरिवाहनाविधिहरजटाह

राहरदहरताल ॥ चंपकदीपकवीररससुरगुरुमधुसुरपाल १६ ॥

हरि वाहन गरुड़ हरा महादेवकीस्त्री पार्वती कहूं हरि भी पाठहै तहां भी पार्वती मधुमहुवा जानिये मधुकपांडुर रघुवंश में है याको अर्थ महुवा सो पीतकुच सुरपाल इंद्र याको अर्थ ऐसे भी केतन्योलोग बखानतहैं सुरदेवता औ पाल जो वस्तु-पालमें डारिये आंव पान इत्यादि सो पीतहैं याते भूमिकी तरह पालको रंग पीत है १६ ॥

दो० ॥ सुरगिरिभूगोरोचना गंधकगोधनमूत ॥ चक्रवाकमनाशिलसदा द्वापरवानरपूत १७ ॥

सुरगिरि सुमेरु भूकहिये भूमि अंकुर पीत निकरे है याते औ गोमूत्र मनःशिल हरताल की तरह होत है औ वानरको बच्चा १७ ॥

दो० ॥ कमलकोशकेशववसन केशरिकनकसभाग॥ सारोमुखचपलादिवस पीतरपीतपराग १८ ॥

श्रीकृष्णकेवस्त्र हे सभागकवि सारोमैनाको मुख १८ ॥

सवैया ॥ मंगलहीजुकरीरजनीविधियाहीतेमंगली नामधरयोहै । दूसरेदासिनिदेहसवाँरिउडायदईघनजा यवरयोहै ॥रोचनकोरचिकेतकीचंपकफूलमेंअंगसुवास भरयोहै । गौरीगुराईकोमैलमिलैकरहाटकके करहाटक रयोहै १९ ॥

मंगल शुभ ताहीकेलिये विधाताने रजनी हरदको बनाई है गौरीकी गुराई को मैलामिलाय कै विवाहादि में चढ़ायनो मंगली नाम धरयोहै फेरि गौरीकी गोराईके मैलसों दामिनी की देहरचीहै निकम्मी जानि उड़ायदई फेरि मैलसों गोरचन

को रचे औ केतकी चंपक फूलनमें अंगको सुवास भी धरयो है गोरीकी गोराईके मैलको निलायकरि हाटकसों ताको औ करहाटक के बीचमें होतहै जामें बीजरहतहै हाटकसे ले कर हाटक ऐसो भी पाठहै हाटकसों लैके करहाटकताई और भी जे पीतवस्तु के समूहहैं ताहि कह्योहै लै यह शब्द आरम्भ वाचकहै जैसे ब्राह्मणसों ले जितने वर्ण आये तिन्हैंहि दिये ऐसे जानिये १६ ॥

(अथकृष्णवर्ण) दो० ॥ विंध्यवृक्षआकाशअसिअ र्जुनखंजनसाँप ॥ नीलकंठकेकंठशनि व्यासविसासी पाप २० ॥

विंध्यपर्वत वृक्षतमालआदि असितरवारि औ साँप नील कंठ मोर किंवा महादेव तिनकोकंठ शनि शनैश्चर श्रीव्यास देव जी बिसासी विश्वास देकरि दगाकरै सो जानिये औ पातक २० ॥

दो० ॥ राकसअंगलँगूरमुख राहुछांहमदरोर ॥ रा मचन्द्रबलद्रोपदी सिंधुअसुरतमचोर २१ ॥

राहुग्रह औ छांह छाया मद मदिरा रोरदरिद्रता सूरदास जीको पद सुदामाको वर्णन। रोरके जोरते शोरधरणी कियो गयो द्विज द्वारिका पठायो इहां रोर दरिद्रकोलियो औ घन मेघ सिंधुसमुद्र की मूर्त्तिजोहै सो श्याम है ऐसे कहत हैं जल रूप होन किंतन्यों कहतहैं उरमार समुद्र कह्योहै तहां क्षीर समुद्र भेदकियोहै राकसअसुर अंधकार औ चोर ये सब कृ- ष्णवर्ण हैं २१ ॥

दो० ॥ जम्बूयमुनातैलतिल खलमनसरसिजचीर॥ भीलकरीवननरकमासि मृगमदकज्जलनीर २२॥

जम्बू जामुनि खलदुष्टको मन सरसिज नीलोत्पल औ चीर

चीड़ कहावतु हैं पैगूकी जाति लुगाई पहिरति है कज्जल नीर काजलको जल मसि पाछे कहीहै फेरि कज्जलनीरकह्यो के- जलनीर ऐसो कोईपढ़तहै ऐसोअर्थकरिये र ल एकहै जलनील सैवाल जानिये २२ ॥

दो० ॥ मधुपनिशाशृंगाररस कालीकन्याकोल ॥
अपयशऋक्षकलंककलि लोचनतारेलोल २३ ॥

मंत्रादिक सों मारणकेलिये करै सो कृत्या कोलसुवर औ लोचन के तारे औ लोल जो बहुततृष्णाकरै लोभी लोल चं- चलको नाम औ तृष्णाकरै ताको नाम २३ ॥

दो० ॥ मारगआगिनिकिसालनर लोभछोभदुखमो
ह ॥ बिरहयशोदागोपिका कोकिलमहिपीलोह २४ ॥

आगिकोपथ जहांआगिलागिजाय तहां कालोपरिजात है श्रीयशोदाजी को श्यामरंग है २४ ॥

दो० ॥ काँचकीचकचकामभल केकीकाककुरूप ॥
कलहक्षुद्रछलआदिदै कारेकृष्णस्वरूप २५ ॥

केकीमयूर और कुरूपजाको बुरोरूपहोय सोजानिये २५ ॥

कवित्त ॥ बैरिनकेबहुभांतिदेखतिहीलागिजातका
लिमाकमलमुखसबजगजानीहै । यतनअनेककरियद
पिजलभरिधोवतहूछूटतिनकेशवबखानीहै ॥ निजदल
जागैज्योतिपरदलदूनीहोति अचलाचलतियहअकहक
हानीहै । पूरणप्रतापदीपअंजनकीराजैरेखराजतश्रीरा
मचन्द्रपानिनिकृपानीहै २६ ॥

राजत श्रीरामचन्द्र पानिनिकृपानीहै पानिनिकोअर्थ पानि जामें रहै सो पानोन ऐसी कृपानी तरवारि श्रीरामचन्द्र की राजतिहै कहूं पानिमें कृपानी ऐसो भी पाट है कैसीतर-

वारिहै जाहि तरवारिके देखनेहींकरि वैरिनके जे कमलसमान मुखहैं तामें वहुततरहसों कालिमा स्याही लागिजातिहै औ रणमेंजीतिके कमलसों प्रफुल्लित मुखहोयरह्योहै सवपदनि की जो ध्वनिकाढ़िये तो ग्रंथ वहुतवाढ़ै तरवारि जव काढ़तहैं तव निजदलमें ज्योति जागतिहै परदलमें शत्रु भूपतिकीरत नग्रेचपेपरे हैं तव प्रतिविम्वसों दूनी होति है अचला भूमि लक्षणाकरि अचलावासी शत्रु सो चलायमानहोत हैं भाजत हैं अचलाचलै यह विरोधाभासहै कहानी कथा सो अकह है कहा नहींजात फेरि कैसीहै पूरण जो प्रताप सोईहैदीप ताके अंजन की रेखा राजतिहै तरवार अंजन श्यामकहे २६ ॥

कवित्त ॥ हंसनिकेअवतंसरचेरंचकीचकरिसुधासों सुधारेमठकाँचकेकलसनसों । गंगाजूकेअंगसंगयमुनात रंगवलदेवकेवदनरस्योवारुणीकेरससों ॥ केशवकपा लीकंठकालकूटकटजैसे असलकमलअलिसोहैशशिस ससों । राजारामचन्द्रजूकेत्रासवशभारेभूपभूमिछोड़िभा गफिरेऐसेअपयससों २७ ॥

राजा रामचन्द्रजी के त्रास के वशसों भारे वड़ेरूप भूमि छांड़े भागे फिरतहैं ऐसेको अर्थ विनाकारण लराई नहींभई अयश के डरसों जो रणसों भाजैंगे तो वड़ो अपयश होयगो तासों पहिले भाजेफिरतहैं ऐसे ह्वैं अयशलागै जैसे हंसनिके अवतंस माथेपर मोरकीसी शिखा उज्ज्वलहोति है सो जैसे किंवा हंसनिकेअवतंस सरदार राजहंस सो जैसे थोरेकीचसों रचिजाय अर्थ रँगिजाय हंसश्वेत कीचश्याम मठ देवमंदिर आदि सो जैसे सुधा चूना सों सुधारे औ कांचके कलश सो ऊपर धरे ऐसे सुधारे सुधाश्वेत कांच श्याम श्रीगंगाजीके अंग श्वेत श्रीयमुनाजीकी तरंग श्याम वलदेवजूको मुख गौर वा- रुणी श्याम कपाली शिव तिनके कंठविषे कूटजाको स्वादु है

ऐसो कालकूट विष जैसे केशव कपाली कंठकूल कालकूट जेसे यहभी पाठहै तहां कूलको अर्थनिकट कंठश्वेत विषश्याम कमल पुण्डरीक तामें अलि इहां भी श्वेत श्यामहै शशिजेसे शश सों सोहत है मृगसों सोहतहै इहां लक्षणाकरि सोहे को अर्थकुरूप लागैहै ऐसे अपयश सों हमभी कुरूप लागेंगे २७॥

(अथरक्तवर्णन) दो० ॥ इन्द्रगोपखद्योतकुज केसरिकुसुमविशेषि ॥ मदिरागजमुखविंदुरवि ताँबोतक्षक लेषि २८ ॥

इन्द्रगोप वीरबधूटी खद्योतको नाम अगिया पटव्यजना जुगुनू जीगन पूरुबमें भगयोगना भी कहतेहैं कुजमंगल केसरि जेहैं कुसुम विशेष बारुणी श्याम कही है मदिरा तासों कछु भिन्न कही है किंवा हाथीके मुखपर सों जो विन्दु चुवैहै सो जो मदिरा गजमद यह अर्थ कहूं केशव गजमुख विन्दु यह भी पाठहै उदय समय रवि औ तांबो औ तक्षक नाग २८ ॥

दो० ॥ रसनाअधरदृगंतपल कुक्कुटशिखासमान ॥ माणिकसारससीयशुक बानरवदनप्रमान २९ ॥

पलमांस कुक्कुट मुरगा ताकी शिखा समान ये सब वरो बरि २९ ॥

दो० ॥ कोकिलचारुचकोरपिक पारावतनखनैन । चुंचचरणकलहंसके पकीकूंदुरूऐन ३० ॥

पिक पपीहा पारावत कबूतर इन सबके नख औ नैनलाल कुंदुरू फल होतहै ताकी तरह जो होय सो लाल ऐनतरहको भी कहतहैं विम्बफल आदि जानिये ३० ॥

दो० ॥ जपाकुसुमदाड़िमकुसुम किंशुककंजअशोक ॥ पावकपल्लववीटिका रंगरुचिरसबलोक ३१ ॥

जपा कुसुमको गुड़हर ओऔंग नामहे किंशुक पलाशको फूल औ अशोकको फूल बीटिका पानकी बीरी लोकलोग ३१॥

दो० ॥ रातोचन्दनरौद्ररस क्षत्रियधर्ममजीठ॥ अरुणमहावररुधिरनख गेरूसंध्या ईठ ३२ ॥

रक्त चन्दन औ रुधिर औ नख लालहैं ईठ मित्र ३२ ॥

सवैया॥ फूलेपलासविलासथलीबहुकेशवदासहुलासनथोरे । शेपअशेपमुखानलकीजनुज्वालविशालचलीदिवओरे ॥ किंशुकश्रीशुकतुंडनकीरुचिराचेरसातलसंचितचोरे। चंचुनिचापिचहूंदिशिडोलतचारुचकोरअंगारनिभोरे ३३ ॥

उद्दीपन विभावहै सो सुनावैहैं नायकविना नहीं रहिसकैंगी रुचि उपजायवेके लिये सखीवचन नायकासों हे बहु हे बहू थोरे हुलास लों नहीं बहुत हुलाससों फूले हैं छोटे बड़े वृक्ष औ छोटी बड़ी डार सब फूलीहैं किंवा बहुतजे तेरी विलास करिवेकी थली ठिकाना हैं तहां किंवा विलास थलीमें बहुतजे पलाशके वृक्ष ते फूलेहैं ताकी उत्प्रेक्षा करतहैं शेपके अशेष मुख सब मुखते अनलकी ज्वाला दिव आकाशकी ओर चली मानों किंशुक जेहैं ते रसातलमें पृथ्वी तलमें चित्तको चोरतहैं देखते उनमें मन लगिजातहै कैसेहैं श्रीशोभायुक्त जे शुक तुण्ड शुकचंचु ताकी जो रुचि क्रांति तेसे राचेहैं विधानानि रँगेहैं किंवा किंशुककी जो शोभा सो शुक तुण्डनिकी क्रांतिमांहैं ताहि किंशुकको चंचुसों चापिकै अँगारके भोरे चकोर डोलत हैं किंशुक आदि लाल जानिये ३३ ॥

(अथधूम्रवर्णन) दो० ॥ काककंठखरमूषिका ग्रहगोधानीनिभूरि॥ करभकपोतनिआदिहैं धूमधूमरीधूरि३४

मूषिका मूसा ग्रहगोधा छपकली पूरुवमें विल्लुवातिया कहत हैं बहुतकहे करभऊंट औ धूरि धूमरीहै धूम्रहै ३४ ॥

सवैया ॥ राघवकीचतुरंगचमूचशधूरिउठीजलहूथलछाई । मानोंप्रतापहुताशनधूमसुकेशवदासअकाशनमाई ॥ मेटिकैपंचप्रभूतकिधौंविधिरेणुमयीनवरीतिचलाई । दुःखनिवेदनकोभवभारकोभूमिकिधौंसुरलोकसिधाई ३५ ॥

श्रीरामचन्द्रजूकी चमू सेना कैसीहै चतुरंगहै जामें चारि अंगहैं हाथी रथ घोड़ा प्यादा सो चतुरंगकी उत्प्रेक्षा प्रताप सो हुताशन आगि ताकोधूमहै मानों नमाई नहीं अमात है किधौं बिधाताने पांच जे प्रभूत हैं पृथ्वी जल तेज वायु आकाश ताको मेटिकै रेणु भूरिमयी रचनाकरी यह नई तरह चलाई फेरि उत्प्रेक्षा करतहैं कवि तर्ककरत हैं भव संसार के भारको दुखकहिबेको भूमि सुरलोक गईहै किंवा भव महादेव सों भारके दुखकहिबेको धूरि धूम धूम्र जानिये ३५ ॥

(अथनीलबर्णन) दो० ॥ दूवबंशकुवलयनलिन अनिलव्योमतृणबाल ॥ मरकतमणिहयसूरके नीलवर्णसेबाल ३६ ॥

कुवलय नीलकमल नलिन कुमुदको भेदहै मरकत मणि नीलम औ सूर्यके घोड़ाभी नील जानिये ३६ ॥

(यथा) सवैया ॥ कंठदुकूलसुओरदुहूंउरयोंउरमेंवलकैबलदाई । केशवसूरजअंशनिसंडिमनोंयमुनाजलधारधँसाई ॥ शंकरशैलशिलातलमध्यकिधौंशुककीअवलीफिरिआई । नारदबुद्धिविशारदहीयकिधौंतुलसीदलमालसुहाई ३७ ॥

और लये कहे वलदाई को अर्थ वरदाई वरकेदेनवारे जो वलदेवजी हैं तिनके कंठमें दुकूल नील जो वस्त्र सो ओर दुहूं वामभागसें दक्षिण भागमें उर छातीविषे यों यातरह उर में लटकैंहै वलदेवजी के अंगकी कांति वस्त्र में परीहै ताकी उत्प्रेक्षा श्रीयमुनाजीने सूर्य की किरणनसों भूषितकरिकै मानों अपने जलकी धारा धँसाई है शंकर शैल कैलास तैसे श्री वलदेवजी ताकी शिलासमान वक्षस्थल तापै शुककी अवलीकहे पंक्तिहै श्रीनारदजी जे बुद्धि विशारद प्रवीण किंवा काहूसों बुद्धि विशारद संवोधन तिनके हृदयमें मानों श्रीतुलसीजीके दलनकी मालाहै ३७ ॥

(अथमिश्रितश्वेतकृष्णशब्दकथन) दो० ॥ सिंहकृष्णहरिशब्दगनि चन्दविष्णुविधुदेख ॥ अभ्रकधातुअकाशपुनि कृष्णश्यामसितलेख ३८ ॥

हरि शब्द करि सिंह श्वेत है ताको जानिये श्रीकृष्णचंद्र श्यामहैं तिन्हैं जानिये विधु शब्दसों चंद्रमा श्वेत औ विष्णु श्याम जानिये अभ्रक शब्द करि धातु जोहै अभ्रक सो श्वेत जानिये अकाश श्याम कृष्ण शब्द को योग आकाशसों कीजिये ऐसे श्याम औ श्वेत जानौं किंवा कृष्ण शब्द करिकै श्याम श्वेत जोहै वस्तु ताको जानों जैसे कृष्णपक्ष दोयघरी चारिघरी राति श्याम होय तौभी कृष्णपक्षकहावै जैसे नीला घोड़ा थोड़ाभी नीलहोय और श्वेतहोय तौभीनीलाकहावै ३८

दो० ॥ घनकपूरघनमेघअरु नागराजगजशेष ॥ पयोराशिकहिसिंधुसो अरुक्षितिक्षीरहिलेष ३९ ॥

कपूरको नाम घनसारहै घन नहीं घनसों कपूरलियो जैसे सत्याकहे सत्यभामाको बोधहोत है घन कपूर श्वेत घनमेघ श्याम नागराज हाथी श्याम शेषनाग श्वेतहैं इहां क्रमते श्वेत श्याम को भंगभयो पयोराशि नाम समुद्रको मूर्त्ति समुद्र

की श्याम है जल उज्ज्वल है कोई कहत हैं कि जब समुद्रपै दूरिते दृष्टिजातिहै तब समुद्र श्याम दृष्टि आवत है आकाश की तरह जल तौ उज्ज्वल है औ पृथ्वी विपे बहुत क्षीर दूध वाची किंवा क्षीर समुद्र वाची सो श्वेत है ३९ ॥

दो० ॥ राहुसिंहसिंहीजभनि हरिवलभद्रअनंत ॥
अर्जुनकहियेश्वेतसो अरुपारथवलवंत ४० ॥

सिंही नाम राहुको सो श्याम औ सिंहको रंग सो श्वेत अनंत नाम हरिको सो श्याम वलभद्रजी गौर किंवा हरि नाम वलभद्रको औ अनंत भगवान् पारथ श्याम हैं ४० ॥

दो० ॥ हरिगजसुरगजसमुझिये हरिहरिगजगज
जानि॥कोकिलसोंकलकंठकहि अरुकलहंसवखानि ४१

हरि गज शब्द करि हरि इंद्र तिनको गज ऐरावत जानिये सो श्वेतहै फेरि हरि गज शब्द को विभागकरि कहत हैं हरि शब्द सों हरि इंद्र लियो श्वेत गज शब्द सों गज हाथी जानौं सो श्याम है कलकंठ नाम कोकिल को औ हंस को ४१ ॥

दो० ॥ कृष्णनदीवरशब्दसों गंगासिंधुवखानि ॥
नीरदनिकसेदांतसों अरुजुनीरकोदानि ४२ ॥

कृष्णनदिवर शब्दसों श्रीगंगाजी नामजानिये अर्थ श्रीकृष्णजी नदीहै सो कैसीहै वर श्रेष्ठहै विष्णुपदी नामहै औ कृष्णनदि वर समुद्रको भी नामहै कृष्ण नारायण तिनकी नदी गंगा तिनके वरपति सरित्पति समुद्रको नाम निकसे दांत होतहै ताको नाम नीरद नीको अर्थ निकसे रदको अर्थ दांत औ नीर जल ताको जोदेइ सो नीरद मेघ जानिये दांतश्वेत मेघ श्याम ४२ ॥

(अथश्वेतपीतशब्दकथन) दो० ॥ शिवविरंचिसों

शम्भुभनि रजतरजतअरुहेम ॥ स्वर्णशरभसोंकहतहैं अष्टापदकरिनेम ४३ ॥

शंभु नाम शिवको कहत हैं सो श्वेत शंभु ब्रह्मा सो पीत रजतनाम रूपाको सो श्वेत हेममें सोनाको भी नाम रजत सो पीत अष्टापदनाम सोनाकोहै सो पीत शरभ कोई जनावर सो श्वेतहै शरभ स्वर्ण सो ऐसो भी पाठहै वादिये नदि तो श्वेत पीतको क्रम भंग होत है ४३ ॥

दो० ॥ सोमस्वर्णकहिचन्द्रकल धौतरजतअरुहेम ॥ तारकूटरूपोरुचिर पीतरकहिकरिप्रेम ४४ ॥

चंद्र नाम चंद्रमाको औ सोनाको कलधौत नाम रूपाको हेम सोनाको तारकूट नाम रूपाको रुचिर सुंदर पीतरको प्रेमकरिकै तू कहि ४४ ॥

(अथश्वेतरक्तशब्दकथन) दो० ॥ श्वेतवस्तुशुचि अग्निशुचि सूरसोमहरिहोय ॥ पुष्करतीरथसोंकहैं पंकजसोंसवकोय ४५ ॥

शुचि नाम श्वेत वस्तुको औ अग्नि अरुण सो हरि नाम सूर्यको अरुण सोम चंद्र सो श्वेत पुष्कर नाम तीर्थ को सो श्वेत पंकज लाल ४५ ॥

दो० ॥ हंसहंसरविवर्णिये अर्कफटिकरविमान ॥ अब्जशंखसरसिजदुवो कमलकमलजलजान ४६ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांवर्णालंकारवर्णनोनाम पंचमप्रभावः ५ ॥

हंस पक्षी सो श्वेत औ हंस सूर्य सो अरुण अर्क नाम फटिकको सो श्वेत औ रवि सो अरुण अब्ज नाम शंखको

सो श्वेत औ सरसिज सो अरुण कमल नाम पंकजको औ जलको ४६ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायां कविप्रियाटीकायांपंचमप्रभावव्याख्या ५ ॥

(अथवर्ण्यवर्णन) दो० ॥ सम्पूरण १ आवर्त २ औ कुटिल ३ त्रिकोन ४ सुवृत्त ५ ॥ तीक्षण ६ गुरु ७ कोमल ८ कठिन ९ निश्चल १० चंचल ११ चित्त १२ सुखद १३ दुखद १४ अरुमंदगति १५ शीतल १६ तप्त १७ स्वरूप १८ क्रूरस्वर १९ सुस्वर २० मधुर २१ अबल २२ बलिष्ठ २३ कुरूप । २ ॥ सत्य २४ झूठ २५ मंडल २६ बरणि अगति २७ सदागति २८ जानि ॥ अष्टबिंशबिधिमेंकहे वर्ण्यअनेकवखानि ३ ॥ (अथसम्पूर्णवर्णन) दो० ॥ इतनेसम्पूरणसदा वरणेकेशवदास ॥ अम्बुजआननआरसी सन्तनप्रेमप्रकास ४ ॥

पीछे पंचम प्रभावमें कहि आये सामान्यालंकार के चारि प्रकार एक वर्णालंकार जामें वर्ण कहिये रंग लीजिये अरु अवर्ण जाकी आकृतिको ग्रहण रंगको ग्रहण नहीं अट्ठाईस कहैंगे संपूरण इत्यादि तीन दोहामें नाम हैं १ २ । ३ इतने इति प्रेमको प्रकाश ४ ॥

(यथा) कवित्त ॥ हरिकरमंडनसकलदुखखंडनमुकुर महिमंडलकेकहतअखंडमति । परमसुवासचोपियूषमंनिवासपरिपूरणप्रकासकेशौदासभूअकासगति ॥ वदनमदनकेसेश्रीजूकेसदनजाहिसोदरसुभोदरदिनेशजूकेमित्र अति । सीताजूकेमुखसुखमाकीउपमाकोसखिकोमलन कमलअमलनरजनिपति ५ ॥

कमल औ चन्द्रमासों श्लेष श्रीरामचन्द्रजीको वचन सखी सों किंवा सखी वचन सखीसों हे सखि सीताजी के मुख की सुखमा जो है अतिशोभा ताकी उपमाको कोमल कमल नहीं औ अमल रजनिपति चन्द्रमा नहीं कमल कैसोहै हरिनारायण तिनके करको मण्डन भूषण है फेरि कैसोहै सकल दुख खण्डन सकल संपूर्ण लोगनि के दुखको खण्डन करनवारो है देखे नैंघ आनन्द होत है मुकुर कलीजाकी फूले कमलकी तो कहांनाईं बड़ाईकरें सोभी उपमा लायक नहीं हेम अनेकार्थ में कोरकादर्शयोरपि याको अर्थ मुकुरनाम कोरककली को औ आदर्श दर्पण को यावातको अखण्ड मति सम्पूर्ण जाकी बुद्धिहै अर्थात् बड़ीबुद्धि है जाकी यह अर्थ सो कहतहै फेरि कमल कैसोहै परम उत्कृष्ट सुवास गन्धहै जाको हेम में पीयूषनाम जलको भी पीयूष जलमें निवास है जाको परिपूर्ण जाको प्रकाश है संपूर्ण फूलि रह्यो है तौभी मुखके समान नहीं फेरि कैसोहै भू आकाश में गति है जाकी सबठौर रहैहै सब आदर करैहै आकाश गंगाके कमलसुरवधू राखती है औ भगवान्के हाथमेंहै मदन कामके वदन समान है श्री लक्ष्मीजीको घर यदि जोभीहै यामें कछु न्यूनता मति जानौं लक्ष्मीजीको सोदर भाईहै जलसों उपज्योहै याते औ शुभोदर है आछो जाको उदर कहिये मध्य है औ दिनेश सूर्य ताको अति मित्र है अथ रजनीपति पक्ष रजनीपति चन्द्रमा कैसोहै हरिकर मण्डन हरि सूर्य तिनके किरण सोईहैं मण्डन भूषण जाको चन्द्रमामें सूर्यके किरणको प्रकाशहै यह पुराण मेंहै किंवा हरि सूर्यके करको मण्डन भूषण करत है शोभित करत है चन्द्रमा में सूर्यकी किरणें आयते शोभा पावती हैं कवि सबवर्णन हैं फेरि चन्द्रमा कैसोहै सकलहै कला सोरहों अंश ताहि सहितहै लोगनिको सूर्यके तापसों भयोहै जो दुख ताको खण्डनहै दूरकरनवारो है किंवा सकल महादेव जिन

में चन्द्रमाकी कला रहति है तिनको जोहै दुख अर्थात् विष की अग्निसों गरमी ताको दूरिकरत है औ नहिमण्डल को मुकुर दर्पण है संपूर्ण पृथ्वीकी छाया चन्द्रमा में परनिहै यह पुराण प्रसिद्ध ज्योतिष में सूर्यग्रहण चन्द्रमासों होत है चन्द्र ग्रहण भूमिकी छायासों होतहै यह ग्रहलाघव बुद्धिमान कहत हैं परमनाम नानार्थमें परमेश्वरकोहै नारायणकेभी तीननेत्र हैं भुजंगेशतुल्यायचाग्न्यर्कचन्द्रात्रिनेत्रायतस्मैनतास्मोनता स्मः परम नारायण तामें सुन्दर है वास जाको पुनि पीयूष अमृत ताको निवास है फेरि जाको परिपूरण प्रकाशहै कैसो है प्रकाश जाकी भूमिमें आकाशमें गति है किंवा चन्द्र कैसो है भूमें जलादिकमें प्रतिबिम्ब करिगतिहै जाकी वदन मदन कैसे मदन के समान जाको वदन है यदि जो लक्ष्मीजी को सोदरभाईभी है तौभी लक्ष्मीजीको मदकहिये स्वभाव चंच- लता कहूंरहै कहूं नहींरहै इत्यादि यामें नहीं है जैसो याको स्वभाव है तैसोईहै बड़े छोटेके घरमें एकतरह प्रकाश करैहै किंवा श्रीजीको सोदरभाई है लक्ष्मीजी जलसों उत्पन्नभई हैं औ लक्ष्मीजीको सदनघरहै यदि जो ऐसोभीहै तौभी उपमा लायकनहीं यादिको अन्वय सवठौर है यदि जो शुभोदरभी है सुन्दर भाकहिये कांति प्रकाश जाके उदर मध्यमें है तौभी उपमा लायकनहीं चन्द्रमा के मध्यमें श्यामताहै याते शुभो- दर जो दिनेशजी ताको अतिमित्र है आपनो तेज सूर्य यामें राखत हैं याते अतिमित्रहै ५ ॥

(अथमण्डलवर्णन) दो० ॥ केशवमण्डलमुद्रिका व लयाबलयवखानि ॥ आलवालपरिवेषरवि मण्डलमण्ड लजानि ६ ॥

चहूं ओर गोलहोय सो मंडल आवर्त को भेद वलयाचूरी वलय पुरुषके हाथमें रहै है कड़ा कहिये आल वाल कियारी

परि वेष परिधि सूर्य चंद्रमाको लागतहै औ रवि मंडल रत-नाको मंडल गोल जानों ६ ॥

कवित्त ॥ मणिमयआलवालथलजजलजरविमंडल मेंजैसेमतिमोहैकविताकी ॥ जैसेसविशेषपरिवेषमेंअशेषरेखशोभितसुवेषसोमसीमासुखदानिकी ॥ जैसेबंकलोचनिकलितकरकंकननि वलिततललितद्युतिप्रगटप्रभानिकी । केशौदासऐसेराजेरासमेंरसिकलालआसपासमंडलीविराजेगोपिकानिकी ७ ॥

आसपास गोपिनकी मंडली बिराजतिहै तहां रासमेंरसिकलाल ऐसे राजत हैं शोभत हैं कैसे शोभत हैं गोपीजन के जो मंडल सोई मणिमय आलवाल कियारी तामें जैसे थलजवृक्ष तमालको वृक्ष जानिये सोहत है तैसो शोभत हैं फेरि रविमंडल में जैसे जलज कमल शोभतहे कविता जोहै ताकी मतिको मोहति है ऐसो रूप वन्यो है कविता कविकी सरस्वती सो नहीं वरणिसकेहै किंवा मणिमय आलवालमें थलज जो जलजस्थल कमल जैसे सोहतहै रवि सूर्य जैसे अपने मंडल में सोहतहैं तैसे सोहतहै सविशेष अशेष रेख जो परिवेष तामें जैसे सुवेष सोम शोभत है याको अर्थ सविशेषको अर्थ सदाको नहीं शरदको जो अशेष रेख परिवेष अशेष संपूर्णहै रेखाजामें कोई ओर खंडित नहीं होय ऐसो जो परिवेष मंडल तामें जैसे सुवेष स्वच्छ कलाकरि पूर्ण सोमचंद्रमा जैसे सोहत हैं तैसे शोभत भये सुखदानकी सीमा श्रीकृष्ण किंवा चंद्रमाको विशेषण किंवा शरद को जो परिवेष तामें अशेष रेख जो सोम अशेष संपूर्ण है रेखा कला जाकी रेखा कलाको भी कहत हैं सो जैसे शोभत हैं चंद्रमा कैसोहै सुवेष है सुंदर जाको वेष स्थान है क्षीर समुद्र फेरि वंक लोचनी नायका के कर जैसे कंकणनिसों कलित वेष्टितहोय तैसे वंक

लोचनि कैसी है प्रगट जो प्रभा तेज ताकी जो ललित सुंदर द्युति शोभा तासों वलित युक्त है कलित वलित को जहां जैसो अर्थ लागै तहां तैसो कीजिये अनेकार्थ शब्द है किंवा जवाहिर लागे कंकणको विशेषण कीजिये आलवाल मंडल आदि जानिये ७ ॥

(अथआवर्तवर्णन) दो० ॥ येआवर्तवखानिये केश वदासस्रुजान ॥ चक्रीचक्रअलातअरु आतपत्रखर सान ८ ॥

लकरी बारिकै फेरत हैं सो अलात आतपत्रछत्र ८ ॥

कबित्त ॥ दुहूंरुखमुखमानौंपलटनजानीजातदेखिकै अलातजातजोतिहोतिमन्दलाजिं । केशौदासकुशलकु लालचक्रचक्रमन चातुरीचितैकैचारुआतुरीचलतभा जि ॥ चन्दजूकेचहूंकोदवेषपरिवेषकेसोदेखतहीरहियेन कहियेबचनसाजि । धापछाँड़िआपनिधिजानिदिशिदि शिरघुनाथजूकेछत्रतरभ्रमतभ्रमीनवाजि ९ ॥

रुख ओर पलट फिरिवो अलातसों जात उत्पन्न जो है ज्योति प्रभा सो लाजिकै मंद होतिहै कुशल आछो कुलाल कुम्हार के चक्रको चक्रमन फिरिवो ताकी जो चातुरी है चारु अश्वकी गति देखिकै आतुरी हरवरायकै भाजिचलति है वेष परिवेषको सो मंडलकी तरह धाप दौरिवेकी टौरना- को छांड़िकै दिशा दिशा में आपनिधि समुद्र दौरिवेकी टौर थोरी याते भ्रमीन भ्रमन शील अलात आदि आवर्त परि- वेषको मंडल में कह्यो है इहां आवर्त में कह्यो ऐसो अर्थ श्री रामचंद्रजी के चहूंकोद चहूं तरफ परिवेषको सो वेष देखत रहिये दर्शनीयहै पै वचनसाजि वचनवनायकै बरोबरि नहीं

कहिये परिवेष मंडलहै परिवेष मंडलकोलक्षण किधौं चाहिये बीच नहीं प्रत्यक्ष जानिपरै ९ ॥

(अथकुटिलवर्णन) दो० ॥ अलकअलिकभ्रूकुंचि ता किंशुकशुकसुखलेपि ॥ अहिकटाक्षधनुबीजुरी कंक णभग्नाविशेपि १० ॥

अलक ललाट कुंचितामोक्ष भग्न फूटयो कंकण १० ॥

दो० ॥ बालचंद्रिकाबालशशि हरिनखशूकरदन्त ॥ कुटिलादिकवेवर्णिये कपटीकुटिलअनन्त ११ ॥

हरिनख नाहरके नख उदारकपटी अनंत कुटिलहै जाको अंत नहीं पाइये किंवा कुटिल वस्तु अनंत हैं ११ ॥

(यथा) सवैया ॥ भोरजगीवृषभानसुताअलसीवि लसीनिशिकुंजविहारी । केशवपोंछतिअंचलओरनिपी कलुकीकगईमिटिकारी ॥वंकलगेकुचबीचनखक्षतदेखि भईहगदूनीलजारी । मानौंवियोगवराहहन्योयुगशैल कीसंधिनिइंगवैडारी १२ ॥

नायकने नेत्र चुंबनकियेहै ताके अंचलको जो छोराकिना रा तासों पीक पोंछनिहै कारी काजरकी रेखा मिटिगई सखी मन जानैगी यानि नायक पास सोई है एक लाज याते भई नखक्षत देखि दूनीलज्जितभई इंगवै शूकरको दांत नखक्षत शूकरको दांत टूटा १२ ॥

(अथत्रिकोणवर्णन) दो० ॥ शकटशिंगारेवजूहल कुचकेननिहारि ॥ केशवदासत्रिकोणसहि पावककुण्ड विचारि १३ ॥

शकट गाड़ा महीं पृथ्वी हलसें अग्निकुंड विशेप १३ ॥

(यथा) कवित्त ॥ लोचनत्रिलोचनकेकेशवविलोकि विधिपावककेकुंडसीत्रिकोणकीनीधरणी । शोधीहैपृथुधा रिपृथुपरमपुनीतनृप करिकरिपूरणदशहूंदिशिकरणी ॥ ज्वालासोजगततजगमगतसुभगमेरु जाकीज्योतिहोति लोकलोकमनहरणी । थिरचरजीवहविहोमियतयुगयुग होताहोतकालनयुगतिजातिवरणी १४ ॥

विधिने शिवके नेत्र देखिकै नेत्रकी आकृति पावकके कुंड सी पावकको कुंडहै मानौं ऐसी त्रिकोण धरणीकीहै सीको अर्थ मानौं शिवको अनादि ठहराये यज्ञवर्णत हैं जहां यज्ञकरतहैं तहां पृथ्वीशोधतहैं पृथुराजाने शोधी है सुमेरु सो ज्वाला सो जगतमेंजगमगातहै कालहोता शिवकेनेत्रआदित्रिकोण १४॥

(अथसुवृत्तवर्णन) दो० ॥ वृत्तवेलफलिगुच्छअरु ककुदसाधुकेअंग ॥ कुंभिकुंभकुचअंडमनि कंदुककलश सुरंग १५ ॥

वृत्तगोलबस्तु चौंड़ीनहीं गुच्छाफूल के ककुदरूप के कांधा पर रहत है साधु सुन्दरताके अंग भुज औ जंघा कुंभी हाथी ताको कुम्भस्थल अण्ड ब्रह्माण्ड किंवा अण्डा औ मणिकं- दुक गेंद १५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ परमप्रवीणअतिकोमलकृपालुनेरे उरतेउदितनितचितहितकारीहै । केशौरायकीसौंआनि सुन्दरउदारशुभसलजसुशीलविधिनूरतिसुधारीहै ॥ का हूसोंनजानैंहँसिबोलनिबिलोकिजानें कंचुकीसहितसाधु सूधोवैसवारीहै । ऐसेदूकुचनिसकुचतिनसकतिनृभिह रिहियहरनप्रकृतिकीनिपारीहै १६ ॥

सखीबचन नायकासों ऐसे तेरे कुचनिसों मैं संकोच सों

नहींपूछिसकतिहौं आगेस्पष्ट हे परमप्रवीण नायका हम जो कछु वक्रवचनकहतिहैं ताको तू समुझतिहै नायक याहिदेखि आसक्तभयोहै तासों मिलायो चाहतिहै किंवा मानको अव-शेष है ताहि छुड़ायो चाहतिहै नायक तोहींसों आसक्त है यह अर्थ कुच तेरे कोमल कृपालु हृदय ते उदित कंचुकी सहित कंचुकी चोली ताहि सहित सदा रहतहैं अर्थ यह मुखमूंदे रहतहैं हँसे बोले देखे क्योंकरिकै नायकासों कहतिहै तू कैसी है सूधीहै बहुत तामें कुटिलतानाहीं फेरि तूकैसीहै वैसवारी है वयसनाम हेम में यौवनकोहै वैसवारीको अर्थ युवतीवारी वैसवारी को अर्थ जो बालअवस्था कहिये तो आगे उदार बड़ेकुच नहींबनें किंवा सब कुचही को विशेषण चित हित-कारी आदिपदवारिये कुचगोलवरणे १६ ॥

(अथतीक्षणगुरुवर्णन) दो० ॥ नखकटाक्षशरदुर्वच न शैलादिकखरजानि ॥ कुचनितम्बगुणलाजमति रति अतिगुरुकरिमानि १७ ॥

दुर्वचन कटुवचन शेल वरछी आदि छुरी कटारी जानिये सरतीक्षण आधे दोहा में गुरुवड़ेगुणको औ लाज को ऐसे मतिरातिप्रीति १७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ सैंहथीहथ्यारऐनअन्यारेअनेकका मशरहूतेंखरेखलवचनविशेखिये । चोटनवचतओटकि येहूकपाटकोटभौनभोहरेहूभारेभयअवरेखिये ॥ केशौदा समंत्रगदयंत्रऊनप्रति पक्षरक्षलक्षलक्षवज्ररक्षकनलेखि ये । भेदियतमर्मवर्मऊपरकसेईरहेंपरिघनीघायलनिघा येंपैनदेखिये १८ ॥

सैंहथी वरछी जो हथ्यार सो ऐनएको अर्थ एजो खल के वचन सो न कहिये नहींहैं किंवा सैंहथी वरछी औ और जे

हथियार कटारी आदि अन्यारे अनीवारे जाके तीक्षण अग्रभाग हैं सो ए नहींहैं वाको घाव तौ देखिवेमें आवतहै किंवा काम शरहूते खरे अतिअन्यारे अति अनीवारे हैं याते खल दुष्टके वचन विशेष करिये और सामान्यहैं भौंहरा भूमिखोदि घरवनावै सो भौनमें भौंहरामें कोटिकपाटकी ओटकरै मंत्र औ यंत्र औगदकहिये पाछनादैकै औषधि लगावै औ तंत्र तोटका पूरुबमें टोटकरम कहतहैं एभी खलके वचनके प्रतिपक्ष शत्रुहोयकै रक्षा नहींकरै है लाखलाख वज्र जासों रक्षा नहींकरिसकैहै किंवा खलके वचनको जो लक्ष निशाना भयो है जापै खल के वचन चलत हैं ताको लाखवज्र रक्षक नहीं गनिये जो अंगपीड़ाको नहींसहिसकै सो मर्म ताको भेदै है वर्मबख्तर ऊपर कस्यो परयो रहतहै घनी वहुतपीड़ा इहांसे खलवचन तीक्षण १८ ॥

(अथगुरुलाज) सवैया ॥ पहिलेतजिआरसआर
सीदेखिघरीकघस्योघनसारहिलै । पुनिपोंछिगुलावति
लोंछिफुलेलअंगौछेमेंआछेअंगोछनिकै ॥ कहिकेशव
मेदजवादिसोंमांजिइतेपरआंजेमेंआंजनदै।वहुरयोदुरि
देखौंतौदेखौंकहासखिलाजतौलोचनलागियेहै १९ ॥

घनसार कपूर घनाघसे फुलेलसों तिलौंछि थोरा लगाय चीकनेकरै तिलौंछेकी भाषा पूरुव में तेल उसकी सुगन्ध की दोयजाति एक मेदकस्तूरी आदि जवादि केसरि अतरआदि तासों मांजे हेसखि पहिलेमैं देख्यों आलस्यमें एक तो प्रथम दर्शन औ शृंगारभी अस्तव्यस्ततासों भई लाज वहुरो फेरि दुरिकै छपिकै देख्यों पर ऐसे देखिवे सों कहादेखों लाज तो लोचन में लागिये है नायक भी देखै है याते लाज इहांलाज को गुरुवरणी किंवा नायक नहींदेखै है तौभी मोहिं देखतकै लाजलागतिहै याते लाजको गुरुकही १९ ॥

(अथकोमलवर्णन) दो० ॥ पल्लवकुसुमदयालमन माखनमृदुलसुगार ॥ पाटपामरीजीभपद प्रेमसुपुरयविचार २० ॥

मृदुजानिये मृणाल कमलकी जर जीभ औ पद पावँ प्रेम औ पुराय २० ॥

(यथा) कवित्त ॥ मैनगेसोमनमृदुमृदुलमृणालिका केमूतकैसीस्वरध्वनिमननिहरतिहै । दारयोकैसीबीजदां तपानमेअरुणओंठकेशौंद्वासदेखिदगआनँदभरतिहै ॥ परीमरीतेरीसोहिंभावतिभलाई तातेबूझतिहौंतोहिंऔ रबूझतडरतिहै । माखनसीजीभमुखकंजसोकवारितासे काठसीकठेठीबातकैसेनिकरतिहै २१ ॥

मृदुल कोमल मृणालिका के सूत के समान स्वर कंठकी ध्वनि शब्द पातनवपल्लवसे लालओंठ माखनसीजीभ मुख कंजसो तामें काठसी कठेठी कठोरबात कैसे निकरतिहै मैन माखन मृणाल आदि कोमलमेन दोहा में नहींकह्योहै तौभी जानिये इनकेसिवाय और भी कोमललीजिये २१ ॥

(अथकठोरवर्णन) दो० ॥ कुचकठोरभुजमूलमणि वरणिवज्रकहिमित्त ॥ धातुहाडहीराहियोविरहीजनके चित्त २२ ॥

यज्र औ हल कहूं वज्रहू मित्त ऐसो भी पाठहै मणि कहे हीराको ग्रहणहो तौभी अतिकठोरजानि जुदोकरिकह्यो हीरा की कनीसों और मणि छेदीजातिहै २२ ॥

दो० ॥ शूरनिकेतनसूमननकाठकमठकीपीठि ॥ केशवमूर्खाचसअरुहठशठदुर्जनदीठि २३ ॥

कमठ २३ ॥

(यथा) कवित्त ॥ केशवदासदीरघउसासनिकोसदा गतिआपुकोअकासहैप्रकासपापभोगीको । देहजातजा तरूपहाड़नकोरूपोरूपरूपकोकुरूप विधुवासररसंयोगी को ॥ बुद्धिनकीबीजुरीहैनैननिकोधाराधरछातीकोघरघा रतनघायानिप्रयोगीको । उदरकोबाड़वाअगिनिगेहमा नतहौंजानतहौंहिराहियोकाहूपुत्रशोगीको २४ ॥

जानतहौं याकोअर्थ मानौं जहां जानतहौं मानतहौं ऐसे शब्दआवैं तहां उत्प्रेक्षा है पुत्रशोगी को हृदयहीरा है वज्र है हीराको नाम भी वज्र है औ सब जवाहिर में हीरा कठोर है हृदय कैसोहै उसास ऊंचेबड़े चलत हैं ताको चलावे को यह सदागति पौनहै सदागतिपौनको नामहै जब पौन को प्रकोप होतहै तब बड़े उसास चलतहैं दीरघउसासनि को सदागति यह भी पाठहै दीरघउसासनि जहां सदागति चलनोहै दीरघ उसास उठयो रहत है हृदय आयुर्बलको अकाश है अकाश ज्यौतिषसें शून्यको नाम है आयुर्बल शून्य है यह अर्थ किंवा अकहिये थोरीकास कहिये दीप्तिहै प्रकाश पापभोगीको याकोअर्थ पापभोगी जो पापको भोगै पापिष्ट ताको जो होतहै प्रको अर्थ बड़ोकास कहिये खांसीरोग सो है हृदयसों खांसि उठयो शरीर क्षीणभयो धाँसि उठत है किंवा पापभोगी को प्रकास यह पापिष्टहै पापको भोगैहै रूप याको अर्थ हेमकोप में रूपनाम सौंदर्यको औ आकृतिको औ स्वभावको देहजात याको अर्थ देह कहिये पिंड तामें जो उपजै सो देहजात देहजात नाम अंगको हाथ पाँव इत्यादि सो जात रूप सोना से गौरथे इहां वाचक धर्म लुप्तोपमा किंवा देह औ जात कहिये जाति भाषामें इकार को लोप भी करतहैं हेसीसें जातिनाम अंगको भी कह्योहै देह पिंड औ जात अंगतेजातरूप सोना सेथे सो अब पुत्र शोगभये हाड़नको रूपोरूप हाड़हीको रूप

फणिके आकारहै जाको ऐसो रूपभयो है ऐसीतरहको भयोहै भाषामें रूप नरहको भी औ सुंदरको भी कहतहैं फलानारूप कोहै रूपकी लुगाई है सुंदरि है ऐसी वोलति है अंतमें कोहै ताको अन्वय विधु शब्दसों है वासर दिनसंयोगी विधुकोसों रूपभयो विधुनाम हेममें चंद्रमाको भी राक्षसको भी राक्षस को नाम रात्रिचरहै दिनमें जैसो राक्षस वुरोदीखै तैसो वुरो दीखैहै यह अर्थ चंद्रमा तौ काहेको कहिये किंवा रूपको थो पहिले सो अब कुरूपभयो जाके आगे वासर संयोगी दिनमें विधु राक्षस सो जाके आगेकोहै कौनहै कोहै शब्द तिरस्कार विषै या कुरूपके आगे वह कहा कुरूपहै यह अर्थ फेरि लगा इये हाड़नको रूपो हाड़को रूप ह्वैगयो शरीरमें मांस नहीं है रूपरूपको कुरूप तरह तरह को कुरूपभयो देह मलिन वस्त्र मलिन केशवड़े वासर संयोगी विधु राक्षस जाके आगे कोहै कछु नहीं वुद्धिको तौ वीजुरीकीन्हीं वुद्धि जैसे वीजुरी चम- किजाय नैंस चमकिजातिहै नैनानिको धाराधर मेघकीन्हों आंशू आंखिसों वरसतहैं छातीको घरियार कियोहै इहां के शब्द की अन्वय घायसों है घरियारको तौ लकरी के घनसों मारतहैं छातीरूप जो घरियारको सो घन कहिये वहुतघाव चोट ताको प्रयोगी संयोगी कीन्हें हैं घरीघरीमें छाती कूटत हैं उदर पेट ताको वाड़वाग्नि जो समुद्रमें है ताको घरमान तहैं आठपहर पेटवरैहै इहां हृदय औ हीरा कठोर २४ ॥

(अथनिश्चलवर्णन) दो० ॥ सतीसमरभटसन्तमन धर्मअधर्मानिमित्त ॥ जहांतहांयेवरणियेकेशवनिश्चल चित्त २५ ॥

धर्मकरै सो नहीं जाय औ अधर्मकरै सो नहीं जाय निमि त होनहार निश्चल चित्तको अन्वय सतीसों औ समरभटसों किया निश्चल चित्तकरि वरणिये २५ ॥

(यथा) सवैया ॥ कायमनोवचकामनलोभनमोहन मोहैमहाभयजेता। केशवबालवयक्रमवृद्धविपत्तिनहूंच्य तिधीरजचेता ॥ हैंकलिमेंकरुणावरुणालयकौनगनेंकृ तह्वापरत्रेता। येईहैंसूरजमंडलभेदतशूरसतीअरुऊरध रेता २६॥

कहूं वृद्धपाठ है कहूं वृद्धिपाठ है विपतिकी वृद्धिमें जाको काम आदि नहीं मोहै एतनेसमयमें धीरजको चेतेहैं करुणा के बरुणालय समुद्र और पै भी कृपाकरतहैं शूर सती ऊरध-रेता योगी निश्चल चित्तहैं २६ ॥

(अथचञ्चलवर्णन) दो० ॥ तरलतुरंगकुरंगघनवा नरचलदलपान ॥ लोभिनकेमनस्यारजनबालककाल विधान २७॥

चलदल पीपल स्यारजन कायर काल की क्रिया २७॥

दो० ॥ कुलटाकुटिलकटाक्षमनसपनोयौवनमीन ॥ खंजनआलिगजश्रवणश्रीदामिनिपवनप्रवीन २८॥

तरल अतितरल मंदतरल तीनिके ग्रहणहैं कुरंग औ मन तरल है लोभीको मन अतितरलहै याते जुदो ग्रहण कियो यौवन मंदतरलहै गज श्रवण हाथीके कान हे प्रवीण संबोध-नहै काहूसों २८ ॥

(यथा) कवित्त॥ भौंरज्योंभवँतलोललललनालनानि प्रतिखंजनसोथलमीनमानोंजहांजलहै। सपनोऊहोन कहूंअपनोनआपनयेभूलियेनवैनऐनआकवैसोफलहै॥ गांहियेधौंकौनगुणदेखतहीराहियेरी काहियेकछूनरूपमोह कोमहलहै। चपलासीचमकनिसोहैचारुचहूंदिशिकाहू कोसनेहचलदलकोसोदलहै २९॥

कान्हको सनेह सो चलदल पीपलको दल पातसोंहै जैसे अंग लोचनचंचल लतानिप्रति भवँतहै तैसेकाह्न किंवा काह्न कोस्नेहलोल चंचललतानिप्राति औ तृष्णासहित जो होय ऐसे चाहभरे लकना नायकानिप्रति फिरतहैं जैसे थल में खंजन चंचल सपनोहूं होत कहूं आपनो न आपने ये यह प्रसिद्ध है सपनोदेखिहैंमनगोय । अपनोदेखैअनकोहोय ॥ आपनो देख्यो सपनो कहूं आपको सफलहोतहै ये आपने नहीं होत हैं नायकको सुनाय नायका सखी सों कहति है कहूं पाठ है सपनेऊअपनेनहोतकहूंअपनाये जो इन्हें अपनाय लीजिये आपनेकरिलीजिये तो सपनेमें भी ये आपने नहींहोतहैं भूलियेनबैन याको अर्थ इनके कपटभरे वचन सोभूलिये नहीं किंवा देखिये हमारेबैन भूलैमति आककोफल ऊपरअच्छा भीतर निकम्मा देखिवेही के आछेहैं धौंको अर्थबितर्क कौन इनसेंगुणहैं जासों इनको ग्रहणकीजिये पहिले सखीने कह्यो है इनसों प्रीति फेरिकरो तब यहनायकाकी उक्ति रूपइनको मोहको महलहै अर्थात् मोह को निवास है भौंर औ लोभी नायकको मन औ खंजनआदि चंचल २९ ॥

(अथसुखदवर्णन) दो० ॥ पंडितपुत्रपातिब्रताविद्या वपुनीरोग ॥ सुखहीफलअभिलाषकेसम्पातिमित्रसंयोग ३० ॥

पुत्र पंडितहोय जो जाकी विद्याहेत औ सुखही सों फल प्राप्तिहोय जैसी चाहै तैसी सम्पतिहोय ३० ॥

दो० ॥ दानमानधनयोगजयरागबागगृहरूप । मुक्तिसोमरवज्ञतायेसुखदालिअनूप ३१॥

पाछे सम्पाति कही है धनको अन्वय मानसों मुक्तिसुखद है औ सोम चन्द्रमा ३१ ॥

(यथा) सवैया ॥ पंडितपूतसपूतसुधीपतिनीपतिप्रेमपरायणभारी । जानैसबैगुणमानैसबैजनदानविधानदयाउरधारी ॥ केशवरोगनहींसोंवियोगसंयोगसुभोगनिसोंसुखकारी । सांचकहैजगमाहिंलहैयशमुक्तियहैचहुंवेदविचारी ३२ ॥

पुत्र पंडितहोय आपनीविद्या में खबरदारहोय औ सपूत होय जासें चोरी जुवारीपनाको औगुणनहींहोय औ सुधी सुबुद्धिहोय शरीरको रोगसों वियोगहोय रोगनहींहोय यहअर्थ पंडित पुत्र पतिव्रताआदि सुखद ३२ ॥

(अथदुखदवर्णन) दो० ॥ पापपराजयझूठहठ शठतामूरखमित्त ॥ ब्राह्मणनेगीरूपबिन असहनशीलचरित्त ३३ ॥

ब्राह्मण नेगीको अर्थ कोई कार्यमें अधिकारी खजाना हवालेया जगातलेनो इत्यादि वाको नहींदीजिये वहुचोरिखाय जबलेखामाँगै तबपेटचीरिवेलागै कोईहोय रूप बिना नहीं सोहत है असहनशील काहूकी बात नहींसहै ऐसो है चरित्र जाको ३३ ॥

दो० आधिव्याधिअपमानऋणपरघरभोजनवास ॥ कन्यासन्ततिवृद्धतावरषाकालप्रवास ३४ ॥

आधिमनको दुःख ३४ ॥

दो० ॥ कुजनकुस्वामीकुगतिहयकुपुरनिवासकुनारि ॥ परवशदारिदआदिदैअरिदुखदानिविचारि ३५ ॥

जनकहियेदास सो आछो नहींहोय औ कुचालघोड़ा ३५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ वाहनकुचालचोरचाकरचपलचित्तमित्रमतिहीनसूमस्वामीउरआनिये । परघरभोजन

नियान्वासकुपुगनिकेशौदासवरषान्नवासदुखदानिये ॥ पानिनकेंअंगलंगअंगनाअनंगवशअपयशयुतसुत चिनाहितहानिये । मूढ़ताबुढ़ाईव्याधिदारिदझुठाईआधि यहईनरकनरलोकनिवखानिये ३६ ॥

मनुष्यलोकमें सातद्वीप के भेदक दहुवचनहैं इतनानरक है कुजन औ स्वामी आदि दुखदायी कहे ३६ ॥

(मन्दगतिवर्णन) दो० ॥ कुलतियहासाविलासवुध कामक्रोधमदमानि ॥ शनिगुरुसारसहंसगजात्रियगति मन्दवखानि ३७ ॥

कुलवधू की हँसी मंदवरणिये वुधज्ञानवान ताको विलास लीला काम क्रोध औ मद तुरंत होतहै मंदमंद छूटत है कहूं दानि भी पाठ है शनैश्चर औ गुरु वृहस्पति ३७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ कोमलाविमलमनाविमलासीसखी नाथकमलाज्योंलीन्हेंहाथकमलसनालके । नूपुरकीधुनिसुनिभोरेंकलहंसानिके चौंकिचौंकिपरैंचारुचेटवामरालके ॥ कचनिकेभारकुचभारनिसकुचभारलचाकिलचकिजातकटिनटवालके । हरैंहरैंबोलतिविलोकतिहँसति हरैंहरैंचलतिहरतिमनलालके ३८ ॥

सखीसोंसखीवचन नायकाकैसीहै कोमल औ विमल निर्मल जाको मनहै फेरि विमला सरस्वती सरीपीहै औ सखी जाके नाथनेंहै कमला लक्ष्मी ज्यों जातरहहोय औ हाथ के बीच मनालडांड़ी सहित कमललीनेहै मरालहंस ताके चेटवा बालक कुलत्रिय चालआदि मंद ३८ ॥

(नाथशीतलवर्णन) दो० ॥ मलयजदाखकलिंदसु

खञ्ओरेमिश्रीमीत ॥ प्रियसंगमघनसारशशिजलजल रुहाहिमशीत ३९॥

मलयजचंदन कलिंद तरबूज औ जो सुखद पदार्थ है सो ओराकरकामेघसों जोपत्थरपरैं सो मीतामित्र किंवासम्बोधन आगे प्रियसंगम पदहै याते घनसार कपूर हिम वरफ ३९॥

(यथा) कवित्त ॥ शीतलसमीरटारिचंद्रचन्द्रिकानि वारिकेशौदासऐसेहीतौहरषिहिरातुहै । फूलनिफैलाय डारिझारिडारिघनसारचन्दनकोटारिचित्तचौगुनोपिरा तुहै ॥ नीरहीनमीनमुरझातजीवैनीरहीपैक्षीरकेछिरकेक हाधीरजधिरातुहै।पाईहैतैपीरकिधौंयोंहींउपचारकरैआ गिकैतौडाह्योअंगआगिहीसिरातुहै ४०॥

प्रकाश बिरह है शीतल समीरटारि चन्द्रिकानाम सखीहै तासों कहतिहै चन्द्रकोनिवारि चन्द्रमा मतिदेखनदेहि किंवा बाहरजायकै चन्द्रमा को मति दिखावै घरही में बैठी दूरिते चांदनी मतिदिखावै यह उद्दीपनहै याते विरहीको दुख बहुत होतहै ऐसे या तरह सों चन्द्रमा चांदनी दिखावत के हरप जो है ध्यान में नायकसों जो भयो है मिलन तासों जो सुख सोभी हिरात है जातरहत है किंवा ऐसेही चन्द्रमा चांदनी दिखावतकै सम्पूर्णहीय तौ आवैनहीं दुखसोंहि एतना कहनि है ताको तू रख याको अर्थ राखिले नहींतो हिरातुहै यह भी जातरहैगो तब मरी यहजानैंगे चौगुणाक्योंकरि एक तो वि- रह सों पीड़ा दूसरो ध्यान सें नायकसों मिलनथो सो छूट्यो तीसरो दुख रोग और है इलाज औरहै चौथो सखीको मू- र्खता सों दुखपाईहै तैंपीर तोहिं कबहीं ऐसीपीड़ा प्राप्तभईहै किंवा यहपीड़ा तैं पाईहै समझीहै यहकहादुखहै याते नसी ऊपरीने जान्यो याते प्रकाश समीरलक्षणनें जो कह्योसोनहीं है तौभी जानियो शशिआदि शीतलजानिये ४०॥

(अथतप्तवर्णन) दो० ॥ रिपुप्रतापदुर्वचनतपतप्त विरहसंताप ॥ भूरजअगिकजागिदुरुतृष्णापापविलाप ४१ ॥

भूजागि बीजुरी की आगि तृष्णा लोभ औ पाप औ विलाप ४१ ॥

(यथा) कवित्त ॥ केशौदासनींदभूखप्यासउपहासत्रासदुखकेनिवासविषमुखहूगह्योपरै । वायुकोवहनवनदावकोदहनबड़ीबाड़वाअनलज्वालजालमेंरह्योपरै ॥ जीरनजनमजानजोरजुरघोरपरिपूरणप्रगटपरितापक्योंकह्योपरै । सहिहौंतपनतापपरकोप्रतापरघुवीरकोविरहवीरमोपैनसह्योपरै ४२ ॥

(हनुमानजीसों जानकीजीकोवचन) हे वीर रघुवीर को विरह मोसों नहीं सह्योजाय और कठिन कर्म सब हैसकें कठिनकर्म्म कहतेहैं उपहास निंदासहित हासी औ त्रास ये सब सहेजातहैं ये सबदुखके निवासहैं औ विषकोभी सुखसों ग्रहण हैसकै वहभी खायोजाय यह अर्थ वायु के वहने में चलनेमें दावकोदहन याको अर्थ दावाग्नि किंवा वायुकोआवर्त जानिये सोभी बड़ी जो बाड़वाग्निकीज्वाला ताको समूह सोभी सह्योजाय समुद्रकीआगि वड़वानल जीरणजनम वृद्धावस्था तामें उत्पन्न भयो ऐसो जो जोर सहित ज्वर सो घोर भयानक तासों परिपूरण परिताप दुख सो रघुवीरके विरहके समान क्यों कह्योजाय नहींकह्योजाय यह अर्थ किंवा जन्म ने जानउपज्यो जो जीर्णज्वर तपन सूर्य ताको ताप पर शत्रु को प्रताप दोहामें तप्त थोरे कहे उदाहरणमें वहुत हैं दुखसों नींद भूख इत्यादि जानिये औ विषआदि तप्त ४२ ॥

(अथरूपवर्णन) दो० ॥ नलनलकूबरसुरभिषक्हरि

सुतंमदननिहारि । दमयन्तीसीतादित्रियसुन्दररूपवि चारि ४३ ॥

नलकूवर कुबेरके पुत्र सुरभिपक अश्विनीकुमार हरिसुत प्रद्युम्न किंवा जयन्त ४३ ॥

(यथा) कवित्त॥कोहैदमयन्तीइंदुमतीरतिरातिदिन होहिनछबीलीछिनछविज्योंशृंगारिये।केशवलजातजल जातजातवेदओपजातरूपवापुरोविरूपसोनिहारिये ॥ मदननिरूपवहुरूपतौनिरूपभये चन्द्रबहुरूपअनुरूप क्योंबिचारिये।सीताजूकेरूपपरदेवताकुरूपसेहैंरूपही केरूपकतौवारिवारिडारिये ४४॥

श्रीसीताजी कैसी हैं रूपहीहै या तरह रूपसों रूपक कर- नो इतनेनको वारिडारिये दमयन्ती आदि राति दिन छिन छिनमें छविजो शृंगारिये तौभी छबीली नहींहोहिं छिनको छीनपढ़ै ॥ लघुगुरुगुरुलघुहोतहै निजइच्छाअनुसार ॥ जात वेद अग्नि तासों ओपदई आगि सों तपायो जो जातरूप सोना कछुनहिं किंवा जातवेदकी ओप सोभी लजातिहै मदन निरूप निरूप मनों निरूप भये मदननिरूप इतनेको अर्थ निरूपको अर्थ निरूपण ठहरावनो मदनकाम जब निरूप है निरूपण करैहै ठहरावै है सीताजीकी उपमा लायक कोई है ऐसे ठहरावै तब निरूपम जे सुन्दर पदार्थथे निरूपन जाकी उपमा नाहीं मिलैहै सोभी निरूप भये श्रीसीताजीके मुखकी उपमा लायक नहीं कहूंवदननिरूप ऐसोभी पाठहै वदनको निरूपण करतकै कैसोहै वदन यह ठहरावतके तब और उप- मानते चन्द्रमाको बहुत रूपहै ताको अनुरूप सीताजी के मुखके रूपको योग्य क्यों करिकै विचारिये सीताजूके रूपके आगे पर देवता श्रेष्ठ देवता ब्रह्माणी इन्द्राणी आदि सोभी

रूप हैं अरूपनहींहै कहूं रूपहूके रूपको ऐसोभी पाठ है नपकहिये चित्रनाके रूपको वारिडारिये चित्रकेवल रूपहीहै किंवा रूप जो कोई मूर्त्तिमान है ताके रूपको वारिये कहूंको कविनहू जापै शोभा चौंरढारै दमयन्ती आदि सुन्दरकही४४॥

(अथक्रूरस्वरवर्णन) दो० ॥ झींगुरसांपउलूकअज महिषीकोलवखानि ॥ कालकाकव्टककरभखरश्वानक्रूर स्वरजानि ४५ ॥

क्रूर कठोर उत्कट यह अर्थ झिल्लीइति अज वकरा कोल शुवर कालकाक गांवमें नहींआवै वाहर रहतहै कहूं भेड़िका- क यहभी पाठ है वृकल्यारी पूरुवमें हुण्डार कहत हैं करभ ऊंट करभ हाथीके वच्चाको भी नामहै हाथीभी जानिये ४५॥

(यथा) कवित्त ॥ झिल्लीतेरसीलीजीलीरांटेहूकीर टल्लीस्यारितेसवाईभूतभावनीतेआगरी । केशौदास भैंसनकीभामिनीतेभासैभास खरीतेखरीसीधुनिऊंटीते उजागरी ॥ भेड़निकीमीड़ीमेंड़ऐंड़न्यौरानारिनकीवोकहू नवांकीवाणीकागनिकीकागरी । शूकरीसकुचिशांकिकूक रीओमूकभईघूघूकीघरनिकोहैमोहैनागनागरी ४६ ॥

केशवदास क्रूरस्वर वनावन चाहैथा ताहि समै कोई स्त्री केशवदास को उत्कटस्वरसों उराहनो दीनों तव यह कवित्त वनायो कीलहै कवित्त वनायवेको प्रसंग क्रूरस्वरको वोधव्य वह कर्कसास्त्री वक्ता केशवदाससकोप इनके प्रभावते नागरी पद औरभी सरसजीली यह इत्यादिसों निंदाहीको पुष्टकरत है हेनागरी हे कलह में प्रवीण तेरी कंठध्वनिसों नागसाँप किंवा हाथी सोभी मोहितहोतहैं हमारे ऐसी मनोहर कंठकी ध्वनिनहीं झिल्ली झींगुरते रसीली रसभरी है अतिचुरी है यहजानों जीलीझीनहै रांटटिटिभ पूरुव में टिटिही कहत हैं

ताकी जो रटशब्द ताको लीलिगई है स्यारितेसवाई अधिक भेंड़िकीरसीलीवाणीकी जो मेड़मर्यादाथी ताकोमीड़िमसलि डारी दूरिकरी यहअर्थ नेउरकी नारिनकी ऐंड़मरोर वोकवड़ो वकरा वाकी वाणी ते याकी घाणी वीनहै वोकसोंभी नहींवो- लिबे में आवै काककी कागरी स्त्री किंवा काकनिकी काकी ध्वनि सो गरी गलिगई ४६ ॥

(अथसुस्वरवर्णन) दो० ॥ कलरवकेकीकोकिला शुकसारोकलहंस ॥ तंत्रीकंठनिआदिदैशुभसुरदुन्दुभि वंस ४७॥

कलरव अव्यक्त मधुर ध्वनिहै केकी मयूर आदि कोई क- हतहै इतनेही शुभ स्वरहैं इतनेनके स्वर सुन्दर शोभेहैं अच्छे लागतहैं कलरवचा वंशत्रांतुरी ४७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ केकनकीकेकासुनिकाकेनमथतमन मनमथमनोरथरथपथसोहिये । कोकिलाकीकाकलीनि कलितललितबागदेखतहीअनुरागउरअवरोहिये॥ को कानिकीकारिकाकहतशुकसारिकानिकेशौदासनारिकाकु मारिकाहूमोहिये । हंसमालाबोलतहीमानकीउतारिमा लाबोलैनंदलालसोंनऐसीबालाकोहिये ४८ ॥

शरद ऋतुमें मान छुड़ावतिहै सखी और ऋतुनसों शरद ऋतुको अधिक ठहरायकै जो वरषा कालहोय तो हंसमाला नाहीं सम्भवै औ वसन्तहीमें कोकिल वरणतहैं वरषामें नहीं मोर वरषामें वरणत हैं वसन्तमें नहीं हंसमालाके बोलनही मानकीमाला पहिरी है बहुत मानकियो है ताको उतारो को हिये याको अर्थ है कोहिपढ्यो कौनहै ए सखी केकोकसों है मनमथको जो मनोरथ चाह सोहे रथ ताको पथ शोभत है याहीसें कामकी अभिलापदौरतहै कोकिलाकली अव्यक्तमंदि।

ध्वनि तासों कलितयुक्त ललित सुन्दर है वाग अवरोहियो उपजैहै दोयनुकमें शरदकी अधिकाई शुकपक्षी ताकी सारिका पक्षीया सांगति औ कुमारिकामें कामकीप्रवलता ऐसे अधिकाई कहिये ४८ ॥

(अथमधुरवर्णन) दो० ॥ मधुरप्रियाघरसोमकरमाखनदाखसमान ॥ वालकवातैंतोतरीकविकुलउक्तिप्रमान ४९ ॥

सोम चन्द्र ताकी किरण औ कविन की वाणी नेत्र कर्ण रसना घ्राण त्वचा इतनेनको जो सुखद सो मधुर ४९ ॥

दो० ॥ महुवामिश्रीदूधघृतअतिशृंगारसुमिष्ट ॥ ऊखमयूखपियूखगनिकेशवसांचेइष्ट ५० ॥

मयूखमधु अंतःकरणनों प्रीतिकरै सो मित्र मनको अच्छा लगे ५० ॥

(रसिकप्रियायां) सवैया ॥ खारिकखातनटारयोईदाखनमाखनहूंसहमेटिइठाई । केशवऊखमयूखहुदूखतआईहौंतोपहछांडिजिठाई॥तोरदनक्षदकोरसरंचकचाखिगयेकरिकैहुढिठाई । तादिनतेउनराखीउठायसमेतमुधायमुधाकीमिठाई ५१ ॥

खारिकछुहारा माखनसों जो इष्टताथी सो मेटी जेठाई में बड़ाईपना छांडिकै रदनक्षद अधर सुधासमेत वसुधा में जेतनी मिठाई हैं दोहा में थोरी कहत हैं उदाहरण में बहुत जानिलीजिये खारिकदाड़िम नहींकह्योहे तौभीजानिये रसिकप्रियाकोहै ५१ ॥

(अथअवलवर्णन) दो० ॥ पंगुगुंगरोगीवणिकभीतभूखयुतजानि ॥ अंधअनाथअजादिशिशुअवलाअवलवखानि ५२ ॥

भीत औ भूखयुत कहूं भीखभूखयुत ऐसोभीपाठहै भिक्षा की है भूखचाहजाको केतने शरीर के अवलहैं यह गुंगा क्यों करि अवलकह्यो यामें तौ बलहै तहां काहूसों पुकारि न सके याते जानिये वकरा हरिण इत्यादि अवला स्त्री अवल जाति जानिये ५२ ॥

(यथा) कवित्त ॥ खातनअघातसवजगतखवावतुहैद्रौपदीकेसागपातखातहीअघानेहौ। केशौदासनृपतिसुताकेसतिभायभयेचोरतेचतुरभुजचहूंचकजानेहौ ॥ मांगनेऊंद्वारपालदासदूतसुतसुनौकाठमाहिंकौनपाठवेदनिबखानेहौ । औरहैंअनाथनिकेनाथकोऊयदुनाथतुमतौअनाथनिकेहाथहीविकानेहौ ५३ ॥

भारतमें कथाहै दुर्योधनके पठाये दुर्वासा युधिष्ठिरके पास आये या कथा में भगवान् साग को लेशखाय आप तृप्तभये तासों तीनोंलोक तृप्तकिये एक राजाकी कन्याने सोंचेमनसों श्रीकृष्णविना औरकोनहींवरद्यो एकराजा कृष्णको रूपधनाय आयो तव कन्याने कह्यो चारिभुजा दिखावो तौ वरों भगवान् को ध्यानकियो तव चतुर्भुजभयो तो चोरकपटी कन्याने वरयो वामनरूपहोयके मंगनभयो फेरि वलिके द्वारपालभये सांदीपनके इहां पढ़िवेगये तहां लकरी आनिवेगये और भी सेनभक्त को रूपधरि राजाकी हजामतिकरी पांडवनिदूतकरि दुर्योधनके इहां पठाये है भारतमें है प्रह्लादकी रक्षा को काठ थम्भ तामें प्रगटभये हैं यहवात वेद के कौनपाठ में अर्थात् कौनअध्यायमें कही है भगवान् काठमें ते प्रगटहोत हैं यह सुनी भी नहींहै द्रौपदी अवला औ दुर्वासा के शापते भीतहै भूखको अर्थ चाह भी है कन्या औ राजा चाहभरेहैं श्रीकृष्ण विना ये सवअनाथ हैं श्रीकृष्णहीं नाथहैं ५३ ॥

(अथवलिष्ठवर्णन) दो० ॥ पवनपवनकोपूतअनूप

रमेश्वरसुरपाल ॥ कामभीमवालीहलीवलिराजापृथु काल ५४ ॥

हली श्रीवलभद्रजी पृथुराजा भगवान् को अवतार भयेहैं जिन पृथ्वीको समकरीहै लोगनिकी वृत्त वा सोहै ५४ ॥

दो० ॥ सिंहवराहगयंदगुरुशेषसतीसबनारि ॥ गरुड़वेदमातापितावलीअदृष्टविचारि ५५ ॥

सती जो सहगमन करै अपनेपतिको नरकसों काढ़ै यम को जोर नहींचलै किंवा सतीपतिव्रता जे सबनारिहैं एकपतिव्रताको मांडव्यमुनि शापादियो वाके कहे केतनेदिन सूर्यनहीं उगे किंवा सबनारि पुरुषसों स्त्री विषे भोजन औ काम औ यत्न अधिकहै या अर्थकरै अबला अबल विचारि या अर्थसों विरोधपरै अदृष्टकर्म ५५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ बालिवध्योवलिराववँध्योकरशूली केशूलकपालथलीहै । कामजरयोजगकालपरयोवँदिशेपधरयोविषहालहलीहै ॥ सिंधुमथ्योकिलकालीनथ्यो व हिकेशवइंद्रकुचालचलीहै । रामहूकीहरीरावणवाम दहूंयुगएकअदृष्टवलीहै ५६ ॥

शूली महादेव तिनके हाथमें त्रिशूल जगतके संहारकरिवे को औ कपालकी खपराई रावणकेबांदिमें जगको कालपरयो थो शेषनाग हलाहल विषधरेहैं किलको अर्थ यहबात है इंद्र की जो कुचाल गोतम के घर यहबात जगतमें पसरी है इहां जोरावरनसों कर्म अधिक जोरावर ५६ ॥

(अथसत्यभूठवर्णन) दो० ॥ केशवचारिहुंवेदको मनक्रमवचनविचार ॥ साँचोएकअदृष्टहरिभूँठोसबसंसार ५७ ॥

संसारझूठ है अदृष्टकर्म औ भगवान् साँचहैं ५७ ॥

(यथा) कवित्त॥ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगांवऔ ठांवकोनाँवविलैहै । तातनमातनपुत्रनमित्रनवित्तनअंगहूसंगनरैहै ॥ केशवकामकोरामाविसारतऔरनिकाम नकामनिऐहै। चेतिरेचेतअजौचितअन्तरअन्तकलोक अकेलोहिजैहै ५८ ॥

रे मूढ़ अजौं अब भी चित्तके अंतर वीच चेतकरि अंतक यम ताके लोकको अकेलोही जायगो हाथी तेरे साथी नहीं होहिंगे औ घोरे साथी नहींहोहिंगे औ चेरे साथी नहींहोहिंगे औ गांव तेरे साथी नहींहोहिंगे औ ठाँवको तो नामविलाय जायगो फलानी ठौर फलानेकी हवेलीथी यहनाम नहींरहैगो उहां कोई औरही रहैगो औरनहींको नाम होयगो ये तेरे अंग जो हैं सोभी संगमें नहींरहैंगे और निकाम निकम्मा हैं काम नहींआवैगो श्रीरामचन्द्रजी सत्यहैं और झूठहै ५८ ॥

कवित्त ॥ अनहींठिककोठगजानैनकुठौरठौरताहींपै ठगावैठेलिजाहीकोठगतुहै । याकेतौडरानिडरडगनडग तुडरिडरिकैडरानिडागिडौंगीज्योंडिगतुहै ॥ ऐसेत्रसवास तेउदासहोयकेशौदास केशौनभजतकहिकाहूकोखगतु है । झूठोहैरेझूठोजगरामकीदुहाईकाहूसांचकोनायो तातेसाँचोसोलगतुहै ५९ ॥

गुरुशिष्यको नीचकर्म में आसक्त देखि उपदेशकरत हैं रे शिष्य तू अनहीं ठीककोठगहै तोहिं ठगिवेकी ठीकनहीं थोरो देकरि वहुतलेनो यहठग तो कहावतु है भगवान् को तुलसी चढ़ायकै मुक्तिले तू महादेव को आक धतूरा चढ़ायकै संपति चाहै तौ संपतिले प्राचीन । ऐसेकहैं गिरिराजसुताजगदेखो महाठगलोगभयोहै । भोरकै पायो है कंत हमारयतूरदिये धन

लूटिलियोहै । ठग तौ ऐसाठगे औ ठौर जो संसार ताको तू कुठौर नहींजानै या संसारसों तू आसक्तहोयगो तौ नरक में जायगो किंवा और कुठौरहै तीर्थ सब रहिबेकी ठौर हैं उहां विरक्तलोगजेहैं तिनकी सेवाकरि ज्ञानसरीपो जोदुर्लभ पदार्थ ताको तू ले संसारमें ठगभी धनआदि ठगिबेको ठिकाना देखिके ठगतहै नाहिं ठिकाने को ज्ञाननहीं हमारोवचनठेलिकै जाको तू ठगैहै वाकी संपत्तिलेतहै ताहीसों तू ठगावतुहै आगिले जन्म वाको घोड़ा बैल होयकै देनापरैगो थोरो लयगो बहुतदेनोपरैगो किंवाठेलिकै संसारीकोधकादैकै तू मोहिंठगो तू याननमें जानैहै मैं ठगोंहों पै वासों चाहिकैठगावैहै किंवा वाकी बुद्धिको ठगिकै धक्कादैकै याके तौडर एतनेको अर्थ या ठगिबेकी क्रियासों या पापसों तौ निडरडगनडगतडरि एतने को अर्थ निडरहै तू डरिकै एकडग तू नहींडिगै है नहींचलै है या पापकरिबे में तू दृढ़है डरिकै डरनिडगि डोंगीज्योंडिगतुहै याको अर्थ जहांडरआनिपरतुहै तहां तू डरिकै डरपिकै काहू के डरनिसों डिगिजात है आपनी स्थितिसों चल विचलहोत है कांपतहै तोहिं ऐसो ज्ञानभी नहीं पाप पुण्य तौ परमेश्वर करावै है मैं करनवालो कौनहौं दुर्योधनकोवचन पांडवगीता में ॥ जानामिधर्मंनचमेप्रवृत्ति र्जानामिपापंनचमेनिवृत्तिः याको अर्थ धर्ममें जानोंहों पै करिबेकी प्रवृत्तिनहीं और पापभी मैं जानोंहों पै मोहिं वासों निवृत्तिनहीं जो भगवान् करावत है सो करतहों जाको भगवान्को ज्ञानहै सो डरैनहीं । तुलसी जियजानियहै अपने सपने नहिंकालहुतेडरिहै । डोंगी छोटी नाव जैसे डिगैहै तैसे तू डिगिजानहै कांपत है ऐसो बसवास ते उदास ऐसो जो तेरो बसोवासहै रहनोहै ऐसी बोली है तुम्हारो बसोवास कहांहै तासों तू उदासहोयकै केशौदासकहत है केशव भगवान को क्यों नहींभजनहै कहूं तू संसारमें काहे को लगतुहै गड़तुहै आसक्तहोतहै यहअर्थ कहूं ऐसे बसवास

ते यहभीपाठहै ऐसे यातरह जानिकै वसवास रहनेतें उदास होयकै काहू सांचे को बनायो कोई सत्य जो पदार्थ है ताको बनायोहै संसार याते साँचहै मानौं ऐसो लागतहै पक्का कारी-गर ज्यों झूठा मोती जवाहिर बनावै तौ सांचही के समान लागै है ५६ ॥

(अथअगतिसदागतिवर्णन) दो०॥ अगतिसिंधुगिरितालतरुवापीकूपबखानि ॥ महानदीनदपंथयुगपवन सदागतिजानि ६० ॥

पवनको सदागति जानौं सदाचलतिहै औ सदागतिनाम भी है ६० ॥

(यथा रसिकप्रियायां) कवित्त ॥ पंथनथकितपलमनोरथरथनिकेकेशौदासजगमगजैसेगायेगीतमें । पवनविचारचक्रचक्रमनाचित्तचढ़ि भूतलअकाशभ्रमेंधामजलशीतमैं ॥ कौलौंराखौंथिरवपुवापीकूपसरसमहरिविनकीन्हेबहुबासरव्यतीतमैं। ज्ञानगिरिफोरितोरिलाजतरुजायमिलैआपहीतेआपगाज्योंआपनिधिप्रीतिमें ६१

मनोरथ चाह सोहै रथताको जो पंथ सो एकपलभी नहीं थाकत है सदा चलतरहतहै पथअचल चलनवालाचल कैसे जैसे जगतको मगराह तामें जैसे राहीलोग चलतरहतहैं गीत में जैसे गाये हैं जैसो लोग कहतहैं पौनकी तरह चंचल जो विचार रूप चक्रचाक ताहिविषे चक्रमनकेलिये फिरिबेकेलिये चढ़िकै चित्तभ्रमैं है फिरैहै मन ठिकाने नहींरहत है ज्ञानरूप जो गिरिपहाड़ परपातिसों आसक्तिकरिबोदोपहै ऐसो जोज्ञान ताको फोरिकै औ लाजरूपीतरु जो वृक्षताको तोरिकै में ना-यकसों जायकै मिलौं आपगानदी जैसे आपनिधिसमुद्रसों

जायके मिलानि है प्रीतम नायकसों पथमादि अगति पवन सदागति ऐसी जानिये ६१ ॥

(अथदानिवर्णन) दो० ॥ गौरिगिरीशगणेशविधि गिराग्रहनिकोईश । चिंतामणिसुरवृक्षगोजगमाताजगदीश ६२ ॥

ग्रहनकेईश सूर्य गो कामधेनु जगमाता श्रीलक्ष्मीजी ६२॥

दो० ॥ रामचन्द्रहरिचन्दनलपरशुरामदुखहर्ण । केशवदासदधीचिपृथुबलिशिविभीषमकर्ण ६३ ॥

दारिद्रके दुखके हरनवालेहैं ६३ ॥

दो० ॥ भोजविक्रमादित्यनृपजगदेवरणधीर ॥ दानिनहूंकोदानिदिनइंद्रजीतबलवीर ६४ ॥

जगदेव इंद्रजीतको बड़ेरा इंद्रजीतदानि ताकेदानको दिन है खंडनवाले हैं इंद्रजीत के दानके आगे सब के दान खंडे जात हैं ६४ ॥

(अथगौरीकोदानवर्णन) दो० ॥ पावकफणिविषभस्ममुखहरपवर्गमयमानि ॥ देतजुहैंअपवर्गकोपारवतीपतिजानि ६५ ॥

जो पवर्गमयहोय सो पवर्गहीकोदेतहै अपवर्गको कहां सो देतमके अपवर्गको अर्थ मुक्ति पावक अग्नि औ फणी नाग औ विष औ मुखमुण्डमाला भस्म इतने पवर्ग सहित शब्द हैं तिनसों युक्त हरहैं ऐसे हरको पार्वती अपवर्ग देतिहैं यह जानिके कि ये हमारे पतिहैं इन्हें मोक्षदेनो किंवा पतिप्रतिष्ठा जानिके अर्थात इनको अपवर्ग कहिये हमारी प्रतिष्ठा है यह जानिके शर्क्कोनिलीयते विष्णुः शंकरस्सपितामहः यह पुराण वचन है किंवा रतिदेतिहैं रतिमें पवर्ग नहीं है इहां

पवर्ग पातक आदि जो वस्तु धारणकरतहै ताको पवर्ग लेनो आपनो नामको पवर्ग नहीं लेनो नहीं तौ पार्वती पतिमें भी पवर्ग है किंवा हर अपवर्गको देतहैं तामें यह कारण पार्वती के पतिहैं मुक्ति पार्वतीदेतिहै पार्वतीके पति न होते तो मुक्ति कहांतेदेते आधेअंगमें पार्वती रहतिहै किंवा हरको पवर्गमय मानौं अपवर्गको पार्वती देतिहै फेरि पार्वती को पति जानौं पतिको अर्थ पालनकरनवाली पार्वतीकोदान निकरयो ६५॥

(अथगणेशजूकोदानवर्णनयथा) कवित्त ॥ बालक मृणालनिज्योंतोरिडारैंसबकाल कठिनकरालजेअकाल दीहदुखको । विपतिहरतहाठिपद्मिनीकेपातसमपंकज्यों पतालपेलिपठवैकलुखको ॥ दूरिकैकलंकरंकभवशीशश शिसमराखतहैंकेशौदासदासकेवपुखको । सांकरेकीसां करनिसनमुखहोतहीतौ दशमुखमुखजोवैगजमुखमुख को ६६ ॥

सांकर कहिये विपत्ति ताको सांकरसमूह एक विपत्ति पर एक विपत्ति ताके सनमुखहोत सो जब सामने आवतहै तब दशमुख नाम दिशा ताके मुखकहिये मुख्य सरदार दशदि-शापाल इंद्र अग्नि यम आदि हमीमें मुख श्रेष्टको कह्यो है वे सब गजमुख गणेश ताको मुखदेखि रहतहैं तुम या विप-तिको दूरिकरो किंवा दशमुख एकमुख विष्णु चारिमुख ब्रह्मा पांच मुख शिव ये सब कैसे हैं मुखहैं श्रेष्ठहैं सो गजमुख के मुखको देखतहैं किंवा दिशानके मुख गजमुख मुखको देखत हैं हमारो राज्य कौनकरैगो किंवा गजमुखके मुखको काहूके सम्मुख सामने होतके काहूपै राजीहोतके तब दश दिशाके जे मुख्यहैं तिनके मुख सांकरे की सांकरको जोवतहैं दशौदिशा को या पुरुषको वकसैगो यह हमारो अधिकार काहेको राखै गो हमारो अधिकारजायगो जैसे बालक अर्थात् नवीन जो

मृणाल कमलकीजर ताको जैसे कोई तोरिडारै किंवा ख्याल करनि बिनाश्रम बालक जैसे मृणाल तोरिडारै त्यो जो गणेश जी सो सबकाल सबसमयमें कठिन औ कराल भयानक अकाल असमयमें बिनाप्रलयकाल जोहै दीह बड़ोदुख ताको तोरिडारतहैं दूरिकरतहैं कमलिनीके पत्रसमान बिनाश्रम जो रावगेको विपतिको हरतहैं पंक जैसे हाथीके पावँसों नीचे दबिजाय तैसे कलुषपापको दबावतहैं दूरिकरतहैं गणेशकेशी शमें चंद्रमाहै कलंक कला नहीं है चंद्रमाकोसो कलंक दूरि करिकै शीशविषे राखतहैं औ दासको रंकभाव दरिद्रपनादूरि करिकै वपपकी ध्वनि विधाताने वाके देहमें लिखीहै दरिद्र की रेखा ताको दूरिकरिकै भाग्यकी रेखा बनायकै शीशपैरा-खतहैं याको अर्थ बहुत आदरसों राखतहैं रंकभाव दूरिक-रिबेमें दान ६६ ॥

(अथश्रीमहादेवजूकोदानवर्णनयथा) कवित्त ॥ कां गिउठ्योआपनिधिलपनहिंतापचढी सीरीयेशरीरगति भईरजनीशकी । अजहूंनऊँचोचाहैअनलमालिनमुख लागिरहीलाजमनमानोंमनवीशकी ॥ छविसोंछबीलील छिप्रातिसिद्धपाईहरिछूटिगईदानगतिकोरिहूतेंतीशकी । ऐसोंदासतहीकालकारोइकैआयोकालसुनतश्रवणवक शिशकईशकी ६७

ईश महादेव के एक बकशीश यह दान श्रवण सुनत के बनाभयो एकवस्तु जो है ब्रह्माण्ड सो काहूको देनचाहतहैं यहजानि समुद्रकांप्यो कि जाकोदेहिंगे सो हमारेमें जो रतन हैं तो काढ़िलेयगो तपन सूर्यने जान्यो कि हमारोजोहै कार्य किरणनिसों जलहनो अरु फेरि चौमास में मेघद्वारा देनो नाशकरनो औ हमारी पूजाइत्यादि काहेको राखैगो जाको ब्रह्माण्डह्वैगो सो औरही सूर्यकरैगो किंवा हमारोकार्य आ-

पहीकरैगो या किकिरिसों तपनको मानौं दुःखकीतापचढ़ी ऐसे रजनीश चन्द्रमाआदि को अधिकार छूटिवेको दुःखजानिये पुराण वचन है अग्निको मुखनीचो है मलिनमुख अधिकार यशादिक के छूटिवेसों धुवां तौ प्रसिद्धहै लक्षि लक्ष्मी कमल में रहतिहै ताको लैके भगवान् छाती में छपाई यहजानि कि जो ब्रह्माण्ड शिवने काहूकोदियो तौ तेंतीसकोटि देवतादान कहांसों करैंगे किंवा एक वो वकशीश एक रावणको वकशीशके सुनतके समुद्रआदि सबने जान्यों वड़ोदुःखहोयगो वा समय समुद्र कांपिउठयो कि हम बांधेजाहिंगे देवत निको तो दुःख प्रसिद्धही है सूर्य जान्यों शनैश्चर हमारोपुत्रहै सो बांध्योजा-यगो पौननेजान्यों हमैं आंगनवहारिवेपरैगो चन्द्रमानेजान्यों हमारो अमृतलेयगो किंवा राहुको पक्षकरैगो अग्निनेजान्यों हमैं रसोई करनीपरैगी ऐसे जानिये ६७ ॥

(अथविधिकोदानवर्णनयथा) कवित्त॥ आसीविष राकसनिदैयतनिदैपताल सुराननिरानिदियोदिवभूनिकेतहै । थिरचरजीवनकोदीनीवृत्तिकेशौदासदीवेकहूंऔ रकहोकोऊकहांहेतहै ॥ शीतवाततोयतेजआवतसमय पायकाहूपैननाखोजायऐसीवांधीसेतहै । अबतबजबक वजहांतहांजानियतु विधिहीकोदीनोसवसवहीकोदेत है ६८ ॥

अब वर्तमानयुगमें तवभूतयुगमें जबकब जबकोई कबहीं उपजैगो तव देइगो यामें भविष्यत् जहां तहां कोई ठौर में आसीविषसांपआदि पातालमेंरहतहैं निकेतघर वृत्तिजीविका दीनी तुम कहो देनेको और कोई कहादेतुहै जीविकाउपरांत और देनो कहाहै शीतवाय आदि को काल दियोहै शीतपौ-नशीतकालमें आवै ऐसो जानिये एकके आगे एक पंक्तिबंधि- ... सरासेत कहावै ६८ ॥

(अथ गिराकोदान यथा) कवित्त ॥ वानीजगरानी कीउदारतावखानीजायऐसीमतिकेशवउदारकौनकीभई । देवताप्रसिद्धसिद्धऋषिराजतपवृद्धकहैंताकीवात कहिआहूनकहूंलई ॥ भावीभूतवर्त्तमानजगतवखानतहै केशोदासक्योंहूंनवखानीकाहूपैगई । वर्णीपितुचारिमुख वर्णीपूतपांचमुखनातीवर्णीषटमुखतदपिनईनई ६९ ॥

ब्रह्माकी बेटी गणेशकी स्त्री सरस्वती उदार बड़ी देवता आदि कहत हैं ताकी वात कथा गुणि कहत हैं पूरी काहूने कोईठौर कहि नहीं लीनी पूरी काहूसों नहीं कहीगई यहअर्थ देवताआदिकी कही अब मनुष्य कहतहैं भावी जो जगत् जो लोग उपजहिंगे पिता ब्रह्मा चारिमुख ब्रह्मा के पुत्र शिव सो पांचमुखनाती कार्तिकेय सो षटमुख यहईश्वरहैं तऊउदारता नई नई दानवचनसों देत हैं कोईदेय सो सरस्वती देति है सरस्वती एक भगवानकीस्त्रीहै ताको वर्णन यहशोभैहै ६९॥

(अथ सूर्यजूकोदान यथा) कवित्त॥ वाधकविविध व्याधित्रिविधआधिकआधिवेदउपवेदवधवन्धनविधानहैं। जगपारावारपारकरतअपारनरपूजकपरमपदपावनप्रमानहैं ॥ पुरुषपुराणकहैंपुरुषपुरानेसवपूरणपुराणमुनिनिगमनिदानहैं । भोगवानभागवानभगतनिभागदानकरिवेकोकेशौदासभानभगवानहैं ७० ॥

त्रिविध आधिकहे आधिभौतिक औ आधिदैविक औ आध्यात्मिक जो मनको दुख ताके बाधक दूरि करनवाले हैं वेद उपवेद वधबंधन विधान है याकोअर्थ संसाररूप जो मनुष्य को बंधन है ताको जो वध नाश ताको जो विधान क्रिया है ताको किया करनवालाहै वेद औ उपवेद पुराण कहतहैं जग सोई है पारावार समुद्र ताकेपार करतहैं संपूर्ण पुराण औ नि-

गमवेद याको निदान आदि कारण है यहसुनो हैसीमें भोग नाम सुखको औ पालनको भोगवा पालन करनवाला किंवा अत्यन्त सुखीहैं भगवान्हैं भगनाम हेममें ज्ञानको माहात्म्य को नाम जाको नामरूप को नाम पराक्रम को नासश्री को नाम धर्मको नाम औ ईश्वरता कोनाम येसब जाकोहोय अर्थात् इतनेनसों युक्त हैं अरु भक्तनि को भाग्यवान् करिबे को सूर्यभगवान् ईश्वरहैं पाहिला भगवान्को अर्थ जामें ज्ञानमाहात्म्य पराक्रमरहै सो दूसरो भगवान् ईश्वर कहूं भोगमान भानुमान ऐसो भी पाठहै भानु किरण ७० ॥

(अथ परशुरामजीकोदान यथा) सवैया ॥ जोधरणी हिरण्याक्षधरीबरयज्ञबराहछिनायलईजू । जाकेलिये सबभारतभोभवपारथजीवनिबीजवईजू ॥ मानवदानव देवनिकोजुतपोबलकेहूंनहाथभईजू । सातसमुद्रनिमुद्रितरामसुविप्रनिवारअनेकदईजू ७१ ॥

वरश्रेष्ठ जो यज्ञ वाराह अवतार किंवा वरवलसों तपोबल सों किंवा तपस्यासों औ वलसों भवसंसार में जाकेलिये सब भारत युद्धभयो पारथ कुन्तीके पुत्र पांडव ताने जीवनहीं जुवई जीवरूप जो बीज तासों वोईहै बहुत जीवमारि भूमि में बीजकीतरह डारिदिये सातौ समुद्रनसों मुद्रितकरी है किंवा मुद्रा निशानीकरी है सप्तद्वीप पृथ्वी ७१ ॥

(अथ श्रीरामचन्द्रजीकोदान यथा) कवित्त ॥ पूरणपुराणअरुपुरुषपुरानेपरिपूरणवतावैंनवतावैंऔरउक्तिको । दरशनदेतजिन्हैंदरशनसमुझैननेतिनेतिकहै वेदछांड़िभेदयुक्तिको ॥ जानियहकेशौदासअनुदिनराम रामरटतरहतनडरतपुनरुक्तिको । रूपदेयअनिमाहिं गुनदेयगरिमाहिंभक्तिदेयमहिमाहिंनामदेयमुक्तिको ७२

ऐश्वर्यादि गुणकरि पूरणहैं औ पुराणहैं अनादिहैं औ पुराने पुरुष ब्रह्मा लोमश सनकादि आदि परिपूरण बतावै हैं सबठौर व्याप्त हैं कहत हैं सर्वविष्णुमयंजगत् याही उक्तिसों बतावै हैं और उक्तिसों नहीं बतावैं जाको भगवान् दरशन देतहैं सो फेरि दरशन शास्त्रको नहीं समुझिवेलागै सहजहानिन्नातिन्तोंकेवदेचपरिधिष्ठिना। याकोअर्थ जापै भगवान् अनुग्रह करत हैं सो लोक विषे वेदविषे आछीजो है बुद्धि ताको छोड़तहैं पुराण वचनहैं हेमीमें दरशननाम शास्त्रको औ धर्मको भी जाहि भगवानके रूपको वेद नेति नेति कहतहैं याको अर्थ यहनहीं चन्द्रनहीं यहनहीं सूर्यनहीं आकाश नहीं पवन नहीं यहकछु औरहै भेद ब्रह्मा भिन्नजगतभिन्न मध्वमत कहतहै सो भेदकी युक्तिको छाड़िकै संकरमत कहत हैं यहसब ब्रह्म है भ्रमसों द्वैतभासत है यहजानि कोई द्वैतकहत हैं अरु कोई अद्वैत कहतहैं सब श्रीरामजी हैं यह जानिकै अनुदिन सदा पुनरुक्ति जो काव्यमें दोषहै वे श्रीरामनाम में नहीं औ वेदभी नेति नेति पुनरुक्ति करीहै याते भगवान्के भजन में दोषनहीं जाको रूप सचित्र पटमें लिख्यो देखै तो रूपजोहै सो देखनवाले को अणिमा सिद्धिकोदेय अणिमा सिद्धिसों अनुरूपह्वैजाय काहूको नजरि नहींआवै गुणजोहै सो गरिमा सिद्धिकोदेतहै गरिमा सिद्धिवालाचाहै तो ऐसोभारीहोय जो पृथ्वीसोंनहीं सह्योजाय भक्ति जो सेवापूजा सो महिमासिद्धि को देतिहै महिमा सिद्धिवाला जो शरीर बढ़ावै तो ब्रह्माण्ड में न समाय सबसों नाम की अधिकाई नाम मुक्ति को देतहै ७२ ॥

(पुनः) सवैया ॥ जोशतयज्ञकरैकरीइन्द्रसोंसोप्रियताकीपपुंजसोंकीनी । ईशदईजुदयेदशशीशसुलंकविभीषणएमहिदीनी ॥ दानकथारचनाथकीकेशवकोवरणै

रसअद्भुतभीनी । जोगतिऊरधरेतनिकीसुतो औंधकेशू करकूकरलीनी ७३ ॥

जो प्यार शतयज्ञकरे इन्द्रसोंकीनो सो प्यार कपिकेसमूह पैकीनो ऊर्द्धरेता योगी ताकी जो गतिहै ताको ७३ ॥

(अथ बलिकोदान यथा रामचन्द्रिकामें) सवैया ॥

कैटभसोंनरकासुरसों पलमेंमधुसोंमुरसोंजिहिमारयो । लोकचतुर्दशरक्षककेशवपूरणवेदपुराणविचास्यो ॥ श्री कमलाकुचकुंकुममण्डितपण्डितदेवअदेवनिहारयो ।सो करमांगनकोबलिपैकरतारहुनेकरतारपसारयो ७४ ॥

हाथकैसोहै कमलाके कुच कुंकुमसों भूषितहै श्रीलक्ष्मीजी जाकी स्त्री सो मांगिवे को जाके आयो करतार ब्रह्मा ताको करतार ब्रह्मा को बनावनहार ७४ ॥

(अथ अमरसिंहजी रानाकोदान यथा) कवित्त ॥

कारेकारेतमकैसेप्रीतमसुधारेविधि वारिवारिडारेगिरि केशौदासभाखेहैं । थोरेथोरेमदनिकपोलफूलेथूलेथूले डोलैंजलथलबलथानसुतनाखेहैं ॥ घंटाघननातक्षन नातघनेघुंघरानिभौंरभननातभुवपतिअभिलाखेहैं ।दु- र्जनदरिद्रदलदलनअमरासिंहकेशौदासहाथीये हथ्यार करिराखेहैं ७५ ॥

तम अन्धकार किंवा राहु ताके प्रीतममित्र थल थानसुत नाखेहैं याकोअर्थ बलसों थान खूंटासुत सोतो नाखेहैं दूरकरे हैं किंवा बलजामें थानसुत गणेश तिनने नाखेहैं गणेशन इन में बलधरयो है भुवपति राजाने जाको चाहे हैं दुष्टजोहै दरि- द्रता ताको दलसमूह ताके दलनको किंवा दुर्जनको दल औ दरिद्रको दल हाथी ये हथ्यार करिराखे हैं जाको हाथीदेनहैं ताको दारिद्र जातो रहत है ७५ ॥

(अथ बीरबलकोदान यथा) सवैया ॥ पापकेपुंज पखावजकेशवशोककेशंखसुनेसुखमामें । झूठकेझाल रिझांझअलोककेआवतयूथनजातजमामें ॥ भेदकेभेरिबड़ेडरकेडफकौतुकभोकलिकेकुरमामें । जूझतहीबर बीरबजैबहुदारिदकेदरबारदमामें ७८ ॥

इतिश्रीमद्विविधभूषणभूषितायांकविप्रियायां
षष्टप्रभावः ६ ॥

शोकरूप जो शंख सो बहुत तरह आछे बाजत हैं सुनैं अलौकिक कलंक आवज बाजा हैं ताको यूथ समूह सो केतने जनाभय हैं नहीं जानो जात है भेद काहू सों विरोध करि देनो ७८ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायां
कविप्रियाटीकायांषष्टप्रभावव्याख्या ६ ॥

(अथ भूमिभूषणवर्णन) दोहा ॥ देशनगरवनबाग गिरि आश्रमसरिताताल ॥ रविशशिसागरभूमिके भूषणऋतुसबकाल १ ॥

देशआदि ऋतुपर्यंत भूमिके सब समयमें भूषण हैं १ ॥

(अथ देशवर्णन) दोहा ॥ रत्नखानिपशुपक्षिवशु वसनसुगन्धसुदेश ॥ दाजमानबहुवरणिये भाषाभूषित वेश २ ॥

नये नगर गढ़ यह भी कहूं पाठहै वसु धन २ ॥

(यथा) कवित्त ॥ आछेआछेअसनवसनवसुवास वशदानसन्मानयानवाहनवखानिये । लोगभोगयोग

भोगयोगरागरूपयुतभूषणनिभूषित सुभाषासुखजानि
ये ॥सातोपुरीतीरथसरितसबगंगादिकेशौदासपूरण
पुराणगुणगानिये । गोपाचलऐसेगढ़राजारामसिंहजू
सेदेशनकीमणिमहिमध्यदेशमानिये ३ ॥

यान पालकी आदि बाहन हाथी आदि भोगको भोगको योगहै किंवा योग बहुत साधनहै पुरी आदि के गुणको संपूर्ण पुराणमें गाइयेहै किंवा पूर्ण पुराण जाको पुराण आवै है सो गावैहै गोपाचल सरीषो गढ़ है रामसिंहजी सरीषाराजा जहां है। देशनि कि मणिमहि मध्यदेश मानिये देश नहींहै कि को अर्थ किधौं मणिहै महो पृथ्वीके मध्यदेशमें कटिदेश विषे कांचीको रत्नहै यह मानिये बहुतसुंदरहै यह अर्थ किंवा देशनिकी मणिहै महीको मध्यदेशहै जैसे मध्यदेश कटि जैसे सुंदर होतहै तैसे सुंदर है ३ ॥

(नगरवर्णन) दो० ॥ खाईकोटअटाध्वजा वापीकूप तड़ाग । बारिनारिअसतीसती बरणहुंनगरसभाग४॥

वापी बावली बारनारि वेश्या सभागसंयोपन किंवा भाग सहित ४ ॥

(यथा) कवित्त॥चहूंभागबागवनमानहुंसघनघनशो
भाकीसीशालाहंसमालासीसरितवर । ऊंचेऊंचेअटनि
पताकाअतिऊंचीजनुकौशिककीकीन्हीं गंगाखेलततर
लतर ॥ आपनेसुखनिआगेनिन्दतनरेन्द्रओर वरघर
देखियतदेवतासेनारिनर। केशौदासत्रासजहांकेवलअ
दृष्टहीकोवारियेनगरऔरओड़ेवेनगरपर ५ ॥

भाग ओर मानहुं सघन निविड़घन मेघहैं सरित नदी वेतवै सो मानौं शोभाकी कोई मूर्त्ति धरेहोय ताकी शालासी है किंवा हंसकी माला कहे पंक्ति सरीषीहै पताका आकाशमें

है सो मानों कौशिक विश्वामित्र की बनाई गंगाजी खेको अर्थ आकाश तामें तरल अतिचंचल खेलतिहै विश्वामित्रने एक गंगाबनाई है पुराणमें कथाहै पुरवासी आपने सुखके आगे और देशके नरेशको निंदतहैं अदृष्ट कर्म ५ ॥

(वनवर्णन) दो० ॥ सुरभीइभवनजीवबहु भूतप्रेत भयभीर । भिल्लभवनवल्लीविटप दववनवर्णहुधीर६॥

इभ हाथी भूत प्रेतके डरसों लोग भीरु कायर होय डरैं किंवा भये भीरु बहुत भये वल्ली लता विटप वृक्ष दवदवा-गि पूरुवमें डाढ़ाकहत हैं ६ ॥

(यथा) कवित्त ॥ केशौदासओड़छेकेआसपासतीस कोसतुंगारण्यनामवनवैरीकोअजीतहै । विंध्यकेसोवंधु वरवारनवलितवाघवानरवराहबहुभिल्लकोअभीतहै ॥ यमकीजमानिसीकिजामवन्तकेसोदल महिषसुखदस्व च्छऋक्षनकोभीतहै । अचलअनलवन्तासिंधुसोसरित युतशम्भुकेसोजटाजूटपरमपुनीतहै ७ ॥

विंध्यपहाड़ के बंधु ऐसे ऊंचे वारन तासों वलित युक्तहै बंधुशब्द आर्थी उपमाको जनावैहै सोको अर्थ मानौं किंवा विंध्यको बंधु सोहै विंध्यमें भी वारन वाघ इत्यादि हैं यमकी जमानि जैसे महिषको सुखदहै जामवंत के दलमें स्वच्छभा-लु औ रीछ रहतहै हेमअनेकार्थ में अक्षनाम भालुको औ फटिकको स्वच्छको अर्थ सुंदर जो अक्षभालु औ रीछजानि विशेषहै ताको प्रियहै यामें श्लेष साफ नहीं लागतहै अचल पहाड़ समुद्रमें बहुतहैं अनल आगि जामेंहै ऐसो जो समुद्र नादि सरीषाहै सदायामें आगिरहतिहै इहां भी नदीहै ताकी उपमा सरित श्रीगंगाजी युक्त महादेव के जटाजूट सो परम पुनीतहै ७ ॥

(गिरिवर्णन) दो० ॥ शृंगतुंगदीरघदरी सिद्धसुन्दरीधातु। सुरनरयुतगिरिवरणिये औषधिनिर्भ्झरपातु८॥

शृंग ऊंचोहै वड़ी कंदरा निर्भ्झरझरना ८ ॥

(यथा) कवित्त ॥ रामचन्द्रकीन्हेतेरेअरिकुलअकुलायमेरुकेसमानआनअचलधरीनिमें। सारोशुकहंसपिककोकिलाकपोतमृग केशौदासकहूंहयकरभकरीनिमें ॥ डारेकहूंहारटूटेरातेपीरेपटछूटेफूटेहैंसुगन्धघटअवततरीनिमें।देखियतशिखरशिखरप्रतिदेवतासेसुन्दरकुवंरअरुसुन्दरीदरीनिमें ९ ॥

आन अचल और पर्वत सारोआदि आपने पाले जनावर संगमें लैगयेहैं कलभ हाथिनके वच्चा हाथिनमें हैं तरी पहाड़की तरहटी शिखर शृंग प्रतिशृंगनिमें दरी कंदरा ९ ॥

(आश्रमवर्णन) दो० ॥ होमधूमयुतवर्णिये ब्रह्मघोषमुनिवास । सिंहादिकमृगमोरअहि इभशुभवैरविनास १० ॥

ब्रह्म वेद ताको घोष शब्द सिंहादिकको आपने वैरिनसों शुभ कल्याण रहतहै वैरजातहै सिंहसों इभ हाथीसों मोरसों अहिसों १० ॥

(रामचन्द्रिकायां) कवित्त ॥ केशौदासमृगजवछेरूचोखैंवाघिनीनचाटतसुरभिवाघबालकवदनहै । सिंहनिकीसटाऐंचेकलभकरनिकरि सिंहनिकोआसनगयन्दकोरदनहै ॥ फणीकेफणनिपरनाचतमुदितमोरक्रोधनविरोधजहांमदनमदनहै । वानरफिरतडोरे डोरेअन्धतापसनऋषिकोनिवासकिधौंशिवकोसदनहै ११ ॥

ऋषिको निवासहै किधौं शिवको सदन घरहै ऋषिनको घास फेलति जहां मृगज मृगसों उपजे ऐसे जे बछरूबच्चा सो बाघिनिको चोखें अर्थात् दूधपीवैहैं बाघकेबालकको मुखसुर-भी चाटतिहै सिंहनिकी सटाकेसरा ताको कलभ हाथी के बच्चा करशुंड ताहिसों खेंचैहैं हाथिनके दांतसों सिंहनि के आसन हैं पलकहंता हाथिनके दांतपर सिंहनिने आसनकि-योहै फणी सांपके फणापर मोर राजभये नाचत हैं मदगर्व जहां नहीं औ मदन काम जहां नहीं वानर जहां अंधताप-सनिको डोरे डोरे लिये फिरत हैं शिवको सदन कैसोहै जहां मृगज बछरू मृगनाम हेममें गज विशेषको औ पशुमात्रको गजको बच्चा किंवा पशुको बच्चा गज योगिनी को भक्षण सो बाघिनी योगिनी ताको चूसतहै सुरभि वृषभ महादेवकोवा-हन औ बाघ नो सहजही बालककीतरह परस्पर बदनचाटत हैं बालक जैसे ख्यालकरै किंवा बाघ बालककोबदन भवानी को बाहन सिंहहै ताकी सटाकेसर ताको कलभ गणेश जहां कर निकर हाथनिसों भी औ शुंडसों भी ऐंचतहैं लोक में हाथीको भी गणेशकहतहैं सिंहनिको आसन गयंदको रदन है याको अर्थ हेममें यात्राको निवृत्तकरनेमेंभी आसनकरयो है सिंहनिको चलिबो ताके निवृत्तकरिबेको जहां गजकोरदन है सिंहचलेहै तब हाथी आप दांतसों रोकैहै ऐसे ख्यालकर-तहैं सिंहनिकी यात्रारोकिबेको गयंदके दांत हैं कार्तिकेय के मोर सो शिवको भूषण सर्प तापै नाचत हैं सानंदहोयकै हेम कोषमें मदन नाम धतूरको भी है जहां सदगर्व नहीं काहू को रहैहै औ मदन धतूराहै किंवा कामको मदगर्व जहां नहीं है बानर डोले डोले फिरतहैं फिरते फिरैहैं यह अर्थ जैसे क-हतहैं फलाने गांव डोले डोले फिरै ऐसे बोलतिहैं औ जहां कोऊ तपसी नहीं है ऐसे जानिये ११ ॥

(सरितावर्णन) दो० ॥ जलचरहयगयजलजतट

यज्ञकुण्डमुनिबास । स्नानदानपावननदी वर्णियकेशोदास १२ ॥

जलचर नक्र आदि हय दरियाई घोड़ा गज दरियाई हाथी १२ ॥

(यथा) सवैया ॥ ओड़छेतीरतरंगिनिबेतवैताहितरेंरिपुकेशवकोहै। अर्जुनबाहुप्रवाहप्रबोधितरेवाज्योंराजनिकीरजमोहै ॥ ज्योतिजगैयमुनासीलगैजगलोचनलालितपापबिपोहै । सूरसुताशुभसंगमतुंगतरंगतरंगतरंगसीसोहै १३ ॥

तरंगिनीनदी बेतवै बेतवैनदी कैसीहै रेवा नर्मदा जैसीहै अर्जुनस्नानार्जुन तिनके बाहुहाथकरिकै प्रवाहजाको प्रबोधित अधिकजगायो उछाल्योजानिये बेतवै राजाअर्जुन ओड़छाको ताके बाहुते प्रवाह प्रबोधितहै शत्रुराजानिकीरज गुमान बेतवै पापको बिपोहैहै दूरकरतहै याते जो कोई स्नान करतहै ताके अंगमें ज्योति जागतहै पुण्यकी कांति होतिहै श्रीयमुनाजीमें ये गुणहैं तासों यमुनाजीसी लागतिहै श्रीयमुनाजी जगलोचन सूर्य तासों लालितहै आदरकरीहै बेतवै जगतके लोचन करिकै लालितहै लोग वाकी शोभा आदरकरि देखतहैं तुंग ऊंचेतरंगहैं जाके ताकरिकै तरंगिनी जो बेतवै सो श्रीगंगाजी सारिषीसोहतिहै सूरसुता श्रीयमुनाजी ताको संगम श्रीगंगाजीको भी है याको भी है तासों गंगासी शोभतिहै १३ ॥

(बागवर्णन) दो० ॥ ललितलतातरुवरकुसुम कोकिलकलरवशोर । बरणिबागअनुरागसों भवरभवत चहुंओर १४ ॥

तरुवरवृक्ष किंवा वरश्रेष्ठ जामें कुसुम कलरवपक्षीनर अनुरागसों बहुत कुसुम के सुगन्धसों आसक्तहोयकै १४ ॥

(यथा) कवित्त ॥ सहितसुदरशनकरुणाकलितकम लासनविलासमधुवनमीतमानिये । सोहियेअपर्णारूप मंजरीपैनीलकंठकेसौदासप्रगटअशोकउरआनिये ॥ रम्भामेसदम्भबोलैमंजुघोषाउरवसी हंसकूलसुमनस सबसुखदानिये । देवकोदिवानसोप्रवीणरायजूकोवाग इंद्रकेसमानतहांइन्द्रजीतजानिये १५ ॥

देवताको दीवान सभा ताके समान प्रवीणरायजूको वाग है देवसभाकोभी जहां वर्त्तनहै तहांभीवागहै जलहै देवसभा केसीहै श्रीकृष्णके विशेषण सुदर्शनचक्र सहित करुणा दया सों कलितयुक्त फेरि कमलालक्ष्मी तासोंसन कहिये आछोहै विलासजाको ऐसो जहां मधुवनकोमित्र मधुवन जाको भावत है श्रीकृष्ण ताको जहां मानियेहै पूजितहै किंवा देवसभा सुदर्शनचक्रसहितहै मूर्त्तिमान जहां सुदर्शनचक्रहै जैसे द्वारका में मूर्तिमान सुदर्शनचक्रहै औ करुणासहित कमलासनब्रह्मा ताको जहां विलासहै विशेषकरिकैलसेहै औ मधुवनमीत श्रीकृष्ण जहांमानियेहै फेरि जहां अपर्णापार्वती औ रूपमंजरी सगीगी औ पयजग औ नीलकंठ सो महादेवसे जहां प्रगटप्रत्यक्षलोहतहै किंवा पय गंगाजलतासोंयुक्त नीलकंठ महादेव सोहतहै किंवा अपर्णापार्वती जहां सोहतिहै सो कैसीहै रूप जो कोई पदार्थहै ताकी मंजरीकुसुमहै वहुतसुंदरीहै यहअर्थ पयशब्दसों आसक्त पदको अध्याहारहोत है अपर्णा रूपमंजरी पै आसक्त नीलकंठ शिवजहां हैं किंवा अपर्णा पार्वती तिनके रूपपै आकारपर शरीरपर वह अर्थ मंजरी मोटा मोती सोहत है जहां हेमीनानार्थनें रूपनाम सौंदर्यको औ आकृतिको फेरि हेममें मंजरीनाम स्थूलमोती को भी है फेरि जहां शोक उरमें नहीं आनिये है फेरि देवसभा कैसी है रंभा अप्सरा तासों सदंभ कपटसहित मंजुघोषा औ उर्व

शीबोलतिहै जहां हंस सूर्य औ सुमनस देवता फूलहैं राजीहैं देवता किंवा देवसभा सव सुखदानीहै देवसभामें इंद्रहै प्रवीणरायको वाग कैसो है जहां सुदर्शन फूलहै कोई वाही को स्थल कमल कहत है ताहिसहितहै औ करुणा वृक्ष तासों कलितयुक्तहै औ कमल जहां हैं औ असन वृक्ष कोईहै ताको जहां विलासहै सो विशेषकरि शोभैहै किंवा ताको तहां उपभोगहै मधुवन मथुरा को वन ताको मीतहै मीनशब्द आर्थी उपमा वाचक है तैसो है यह अर्थ या वातको मानिये जहां अपर्णा अमरलता को रूपसोहतहै हेमीमें मंजरीतिलक वृक्ष को नामहै किंवा रूपमंजरी सदासुहागिनि फूलहै ताको लोग कहत हैं सो जहां सोहतिहै तापै नीलकंठ मोर प्रगटहैं जहां जो सदासुहागिनि मोरकोभार नहीं सहै तो नीलकंठ खंजन किंवा जाको विजयदशमी को दर्शनकरैहैं सो नीलकंठतिलक वृक्षपै तौ सव संभवै औ अशोक वृक्षहै ताको उरमें मनमें आनिये है जानिये है रंभासों याको अर्थ हेमीमें रंभा नाम केलाको औ अप्सराको केलाको अर्थ नहीं वनै अप्सराकहिआये हेममें रंभानाम वांसके दंडको तासों वांसुरी लीजिये अनुनासिक निरनुनासिक स्वरको धर्महै गुरुलघुहोत हैं लघु गुरुहोतहै दंभनाम कपटको है भाषामें गर्वपर प्रसिद्धहै पक्षी को भी सगर्व कहत हैं मेघदूतमें चातकस्तेसगर्वः कह्यो हैं वांसुरीसों मधुरसगर्व मंजुघोषा कोकिल वोलतिहै सो लोगनिके उरमें मनमें वसीहै आछी लागीहै यह अर्थ किंवा कोई काहूको दिखावतहै रंभा केलाके सामने देखो सगर्व मंजुघोषा वोलतिहै सो आछी लागतिहै हंस जहां पक्षीहैं सुंदरीनरहै जहां सुमन फूलफूलेहैं सो सुखद सवसमयमें सुखदानीहै १५

(अथतलाववर्णन) दो० ॥ ललितलहरिखगपुष्प पशु सुरभिसमीरतमाल । करभकेलिपन्थीप्रगट जलचरवरणहुताल १६ ॥

तमाल वृक्ष उपलक्षण है और भी वृक्ष जानिये करभ हाथी के बच्चा जहां केलिकरत हैं १६ ॥

(यथा) सवैया ॥ आपधरैंमलऔरनिकेशवनिर्मलकायकरैंचहुँओरैं । पंथिनिकेपरितापहरैंहठिजेतनतूलतनूरुहतोरैं ॥ देखहुएकसुभावबड़ोबड़भागतड़ागनकोचितथोरैं । ज्यावतजीवनहारिनकोनिजबन्धनकैजगबन्धनछोरैं १७ ॥

कोई काहूसों कहैहै चहूंओरैं चारिहूंघाटमें पथिकके परिताप पथके दुखकोहरतहै जोरावरीसों परिताप तीनितरहको सूर्य आगि इत्यादिसों सो आधि दैविक कोई के कटुवचन अनादर इत्यादिसों होय सो आधिभौतिक रोगादिकसों होय सो आध्यात्मिक जो लोग तनूरुह तुल्य रोम बरोबरि किंवा तलाके पुत्र बरोबरि तनूरुह तलावके निकटके तरुरूख ताको तोरतहैं लोग तौ अपकारकरतहैं तलाव उपकार करैहै थोरे चितमें थोरी संपतिमें जलरूप चित जेतनी नदी नदमेंहै तेतनी नदीहै जीवन नाम जीवको औ जलको जीवनहारी जो हैं जो इनके जीवन जलको हरतहै लेतहै तिनको ज्यावत है श्लेष में जो इनके प्राणकोहरैहै तिन्हैं जिवावतहै जो आपने बंधनकरिकै जगत के बंधनको छुड़ावतहै जो तलाव बंधावै ताको कर्म बंधनछूटै मुक्तहोय यह अर्थ १७ ॥

(अथसमुद्रवर्णन) दो० ॥ तुंगतरंगगँभीरता रतन जलजबहुजन्त । गंगासंगमदेवत्रिय यानविमानअनन्त १८ ॥

यान वाहन औ विमान औ अनंत भगवान १८ ॥

दो० ॥ गिरिवड़वानलवृद्धिबहु चन्द्रोदयतेजानि ।

पन्नगदेवश्रदेवग्रह ऐसोसिंधुवखानि १९ ॥

चंद्रोदयते वढ़िवो सिंधुको १६ ॥

(यथा) सवैया ॥ शेषधरैधरणीधरणीधरकेशवजीव रचेविधिजेते । चौदहलोकसमेतातिन्हैंहरिकेप्रतिरोम निमेंचितचेते ॥ सोवततेउसुनैंइनहींमेंश्रनादिश्रनन्त श्रगाधहैंयेते । श्रद्भुतसागरकीगतिदेखहुसागरहीमहि सागरकेते २० ॥

शेष नाग धरैहै राखे है धरणी पृथ्वीको श्रौ धरणीधरपहारको श्रौ विधाताने जेतने जीवरचेहैं ताको श्रौ चौदहलोक सहित श्रौ तिन शेषनाग सहित हरिके प्रतिरोम में एक एक रोममें चितमें चेतेजानैं श्रगाध श्रतल स्पर्शहै याते श्रीभगवानके रोमनि में समुद्र हैं केतने समुद्र हैं २० ॥

सवैया ॥ भूतिविभूतिपियूषहुकीविषईशशरीरकि पापविपोहै । हैकिधौंकेशवकश्यपकोघरदेवश्रदेवनिके मनमोहै ॥ संतहियोकिवसैहरिसन्ततशोभश्रनन्तकहै कविकोहै । चन्दननीरतरंगतरंगितनागरकोउकिसाग रसोहै २१ ॥

समुद्र चारि भी वर्णत हैं चारिहूं तुककरि वरणे हैं समुद्र है किधौं ईश महादेवको शरीरहै भूति संपतिसों भूति भस्म तासों विभूषित समुद्र भी शिवभी पीयूष श्रमृत समुद्र में है सुधांशु चंद्रमा देहमें है याते विष समुद्र में श्रौ शिव में पाप को दोऊ दूरिकरै हैं समुद्रमें देवता रहतहैं श्रदेव दैत्यदानव रहतहैं ऐसे कश्यपके घरमें जानिये समुद्रमें श्रौ संतकेहृदय में भगवान् वसत हैं कोऊ नागर प्रवीण है किधौं सागर है चंदनको नीरलाये है तरंग जे मनकी ऊर्मि मनोरथसो जाको

है मनोरथनिसों युक्त है किंवा चंदन नीरनीर युक्त जो घंदन घस्यो चंदन ताकी जो तरंग लहरी ताकी आकृति खौरिकरै हैं चंदन लगाय अंगुरीसों चीरै हैं सो तरंग की आकृतिहो-तिहै चंदन नीर तरंग सों तरंगित युक्त है समुद्र पक्षतट में चंदन है किंवा हरिचंदन जामें है व्याकरण में पूर्व पद उत्तरपद को लोप भी होतहै हरिको लोप भयो चंदनरह्यो और नीर तरंगसों तरंगित युक्त है किंवा चंदन सों उज्ज्वल जाको नीर है २१ ॥

(अथसूर्योदयवर्णन) दो० ॥ सूरउदयतेअरुणता पयपावनताहोय ॥ शंखवेदधुनिमुनिकरैंपन्थलगैसब कोय २२ ॥

वेदधुनि मुनि करत हैं २२ ॥

दो० ॥ कोककोकनदसोकहतदुखकुवलयकुलटा नि ॥ ताराऔषधिदीपशशिघूकचोरतमहानि २३ ॥

कोक चकवा औ कोकनद कमल तिनको सूर्य उगे वियोगको जो शोकदुःखजातहै कुवलय रात्रिविकासी कमल२३॥

(यथा) कवित्त ॥ कोकनदमोदकरमदनबदनाकिधौं दशमुखमुखकुवलयदुखदाईहै । शोधकअसाधजनशोधकाकितमोगुणउदितप्रवोधवुद्धिकेशौदासपाईहै ॥ पावनकरनपयहरिपदपंकजकी जगमगैमनुजगमगहरशाईहै । तारापतितेजहरतारकाकोतारकाकिप्रगटप्रभातकरहीकीप्रभुताईहै २४ ॥

यह मदन काम ताको वदन मुख है किधौं प्रगटभये हैं जो प्रभातकर सूर्य तिनकी प्रभुताई ईश्वरता है मदन को वदन कैसो है कोक जो काम शास्त्र ताको जो नद शब्द सो

है मोद आनंद ताको कर्ता जाहि कामको धर्म शास्त्र वेराजी करत हैं कोकशास्त्र राजी करत हैं किंवा सूर्य की प्रभुता है सो कैसी है कोकनद कमल ताको मोद आनंदकारीहै दश-मुख रावण ताको मुख है किधौं सूर्य की प्रभुता है रावणको मुख कैसो है कुवलय भूमिमंडल ताको दुखदाई है किंवा कुपृथ्वी ताको वेष्टितकरे कुवलय समुद्र ताको दुखदाईहै रावणके प्रसंगसों समुद्र वँध्यो है ऐसे भी कहत हैं सूर्यकी प्रभुता कैसीहै कुवलय रात्रि विकासीकमल ताको दुखदाईहै सो संकुचितहोत है उदित कहिये प्रगटभयो है जो प्रबोध बड़ी समुझ जामें ऐसीबुद्धिहै यह केशौदासने पाई है जानीहै बुद्धि कैसीहै असाध जो जन दुष्ट जो लोगता तिनकी रोधकहै रोकनेवालीहै सज्जनसों मिलिवे नहींदेति है किंवा जाहि बुद्धि के रोकनवाले असाधुजन चोर व्यभिचारीआदि तिनकोरोंके है फेरि तम अन्धकार ताके गुण अन्धकार तौ ताको शुद्धकरे है दूरकरैहै हरिकेपदपंकजहैं चरणकमलहैं किंवा सूर्यकीप्रभुता है हरिके पदपंकज कैसेहैं जेहि चरण कमल को पयजल श्री गंगाजी रूप सो पवित्रकरतहै सूर्यकी प्रभुता कैसीहै पयजल ताको पावनकरनवालीहै सूर्यकेउगे जलपवित्र होत है पुराण बचनहै जगत में मनु जगमग दरशाईहै याकोअर्थ मनुराजा भयेहैं जिनकी सन्तान ये मनुष्य हैं जिनने मनुस्मृतिकरी है चारिहूवर्णको धर्ममार्ग वनायो है जगतमें मनुहै कि सूर्यकी प्रभुताई है मनुकैसोहै जगत में जगतके पथकी गति दिखाई है प्रभुता कैसी है जगतमें मगपथ ताको दिखावतहै कहूं जगमें मणि ऐसोभी पाठहै सो आछोनहीं तारकाराक्षर्न। ताको तारकगति देनवारे श्रीरामचन्द्रहैं कि सूर्यकी प्रभुता है तारापति वालीवानर ताके तेजको हरनवालाहै मारनवाला है यहअर्थ सूर्यकी प्रभुताकैसीहै तारापति चन्द्रमाताके तेज को हरनवालीहै २४ ॥

(अथचन्द्रोदयवर्णन) दो० ॥ कोककोकनदविरहि तमसानिनिकुलटानिदुःख ॥ चन्द्रोदयतेकुवलयनिजल धिचकोरनिसुःख २५ ॥

कुलटाको प्रकाश नहींभावै २५ ॥

(यथा) कवित्त॥ केशौदासहैउदासकरकमलाकरसों शोषकप्रदोषतापतमोगुणतारिये । अमृतअशेषकेवि शेषभावबरषत कोकनदमोदचण्डखण्डनाविचारिये ॥ परमपुरुषपदविमुखपरुखरुख सनमुखसुखदविदुखउर धारिये । हरिहैंरीहियमेंनहरिणहरिणनैनीचन्द्रमानचंद्र मुखीनारदनिहारिये २६ ॥

हरिहैंरीहियमेंनहरिणनैनीचन्द्रमुखी चन्द्रमाननारदनिहा रिये दोयनायका चन्द्रमा को देखिके डरकरती हैं एक दूसरी सों पूंछैहे चन्द्रमुखी यह चन्द्रमाहै दूसरी कहतिहै नको अर्थ नहीं फेरि कहतिहै हेहरिणनैनी यहश्यामतादेखैहै सो कालो हरिण तो नहींहै दूसरी कहतिहै रीसखि न हरिन हरिननहीं है तो कहाहै हृदय में हरिभगवान् हैं जाके ऐसे नारदजीको निहारिये है भगवान्की श्यामता नारदजीमें देखियेहै नारद जी कैसेहैं जाको करहाथकमला वरांगना ताकेकरसों उदासहै वरांगनाको पाणिग्रहण नहींकरतहैं हेमसें आकरनाम समूह को औ खानिको किंवा जाको कर कमलालक्ष्मी ताके आकर समूहसोंउदासहै सम्पतिको हाथसोंनहींछुवैं किंवा जाके कर कमल के आकर समूह तिनसों उदासहै ताको भी नहीं छुवैं लक्ष्मीको निवास जानिकै फेरि नारदजी कैसेहैं शोषकप्रदोष ताप प्रकृष्ट जो दोषपाप अपराध तासों भयोहै जो ताप दुःख ताको शोषक मिटावनहारहैं तमोगुणतारिये तमोगुणके कार्य कोपअज्ञान ताको नारदजीतारेहैं ताड़ेहैं दूरकरैहैं किंवा तमो

गुणता तमोगुणपनो ताके अरिशत्रु ये नारदजी हैं नारदजी को स्वप्नमेंभीदेखै तौभी तमोगुण नहींरहै फेरि नारदजीकैसे हैं अशेषकहिये सम्पूर्ण जो अमृत मोक्षसालोक्यआदि चारि प्रकारकी तिनको जो विशेष भावक्रिया ताको वरषतहैं देतहैं जाहिक्रिया के करे मोक्षहोय ताको सिखावत हैं जैसे ध्रुवको सिखायो फेरि नारदजीकैसेहैं कोककामशास्त्र ताको नदशब्द तासों उपजै जो मोह आनन्द ताको चण्डकहिये उग्रखण्डन को अर्थ खंडनकरनवाले नाम नाशकरनवालेहैं यह विचारि येहै कुबेर के पुत्र लुगायन सहित मत्तहोय विहारकरैथे तिन्हैं शापदियो फेरि कैसे हैं परमपुरुष जो भगवान् तिनके जे पद चरण तिनसों जो विमुखलोग हैं तिनसों परुषकठोर है तौर जाकी रूखीनजरि ताहि देखत हैं औ भगवान्सों संमुखजे विदुष पंडितहैं तिनको सुखदहैं तिन्हैं उरमेंधारैहैं किंवा भगवान् सों जो संमुखधारैहै सोईविदुषहै और अयानहैं यहबात जानिकै उनविषे उरको मनकोधारै हैं ऐसे जानिये अथचन्द्र पक्ष चन्द्रमा कैसो है कमल के आकर समूह तिनसों जाके करकिरण उदासहैं कमलनिको नहीं प्रकाशै है प्रदोष कहिये संध्या ताहि विषे सूर्यको जो है ताप ताको शोषक दूरकरन वालो है किंवा संध्याको औ तापको शोषक है फेरि तम जो अन्धकारताके जे गुण लोकनिकेनेत्रनको अन्धकरनो ताको तारियेहै ताड़ियेहै सम्पूर्णअमृत ताको विशेषभावसों विशेष चाहसोंवरषतहै औ औषधी औ लोक ताको दिनकोतापमिटै यह विशेषभाव अमृत के याकी ठौर अमृतको ऐसो जानिये श्लेषमें दोषनहीं अर्थसों विभक्ति फिरिजातिहै कोकनद आरक्त कमल ताको जो मोह ताको चंडतीव्र जैसेहोय ताको न सह्योजाय ऐसे खंडनकरनवाला विचारियेहै परमपुरुषमाद्यो जो आपने पुरुष पति ताको जो यहस्थान गृह किंवा शय्या किंवा संकेत तासों जो विमुखहै मानिनीहै ताहिविषे परुषहै

रूखी है क्रूर है रुखतोर जाकी नायकसों सन्मुख विदुषिनको समुझवार लुगाइनिको सुखद है ताहि उरधारिये है हितजानत है किंवा नायकसों जो संमुख है समुझवार है औ नायकको उरमें धारे है चन्द्रोदयमें माननहीं रहैगो याते चन्द्रमामें नारद को आरोपण कियो २६ ॥

(वसन्तवर्णन) दो० ॥ वरणिवसन्तसुपुष्पअलिविरहविदारणवीर ॥ कोकिलकलरवकलितवनकोमलसुरभिसमीर २७ ॥

विरह के विदारिवेको वीर है समर्थ है किंवा विरही के विदारिवेको जाके वीर सुभट पुष्प अलि कोकिलादि कोकिलको कलरव अव्यक्त मधुर ध्वनिसों कलित युक्त किंवा कोकिल औ कलरव कपोत तासों युक्त वन है २७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ शीतलसमीरशुभगंगाकेतरंगयुत अंबरविहीनवपुवासुकिलसन्तहै । सेवतमधुपगणगजमुखपरिभृतवोलसुनिहोतसुखीसन्तऔअसन्तहै ॥ अमलअदलरूपमंजरीसुखदरजरंजितअशोकदुखदेखतनसन्तहै । जाकेराजदिशादिशिफूलेहैंसुमनसवाशिवकीसमाजाकिधौंकेशववसन्तहै २८ ॥

शिवकी समाज है किधौं वसंत है शिवकी समाज कैसी है शिवके माथेपै गंगाजी हैं शुभ कहिये आछी श्रीगंगाजीकी तरंग तासों युक्त तहां शीतल समीर पवन है समाज कहे गण सहित शिव लीजिये अंबर वस्त्र ताकरि विहीन शिव औ वपु शरीर जाको वासुकि नागसों सोहत है किंवा वपुविषे वासुकि सोहत है मधु नाम हेममें क्षीर को औ जलको क्षीर पानकरि रहे हैं किंवा जल पानकरिरहे हैं ऐसे जे तपस्वी तिनके गण समूह शिवको सेवत हैं औ मधुप देवता विशेष को भी

कोई कहत हैं ताके गण सेवत हैं किंवा मधु वसंत सो जिन शिव के पगन पावन को सेवतहै औ गजमुख गणेश औ पर भृत कार्तिकेय जिन शिवको सेवतहैं जिन शिवकेवचन सुनि संत सुर असंत असुर रावण वाणासुर आदि सुखी होतहैं अमल निर्मलहैं फेरि अदल कहिये अपर्णा पार्वतीशिव के लिये तपस्याकरीथी तब लाखवरपताई सूखेपात खायरहीथीं पीछे पातको भी त्यागकियो तासों अपर्णा नामभयो औ रूप मंजरी कोई सखी किंवा अपर्णा जोहै रूप मंजरी ताके पद की रजसों रंजित रंगे अशोकवीत शोक गयोहै शोकजिनको ऐसे संत असंत हैं जाहि अपर्णा को देखे दुख नाश को प्राप्त होतहैं जाहि शिवके किंवा समाजके राज में दिशा दिशा में सुमन देवता फूलेहैं राजीहैं वसंत कैसोहै हेमकोपमें शीतल नाम चंदनको भी है शीतल चंदन ताको जो पवन सो शुभ आछी जो श्रीगंगाजीकी तरंगलहरी तासों युक्तहै फेरि वसंत में अंबर आकाश निर्मलहोतहै औ विहीनवपु काम औ वासुकि फूलको हार सो जहां शोभापावतहै फेरि वसंत कैसोहै हाथी वहुधा वसंतमें मत्तहोतहै मधुप भ्रमर ताके गण गज मुखको सेवतहैं गजमुख कोई आंवको भी कहत है परिभृत कोकिल ताके वोलसुनि संत असंतकहे भलेबुरे सवही सुखी होतहैं अमल निर्मल अदल अमरलता जेहि वसंतमें हैं औ रूपकी मंजरी सरीषी जे नायका तिनके पावँकी रजसों रंजित जहां अशोक वृक्षहैं स्त्री जव पावँसो मारै तव अशोकफूले है जाहि वसंतदेखि दुखनशैहै भाजैहै फेरि वसंत के राजमें कहिये प्रकाश में दिशा दिशामें सुमन फूल फूलत हैं २८ ॥

(ग्रीष्मवर्णन) दो० ॥ तातेतरलसमीरमुखसूखेसरिताताल ॥ जीवअवलजलथलविकलग्रीपमसफलरसाल २९ ॥

ताते गरम तरल चंचल समीर पवन तासों मुख सूखेहै औ सरिता औ तलाव सूखेहैं जीव अवलहोयरहेहैं औ थोरे जलविषे औ थलविषे विकल होयरहेहैं रसाल आंब ग्रीष्म में फल विहितहैं अर्थ फलनसों युक्त हैं २६ ॥

कवित्त ॥ चंडकरकलितबलितबरसदागतिकन्दमूलफूलफलदलनिकोनासहै । कीचबीचबचैंमीनव्यालबिलकोलकुलद्विरददरीनादिनकृतकोविलासहै ॥ थिरचरजीवनहरनवनवनप्रति केशौदासमृगशिरश्रवननिवासहै । धावतचलितधनुसोहतनिपाणिसरसबरसमूहकिधौंग्रीषमप्रकासहै ३० ॥

सवर भीलको समूह है किधौं ग्रीषम जेठ अषाढ़ ताको प्रकाश है सवर कैसेहैं चंडहैं अति कोपभरे फेरि कर कलित याको अर्थ कलित अर्थ लियोहै वनपैकर जगातजानैं वलित को अर्थ रोकीहै वरको अर्थ वलसों वनमें रोकीहै सदागति जाने सांझमें लोग चलि नहीं सकतहैं कोई ऐसे भी कहत हैं हेममें चंडनाम यमदूतको भी है चंडहैं मानौं यमदूतहैं फेरि हाथमें कलित ग्रहणकियोहै सदागतिवान जानैं फेरि वलसों वलित युक्तहैं फेरि कंदमूल दोऊ शब्द को ग्रहण है तासों कंदनाम सुखदाई वस्तु मधु आदि जानिये इन सबके विना शक हैं फेरि कैसे हैं काकु स्वरसों सर्वत्र जानिये जासों कीच के वीचमें मीन वाचैहैं नहीं वाचैहैं यह अर्थ व्याल सांपबिल में वाचतहैं नहीं वाचैहैं मिलै तौ मारिडारत हैं कोल सूकर कुल कुलको अर्थ सव औ द्विरदहाथी ये दरीकंदरामें वाचैहैं नहीं वाचतहैं दानके लिये मारेजात हैं दिन नाम भाषामें विपत्तिको भी है फलाने दिन ऐसी कहनावति है दिनकृत विपत्तिके करनेको जाको विलासहै क्रीड़ाहै फेरि कैसे हैं थिर जे खड़ेहैं औ चर जे चलत हैं ऐसे जे जीव तिनके हरनवाले

हैं हेम अनेकार्थ में वननाम जलको औ वनको औ घरको भी है केशौदास कहत है वनवन प्रति घरघर में मृगन के काटे शिर तामें रुधिरको अमृत परतो है ऐसो जाकोगावँ रहिवेको निवास है किंवा, निकृष्ट बुरा जाको वासवस्त्र धावत वलध-नुष याको अर्थ धनुष के वलसों जोरसों धावत है औरनको मारिकै लूटिवेको फेरि सोहत निपाणिशर तिनके पाणिमें हाथमें शरवाण शोभैहै(अथ ग्रीषम प्रकाशपक्ष)ग्रीषम कैसोहै हेममें चंड नाम तीव्रको भी है चंड तीव्र जे कर किरण सूर्य के ग्रीषम तासों कलित युक्त है वलित वास सदागति वरक-हिये वल तासों युक्त जो सदागति पवनववूला पूरुवमें ववंडर कहत हैं तासों युक्त है कंद जमीकंद आदि मूल नाम हेममें निकुंजको औ हरित तृणको भी इन सबको जहां विनाश है कीच बीच इत्यादि में काकु स्वर नहीं इतना भेद जानिये कीचके बीचमें मीन वाचत है ऐसे जानिये दिनकृत सूर्यको जहां विलासहै विशेषकरिकै लसैहै यह अर्थ थिर कूप तलाव गच्छ ताको जीवन जल ताको हरै है सुखावैहै वर्ण हीनमनु-ष्य पशु आदि के जीवन जलको हरै है नदी नदनें सुखावैहै मानुष के मुख सुखावतुहै वनवन प्रति वननिमें औ घरनिमें औ मृगशिर नक्षत्र अवण याको अर्थ अबै वरसै नको अर्थ नहीं मृगशिर तपैहै वरसै नहीं ताहि मृगशिर को निवास ग्रीषमैंहै धनुष नाम गैंड़ा सो वलसों धावत है जलकी ओर शोभत निपानिसर उहां शोभति पढ़िये इहां सोभत पढ़िये श्लेषमें दोष नहीं तासों निपानि जल विना जो सर तलाव सो सोभत नहै ग्रीषममें ३० ॥

(वर्षावर्णन) दो० ॥ वर्षावरणहुहंसवकदादुरचातकमोर॥केतककञ्जकदम्बजलसौदामिनिघनघोर ३१॥

वरषा वरणहु हंस वक ऐसो पाठहै तहां हंस कलहंस जा-

निये कहूं वरषा हंस प्रयान वक ऐसो पाठ है सौदामिनी वीजुरी ३१ ॥

कवित्त ॥ भौंहैंसुरचापचारुप्रमुदितपयोधरभूषणजरायेजोतितरीतरलाईहै । दूरकरीसुखमुखसुखमाशशीकीनैनअमलकमलदलदलितनिकाईहै ॥ केशौदासप्रवलकरेणुकागमनहरमुकतसुहंसकंसवहसुखदाईहै । अंवरवलितमतिमोहैनीलकंठजूकीकालिकाकिवरषाहरषिहियेआईहै ३२ ॥

कालिकाकिवरषा हरपि हियेआई है हेममें कालिका योगिनी को भेदहै औ मेघमाला औ नयेमेघ औ पार्वतीकोभी नामहै कालिका पार्वती ध्यानसमयमें हृदयमें भक्तिसोंहरषि के प्रसन्नहोयके आईहै किंवा वरषाऋतु सो मनमें राजीहोय के आईहै कालिकाकैसीहै भौंहैं जाकी सुरलीजिये कामताको चापधनुप समान चारु सुन्दरि है प्रमुदित अर्थ अच्छीतरह चोलीसों प्रमुदितकियेहै मूंदेहैं पयोधर कुचजाके श्लेपमें जब ताईं दूसरो अर्थलगै तवताईं एक अर्थ नहींलगाइये प्रमुदित को अर्थ सानन्द लीजिये तौ एकअर्थही नौठौर लागै भूपण जरायज्योति तड़ितरलाईहै ऐसोपाठ जराऊके जे भूपण तिनकी जो ज्योति ताकी तड़ित वीजुरीकीतरह रलाई चंचलता है किंवा तड़ितरलाई है तड़ित यहजुदोतरलयहजुदो जुदाई चारियहहैं तरलाई में तड़ितको तकार मिल्योहै यह है याहि अर्थ में इयहहै कहतहै उहहै याके अर्थ में उहैकहत हैं तरल नाम हारकेवीचमें मणि किंवा चौकी रहतिहै ताको नाम है तुकांतकेलिये तरलको तरलाकियो जराऊके भूपणकीज्योति है इहै यह जो तरलहै हार मध्यको मणि सो तड़ितवीजुरी सोहै कहूं तड़ितरलाई है एकै तकारपढ़यो है तहां ऐसो अर्थ करिये जराऊके भूपण की ज्योति में तड़ित की ज्योतिरलाई

है मिलाईहै ऐसीत्रमकहै फेरि कालिकाकैसीहै सुखसों विना श्रम सुखको शृंगारे विना सहजही शोभासों मुखकरिकै दूर करी है शशिकी जो सुखमा शोभाजाने फेरि नेनकरि अमल जो कमलताके दलकी जो निकाई सौंदर्यता ताको दलितकिये है केशोदास कहतहै प्रबल है जाने शुम्भ निशुम्भको मारेहैं करेणुका जोहथिनी ताको जोगमन ताको जानेहँस्यो हस्तिनीकी सी चाल चलति है मुक्तायुक्त जे हंसकविछिया हंसकः पादकटकः इत्यमरः पावँके भूपणकोनामहै ताको शब्द सुख दायकहै फेरिकैसीहै अम्बरवस्त्र तासों वालितयुक्तहै औ नील कंठ महादेव तिनकी मतिको मोहतिहै वरपाकैसीहै सुरचाप इन्द्रधनुषसों चारु सुन्दर भौहैं हैं याको अर्थ भूमिकी डोर आप लग्यो है फेरि प्रमुदित राजीभये हैं पयोधर मेघसों भूषण जे वृक्ष जहां भूपृथ्वी ताको खनिकै उपजेहैं उद्भिजनाम वृक्षकोहै भूमिफोरिकै निकरतहैं खनिनामखाँड़ाको जोइकार पढ़ै तौ भूपणकीवेर नहींबनै फेरि रावशब्दसंहित औ ज्योति संहित जो तड़ित बीजुरी ताकी जहां तरलाई चंचलताहै तड़ितरलाई यापाठकोयहअर्थहै तड़ितरलाई यापाठमें रलियो भिलिबे विषे औ चलिबे विषे है वरषाने तड़ितको रखाई है शशिके मुखकीसुखमा सुखहीसों दूरिकरीहै चन्द्रमाकोछपायो है नै ऐसो नाम नहींकोहै तामें न कहिये नहीं है अमल निर्मल कमलनामजल जहां वरपामें नदीको जल नहींरहैहै दल फौज ताकी जो निकाई शोभा ताको दलितकियो है वरपामें फौज खराबहोति है प्रबलकपदजुदो औ रेणुकागत नहरक नाम जलको प्रबल जो कमल तासों रेणुका धूरि ताको जो गमन उड़िबो ताको हरै है मुकुत सुहंसक याको अर्थ मुक्त कहिये छोड़यो हंसककहिये हंसनने जाहिवरपाको फेरिजाहि वरषाको मेघ दादुरआदि को शब्द सुखदाई है किंवा मुक्ता बहुत जो या देशके हंसक ताको शब्द जहां सुखदाई है फेरि

अम्बर आकाशको जाने वेष्टितकियोहै मेघसों घेरि लियो है नीलकंठमोर ताकी मतिको मोहैहै ३२ ॥

(अथशरदऋतुवर्णन) दो० ॥ अमलअकासप्रकासशशिमुदितकमलकुलकास । पंथीपितरपयाननृपशरदसुकेशवदास ३३ ॥

शरत्कालके कमल कमल जलकोभीनामहै सो स्वच्छकुल सब किंवा हेम में कुलनाम देशकोभी है देशप्रसन्न ३३ ॥

(विज्ञानगीता) कवित्त ॥ शोभाकोसदनशशिवदनमदनकरवंदैनरदेवकुवलयबलदाईहै। पावनपदउदारलसतिहैहंसमालदीपतिजलजहारादिशिदिशिधाईहै॥ तिलकचिलकचारुलोचन कमलरुचिचतुरचतुरमुखजगजियभाईहै। अमलअँवरलीननीलपीतपयोधरकेशौदासशारदाकिशरदसुहाईहै ३४॥

केशौदास कहतहैं शारदा सरस्वती है किधौं शरदऋतु है सरस्वती कैसी है शोभाको सदनघर है फेरि शशिसों जाको वदन है हेममें मदनाम हर्षकोभी है. मदनको अनेकतरह के हर्षनको करैहै किंवा शोभाको सदन जो शशि तैसो है बदन ताको मदगर्व नहींकरतिहै हमारो ऐसोमुखहै फेरि नरमनुष्य औदेवताजाको प्रणामकरतहैं फेरि कुवलय भूमिमंडल ताको बलदाई है वरदाई है रेफ लकारएकहै फेरि जाके पद पावन पवित्रहैं औ उदार सबकामके दाताहैं हंसपावँको भूषण सो माला जाको शोभत है फेरि जलज मोती ताको हार ताकी दीपति दिशा दिशा में फैली है फेरि जाके तिलक में चिलक है चारु मनोहर है लोचन कमलकी रुचि कांतिजाकी किंवा चारु जाकेलोचनहैं औ श्वेतकमल पुंडरीक ताकी जाकोरुचि है चाहहै किंवा कमलआसनहै याते श्वेतकमलमें रुचिकांति

फैली है जाकी फेरि चतुरनाम हैं ये चाटकारकोहै जोप्रिय वचनकोकरै औ कहै ऐसो जो भक्त औ चतुर्मुख ब्रह्माइनकी पुत्री है याते औ जगजीवन भगवान तिनकेमनमें सुहाई है किंवा जगत के जीवनको जानिये एक सरस्वती भगवानकी भी स्त्रीहै । एकाभार्या प्रकृतिमुखरा चंचलाचद्वितीया । इत्यादि फेरि अमलशुद्ध जो अम्बरवस्त्र तामें लीनहै छयेहैं नीलश्यामतायुक्त पीन पुष्ट पयोधर कुचजाके कुच के अग्रभागनीलहैं अमलअम्बर खीनलीन पीनपयोधर ऐसो भी कहूंपाठहै तहां ऐसोअर्थ जानिये अमल जो अम्बरवस्त्र सो खीनहै मिहीनहै तामेंलीनभयेहैं छपेहैं श्यामतायुक्त पीनपयोधर शरदऋतुकैसी है शोभाको सदन जो है शशि तैसो है वदनजाको ऐसो जो मदन काम ताकी करनवाली उपजावनवाली है शरद उद्दीपनहै नरदेवराजाजाकोत्रिदैहैं तारीफकरैहैं पयानकोलिये चाहत हैं यहअर्थ कुवलय शरदके कमल किंवा कुमुद तिनको वक्त- देतिहै जोर पकरावति है फलावति है पावन पवित्र जो पद स्थान श्रीगंगाजी आदि उदार वड़ोपवित्र तहां शोभैहै हंस की माला समूहजामें जलज कमल किंवा चन्द्रमा औ हार खेत ताकीदीपति दिशादिशामेंफैलीहै फेरि तिलकवृक्ष ताकी तिलक चमकचारुहै लोचनको कमल जल किंवा कमल रुचे है जलकी शोभा कमलकीशोभा आछीलागनिहै जगमें चतुर प्रवीण जे लोगहैं तिनको निर्मल भाईजोहैं चारोंदिशा ताके मुख और ताकरिकै ऋतुभाई है सुहाई है किंवा सोदरबन्धु अरि आर्थी उपमावाचक है हमने भाषा भूषणकी टीकाकरी है तामें लिख्योहै जीवको भाई है जीवसमान लागतहै फेरि नीलहै श्याम है तामें लीन भये हैं छपिगये हैं ।विनायगये हैं पीनपुष्ट पयोधर मेघ जाहिशरदमें २४ ॥

(अथहेमन्तवर्णन) दो० ॥ तेलतूलतानोलात्रिय ना

पतपनरतिवंत ॥ दीहरजानिलघुद्यौसमुनिशीतसहित हेमंत ३५ ॥

तूल रुई तापआगि को तपनसूर्य इनसों सब रतिवंतहोत हैं प्रीतिकरत हैं ३५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ अमलकमलदललोचनलालितगतिजारतसमीरशीतभीरदीहदुखकी । चंद्रकणखायोजायचंदनलायोजायचंदनचितयोजायप्रकृतिवपुखकी ॥ घटकीघटतिजातिघटनाघरीहूघरी छिनछिनछीनछविरविमुखसुखकी । सीकरतुषारस्वेदसोहतहेमंतऋतुकिधौंकेशौदासत्रियप्रीतमविमुखकी ३६ ॥

यह हेमन्तऋतु है किधौं प्रीतम सों विमुख रूठीतिय नायका है हेमन्तऋतु कैसी है अमल जो कमल ताको औ दल कहिये वृक्षनके पात ताको शीत जो समीर सो जारै है औ लकार रेफ भाषा में एक है औ लोचनकहिये रोचन हेम में रोचनानाम सुन्दरी स्त्री को है ताकी जो ललितगति गमन ताको औ दलकहिये वृक्षन के पात तिनको शीत जो समीर सो जारति है दूरकराति है शीतलभूमि में आछीतरह पावँ धँसो नहींजाय कमलआदि को दीहकहिये वड़ोदुःख ताकी भीर सहाय सहित समीर है फेरि ज्यहि शीतमें चन्द्रककपूर आदि वपुप शरीर की प्रकृति स्वभाव भयो फेरि घटकलश ताकी घटना रचना सो घरीघरी में घटतीजातिहै हाथमें ठंढ लागनहै याते शीतकाल में कुम्हार घट थोरोबनावतहै छिन छिनमें रविमुखकी जोछवि सो मुखहीसों अनायासछीनकरी फेरि सीकरजल कणओस तासों तुषार वरफ समान स्वेदकहिये अग्निहैजामें तेजहीन आगिहैजामें अग्निकोनाम स्वेद कोई कोषमें होयगो कै कोईदेशकी भाषा है ऐसो अर्थ लाग

करतहैं किंवा सो शब्दकी अन्वय हेमन्तसों सो हेमन्त ऋतु है कौनसीकर तुपार सों स्वेदकी हनि नाश है जामें (अथवि रहिनीपक्ष) अमल कमलदलसों लोचन हैं जाके औ ललित है गति जाकी जाको शीत समीर पौनजारत है जाको देह वड़दुखकी भीर समृद्धिहै विरहिनीको भी चन्द्रकआदि उद्दीपन भाव ते दुखदाई है विरहिनी की सखी सखीसों जवसों विरहभयो तवसों याने वपुशरीरविषे ऐसीप्रकृतिकरी है ऐसो स्वभावकियोहै यासों चन्दन नहीं लायोजात है ऐसे जानिये फेरि घटशरीर ताकीघटना चेष्टाक्रिया सो घरीघरीमें घटति है भोजन पान शयन इत्यादि घटै है क्षणक्षणमें याकी छवि छीनहोतिहै रविमुख सुखकी याकोअर्थ कीको अर्थ किधौं सुखदा जोवस्तुथी आछोवस्त्र भूषण सुगन्ध सो याको रविमुख है इनकीओर देख्यो नहींजातहै जैसे रवरे मुखकीओर नहीं देख्योजात है आंखिवरणीहै किंवा जो छवितरह याकी सुख की थी सुखदाईथी सो रविमुखभई गरमभई देखीनहींजाति है कवहीसी करैहै शीत्कारकरिकै तुपार वरफ होतहै तुपारसे ठंढअंगहोतहैं औ कवहीं स्वेदपसीना है आवति है सोहन है ऐसे है यहअर्थ किंवा तुपार स्वेद सो याकी हनि है मृत्यु है ठंढीपरे गरमहोय यहमृत्युदशाहै ३६ ॥

(अथशिशिरवर्णन) दो० ॥ शिशिरसरससमवरणिये केशवराजारंक॥ नाचतगावतरौनिदिनखेलतहैंसतनिशंक ३७॥

शिशिरमें राजा किंवा रंक तिन सवके मन सरस अनुराग युक्त वरणिये सवही नाचत गावत हँसतहैं क्रीड़ा करतहैं शंक छोड़िकै ३७॥

(यथा) कवित्त॥सरसअसमसरसरासिजलोचनिविलोकिलोकलीकलाजलोपिवेकोआगरी।ललितलतासे

चाहु जानि जून न्यान बालबिटप उरनि लागे उमँगि उजागरी ॥ पल्लव अधर मधु मधुपानि पीवत ही रचित रुचिर पिकरुत मुखसागरी। इति विधि सदागति बसन गलित बास शिशिरकी शोभा किधौं बारनारि नागरी ३८ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांभूमिभूषणवर्णनंनाम
सप्तमोप्रभावः ७ ॥

ऐसी शिशिर ऋतुकी शोभा है किंवा बारनारि वेश्या सो नागरि प्रवीण शिशिर कैसीहै जातिकरि ठिकानाकरि सरस कहे अधिक जे लोक हैं सो सब असम जो बरोबरिको नाहीं ताके होतहै हारी खेलतमें कहां करिकै सरसिज बिलोचनि जो नायका ताको बिलोकिकै देखिकै सरसिज बिलोचनि कैसीहै लोकलीक लोकनकी जो मर्यादा औ लाज याके मेटिबेको आगरि निपुणहै कोई काहूसों कहतहै या बातको जानि जाहि ऋतुमें ललित जेलता तिनके जेसुबाहु पसारिचलैहैं सो जून पुराने वृक्ष औ बालबिटपवृक्ष ताके उरनिसों अंगनिसों लागतिहै उमँगसों उछाहसों उजागरी जाहिरहै ऐसी ऋतुहै पल्लवपत्र ताको मधु माधुर्य मधुप ताको अधरकहि ऊपर ऊपरही भाषामें अधरयाको भी कहतहैं यह वस्तु अधर रही नीचे नहींपरी हीरचत याकोअर्थ फेरि जाहि ऋतुसों ही कहिये हृदयसो रचतुहै रँग्योजातहै राजीहोतहै यह अर्थ रुचिर मनोहर जहां पिक कोकिलको रुतशब्दहै फेरि सुखको सागरही है इति विधि या तरहकी शिशिर ऋतुहै फेरि सदागति पवन ताके बसन कहिये वशकरिकै गलित कहिये फैली है बास सुगन्ध जाहि ऋतुमें बारनारि कैसीहै सरस अधिकजामें असमसर कामहै कोई काहूसों कहतहै वेजो सरसिज बिलोचनि कमल लोचनि वेश्या ताको तू बिलोकिदेखि लोककी

लौक मर्यादा रूप जो लाज ताको लोपिवेको कैसी आगरिहै फेरि कैसीहै ललित लतासी जाकीवाहुहैं यह जानों जन वृद्ध औ ज्वान औ बालक औ विटपगुण्डा केसोऊ कोऊहोय ताके उर छातीसों लागतिहै उजागरी जाहिरहै फेरि पल्लव सोजो अधर ताको जो मधु ताको मधुप तिनके पीवतही रचति रा-जीहोति है औ रुचिर मनोहर पिकसरीखो रुत कंठध्वनि है औ सुखको सागर है फेरि इहिविधि सदागति सदा याकी या तरहकीगति दशाहै फेरि वाससुगन्ध युक्त ताके वसनवस्त्र गलितहैं छूटेहैं छातीपर कपड़ा नाहींराखैहै निर्लज्जहै किंवा या तरहकी दशासों याको वसन रहतो है औ गलित जाके वस्त्रहैं शिशिरको नायकारूप वरणे तौ सरसिज जाके विलो-चनहैं शिशिरमें सरसिज नहींरहैं ३८ ॥

इतिहरचरणदासकृतकविप्रियाभरणाख्यायांकविप्रियाटीका यांसप्तमप्रभावव्याख्या ७ ॥

(अथराज्यश्रीभूषणवर्णन) दो० ॥ राजारानीराज सुत प्रोहितदलपतिदूत ॥ मंत्रीमंत्रप्रयानगय हयसंग्राम अभूत १ ॥

राजसुत अर्थात् राजकुँवर दलपति सेनापति नय हाथी १॥

दो० ॥ आखेटकजलकेलिपुनि विरहस्वयम्बर जानि ॥ भूषितसुरतादिकनिकरि राज्यश्रीहिवखानि २ ॥

जलकेलि आखेटक शिकारकहै तड़ागादिमें जलविहार २॥

(अथराजावर्णन) दो० ॥ प्रजाप्रतिज्ञापुण्यपन पर प्रतापप्रसिद्धि ॥ शासननाशनशत्रुके बलविवेककी वृद्धि ३ ॥

प्रजायुत वर्णिये प्रतिज्ञामें दृढ़ वर्णिये पुण्यको पन नियम वर्णिये शत्रुके शासन आज्ञाको दूरकरै ३ ॥

दो० ॥ दंडअनुग्रहधीरता सत्यशूरतादान ॥ कोपदे शयुतवरणिये उद्यमक्षमानिधान ४ ॥

यथापराधसें योग्यदण्ड उद्यम युक्त ४ ॥

(यथा) कवित्त ॥ नगरनगरप्रतिघनहींतोगाजैंघोर ईतिकीनभीतिभीतिअधनअधीरकी । अरिनगरीनप्र तिकरतअगम्यागौन भावैंव्यभिचारीजहांचोरीपरपीर की ॥ शासनकोनासनकरतएकगंधासनकेशौदासदुर्ग नहींदुर्गतिशरीरकी । दिशिदिशिजीतिपैअजीतिद्विज दीनानिसोंऐसीरीतिराजनीतिराजैरघुवीरकी ५ ॥

या तरहकी रीतिसों रघुवीरकी नीति राजतिहै श्रीरामच-न्द्रजीके नगरप्रति एक वनमेव तौ घोरभयकारी गाजैहैं शत्रु-नहीं गाजिसके ईति अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि ताकी भीति भयनहीं श्रीरामचन्द्रजीको एक तौ भीति यह रहति है कि कोई अधन न होयजाय कोई अधीर न होय धैर्यछोड़ि नीच कर्मको नहींकरै फेरि अगम्यागमन दोषहै सो शत्रुकी नगरी प्रतिकरत हैं जाहि राजाकी नगरी पर कोई राजा चढ़िनहीं गयो याते अगम्या तापर चढ़िगयो जो पर स्त्री पासजाय सो व्यभिचारी कहावै श्रीरामचन्द्रजीके राज्यमें निर्वेद ग्लानि शंका मदआदि तेंतीस भाव सोई तौ व्यभिचारी हैं पुरुष व्यभिचारी नहीं व्यभिचारी भाव हमारोकियो सभा प्रकाश नामें स्पष्टहै शासनआज्ञा हमारे कहेविना कोई कछु ले नहीं जाय ताको नाशन गन्धवाह पवन करतहैं विना आज्ञा गन्ध लेजात हैं दुर्गकोट तामें जानों उहां दुर्गतिदेखिये है दुर्गतिको

अर्थ दुखकरिजानों दुर्गतिनाम नरकको सो कोईको नहीं द्वि-
जनिसों दीननिसों जीति नहीं है ५ ॥

(राजपत्नीवर्णन) दो० ॥ सुन्दरिसुखदपतिव्रताशु
चिरुचिशीलसमान ॥ इहिविधिरानीवर्णियेसलजसुबु
द्धिनिधान ६ ॥

शुचि शृंगार तामें जाकी रुचिहोय किंवा शुचि पवित्रहै
औरुचिजामें कांतिहोय किंवा पवित्रतामें रुचि चाहहोय मान
कहिये ऊंचोमन ताहि सहितहोय किंवा शीलसमा याकोअर्थ
जाके शीलकी समा बरोबरिनको अर्थ और स्त्री नहीं ६ ॥

(यथा) कवित्त ॥ माताजिमिपोपतपिताज्योंप्रतिपा
लकरैप्रभुजिमिशासनकरतहेरिहियसों । भैयाज्योंसहा
यकरै देतिहैसखाज्योंसुखगुरुज्योंसिखावैसीखहेतजोरि
जियसों ॥ दासीज्योंटहलकरैदेवीज्योंप्रसन्नकेसुधारैप
रलोकनातोनाहींकाहूवियसों । छाकेहेंअज्ञानमदछिति
केछितिकछुद्रऔरनिसोंनेहकरैंछांड़िऐसीतियसों ७॥

हेरे हियसों मन देकरि देखिके हेतजोरि जियसों जीव-
मात्रसों हेतप्रीति जोरिके उन जीवनको पोषै जैसे उन जी-
वनकी माता पोषै जैसे उनके पिता उन जीवनको प्रतिपाल
करैं तैसे उन जीवनिको प्रतिपाल रानीकरतहै ऐसे अथवा
करिये आपने पतिको माताकी तरह पोषतिहै पिताकी तरह
प्रतिपाल करतिहै फेरि दासी इत्यादि शोयतुक पतिसों गाइ-
ये पतिकी टहल दासीकी तरह करतिहै पतिकी सेवासों आ-
पनो परलोक सुधारै है नातो काहू वियसों याको अर्थ बिय
कहिये दूसरे सों नातो सम्बन्ध नहीराखे एक पतिहीमें अनु-
रक्त रहतिहै छितिभूमि ताके सहसों हम राजाहैं ऐसो जाको
गर्वहै सो अज्ञानसों छाकेहैं केसेहैं क्षणिकहैं शरीर और तरह

धर्ममें और तरह फेरि क्षुद्र निकृष्टहैं किंवा निर्दयहैं याके शी-लकी बरोबरि और नहीं औ सुखद इत्यादि काढ़िये ७ ॥

(पुनः) कामकेहैंआपनेहींकामरतिकामसाथरतिनर तीकोजरीकैसेउरआनिये। अधिकअसाधुइन्द्रइन्द्राणी अनेकइन्द्रभोगवतिकैशौदासवेदनिवखानिये ॥ विधि हूअविधिकीनीसावित्रीहूशापदीनी ऐसेसवपुरुषयुवति अनुमानिये। राजारामचन्द्रजूसेराजतनअनुकूलसीता सीनपतिव्रतानारीउरआनिये ८ ॥

श्रीराजा रामचन्द्रजी सरीषा और अनुकूल नायकनहीं औ श्रीसीताजी सरीषी पतिव्रता नारी जगतमें और नहीं जानिये काम औ रति आपनेई कामके मतलबकेहैं काम अ-नेक अप्सरनसों रतिकरतहै याते रतिसों दृढ़प्रीतिनहींहै जब कामको महादेवने जरायो तब कामके साथ रतिकामकी स्त्री सो रतीभी थोरीभी नहीं जरी अर्थ यह सहगमन करवेको साहसभी नहीं कियो जो पूरीप्रीति दोऊमें होती तौ जरती ताको बरोबरिकरवेको मनमें कैसे आनिये इन्द्र असाधुहै अ-प्सरनि सों भोगकरैहै औ गौतममुनिकी स्त्री पालगयो याते अधिक असाधु इन्द्राणी तौ एकही रहतिहै इन्द्र अनेकहोतहैं विधि ब्रह्माने अविधि अनुचित कियो सरस्वतीकन्या ताके पीछेदौरे तब सावित्रीने शापदीन्हो तुम्हारी प्रतिमा औ तु-म्हारी पूजा कहूंनहीं होयगी ८ ॥

(अथराजकुमारवर्णन) दो० ॥ विद्याविविधविनोद युत शीलसहितआचार ॥ सुन्दरशूरउदारविभु वर्णिय राजकुमार ९ ॥

विभुनाम प्रभुको भी है लोगनिके स्वामी विशेष करिके शोभैहैं ९ ॥

(यथा) कवित्त ॥ दानिनकेशीलपरदानकेप्रहारीदि नदानवारिज्योंदिनानदेखियेसुभायके । दीपदीपहूकेअ वनीपनिकेअवनीपपृथुसमकेशौदासदासाद्विजगायके ॥ आनँदकेकन्दसुरपालककेबालकसे परदारप्रियसाधुम नवचकायके । देहधर्मधारीपैविदेहराजजूसेराजराज तकुमारऐसेदशरथरायके १० ॥

दानी करणादि कोसो शील उत्तम स्वभाव औ परायोको जो दान लक्षणाकरि दानको यश ताके प्रहारी दूर करनवाले इनके दानकेआगे औरके दान छपिजातहैं दानवारिसों भग- वान् सों जैसे दीननिको दुखीको सुखदेतहैं तैसे येभी दीननि को सुखदेतहैं दीनको दानवारिसोहैं हममें निदाननाम आदि कारणको भी है औ अन्तकोभी है सुन्दर जो भावक्रिया देव पूजन आदि ताको निदान अन्तहै सीमाहै इनकीसी क्रिया औरकी नहीं ऐसे जो पृथुराजा भयेहैं तिनके समानहैं सुरपा- लक इन्द्र ताको बालक जयन्तसो है परदार पर स्त्री ताको यह प्रियलागैहै यह साधुहै पर स्त्रीको नहीं चाहतहै किंवा पर श्रेष्ठ जो स्त्री विवाहिता ताके प्रियहैं विदेहसों जाको आपनी देहको ज्ञाननहीं अर्थ यह ज्ञानी ताहि ज्ञानिनको राजा सर- दार ऐसो जो राजाजनक किंवा विदेह राजजू नरोपा राजा जनकही और जाकी उपमाको नहीं सो कैसो देहको धर्म स्वभाव ताको धरैहै विचार सों इनके देह नहीं है किंवा देह धारी धर्महै धर्म सों शरीरको धरेहै १० ॥

(अथपुरोहितवर्णन) दो० ॥ प्रोहितनृपहितवेदवि तसत्यशीलशुचिअंग ॥ उपकारीब्रह्मण्यरिजुभीरजंग गतअनंग ११ ॥

वेदाचित वेदको जानैं सत्यवादीहोय शीलवानहै[illegible] किंवा

सत्यकहिबेको जाको शीलस्वभावहोय रिजुकोमल हृदयहोय जगतको जीत्यो जगतके बंधनसों न बंध्योहोय औ कामको जीत्यो ११ ॥

(यथा) कवित्त ॥ कीन्हेपुरुहूतमीतलोकलोकगाये गीतपायेजअभूतपूतआरिउरत्रासहै । जीतेजुअजीतभूपदेशदेशबहुरूपऔरकौनकेशौदासबलकोविलासहै ॥ तोरयोहरकोधनुखनृपगणगोविमुख देख्योजुवधूकोमुख मुखमाकोवासहै । कैगयेप्रसन्नरामबाढ़ोधनधर्मधामके वलवाशिठकेप्रसादकोप्रकासहै १२ ॥

दशरथजी को एतनीवातभई औ श्रीरामजी एतनोकियो सो केवल वाशिष्ठजीके प्रसाद प्रसन्नता ताको प्रकास है फलहै लक्षणासों जानिये पुरुहूत इन्द्र ने जासों मैत्रीकीनी अभूत ऐसे पुत्र अवताई काहू के भयेनहीं जासों अरिकेउरमें त्रास रहत है बहुरूप अनेक तरह के औरको ऐसो वलजोर किंवा सेना ताको विलासनहींहै सुखमा शोभा राम परशुराम प्रसन्न होयके गये १२ ॥

(अथदलपतिवर्णन) दो० ॥ स्वामिभक्तश्रमजित मुर्धासेनापतिसुअभीत ॥ अनालसीजनाप्रियजसीसुख संग्रामअजीत १३ ॥

अनको सहै संग्राम लराई ताको सुखमानिलेय कहूं मुख संग्राम यहभी पाठहै संग्राम में मुखप्रधानहोय औ कोई सों जीत्यो नहींजाय १३ ॥

(यथा) सवैया ॥ औंड़िदियोअतिआरसपारसकेश वल्यारथसाथसमूरो । साहससिंधुप्रसिद्धसदाजलहूथल हूमतत्रिक्रमपूरो ॥ सोहियेएकअनेकनिमाहिंअनेक

नएकविनारणरूरो । राजतिहैतिहिराजकोराजसुजाकी चमूमेंचमूपतिशूरो १४ ॥

अति आलस्ययुक्त जे पुरुष थे ताको पारस समीप छांड़ि दियो आलस्यवालेको संगमनहींकरै हेममें पार्श्वनाम निकट कोभी है आपने स्वारथ के संगही समूर स्वारथको मृगनहीं राख्यो एकस्वामिधर्म में रतहै काहूसों कलूलके स्वामि को कोई काम नहींविगार्‍यो अनेकभट एक सेनापतिविना रण में रूरो आछो नहींलागै १४ ॥

(अथदूतवर्णन) दो० ॥ तेजवढ़ैनिजराजको अरि उरउपजैक्षोभ ॥ इंगितजानैंसमयगुण वर्णहुंदूतअलोभ १५ ॥

अरि के उर में कम्पा बाढ़े परायेकी इंगित चेष्टा मरजी ताको जानै १५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ स्वारथरहितहितसहितविहितमतिकामक्रोधलोभमोहक्षोभमदहीनेहैं । मीतहूअमीतपहिंचानिवेकोदेशकालबुद्धिवलजानिवेकोपरमप्रवीनेहैं ॥ आपनीउकतिअतिऊपरदैऔरनकी दुरदुरीदुरीमनि लैलैवशकीनेहैं । केशौदासदेशदेशअरिदलरानदेवराजनिकोदेखिवेकोदूतदृगकीनेहैं १६ ॥

विहितमतियोग्य जाकीवुद्धिहै किधा हितसहित वुद्धिकोई स्वामी के कार्यमें विहित को अर्थकरी है आपनी उकति ऊपरी ऊपर की वनाईबात जासों परायेको हितहोय कन्नी है आपनी उकतिदुरीहै छपीहै अर्थजामें गुनहै ताकरिके औरन की दुरीदुरी छपीछपी वुद्धिलेले के सबको वशकीन्हें हैं किंवा आपनी उकतिको अतिऊपर राखिकै फेरि दुरिदुरि छपिछपि

के औरनकी दुरी छपी मति लेले के पराया कीन्हें हैं मतिको अर्थ शत्रुकोमनमूवा तदवीर औरनकी दुरीदुरी मतिलेलै सबै वश कीने हैं यहपाठ बहुत पोथिन में है सो आछे दूत को नेत्र कीन्हें हैं १६ ॥

(अथमंत्रीनर्णन) दो० ॥ राजनीतरतराजरतशुचि सर्वज्ञकुलीन॥क्षमीशूरयशशीलयुतमंत्रीमंत्रप्रवीन १७

शुचि शुद्धहोय मन में पाप बुद्धि नहींहोय १७ ॥

(यथा) सवैया ॥ केशवकैसेहूंवारिधिबांधिकहाभयो रीछनसोंछितिछाई । सूरजकोसुतबालिकोबालककोनं लनीलकहीहमठाई ॥ कोहनुमंतकितेकवलीयमहूंपर जोरलईनहिंजाई । भूषणभूषणदूषणदूषणलंकविभीष णकेमतपाई १८ ॥

वारिधिको कोइतरह बांध्यो तौ कहाभयो कछुनहीं क्षिति भूमि ताको रीछनिसों छायदीनी सम्पूर्णधरणी में रीछहीरीछ किये तौ कहाभयो सूरजको सुत सुग्रीव औ बालिको बालक अंगद तासों कहाहोयसके नल नील भी कहा कही हमठाई याको अर्थआपनी बनाई बातकही जो लंकायमहूंपै यमसोंभी जोरसों लीनी नहींजाय सोलंकाविभीषणके मतसों पाई कैसे हैं विभीषण भूषणकी जो बात आछी सो बात ताको भूषण करैहै समर्थजकरैहै यह आछीकही दूषणकी जो बातहै ताको दूषणकरै है खंडनकरै है यहबातकरे विगारहोयगो ऐसो जो मंत्री विभीषण ताकेमतसों सलाहसों लंकापाई श्रीरामचन्द्र जीने किंवा कौनने लंकापाई ताकोनाम नहींनिकसो तबऐसे लगाइये दूषण राक्षस ताके दूषण श्रीरामचन्द्रजी लंका विभीषणके मतपाई कैसेहैं श्रीरामचन्द्रजी भूषण गहनों ताके भूषणहैं और गहनानों शोभापावतहैं गहना श्रीरामचन्द्रजी सों शोभापावतहैं ऐसो सुन्दर है १८ ॥

(पुनः)सवैया ॥ युद्धजुरैंदुर्योधनसोंकहिकोनकरीयम लोकवसीत्यो । कर्णकृपाद्विजद्रोणसोंवैरकैकालवचैवर कीजैप्रतीत्यो ॥ भीमकहावपुरोअरुअर्जुननारिनैंग्यावन हीवलरीत्यो । केशवकेवलकेशवकेमतभूतलभारथपार थजीत्यो १९ ॥

कौन ने यमलोकमें वसीत्यो वस्ती वासनपायो कृपाचार्य कालजोहै सो वरजोरावरी किये वचिसकेहै यहप्रतीति की-जिये काकस्वर नहींकीजिये है यहअर्थ द्रौपदी के वस्त्र हरन वलरीत्यो वलखाली हुवो वलहीन देखिवे में आये यहअर्थ केशव कवि कहतहै केशव के मतसों १६ ॥

(अथमंत्रीमतिवर्णन) दो० ॥ पंचअंगगुणसंगपट विद्यायुतदशचारि ॥ आगमसंगमनिगमसतिऐसेमन्त्र विचारि २० ॥

पंचांगको अर्थ तिथिवार नक्षत्र योग करण याको ज्ञान होय अर्थ यह कि ज्योतिष शास्त्रमें प्रवीण होय किंवा पंचांग सहाय साधन उपाय देशकाल याको ज्ञानहोय औ षट्गुण सों जाको सम्बन्धहोय षट्गुणको जानै यह अर्थ हमी ही टी-कामें सन्धि १ विग्रह २ जान ३ आसन ४ द्वैधीभाव ५ सं-श्रय ६ फेरि सौर्यधैर्य इत्यादिभी छःगुण कहतहैं औ दशचा-रिको अर्थ चौदहविद्या युक्तहोय आगम शास्त्र किंवा त्रिकाल को ज्ञानहोय अरु संगपरिचयहोय निगम वेदको ज्ञानहोय ऐसी मन्त्रीकी वुद्धिहोय तासों मन्त्रको विचारो २० ॥

(यथा) सवैया ॥ केशवमादक्रोधविरोधनजेसिव स्वारथवुद्धिअनैसी । भेदअभेदअनुग्रहविग्रहनिग्रहसं धिकहीविधिजैसी ॥ वैरिनकोविपत्तिप्रनुकोप्रनुनाकूर

मंत्रिनकीमतिऐसी । राखतराजनदेवनज्योंदिनदिव्य विचारविमाननिवैसी २१ ॥

मन्त्रीकी बुद्धिने मादक मदिराभांग औ क्रोधआदि जे और अनेसीबात निन्दा योग्य बातैहैं तेसब तजी हैं काहूसों भेद पारिदेनो वाकी मैत्री दूरिकरदेनी काहूसों अभेद करि एकताकरि अनुग्रह करनो काहूसों विग्रहयुद्ध करनो काहूको निग्रहकरनो अर्थात् पकरिलेनो काहू जोरावरसों सन्धि मैत्रीकरनी और जेतनी बुद्धिकही हैं सोसब जानै देवन ज्यों देवतन को ज्यों जिसतरह विमाननिसों रक्षाहोति है जब असुरसों भयहोतिहै तब जैसे विमान पै चढ़िकै चलेजात हैं दुखनहींहोय वैसीकोअर्थ वाहीतरह मंत्री की जो मतिहै सो दिव्यविचार उत्तम विचारकरिकै दिनकहिये विपति तिनसों राखति है किंवा विमाननाम हेम में सातखण्ड जो घरहोय ताको भी कहत हैं सातखण्डको घर सुखदहोतहै औ ऊंचो होतहै उहां बैठि सबदेवत हैं देवनाम राजा औ वैश्यकोभी बड़ो साहूकार ताको जैसे सुखसों सातखण्डको घरराखै ऐसे जानिये २१ ॥

(अथपयानवर्णन) दो० ॥ चवँरपताकाछत्रछबिदुंदुभिध्वनिबहुयान । जलथलमयभूकंपरजरंजितवरणिपयान २२ ॥

यान पालकी रथआदि जल सूखि थलमयहोय २२ ॥

(यथा) सवैया ॥ राघवकीचतुरंगचमूचापिकोगनैंकेशवराजसमाजनि । शूरतुरंगनिकेउरझेपगतुंगपताकनकेपटसाजनि ॥ टूटिपरैंतिनकेमुकुताधरणीउपमावरणीकविराजनि । विंदुमनौंमुखफेननिकेकिधौंराजसिरीश्रवैमंगललाजनि २३ ॥

सेनाके चारिअंगहैं गजरथ घोड़ा प्यादा चतुरंग जो चमू सेना ताके चप समूहमें राजनकी समाजनको कौन गनिसकै अनेक राजा साथ हैं तुंग ऊंची जे पताका ताके पटसाजसों किधौं राजश्री राजलक्ष्मी जोहै सो मंगलकेलिये लाजनिको अवैहैडारैहै भूनेयव औ शालि ताको नाम लाज है पूरुब में लावा कहते हैं राजा पै पयान समय स्त्री सब लाजा डारे हैं मंगल है २३ ॥

(रामचन्द्रिकायां यथा) कवित्त ॥ नादपूरिधूरिपूरितूरिबनचूरिगिरिसोखिसोखिजलभूरिभूरिथलगाथकी। केशौदासआसपासठौरठौरराखिजन तिनकीसंपतिसब आपनेहींसाथकी ॥ उन्नतनवाइनतउन्नतबनाइभूपशत्रुनकीजीविकासोमित्रनिकेहाथकी । मुदितसमुद्रसात मुद्रानिजमुद्रितकै आईदिशिदिशिजीतिसेनारघुनाथ की २४ ॥

दिशा दिशाको जीतिकै श्रीरघुनाथजीकी सेनाआई नाद शब्द दुंदुभी के भूरि वहुतजल शोपिकै वहुतठौर में जलकी ठौर थलकी गाथकरी लोगकहतहैं यहथल है शत्रुराजनि की ठौर ठौरमें आपने लोग राखि थानाराखि तिनशत्रुनकी संपति सातसमुद्रसों मुद्रित वेष्टित जोभूमि ताको आपनीमुद्रा मोहर तासों मुद्रित चिह्नित करिकै आपनो शिक्का चलाय कै आये २४ ॥

(हयवर्णन) दो० ॥ तरलततातेजगतिमुखसुखलघु दिनदेखि॥देशसुवेशसुलक्षणेवर्णहुंवाजिविशेखि २५ ॥

तरल चंचल अरु तातेहोहिं चाबुकनहींसहिसकें तेजगति अति औरौहालचलैं मुखसोंसुखदेतहैं मुहजोर नहींहोहिं लघु दिन थोरे दिनके होहिं देशकहिये अरब इराक इत्यादि ता

करिके भी बेगहोहिं बेगमुदेश ऐसो भी पाठ है तहां सुदेश सुन्दरजाको देश अरबआदि २५ ॥

(यथा) कवित्त ॥ बामनहिंदुपदजुनांघ्योनभताहिक हानांधैपदचारिथिरहोतहहिहैतहैं । छेकीक्षितिक्षीरनिधिछांडिथापछत्रतरकुंडलीकरतलोलाचितमोललेतहैं ॥ मनकेमीतवीरवाहनसमीरकैसे नैननिज्योंनैननिनैननेहकेनिकेतहैं । गुणगणवलितललितगतिकेशौदासऐसे वाजिरामचन्द्रदीनानिकोदेतहैं २६ ॥

ऐसे या तरह के वाजी घोड़ा श्रीरामचन्द्रजी दीनानि को देत हैं कैसेहैं बामनहीं दुपदजुनांघ्योनभ एकतौ बामनछोटा फेरि दोयपावँके हमबड़ेहैं और चारिपावँकेहैं हरिनामउनको भी है हमारो भी है हमबड़े हैं सो बामनजाहि नभआकाश को नाँघ्यो ताको हम चारिपावँ सों कहा नांघैं याहेतसों थिर होत हैं क्षितिभूमि सो तौ क्षीरनिधि जलनिधि सों छेकी है घेरीहै याते धाय दौरिबेकी ठौर जेतनीदूरि घोड़ा दौराबनो होय ताकोनाम थापथाप दिखाय घोड़ा दौरावतहैं याते छत्र के नीचे कुण्डलाकार लोलचंचल भ्रमत हैं औ देखनवाले के चित्तको मोललेत हैं लक्षणकहे लक्षणासों वशकरत हैं ऐसे जानिये मनकेमित्रसेहैं जैसी गति मनचाहत है तैसी चलत हैं धीराचलायो चाहे तौ जल्दहोहिं जल्द कियो चाहैं तौ ये धीरेहोहिंसोनहीं हैनमें वीरनामभटकोभीहै श्रेष्ठकोभीहै वीर हैं और अश्वनसों श्रेष्ठ हैं औ समीर पौन ताके वाहन से हैं वाहननाम घोड़ाको किंवा ताको वाहन कोउहोय तैसेहैं औ नैननिज्यों याकोअर्थ नैननेत्र ताको सो जो वेगहै जाको चारि लाख कोशपर सूर्य आठलाखकोशपर चन्द्रमा तापै जात नेत्रनिको बार नहींलागै आंखिनजरिकोभी कहतहैं । तीरलगो नरवारिलगो पै लगोमतिकाहूसों काहूकीआंखैं । आंखि सोई

नैन आंखिकोअर्थ नजरि कोई कहतहै नैनानिमें जाको जीव वसतहै सो आछोनहीं जौनी लावण्य सुन्दरतासों देखनवाले के नैनिविषयक नेह ताको घर हैं किंवा देखनवालेके नैन के औ नेहके निकेत हैं नैनवसिजातहैं औ गुणनिसों वलितयुक्त हैं हेममें गतिनामज्ञानको औ यात्राको औ सामदाम उपाय को नाम दशाकहिये अवस्था जाको नाम औ पथ को नाम कलकोनाम तौ प्रसिद्धही है ललित है गतिचालजाकी किंवा ललित है अवस्था जाकी तरुणहै किंवा पथको चलनो आछो नहींलागत है ललित मनोहरहोत है पथजासों ऐसे घोड़ापर चढ़ो चहिये २६ ॥

(गजवर्णन) दो० ॥ मत्तमहावतहाथमेंमन्दचलनि चलकर्ण ॥ मुक्तामयइभकुम्भशुभसुन्दरशूरसुवर्ण २७॥

मत्तहैं तौभी महावत के वशमें हैं ऐसे हाथी थोरे होतहैं मुक्तायुक्त इभ हाथीहैं जाके कुंभ सुघाटहैं किंवा मुक्तामय इभ कुंभ सोशुभहैं औ शूरहैं तोपखानाछूटे फेरि और जीवनिसों डरे नहीं सुंदर आछो श्याम वर्ण रंगहै २७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ जलकेपगारनिजदलकेशृंगारपर दलकेबिगारकरपरपुरपौरंरौरि । ढाहैंगढ़जैसेवनभटज्यों भिरतरणदेतदेखिआशिषागणेशजूकेभौंरगौरि ॥ विं ध्यकेसेबंधवकालिंदनंदसेअमंद वंदनकीशूंडिभेरचन्दन कीचारुखौरि । सूरकेउदोतउदैगिरिसेउदितअतिऐसे गजराजराजैंराजारामचन्द्रपौरि २८ ॥

ऐसे ऊंचेहैं केतनों जल ऊंचोहोय गहरोहोय ताको पगार करनवालेहैं नाव नहींचाहिये पाँवनसों उतरिजातहैं पर शत्रु के पुरमें रोर शोरकोमचावैं रोरनाम दारिद्रकोभी है दारिद्र करैं गढ़को ढाहतहैं फेरि कैसेहैं घनमेघ जैसे तैसेहैं गौर। पा-

वेनी सो आशिषा आपनो निर्माल्य किंवा आशीर्वाद देतीहैं गणेशजूके भ्रमसों किंवा विंध्याचल के वंधव भाई से हैं वंधु शब्द आर्थी उपमावाचक है विंध्यसेहैं कालिंदपर्वत के पुत्रसे हैं पहारश्यामहै औ ऊंचोहै याते अमन्दजलद है वन्दन रोरी ताकी रचनासों शुण्डभरेहैं वन्दनसों शुण्डभरे यह भी पाठ सूर सूर्य ताके उदोतप्रकाशसों उदयाचलसे सोहत हैं किंवा शूरभट जापे चढ़ेहैं लक्षणके दोहामें शूरकह्योहै पौरिद्वारपर को घर ताके आगे २८ ॥

(अथसंग्रामवर्णन) दो० ॥ सेनास्वनसन्नाहरजसा हसशस्त्रप्रहार॥अंगभंगसंघट्टभटअंधकवन्धअपार२९

स्वनशब्द सन्नाहकवँच साहस भयछाँड़ि जोरकरनो भट योद्धांके संघट्टभीर अन्धरजसों जहां अन्धकार कवंध मस्तक हीन २९ ॥

दो० ॥ केशववरणहुंयुद्धमेंयोगिनिगणयुतरुद्र ॥ भूमिभयानकरुधिरमयसरवरसारितसमुद्र ३० ॥

जन आपनेदास प्रथम गणसहित महादेव भूमि भयकारी रुधिरयुक्त ३० ॥

कवित्त ॥ शोणितसलिलनरवानरसलिलचरागिरि हनुमन्ताविपविभीषणडारयोहै । चँवरपताकावड़ीवाड़ वाअनलसमरोगरिपुजामवंतकेशवविचारयोहै ॥ वाजि सुरवाजिसुरगजसेअनेकगज भरतसवंधुइंदुअमृतनि हालोहै । सोहतसाहितशेषरामचन्दकुशलवजीतिकैस मरासिंधुसांचेहुसुधारयोहै ३१ ॥

कुशलवजीतिके समरयुक्त ताको सांचसमुद्र कियोहै समुद्र सों रूपक करतहैं विभीषणरूप जहां विषडारयोहै विषश्याम

बिभीषण श्याम चवँर औ बड़ीपताका सो बाड़वानल समान है रोगरिपु धन्वंतरि सो जामवन्त समानहै जामवन्त बूढ़ो है युद्धको मिटायोचाहतहै याते धन्वंतरि ऐसे जो समता मिला-इये तौ सबकोहेतु साफ नहींनिकरै भरत सबन्धु बन्धुशत्रुघ्न सहित भरतुहै इंद्र सो औ शत्रुघ्न प्रभृत जहांदरव्योहै शेष-नाग को अवतार श्रीलक्ष्मणजी ताहि सहित श्रीरामचन्द्रजी नारायण हैं जहां ३१ ॥

(अथआखेटकवर्णन) दो० ॥ जुर्राबहिरीबाजबहुचीते श्वानशचान ॥ सहरबहालियाभिल्लयुतनीलनिचोल विधान ३२ ॥

बाजमादी है ताको नरजुर्रा बहरीको नर बहरीबच्चा कहा-वतहै शचानसिकरा सहरा फारसी में बनको नाम है छंद के लिये ह्रस्वकियो कोई सहरास्याहगोशको कहतहैं बहालिया करोल औ भील नीलवस्त्रको पहिरन नीलकपड़ा सों हरिण बहुत भाजतनहीं ३२ ॥

दो० ॥ बानरबाघबराहमृगमीनादिकबनजंत ॥ ब धबंधनबेधनबरणिमृगयाखेदअनन्त ३३ ॥

मृगयाशिकार तामें खेद यहपाठहै तहां अनजानिये खेल अनन्त यहपाठ आछो ३३ ॥

कवित्त ॥ तीतरकपोतपिककेकीकोकपारावतकुररकु लंगकलहंसगहिलायेहैं । केशवशरभरूाहसाहगोसरा सगतिकूकरानिपासशशाशूकरगहायेहैं ॥ मकरनिकरबे धिबांधिगजराजमृगसुन्दरीदरीनिभीलभामिनीनिभाये हैं । रीझिरीझिगुंजनिकेहारपहिरायेदेखौकामऐसेराम केकुमारदोऊआयेहैं ३४ ॥

कपोत पारावत कतरव ये कबूतरके नामहैं तहां हारिल किंवा पंडुकी जिये शरभजन्तुविशेष सीहगोश स्याहगोश ताकी गमकोगनिहै औ कूकरन के पास शशाशश औ शूकर ताको पकरायेहैं मकरग्राह दरीकंदरामें सुन्दरी जे भीलकी भामिनि हैं स्त्री हैं किंवा मृगहरीनिमें छपेहैं वै भील भामिनिकोभाये हैं याते रीझी श्रीरामजी के कुमार कुशलव ३४ ॥

कवित्त ॥ खलनिकेखैलभैलमनमथमनऐलशैलजा केशैलगैलगैलप्रतिरोकेहैं । सेनानीकेसटपटचन्द्रचित चटपटअतिअतिअटपटअन्तकके ओकहै ॥ इन्द्रजूके अकवकधाताजूकेधकपक शम्भुजूकेसकपककेशोदास कोकहै । जवजवमृगयाकोरामकेकुमारचढ़ैंतवतवकोला हलहोतलोकलोकहै ३५ ॥

जवजव मृगया शिकारको कुशलवजातहैं याते लोकलोक में कोलाहलशब्द होतहै खैल भैल हड़बड़ा कोई भाजैहै कोई छपैहै ऐलनाम शोरकोहै मनमें परमेश्वरको पुकारतहैं मकर वाहन कामकोहै सो न मास्चो जाय शैलजा पार्वती तिनको शैलपहार हिमवान ताको राहराह प्रति रोकै हैं सेनानी कार्त्तिकेय तिनको वाहन मयूर सो याते सटपट आदि क्रिया विशेष भय जतावनहार हैं चन्द्रमाको हरिण वाहन है याते चित्तमें चटपट व्याकुलता अन्तक यमताके ओकघरमें बहुत अटपट भई जो हमारो वाहन महिष सो जो मास्यो जायगो तो हमसों फिस्चो न जायगो संसारकोकामछूटैगो गजवाहन इन्द्रको है याते इन्द्रजूके अकवक राजाके हाथी अकवककरत हैं मास्यो न जाय पकरि न लैजाहिं जो हमारो वाहन मारैंगे के पकरिलैजाहिंगे तौ हमभी उनको बिगार करैंगे मेह नहीं वरसावैंगे इत्यादि ऐसे अकवक करत हैं धाता ब्रह्मा तिनको वाहन हंस है याते शम्भुजूको सकवक कौन कहिसकै उनको

वाहनवृषभ ताको कोई मारैनहीं कहूंपाटहै इन्द्रजूकेअकचक शम्भुजूकेसकचक तहां देवीकोवाहन सिंह कार्त्तिकेयकोवाहन मयूर सो न मार्योजाय याते धाताको धकचकको कौन कहि सकै आपने वाहन की फिकिर औ पार्वती पुत्रवधू सरस्वती बेटी कार्त्तिकेय पौत्र इनसबके वाहन की फिकिर ३५ ॥

(अथजलकेलिवर्णन) दो० ॥ सरससरोजशुभशोभ भनिहियसोंपियमनझेलि ॥ गहिबोगतभूषणनकोजल चरज्योंजलकेलि ३६ ॥

सरससरोवर सरोज कमल होय हृदयसों मनसों पियकेमन को झेलैहै गहतिहै इनके मनसानुराग है वासों पियको मन बंधतहै गतछूटेहैं भूषण तिनको पकरिलेतिहै ३६ ॥

(यथा) कवित्त ॥ एकदमयंतीऐसीहरैहंसिहंसवंस एकहंसिनीसीविषहाराहियेरोहिये । भूषणगिरतएकलै तिबूड़िबीचिबीचमीनगतिलीनदीनउपमानटोहिये ॥ एकहरिकंठलागिलागिबूड़िबूड़िजाति जलदेवतासीदेवतानिमोहिये । केशौदासआसपासभवँतभवँरजलकेलिमेंजलजमुखीजलजसीसोहिये ३७ ॥

जलकेलिमें जलजमुखी जलजसीशोभतिहै एक दमयंती ऐसी सुन्दरिहै जो हँसिकै ख्यालकरिकै हरैहै पकरै है हंस के वंश बालकनि को दमयंती भी पकरिबेचली है याते हंसनी समता किंवा हास्यसों हंसवंशकी उज्वलता ताको हरैहै एक हंसिनीसी है विषमृणालको हार हृदयमेंरोहैहै शोभैहै किंवा हंसनाम हेमसें भगवान्कोभी है ताकी स्त्री लक्ष्मीजी समीप है अरु कमलसोंप्रीतिहै याते मृणालकोहाररोहैहै शोभैहै नाम बीचिलहरि ताके बीच में याकी चंचलता के आगे मीनकी जो गतिहै सो लाजसों छपिजातिहै याते मीनकी जो उपमा

सो हीनहै याते नहींटोहिये नहीं खोजिये दृग देवता नेत्रकी अधिष्ठात्री देवता नेत्रमें जो देवतारहतहै सो विमोहित होत है जाके चहूंओर भ्रमर फिरतहैं ३७ ॥

(अथविरहवर्णन) दो० ॥ श्वासनिशाचिन्तावढ़ैरु दनपरेखेवात ॥ कारेपीरेहोतकृशतातेसीरेगात ३८ ॥

रसिकप्रियामें चारितरहकेविरह कहिआयेहैं मानविरह १ प्रवासविरह २ करुणाविरह ३ पूर्वानुरागविरह ४ याते चारि कवित्त करि उदाहरण देत हैं ॥ श्वासवढ़ै निशाराति जाको वड़ीहोय औ चिन्तावढ़ै किंवा निशा तामें चिन्ता वढ़ै रोदन करें जाके वचन को सखी सव परेखै हैं कछू वोलति है कि नहीं ३८ ॥

दो० ॥ भूखप्याससुधिवुधिघटैसुखनिद्राद्युतिअंग ॥ दुखदहोतहैंसुखदसवकेशवविरहप्रसंग ३९ ॥

सात सुख विरह में जातरहत हैं भूख प्यास एकगनैं तौ सुखजुदा निद्राजुदी भूखजुदीगनैं प्यास जुदी गनैं तौ सखी की निद्रा ऐसे जानिये ३९ ॥

(रसिकप्रियायां)कवित्त ॥ वारवारवरजीमैंसारससर समुखीआरसीलैदेखिमुखयारसमेंवोरिहै । शोभाकेनि होरेतौनिहारातिननेकहूतू हारीहैनिहोरिसवकहाकहूंखो रिहै ॥ सुखकोनिहोरोजोनमान्योंसोभलीकरीनकेशौरा यकीसौंतोहिंजोतूमानमोरिहै । नाहकेनिहोरेकिनमानैं होंनिहारतिहों नेहकेनिहोरफेरिमोहिंजुनिहोरिहै ४० ॥

नायक को मानहै नायका सखीसों कहतिहै तू नायकको मनाय है तहां सखी वचन नायका सों सारस कमल तासों सरस है येशमुखतेरो अवहीं तो प्रफुल्लितहै फेरि या नायक

के गये पीछे वाको जो रस अनुराग ताहीविषे सुखकोबोरैगी याही को ध्यानकरैगी याहीको गुण कथा कहैगी याके रसमें सुखमग्नरहैगो याते मैं वारवार कहे अनेकवार वरजी किंवा रलएकहै हेवारवाल अज्ञानि वारकोअर्थ कोपकोरोको नाहीं तौ यारसमें कोपरूप जो रस विप तामें सुखको रोगिहै मुख मलिनहोयगो विषकेयोगते हेममें विपकोभी नामरसहै किंवा मानरूप जो रस तामें जानिये मैं तेरो निहोरो करतिहौं यह यामें मेरी शोभाहै तामें तौ तू नेकु थोरी भी नहीं निहारतिहै सब सखी निहोरिकै हारीं तोहिं कहा काहू देवता की खोरि विक्षेप है सुखको जो निहोरो सुखकेलिये जो निहोरो तू नायकसों विलासकरि ताको जोन मान्यों सो भलीकरी लक्षण लक्षणा विपरीतादि अर्थ में होतिहै तासों करी ऐसो जानिये नायकाकी नायकमें उत्कंठादेखि वक्रविधि कहेते उलटीरीति सों कहतिहै केशौराय की तोहिं सौंह है अब तू मनको मति मोरै मानहीमें मनराखौ मानकरतमें कहौ नाह तेरो निहोरो करतहै किनको अर्थ क्यों नहींमानति है किंवा नाह के लिये नायकको वुलाव औ मिलियह क्यों नहीं मानतिहै मैं तोहिं निहोरतिहौं नेहके निहोरे जव तोहिं नायकको नेह प्रबलहोयगो निहोरैगो निहुरावैगो नीचोकरैगो तब मोहींको निहोरैगी हमसोंविज्ञप्तिकरैगी मोहिंमनायदेहु यहमानविरह४० ॥

(पुनः रसिकप्रियायां) कवित्त ॥ हरिनहारितहारहेरतहियोहिरातहारीहौंहरितनैनहरिनकहूंलहौं । वनमालीब्रजपरवरसतबनमाली वनमालीदूरदुखकेशवकैसे सहौं ॥ हृदयकमलनैनदेखिकैकमलनैन होउंगीकमलनैनऔरहौंकहाकहौं । आपघनघनश्यामघनहीसोहोतघनश्यामनिकेघोसघनश्यामविनुक्योंरहौं ४१ ॥

कोऊ वहिरंगा सखीसों किंवा परोसिनिसों नायकायचन

हारनान लेतको सो हरित हरित हैं उद्दीपन विभावहै ताको देखन देखन सहृदय मनमों हिरातहैं गमनहैं अचेतनाहोति है हरन हरत हिय ऐसोभीपाठहै सोजिकैहारी किंवा दुखसों हारी वनकीमाला पंक्तिहै जाको ऐसो जो व्रज तापर वरषत घनमाली घनजल ताकीमाला समूहहै जामें ऐसो मेघ वर्षत हे वनमाली श्रीकृष्णसों दूर हैं हृदय कमल नैन हमारो जो हृदयको कमलहै सोई नैनहैं तासों कमल नैन श्रीकृष्णचन्द्र को ध्यान में देखिकै यहअर्थ होऊंगी कमलनैन कमल जल तासोंयुक्तहै नैनजाको ऐसी मैं होऊंगी हमारी आंखिन में आंशूभरयोरहैगो क्यों तहांकहतहैं अपघने घनश्याम अप जलसोंहैं घने वहुतजामें ऐसो फेरि घनसघन निविड़हैं श्याम हैं घनहींसों होत याको अर्थ घनलोहे को लक्षणाकरि ताको प्रहार समान होतहैं ऐसे श्याम सघनके दिन वर्षाकाल तामें घनश्याम श्रीकृष्णचन्द्रविना क्योंकरिरहौं इहां मूर्च्छा रोदन इत्यादिकरि करुणा विरह ४१ ॥

(पुनः) सवैया ॥ भूलिगयोसबसोंरसरोषमिटैभवके भ्रमरातिविभातो । कोंअपनेपरकोपहिंचानतजानतना हिंनैशीतलतातो ॥ नींकहिमैंवृषभानललीकोभईसुनजा कीकहीपरैबातो । एकहिबेरनजानियेकेशवकाहेतछूटिग येसुखसातो ४२ ॥

एकहीवेर सातों सुख छूटिगये नहीं जानतहैं काहेते भूख प्यासइत्यादि दोहामेंकहेहैं सबसों रस औ रोषभूल्यो संसार जोहै सो ज्ञानकरि मिथ्याहै लोगव्यवहार दशा में संसारको सांचमाने हैं सो भ्रम है ऐसी कोई मोह दशाभई जो संसार को ज्ञानभूल्यो रातिदिनकी खबरि नाहीं जाहि दशाकी बात नहींकहीजानिहै रस औ रोषभूल्यो याते सुधिभूली भवकोभ्रम याते बुद्धिगई रातिदिनको ज्ञात नहींजान्यो याते निद्राभूली

आपने औ पराये लोगनको नहीं पहिंचानें याते नेत्रज्योति घटी याते अंगद्युति क्षीणभई जानिये नेत्रभी तो अंगहैं शीतलता नहींजान्यों याते भूख प्यास गरमखवाओ के शीतल खवाओ ऐसे काढ़ि लीजिये निद्राआदि आगिले कवित्त में किंवा दुख में सातौ सुख याहीमें जातरहे इहां प्रवास विरह जानिये ४२ ॥

(पुनः) सवैया ॥ नेहकेहैंसखिआंशूउसासनिसाथनिशासुविसासिनिबाढ़ी । हासगयोउड़िहंसिनिज्योंचपलासमनींदगईगतिकाढ़ी ॥ चातृकज्योंपिवपीवरटैचढ़ीतापतरंगिनिज्योंतनगाढ़ी । केशववाकीदशासुनिहौंअबआगिविनाअंगअंगनिडाढ़ी ४३ ॥

पूर्वानुराग में सखी नायका सों विरह निवेदनकरतिहै हे केशव वह नायका आगिविना अंग अंग में वरी है मेघवरषै है तौ मैं क्यों नहींवरसौं ऐसे मेघसों हिसका अर्थात् ममिता करिकै आंशूउसासनि के साथ वरसैहै निशा रातिसों वाको वाढ़ी है वड़ीभईहै कैसीहै बिसवासिनि विश्वासघाती है वर्षा में जैसे हंस पक्षी उड़िजात है तैसे हासउड़े गतिकाढ़ि गनिलौंकै तापकी तरंगिणी नदी ४३ ॥

(अथस्वयम्वरवर्णन) दो० ॥ शचीस्वयम्वररक्षिणीमण्डलसंचवनाव ॥ रूपपराक्रमवंशगुणवरणियराजाराव ४४ ॥

शची स्वयम्वर की रक्षाकरनवारीहै यहपुराणमें प्रसिद्ध हैं औ वंशके गुण वर्णियेहैं ४४ ॥

(यथा) सवैया ॥ मण्डलीमञ्चनकीनृपमण्डलमण्डितदेखियप्रेमप्रभासी । दंतनकीद्युतिदेहकीदीपतिभूषणज्योतिसमेतअभासी ॥ फूलनकीछविअम्बरकीछवि

त्रनकोश्रविनतूक्षणभासी। सोहतिहैश्रतिसीयस्वयम्बर श्राननचन्द्रप्रवेशप्रभासी ४५ ॥

श्रीसीताजी सो स्वयम्बर में श्रतिसोहतिहै धनुष को श्री रामचन्द्रजीने तोरचोहै तासों भयो जो श्रानन्द तासों श्रति शोभनिहै श्रीसीताजीको मुख सुन्दर चन्द्रमाहै श्रौर परिवेष नृपनके जो श्रानन चन्द्र सोमानों परिवेप प्रभाहैं चन्द्रमाही कोमंडल वर्णोहै श्रीरामजी धनुप तोरचो तासों कांतिहीनहैं याते परिवेष की समता एकतौ चहूंश्रोर घेराहै तासों साम्य श्री परिवेपमें जेतनी कांतिहै तेतनी कांति रहिगई ४५ ॥

(सुरतिवर्णन) दो० ॥ सुरतिसात्विकीभावमणिम णितरुणितमंजीर ॥ हावभाववहिश्रन्तरतिश्रलजसल ज्जशरीर ४६ ॥

कामसों युक्त जो चित्त सो सात्वतासों उपजै जो स्त्री पुरुष को भावक्रिया ताको नाम सुरति मणितनाम रति में शब्द मंजीरचरणभूषण सों रुणित है वाजै है हाव किल किंचित् श्रादि भाव स्वेद रोमांचश्रादि वहिराति श्रन्तर राति रसिक-प्रियामें कह्योहै श्रालिंगन चुम्वनश्रादि वहिराति सातस्थिति तिर्य्यकश्रादि सात श्रन्तरराति ४६ ॥

कवित्त ॥ केशौदासप्रथमहींउपजतिभयभीररोषरु चिश्वेतदेहकम्पनगहतहैं । प्राणप्रियश्राजीकृतश्रारनप दातिकमाविविधशवदद्विजदाननिलहतहैं ॥ कलितकृ पाणकरसकातिसुमानत्रान साजिसजिकरजप्रहारनसहत हैं। भूषणसुदेशहारदूषणसकलहोतसाखिनसुरतरीतिस मरकहतहैं ४७॥

इतिश्रीकेशवदासविरचितायांकविप्रियायाम

ष्टमप्रभावः ८ ॥

घरमें नायक नायका है बाहर सखी पूंछनि है सखी तू कहति है सो रतरीति है नायका चतुराई सों छिपावति है हे सखि समर हैं छेकापह्नुतिसमर कैसो है केशोदास कहत है प्रथमहीं लराईकी तयारीके समय भीरु जे कायर हैं तिनको भय उपजैहै औ शूरनिको रोप क्रोधकी रुचिकांनि उपजतिहै औ स्वेद उपजै है औ शूरकीदेह कम्पाको गहत नहीं देहकांपतिनहीं यह अर्थ प्राणप्रिय वाजीकृत प्रिय जोहैं प्राण ताकी जहां कृतकरी हैं वाजी जीवकी वाजीलगे है जो तुम जीतोगे तो हमारो जीवलेहुगे हमजीतैंगे तो तुम्हारो जीवलेहिंगे यह वारन हाथी औ पदातिप्यादा ताको क्रमकहिये चलिबो है जहां किंवा युद्धमें प्राण सरीपो प्रियजोहै घोड़ा ताको कियोहै वारनकेलिये शत्रुनके रोकिवेकेलिये पदाति क्रम पायँको चलावनो जहां शंख दुन्दुभी आदिके विविध अनेकतरहके शब्द हैं हम अव घोड़ाउठाय कामआवैंगे आपने भूपण औ पास जोहै द्रव्य सो द्विजनको देतहैं किंवा द्विजपक्षी सो जहां मांसके दानको पावतहैं शूर अपनी आंतरीतोरि पक्षिनको देतहैं कलित कृपानकर शकति सुमान मानकर हाथ कृपान तरवारिसों युक्त है ऐसे शत्रुनिकी ओर शकति वरछीसो कैसी है सुन्दर जो मानगरूर ताकोत्रान रक्षाकरनवाली ताको सजि सजि चलायवेकी तयारी करिकरि तासों शत्रुके हाथनों उपज्यो है जो प्रहारमारनो ताको नहीं सहत हैं वरछी वाले पै शत्रु तरवारि नहींचलायसकत है युद्धविषे सुदेश आछे जे भूपण हैं ते हारभये पराजय भये सवदूपण होत हैं लोग हँसतहैं कि फलानी अप्सरा वरिवेके लिये वरको सो शृंगार करिगईथी सो भाजीजात है भूपणहिं में हारआवै तो ऐसो अर्थ किये पुनरुक्ति दोप नहीं कोई कहत है भूपण सब औ हार जहां दूपण होत हैं सरदार जाते किन्वा भूपण के लोभते लोग चाहिकै मारतहैं (अथ सुरतपक्ष) परकीयाको

सुरत है प्रथमहीं पहिले नायकको भय उपजति है हम याको करग्रहणकरें तो यह बुरोमानें किंधौं यह शोरकरे किंधौं कोई देखिलेय इत्यादि नायका तौ सदाभीरु स्वभावहीहै रोषक्रोध ताकी रुचिकांति बनावति हैं भीतर रोषनहीं देहविषे स्वेद औ कम्पा सात्वकिताको गहतहै बाजीकृत बाजी करण स्तम्भन औषधनि करि वीर्यपात नहीं होनपावै सो जहां प्राण को प्रिय है आछोलागत है औ बारन है नायकाको स्वभाव रोकतिहै औ पदातिक्रम है जहां पाँवचलत है औ भूषणनिके औ नायकाके कंठके जहां मणित अनेक तरहके शब्दहैं द्विज नाम दानकोहै औ हेममें दान खण्डनको भीहै दानसों जहां अधर जोहैं सो खण्डनको पावतहैं जहां करकी शक्ति सामर्थ्य रूपाण दयायुक्त नहीं है निर्दयतासों कुच पीड़न करतहै नायकाको जो मान आदर ताको त्राणरक्षा करतहै बहुत वाको मानराखत है नायका सजिकहिये शरीर की सुन्दरता ताको सजिके बनाय कै करजनाम नख तिनके प्रहारक्षत तिनको सहति है जासमय नख लगावत हैं तासमय सुख की ऐसी सजि बनावतिहै सो प्रियलागतिहै जे भूषण अच्छे बाजति हैं ते दूषण होतहैं परकीया है याते औहारमों नायकके हृदय सों मिलते विषे अन्तराय होतहै याते सबदूषणहोतहैं ४७ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकविप्रियाटीकायामष्टमप्रभावव्याख्या ८ ॥

(अथविशिष्टालंकार) दो० ॥ जातिस्वभावविभाव नाहेतुविरोधविशेष ॥ उत्प्रेक्षा ९ आक्षेप १ क्रमगन तीआशिषलेप १ प्रेमसुश्लेषसभेदहैनियमाविरोधीमान ॥ सूक्षमलेशनिदर्शनाऊर्जस्वरसवजान २ रसअर्थान्तरन्यासहैभेदसाहितव्यतिरेक ॥ फेरिअपह्नुति ११

युक्तिहैवक्रोकातिसविवेक ३ अन्योक्तिव्याधिकरतहेसु विशेषोकतिभापि ॥ फिरिसहोक्तिकोकहतहैंक्रमहोसोंअभिलाषि ४ व्याजस्तुतिनिंदाकहेंव्याजनिंदस्तुतिवन्त ॥ अमितसुपर्यायोक्तिपुनियुक्ति १२ सुनोसवसन्त ५ सुसमाहितजुसुसिद्धपुनिऔप्रसिद्धविपरीत ॥ रूपकदीपकभेदपुनिकाहिप्रहेलिकामीत ६ अलंकारपरवृतकहो १३ उपमा १४ जमक १५ सुचित्र १६ ॥ भापाइतनेभूपणनिभूषितकीजैमित्र ७ ॥

अलंकार सामान्यालंकार तो कहे अलंकार नाम इनके लक्षण उदाहरण आगे कहैंगे जातिस्वभाव इत्यादि तातेका नवम प्रभावमें जातअलंकार रूप वर्णन कीजिये सो जाति गुण क्रिया वर्णन कीजिये सो स्वभाव इतना भेद औ विभावना औ हेतु औ विरोध औ विशेष औ उत्प्रेक्षा दशम प्रभाव में भेदसहित आक्षेपालंकार एकादश प्रभावमें क्रम औ गणना औ आशिष औ भेदसहित श्लेष औ नियम औ विरोधी औ सूक्ष्म औ लेश औ निदर्शना औ ऊर्ज औ रसवत्फेरि नवरसफेरि अर्थान्तरन्यासभेदसहित फेरि व्यतिरेक औ अपह्नुति आदि द्वादशे प्रभावमें युक्ति औ वाक्रोक्ति औ अन्योक्ति औ विधिकरण औ विशेपोक्ति औ सहोक्ति औ व्याजस्तुति निन्दाफेरि अमितालंकार औ पर्यायोक्ति औ युक्ति तेरहें प्रभावमें समाहित औ सुसिद्धि औ विपरीत औ रूपक सभेद औ दीपक सभेद औ प्रहेलिका औ परिवृत चोदहें प्रभावमें उपमाके भेद औ पन्द्रहें प्रभावमें नखशिख कहिजमक सोरहें सोरहेंमें चित्र कहेहैं ७ ॥

(अथजातिस्वभावलक्षण) दो० ॥ जाकोजैसोरूप

गुणकहियेतेहीसाज ॥ तासोंजातिस्वभावसवकहिवर णतकविराज ८ ॥

जाको जैसो रूपहोय हेममें रूपनाम आकृति को औ सुंदरताको सो जहांकहिये सो जाति अलंकार औ जाको जैसो गुण औक्रिया सो जहां वरणिये सोस्वभाव साज भूषण वस्त्र आदि साजसहित रूपवर्णिये औ गुणवर्णिये कुवलयानन्दमें जाति अलंकार स्वभावोक्तिसों जुदोनहीं हम भाषाभूषणकी टीकाकरीहै तामें स्पष्ट है ८ ॥

कवित्त ॥ पीरीपीरीपाटकीपिछौरीकटिकेशौदासपीरीपीरीपागेंपगपीरीयेपनहियां । वड़ेवड़ेमोतिनकीमालावड़ेवड़ेनैननाह्नीनाह्नीभृकुटीकुटिलवघनहियां ॥ वोलनिहँसनिमृदुचलनिचितौनिचारु देखतहीवनैपैनकहतवनहियां । सरयूकेतीरतीरखेलैंचारौरघुवीरहाथद्वैद्वैतीरतीरातीरातीयेधनुहियां ९ ॥

वड़े नैन छोटी भृकुटी यह अर्थ अच्छानहीं याते भृकुटी कुटिल हैं औ नाह्नी नाह्नी वघनहियां ऐसे अन्वयकहिये छोटे नाहरके नखहैं पीरीपीरी इत्यादि साजहै वड़ेवड़े नैन इत्यादि आकृतिहै जातिस्वभाव एक अलंकारहै तौ कुवलयानन्दसों भी मिले गुणवाची शब्द है क्रियावाची शब्द है द्रव्यवाची शब्द हैं इन सवले जाति रहित है जातिस्वभाव एकहै उदाहरण दोयहैं अव भाषावालेके अनुकूल अर्थ करतहैं ९ ॥

(अथस्वभावोक्ति) कवित्त ॥ गोरेगातपातरीनलोचनसमातमुखउरउरजातनकीवातअवरोहिये । हँसतिकहातिवातफूलसेझरतजातओठअवदातराती रेखमाति मोहिये ॥ श्यामलकपूरधूरकीओढ़ैनीओढ़ैउडिधूरिऐ

सीलागीकेशवउपमानटोहिये । कामहींकीदुलहीमीका केकुलउलहीसुलहलहीलालितललासीलोलसोहिये १०

नलोचन समातसुख लक्षणा सों वदेनेत्र जानिये उरविषे उरजात कुच ताकीवात वृत्तान्त यह है पूरेनहीं उपजे हैं अब रोहैहैं शोभै ओंठ अत्र दांतगोरे तामें रातीलाल रेख ऊपर पानकी किंवा स्वतःसिद्ध सो लनको मोहतिहै कपूर धूर वस्त्र बिशेषहै नेत्रमें जैसे उड़िके धूरिलागि ऐसे वाकीछवि लागी जाकी उपमानटोहिये खोजिये दुर्लभहै यहअर्थ गोरेनान गोराई गुणके तो जाति अलंकार है किंवा स्वभाव अलंकार है दोय अलंकार भाषावाले कहत हैं सो न समुझे और ग्रन्थन सों विरोध और उदाहरण साफनहीं १० ॥

(अथविभावना) दो० ॥ कारजकोविनुकारणहिंउ दौहोताजिहिंठौर ॥ तासोंकहतविभावनाकेशवकविशि रमौर ११ ॥

कारण सुवर्ण कारज गहना कारणविना जहां कार्य उदय होय उपजे तहां जानिये ११ ॥

(यथा) कवित्त ॥ पूरणकपूरपानखायेकैसोमुखवास अधरअरुणरुचिसुधासोंसुधारेहैं । चित्रितकपोलनो ललोचनमुकुरमैनअमलझलकझलकनिमोहिनारेहैं ॥ भृकुटीकुटिलजैसीतैसीनकियेहूहोहिं आंजीऐसीआंखें केशोरायहेरिहारेहैं । काहेकोशृंगारकैबिगारातिहैमेरीआ लीतिरेअंगसहजशृंगारहीशृंगारेहैं १२ ॥

कपूरसों पूर्ण ऐसे जे पान तिनके खाये जैसी मुखवास सुगन्धहोय तैसी मुखवासहै अरुणरुचि जो अधरहैं सो सुधा सों सुधारेहैं कपोलनिकी जो झलकनिहै तामें दर्पन वारे जे पदार्थ हैं तिनको मोहितकरि अपने विषे ध्यानकरि

जीतेहै यह अर्थ जैसी तेरी भृकुटीकुटिलहै तैसी फेरि विधाता बनायो चाहै तो बनिभी न सकै अंजन विना आंजीसी तेरी आंखेंहैं कपूरपान अंजन कारणसोंनहींहै मुखवास अधरलाली नैनकजरारे कार्यभरा शृंगारनहीं औ शृंगारे और भी जानि लीजिये १२ ॥

दो० ॥ कारणकौनहुंआनतेकारजहोयसुसिद्ध ॥ जानोंयहैविभावनाकारजछांड़िप्रसिद्ध १३ ॥

फेरि भेदकहत हैं और कारण ते जहां और कार्य सिद्धि होय १३ ॥

(यथा) सवैया ॥ नेकहूकाहूनवाईनवानीनवायेविनाहींसुवक्रभईहै । लोचनश्रीविभ्रुकायेविनाविभ्रुकीसीरंगेविनुरागमईहै ॥ केशवकौनकीदीनीकहौयहचन्द्रमुखीगतिमन्दलईहै । छोलीनहोहिगईकटिक्षीणसुयौवनकीयहयुक्तिनईहै १४ ॥

सखीकीउक्ति नायकासों वा सखीसों नेकुथोरीभी नायका की वाणी वचनसों काहूने नवाई नहीं सो नवाये विना वक्र टेढ़ीभई जो वस्तुनवाइये सो टेढ़ीहोतिहै इहां प्रसिद्धकारण नवावनो सो नहीं है और कारणकौनकहै यौवनतासों नवायनो कार्य सिद्धभयो सर्वत्र कारणांतर यौवनजानिये लोचन की श्रीशोभा विभ्रुकिवे में विभ्रुकाइबो कारण प्रसिद्धहै सो नहीं रंगिबो लालहोने को कारणहै सोनहींहै देनो प्राप्तिहोने को कारणहै सो किनहूंदीनी नहीं है छोलीनहींहै कुटिल औ क्षीण होयगई १४ ॥

(हेतुलक्षणं) दो० ॥ हेतुहोतहैभांतिद्वैवरणतसबककिराव॥ केशवदासप्रकासकरवरणिसभावअभाव १५॥

दुइप्रकारको हेतु होत है एकसभावहेतु जो काहूसों मिल्यो

होय अथवा औरनि के जोरते प्रबलहोय दूसरो अभाव हेतु निबलहोय औ सभाव अभाव मिलाये तीसरो भी जानिये अभाव असमर्थहोय १५ ॥

(अथसभावहेतु) सवैया ॥ केशवचन्दनवृन्दघने अरविंदनकेमकरन्दशरीरो । मालतीबेलिगुलाबसुकेतकीकेतकचम्पककोवनपीरो ॥ रंभनिकेपरिरंभनसंभ्रमगर्वघनोघनसारकोजीरो । शीतलमन्दसुगन्धसमीर हस्योइनसोंमिलिधीरजधीरो १६ ॥

ऐसो जो समीर पौन सो चन्दनके जे वृन्दसमूह अरुघने अरविंद कहे कमलन के शरीर में जो मकरंद फूलन को रस तासों मिलिके फिरि केतकी केतकआदि कितनेनसोंमिलिके रंभा जो है केला ताको जो परिरंभण मिलाप ताको संभ्रम आदरकियोहै यासों पवन में गर्वको मानकरिबो औ धीर्यको दरशायो केला के भीतर जो घनसार कपूर ताको जीरा सो उड़ाय ल्यावत है कोई जीरा शीतलताको कहत है पौन इन सबसों मिलि धैर्य हरिवेमें समर्थभयोहै १६ ॥

(अथअभावहेतु) सवैया ॥ जान्योनमैंनदयौवनको उतरयोकवकामकोकामगयोई । छांड़योनचाहतजीवकलेवरजोरिकलेवरछाँड़िदयोई ॥ आवतिजातिजरादिनलीलतिरूपजरासवलीलिलयोई । केशवरामररौंनररौं अनसाधेहीसाधनसाधुभयोई १७ ॥

मैं रामको ररौं रटौं किनरटौं साधन श्रवण मनन आसन प्राणायाम इत्यादि के अनसाधेही साधे विनाहीमैं साधुभयो साधुनकी विषय वासना छूटिजातिहै सो हमें जरा वृद्धतासों छूटिगई है कहूं साधुकी ठौर सिद्ध भी पाठहै श्रवणादिको प्रबल कारणहैं वृद्धावस्था असमर्थ होनेका कारणहै जो सा-

धननदीनो पहिली विभावनाहोतीजोसाधनान्तरहो तोदूसरी विभावना होनी जरा निवला साधनहै याते अभावहेतु १७ ॥

(अथसभावअभावहेतु) सवैया ॥ जादिनतेवृषभानललीहिअलीमिलियेमुरलीधरतेही । साधनसाधिअगाधिसबैबुधिशोधिजेदूतअभूतनिमेही ॥ तादिनतेदिनमानदुहूनकोकेशवआवतबातकहेही । पीछेअकाशप्रकाशैराशिबढ़िप्रेमसमुद्ररहैपहिलेही १८ ॥

सखीवचन सखीसों मुरलीधर सों तेहीं मिलाये जो बुद्धि बहुत दूतनिमेंथी ताको विचारिकै जादिन मिलाये तादिनते दिनमान दिनदिनविषे मानकहिये मनको बढ़िवो ताकीबात कहेही बनिआवति है चन्द्रमा आकाश में पीछे प्रकाशै अर्थ यह चन्द्रमा के उदयभये विनाहीं रातिभये विनाहीं नायक नायका को प्रेमरूपी समुद्र पहिलेही बढ़िरहत है मिलिवे को सदा आतुर रहत है कबरातिहोय कब मिलें चन्द्रमाके उदय में अभिसार आछोहोय चन्द्रमा की ज्योतिमें नायकाके अंग की ज्योतिमिलिजाय कोई देखे नहीं अंधेरीमें नायकाके अंग की ज्योति बढ़िजाय तहां यत्नसों छपाव न होय अगाध साधन साधिकै मिलायो सखीने सोतौ प्रबलहेतुहै चन्द्रमा प्रेम समुद्र बढ़ाइबेको कारणहै ताको उदयभयो नहीं चन्द्रमाउगैगो यहलानिकै प्रेमसमुद्र बढ्यो सखी सभाव हेतु कहे प्रबल हेतु है चन्द्रमा अभावहेतु कहे निर्बलहेतुहै कृष्णाभिसारिका हैकैभीजायसकैहै सखीविना तौ कुलवधू नहींमिलिसकै१८ ॥

(विरोधाभासलक्षणं) दो० ॥ वर्णतलगैविरोधसोअर्थसबैअविरोध ॥ प्रगटविरोधाभासयहसमुझतसबैसुबोध १९ ॥

विरोधसों भासे विरोध नहींरहै १९ ॥

(यथा) कवित्त ॥ परमपुरुपकुपुरुपसंगशोभितदा नदानशीलमेंकुदानहींसोंरतिहें । सूरजकुलकलसराहुको रहतसुखसाधुकहैंसाधुपरदाराप्रियअतिहें ॥ अकर कहावतधनुषधरेदेखियत परमकृपालपैकृपाणकरपति हैं । विद्यमानलोचनकैहीनवामलोचनतेकेशोरायराजा रामअदभुतगतिहें २० ॥

राजाराम अद्भुतगतिहैं आप परमपुरुपहैं श्रेष्ठपुरुषहैं कुपुरष कुत्सितपुरुप को संग अनुचित अविरोधकु पृथ्वीके पुरुष संगमेंहैं अरु पृथ्वीको दान ताहीसों रत हैं सूर्यवंश हैं राहुको रहतसुख राहुदैत्यको दुखचाहिये सो राहुकोपथको सुखरहत है चोर वटपार जहांनहीं साधुलोग साधुकहतहें अरु परदार प्रिय हैं तहांपर उत्कृष्टदारा श्रीजनकजा अकरको अर्थ काहू को कर दंडनहींदेतहैं अकरको अर्थ नाहींहै हाथजाको सोकरि धनुषको राखत हैं कृपाणकर तरवार हाथमें है किंवा कृपाको नहींकरनवालेहैं पै परमकृपालु हैं औ पतिहैं पाल हैं दोयनेत्र विद्यमान हैं विद्यमानकी ध्वनि दूरसों नेत्रदेखिवेमें आवे हैं बड़े अरु सुन्दर नेत्रहैं सुन्दर नेत्र वामहीन हैं एकही जिनके स्त्रीहै वहुतवाम लोचना नहींहैं इहां विरोधभासेहै पै विचारि ते विरोध नहींहै २० ॥

दो० ॥ केशवदासविरोधमयरचियतवचनविचारि ॥ तासोंकहतविरोधसवकविकुलसुबुधिसुधारि २१ ॥

वहुंत विरोध २१ ॥

सवैया ॥ आपसितासितरूपचितेचितश्यामशरीर रंगेरंगराते । केशवकाननहीनसुनैसुकहैरसकीरसनाबिनबातै ॥ नैनकिधौंकोउअंतरयामीरीजानतिहौंनिबहू

भ्रांतिताते । दूरलौदौरातिहौंविनपायँनिदूरदुरीदरशैमाति जाते २२ ॥

सखी सों सखी नेत्रनकी वात कहति है आप सितश्वेत असित श्यामरूपहैं तू चिते देख श्याम श्रीकृष्णके चित्त को औ श्यामजोहै शरीर ताको रातेरंगलालरंगसों रंगतहैं किंवा आप सितासित रूप हैं औ कज्जल सों श्यामरंग भये हैं औ कारेनेत्र वर्णतहीहौं चितैकेदेखिके चित्तको रातेरंगसों रंगति हैं एकरंगते और रंग प्रगटहोत है विषमालंकारहोय सो इहां नहींहै दोयरंगते एकरंग उपजतहै रसना जिह्वा विना रसकी वात कहतहैं कान रसना देखिवे में नहींआवैहैं वही कान हैं जासों सुनतहैं रसना वहीहै जासों वोलत हैं ऐसो अर्थकरि विभावना सों वचाइ एरी सखी नैननको कोऊ अन्तरयामी आपने जीवमें जानतिहौं ताहीहेतुते तोसों बूझतिहौं तू कहि है कि नाहीं नेनवहिर्दृष्टि औ अन्तरयामीहैं याते बहुतविरोध निकेर २२ ॥

कवित्त ॥ शोभतसुवासहाससुधासोंसुधारयोविधि विषकोनिवासजैसोतैसोमोहकारीहैं । केशौदासपावन परमहंसगतितेरीपरहीयहरनप्रकृतिकौनेपारीहैं ॥ वारिकविलोकिवरवीरसेवलीनकहुं करतवराहिवशऐसीवै सवारीहैं । एरीमेरीसखीतेरीकैसेकैप्रतीतिकीजेकृशलानुसारीदृगकरणानुसारीहैं २३ ॥

सुन्दर है वास सुगन्ध जामें ऐसो हास विषकोनिवास सो मोहकारीहै सुधासों मानों विधाता ने वनायो है इहां गम्योत्प्रेक्षा भासैहै विषको निवास जो पदार्थ तैसो है इहां उपमा जो सुधासों वनायो होय सो विषको निवास यह विरोध जो अलंकारको उदाहरण देहिं सोई अलंकारानिकरें भाषाभूषण

की तरह सो इनके ग्रन्थमेंनहीं सर्वजानों शंकरसंन्यासिहोयगी परमहंस तपस्वी ताकी गतिक्रियाहै सो पराये मनकोहर यह विरोध बलवीर बलभद्र ताको वीरभाई श्रीकृष्ण तिनको एकबार देखे सों वशकरतिहै वारीबैसहै यौवन पूर्णनहीं वि-रोध श्यामरंग को अनुसरन करैहै ग्रहणकरतहै कानताईगये हैं श्रीकृष्णसों कर्णसों विरोध जो कृष्णानुसारी होय कर्ण के पीछे लाग्यो नहींफिरै २३ ॥

(विशेषलक्षणं) दो० ॥ साधनकारणविकलजहँहो यसाध्यकीसिद्धि ॥ केशवदासबखानियेसोविशेषपर सिद्धि २४ ॥

इहां साधनकोअर्थ साधक जो कार्यकोसिद्धिकरै सो व्या-करणरीति सों साधनभी कहावै औ साधकभी कहावै साधक जोहै सो कारणकहिये हेतु ताकरिकै विकलहोय हीनहोय औ साधकहिये कार्य ताकी जहां सिद्धिहोय जैसे कुम्हारहै ताको चाकनहींहै परन्तु घटबनावैहै २४ ॥

(यथा) सवैया ॥ साँपकोकंकणमालकपालजटान कीजूटिरहीजटिश्रातें । खालपुरानीपुरानोइबैलसुश्रोर कीश्रोरकहैविषघातें ॥ पारवतीपतिसम्पतिदेखिकहैय हकेशवसंभ्रमतातें । श्रापुनमांगतभीखभिखारिनदेतद ईमुहमांगिकहांतें २५ ॥

भूंखन के मारे आंतरी लगिरही हैं इहां कार्य के साधक महादेव हैं कार्यहै दान ताको सिद्धिकरिबेमें हेतुकाकहै धनि भण्डार गज अश्वइत्यादिकरि शिवहीनहैं सांपकंकणआदि सो मुंहसोंमांगी जोवस्तु ताकोदानकीसिद्धि नहींहोनिहै २५॥

कवित्त ॥ तमोगुणश्रोपतनश्रोपितनिरूपनेननगोनि निविलोपककैकोपकेनिकेतहै । नुखविपधरे[illegible]पंगु

मुण्डमालभूषिताविभूतिभूतप्रेतनिसमेतहैं ॥ पातकापिता
केयुतपानकोहूकोतिलक भावैगीतकामहींकोकामिनि
केहेतहैं । योगिनकीसिद्धिसबजगकीसकलसिद्धिकेशौ
दासदासिनिज्योंदासनकोदेतहैं २८ ॥

तमोगुण को ओप चाक्चक्यतासों ओपित है तनजाको तमोगुणको ओपदियो है ओपनी लोहारनके होति है लोह को मैल दूरकरि शुद्धरूप काढ़तहै त्रिरूप नैन तीन नेत्र सूर्य चन्द्र अग्नि एहीनेत्रहैं औ लोकके विलोप नाशकर्ताहैं तमोगुणके कार्यकोपताको घर हैं मुख कंठ तामें विषको धरत हैं औ विषधर सर्पकोधरेहैं किंवा जो विषै विषकोराखतहै ऐसो जो सर्प ताकोधरतहैं मुण्डमाल औ विभूतिसोंभूषितहैं पिता ब्रह्मा तिनको माथो काट्यो तासोंभयो जो पाप तासों युक्तहैं गोतम औ बृहस्पति की स्त्रीके पासगयो जो चन्द्रमा सो पातकी है सो लिलारमें तिलककीठौर रहतहै याते पातकीको तिलक जो कोई काम दाह औ कामतीरति ताके विलापको गीतगावतहै तासों हेतकरतहैं किंवा कामदाहकी कथाकहत है औ कामिनी पार्वती सों हेतहै जो कोई काम को वरावै सो फेरि कामिनी सों हेतुकरै तो काम होय तब कामिनी सों हेतु सम्भवै योगिनिकी सिद्धिनिको ऐसे दासनिको निजसेवकनिको बकसतहैं जैसे दासी बांदीको काहूकोदीजिये जो सिद्धिदायकहोय सो सत्वगुण प्रधान चाहिये औ वाको समदृष्टि चाहिये औ लोकपर दयाकरि रक्षाकरै औ शांतस्वभाव होय काहूपर कोप न करै औ ताको सत्पुरुषनको संगहोय औ कामके गीतनहींसुहायँ औकामिनिसों प्रीतिनहींराखतोहोय इत्यादि हेतु विकलाशिवहैं औ सिद्धिदानकार्य ताकी सिद्धिभई २८ ॥

सवैया ॥ बाजीनहींगजराजनहींरथपत्तिनहींबलगा
तनिहीनो । केशवदासकठोरनतीक्षणभूलिहूहाथहथ्या

रनलीनो ॥ योगनजानातिमन्त्रनजापनतंत्रनपाठपढ्यो परवीनो । रक्षकलोकनिकेसुगवाँरिनिएकविलोकनिहीं वशकीनो २७ ॥

पत्तिप्यादा भी स्त्रीन के नहींहै औ गातवलहीनहैं अबला कहावती हैं कामी तौ वशहोतही हैं यहकामीनहीं है लोकनि को सरदार है ताको वशकिये वै गवाँरि है एक विलोकनिहीं एकगुण उनको विलोकिवे को है साध कवि गवाँरि है वाजी इत्यादि योगइत्यादि हेतु ताकरिके हीनहै २७ ॥

(रसिकप्रियायां) कवित्त ॥ वृजकीकुमारिकावेलीनि शुकसारिकापढ़ावैंकोककारिकानि केशवसबैनिवाहि । गोरीगोरीभोरीभोरीथोरीथोरीवैसफिरि देवतासीदौरि दौरिआईचोराचोरीचाहि ॥ विनगुनतेरीआनिभृकुटी कमानतानिकुटिलकटाक्षवानयहअचरजआहि । एते मानडीठईठमेरेकोअनीठमन पीठदैदैमारतीपैचूकतीन कोऊताहि २८ ॥

नायकके पक्षकी सखी सखीसों कहतिहै कुमारिका विना व्याही निवाहिकै पूरो पढ़ावति है कछूकसरि नहीं राखति है देवतासीही नायकने नहींदेखी वह देखिआई है जैसे देवता देखै देवता को कोई देखैनहीं विनगुणकी कमान भौंहें तेरी आनि तेरी शपथकरतिहों टेढ़ोवाण लागननहीं सो कुटिल जे कटाक्ष ते बाण हैं एते मानकी है थोरे दिनकीहै ताभी डीठि सों मेरो ईठइष्ट जो श्रीकृष्ण ताको ऐसी कमान ऐसे बाणन सों फेरि फिरिकै मारति है चूकतनाहीं है विभावनामें मुख्य कारण नहींरहै इहांतौ कारणहै पै अंगहीनरहै यहभेद २८ ॥

दो० ॥ वांचिनआवैलीखिकछूदेखतनांहिनधान ॥ अर्थसुनारीवैदईकरिजानतपतिराम २९ ॥

मतिराम कोई वैद्यरहें उनसों केशवदास सों वैरथा ताकी निंदाकरि नाम प्रसिद्धकियो केतनी एकपोथिन में मतिराम के दोहाआवनहैं जाको कछु लिखिनहींआवै औ बांचिनहीं आवै जाको अक्षरसों परचैनहीं घाम छाहँ को नहीं देखत है लक्षणासों गरम शरदको नहींदेखतहै अर्थसुनारी नारीज्ञान के श्लोकनिको जैसो अर्थ है तातरहसों नारीको नहींदेखतहै एतने कारणविन विरुजहैं औ वैदईको करिजानतहैं २९ ॥

(अथउत्प्रेक्षा) दो० ॥ केशवऔरहिंवस्तुमेंऔरैकीजतर्क ॥ उत्प्रेक्षातासोंकहेंजिनकीबुधिसंपर्क ३० ॥

औरवस्तु में औरवस्तुकी भावना कीजिये जाको बुद्धिसों संपर्क योगहै ३० ॥

कवित्त ॥ हरकोधनुपतोरह्योलंकातोरीरावणकोवंशनोरह्योतोरिजैसेवृद्धवंसवातहैं। शत्रुनिकेशेलशूलफूलतूलसेहएकसुनिकेशौरायकोसोंहियोहहरातहैं ॥ कामशूरहूतेतिक्षतारेतरुणीनिहूकेलागिलागिउचटिपरतऐसेगातहैं । मेरेजानजानकीतूजानतिहैजानकछूदेखतहीतेरेनैनमैनसेव्हैजातहैं ३१ ॥

वाह्योवांस किंवा पुरानोवांस ताको पवनतोरै किंवा वंस नाम हैममें पीठके हाड़कोभी है जैसे वृद्धके वंसको वातरोग तोरै मरोरै है फेरि उठैनहीं शेल वरछी शूल त्रिशूल श्रीरामचन्द्रजी अनुकूलहैं तरुणीनके नेत्रतारालागि उचटि उचटि परत हैं मेरे जान यहशब्द उत्प्रेक्षा व्यंजकहै मैं यह सम्भावना करतहों जानको अर्थ विज्ञाटोना कछुजानतिहैं हेजानकी तु तेरेनैन के देखनके मैन मोम तैसो कोमलहोतहै तामें कारण अनुकूलता है सीताजी को अत्यन्त रूप कारण है टोना की सम्भावनाकरी है ३१ ॥

(रामचन्द्रिकायां) कवित्त ॥ अंकनसशंकनपयोधि
हूकीपंकनसुअंजननरंजितरजनिनिजनारीको । नाहिंनं
झलकझलकतिनभयानकीन क्षितिछांहछाईछलनाहीं
सुखकारीको ॥ केशवकृपानिधानदेखियेविराजमानसा
नियेप्रमानरामवैनवनचारीको । लागतिहैंजायकंठना
गादिगपालनिकेमेरेजानसोईकृतकीरतितिहारीको ३२॥

इतिश्रीकविप्रियायांविशिष्टालंकारवर्णनंनाम
नवमप्रभावः ९ ॥

कोई कपिको वचन शशांकचन्द्रमामें पयोधि समुद्रकी पंक को अंक निशानी नहीं है श्यामता यह चन्द्रमा की स्त्री जो रजनी राति ताके अंजनसों भी नहींरंग्यो है क्षिति भूमि की छायाभीनहींहै सुखकारी जो चन्द्रमा अनेकन छलन में सुन करतहै ताको यहकपटभी नहींहै छलकीठौर छिद्र भी पाटे किंवा कारीछाम ताको छलकरिखकहिये आकाशहीननहीं सो भी नहीं है नाग दिग्गज दिक्पाल इन्द्रादि तिनके कंठमेंला-गतिहै तुम्हारी कीर्त्ति सोई तुम्हारी कीर्त्ति की कलरन्ना है चन्द्रमा को शोचभयो है हमारीऐसी कीर्त्तिनहीं ताके दुख सु श्यामताभईहै चन्द्रमाकी श्यामतामें कीर्त्तिको हति भी संभा-वना जो जातिको स्वभावको होय गनै तो तीनअलंकार कहे एकगनै तो छः अलंकार नवमप्रभाव में कहे हैं ३२ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकवि
प्रियाटीकायांनवमप्रभावव्याख्या ९ ॥

(आक्षेपकालंकार) दो० ॥ कारजकेआरम्भहीनहैं

कीजतप्रतिषेध ॥ आक्षेपकतासोंकहतबहुविधिबरणि सुमेध १ ॥

प्रतिषेध वरजिबो सुमेधसुबुद्धि १ ॥

दो० ॥ तीनहुंकालबखानियेभयोजुभावीहोत ॥ कविकुलकौतुककहतहैंयहप्रतिषेधउदोत २ ॥

भयो सो भूतभावी जोहोयगो होत सो वर्त्तमान कहतप्रति कहतके २ ॥

दो० ॥ वरज्योंहोहरात्रिपुरहरवारिककरिभ्रूभंग ॥ सुनोमदनमोहनिमदनकैहीगयोअनंग ३ ॥

रतिसों कोई को वचनहै मैंने वरजाथा कि तू हर महादेव पास मतिजाहि त्रिपुरदैत्य के मारनवाले सो महादेव ने एक वार भौंहचढ़ाईकि हे मदनमोहनिरति तुम सुनों मदन काम अनंगभयो अंगहीनभयो महादेवको आरम्भ कियो तवहीं निषेधकियो इहां भूतवातहै ३ ॥

दो० ॥ तातेगौरिनकीजियेकौनिहुंविधिभ्रूभंग ॥ कोजानैह्वैजायकहप्राणनाथकेअंग ४ ॥

सोई सखी पार्वती को सकोप देखिकै कहति है प्रणयमान है क्रीड़ाकलहमें जो उपजै सो प्रणयमान भ्रूभंगकरनो आछो नहीं प्राणनाथ शिव तिनके अंग कहाहोयगो भ्रूभंग आरम्भ करत प्रतिषेधकरतिहै कहाहोयगो यहभावी ४ ॥

दो० ॥ कोविदकपटनकारशरलगतनतजाहिउत्साह ॥ प्रतिपलनूतननेहकोपहिरेनाहसनाह ५ ॥

सखीनायक सों कहतिहै नायका नाहींनाहीं करतिहै तहां नायकको प्रेमदेखिकै कहतिहै हे कोविद प्रवीणनकार को कपटधर यह शरवान है तहां नायकवचन नाह जे नायक हैं

रसिक हैं सो याकेलागे उछाहको नहीं नजनहैं प्रतिपलपलक पलकप्रति नवीन नेहको सनाह वख्तर जिरहपहिरे हैं उन्हैं नाहीं को कहनो आछोलागत है नायकासों प्रीतिकरिवेलग्यो है तब सखी प्रतिपेधकरै है वर्त्तमान ५ ॥

(आक्षेपनाम) दो० ॥ प्रेमअधीरजधीरजानिसंशय मरणप्रकास ॥ आशिपधरमउपायकहिशिक्षाकेशवदास ६ ॥ (प्रेमाक्षेपलक्षणम्) दो० ॥ प्रेमवखानतहीजहांउपजतकारजवाधु ॥ कहतप्रेमआक्षेपयहतामेंकेशवसाधु ७ ॥

नवनाम कहेंगे ६ प्रेम आपनो कहत के कोई कार्य को वाधहोय ७ ॥

कवित्त ॥ ज्योंज्योंवहुवरजेमैंप्राणनाथमेरेप्राणअंग नलगाइयेजूआगेदुखपाइवो । त्योंत्योंहँसिहँसिआनि शिरपरउरपरकीबोकियोआंखिनकेऊपरविलाइवो ॥ एकौपलइतउतसाथतैनजानदीन्हे लीन्हेरहेहाथहीकहां लौगुनगाइवो । तुमतोकहततिन्हेंछाँड़िकेचलनअव छाँड़तयेकैसेतुम्हेंआगेउठिधाइवो ८ ॥

मोहींसों तुम इतनोप्यारकरतहो सो मेरेप्राण तुम अपने अंगसों लगावतहो यहप्यार आगे दुखपाइवेको कारण नाहिं प्राणको तुमछाँड़िके चलन को कहतहो तुम्हें ये प्राण केसेहि तरहसों नहींछाँड़तहैं तुमसों आगेउठिके इन्हें दौरिवो है इहां या अर्थ में मरणाक्षेप क्यों न होय इहां आपने प्रेमको कहन मरणरूप कार्यकोवाधभयो यातेप्रेमाक्षेप मरणाक्षेपनो मरण को कहते गमनादि रूप कार्य को वाधहोत है दोउलक्षणनमें वहुतवीच जो कोई लक्षणको अर्थ नहीं विचारत हैं तो ऐसो

अर्थकरतहै कोई परदेशी नायक है तासों नायकाकी आसक्ति है तुम्हें आगे उठिधायचो है परदेशको चलनो है तासों तुम कहतहौ तिनप्राणको छाँड़िकै चलनेको ८ ॥

(अथअधैर्याक्षेप) दो० ॥ प्रेमभंगबचसुनतजहंउपजतसात्विकभाव ॥ कहतअधीरजकोसुकवियहआक्षेपसुभाव ९ ॥

प्रेम के भंग के वचन सुनत को जहां सात्विकभाव स्तंभ स्वेद रोमांचइत्यादि आठ जहांउपजें प्रेमभंगभय यहभीपाठ है प्रेमके भंगके वचन सुनतकै भयसों जहां ऐसोलगाइये ६ ॥

सवैया ॥ केशवप्रातवड़ेहीविदाकहंआयेप्रियापहँनेहनहेरी । आवोमहाबनह्वैज्योंकहोहँसिबोलह्वैऐसेवनायकहेरी ॥ कोप्रतिउत्तरदेइसखीसुनिलोलविलोचनयोंउमहेरी । सौहैंककैहरिहारिरहेदिनवीसकलौंअंशुवानरहेरी १० ॥

सखीसों सखीकहतिहै नेहसों नहेवंधे तवै साकोपरगत्राहैं गोकुलसों कछुदूर आगे महावन है महावनजाय आवो एक तो यह दूसरो बोल जो हँसिकै कहो बोलप्राक्ययोंउमहेआँशू सो उमड़े प्रेमभंग को वचन महावनजाय कै आवो आंशूसात्विक १० ॥

(अथधैर्याक्षेप) दो० ॥ कारजकरिकहियेवचनकाजनिवारणअर्थ ॥ धीरजकोआक्षेपयहवरणतवुद्धिसमर्थ ११ ॥

कार्यको करिकै वचनकहै वाहिकार्य को निवारिवो अर्थमें निकरै ११ ॥

कवित्त ॥ चलतचलतदिनवहुतव्यतीतभयेसकुचितकतचितचलतचलायेही ।जानतहैंतेकहोकहानाहिंनामिलतआनिजानियहआँड़ोमोहवढ़तवढ़ायेही ॥ मेरीमांतुमहिंहरिरहिहौसुखहिसुखमोहूंहै तिहारीसोंहरहौसुखपायेही । चलेहीवनतजोतौचालियेचतुरपीयसोवतहीजैयेछाँड़िजागैगीहौंआयेही १२ ॥

कहतके क्यों सकुचतहौ चलायेसों नितचलत है नाहिंन मिलत मिलतहीहै चतुरपिय तुम हमारी वातको समझनहीं ऐसो परदेशवनै तो करो नहींतोनकरौ यामें विधि तो व्यक्त है निषेधछप्यो है १२ ॥

(संशयाक्षेप) दो० ॥ उपजायेसंदेहकछुउपजनकाजविरोध ॥ यहसंशयआक्षेपकहि वरणतजिन्हेंप्रबोध १३ ॥

सन्देह उपजायेसों कर्त्तव्य कार्य वाध्योजाय १३ ॥

कवित्त ॥ गुणनिवलितकलसुरनिकलितगायललितताललितगीतश्रवणरचायहैं। चित्रितहौंचित्रनमेंपरमविचित्रतुम्हैंचित्रनीज्योंदेखिदेखिनैननिनवायहैं ॥ कामकेविरोधीमतशोधिशोधिसाधिसखिवोधिबोधिआनिनकेबासरगवाँयहैं । केशौरायकीसोंमोहिंयहहीकठिनवाकीरिसमेंरासिकलालपानकोखवायहैं १४ ॥

तुम्हारेगुणसों वलितयुक्त कल अव्यक्त मनोहरस्वरसोंगुन श्रीललिताजी सखी मैं तुम्हें चित्रित करोंगी चित्रनीकी तरह यहनायकादेखिके नैननको नवावेगी जैसे साक्षात् ननन्देंगि कै लज्जासों नेत्रको नीचो करति है ऐसी तुम्हारी मूरत मिलावों जो चित्रदेखिलाजहोय प्रमाण ॥ चित्रहिसंहित्रिनहि

देखन यों सकुची जनुबांह गही है । यह तो पद्मिनीहै चित्रनी को चित्त नायक के चित्रसों बहुत आसक्त है याते चित्रनी कह्यो सखी जो यह हमारी है बनाय बनायके तम अन्धकार को साधनकरूंगी कहूं काम के विरोधी मंत्र यहपाठ है मंत्र शिवको लीजिये कहूं मत पाठ है मत ज्ञानिनको लीजिये हे रसिकलाल वाकी रसनाजीभ ताकोरसमें यहभीपाठहै वाको पानरस में कौन खवावैगो यह संशय उपजायो सो परदेश गमन रूपकार्य को विरोधीहै १४ ॥

(मरणाक्षेप) दो० ॥ मरणानिवारणकरतजहँकाज निवारणहोत ॥ जानहुंमरणाक्षेपकाविज्योंजियवुद्धिउदोत १५ ॥

ऊपर सों ल्यायकै वात राखिये सो आक्षेप कार्य रोंक्यो जाय १५ ॥

कवित्त ॥ नीकेकैकिवाँरदेहौंद्वारद्वारदरवारकेशौदासआसपाससुरजनआवैगो । क्षणमेंछपायलेहौंऊपरअटानिआजुआँगनपटायदेहौंजैसेमोहिंभावैगो ॥ न्यारेन्यारेनापदानमूंदिहौंझरोखजालपायहेनपैंड़ोपौनआवननपावैगो । माधवतिहारेपीछेमोपाहिमरणमूढ़आवनकहतसुतोकौनपैंड़ेआवैगो १६ ॥

दरकहिये छोटा वारदरवाजा खिरकी जानिये नापदान पानी जानेकीराह पौन जहां पैंड़ोनपावैगो पायहै न पानीपोन आवननपावैगो यहभी पाठहै जल मांहिं नहींपावैगो पौनआइवे नहींपावैगो इहां मरण को निवारण करत गमनको निवारण भयो १६ ॥

(आशिषाक्षेप) दो० ॥ आशिषपियकेपंथकोदीजै

दुःखदुराय ॥ आशिषकोआक्षेपयहकहतसकलकवि
राय १७ ॥

आपने दुखको उपाय कै आशिष देय कहे शिक्षादेय सो आशिष आक्षेप १७ ॥

(कवित्त ॥ मंत्रीमित्रपुत्रजनकेशवकलत्रगनसोदर
सुजनजनभटसुखसाजसों । एतोसबहोतजानजोपैहहुकु
शलगातअबहींचलौकैगातशकुनसमाजसों ॥ कीन्हो
जोपयानबाधक्षमियेसोअपराध रहियेनपलआधबांधि
येनलाजसों । हौंनकहौंकहतनिगमसबअबतबराजन
परमहितआपनेहींकाजसों १८ ॥

मंत्री औ मित्र औ पुत्र औ जनदास औ कलत्र स्त्री ताके गणसमूह औ सोदरभाई औ सज्जनलोग उन्मत्तलोग किंवा सज्जन आछेभट योद्धा ये सब सुखके जो साज सरंजामदेश दौलत यहसब ताहीसों लगे हैं पुत्रकलत्र सोदर ये फेरि क्यों करिहोहिंगे फेरि क्योंकरि जाहिंगे ये देहसों लगेहैं संपतिसों लगेनहीं तहां ऐसेलगाइये मित्र औ ताके पुत्र औ कलत्रगण के सोदर बहुत सगुनानिसों मैं पाहिले कहोथो पयान प्रस्थानो मतिकरौ यह अपराधको आशिषदेति है आपनेकार्यसों परम हित चाहिये नहींतो राज्यको बंदोबस्तजातोरहै यातें नायका को दुःख छप्योहै प्रियाके कार्यसों हितनहीं यहजानिये १८ ॥

(धर्माक्षेप) दो० ॥ राखतअपनेधर्मकोजहांकार्यर
हिजाय ॥ धर्माक्षेपसदाइहैबरणतसबसुखपाय १९ ॥

काज जातो रहै १९ ॥

कवित्त ॥ जोहौंकहूंरहियेतौप्रभुताप्रगटहोतिचलन
कहूंतोहितहानिनाहिंसहनो । भावैसोकरहुतोउदास

भावप्राणनाथसाथलैंचलहुकैसेलोकलाजवहनो ॥ केशौरायकीसौंतुमसुनहुछवीलेलाल चलेहीवनतजोपैनाहींराजरहनो । तैसीयेसिखावोसीखतुमहींसुजानपियतुमहिंचलतमोहिंजैसोकछूकहनो २०

चलिवेकोकहौ तो हितहानि को सहनोपरै फेरि लोकलाज को कैसे वहनो निवाहनोहोय इहां राजपतिनको कहतहैं इहां आपनो धर्म नायका राखति है नायका को गमन कार्य छूटत है २० ॥

(उपायाक्षेप) दो० ॥ कौनहुंएकउपायकरिरोकैपियप्रस्थान॥ तासोंकहतउपायकवियहआक्षेपसुजान२१ ॥

प्रस्थानरोकिये २१ ॥

स० ॥ मोकोसवैब्रजकीयुवतीहरगौरिसमानसुहागिनिजानैं । ऐसीकोगोपीगोपालतुम्हौंबिनगोकुलमेंबसिबोउरआनैं ॥ मूरतिमेरीअडीठकैईठचलौकिरहौजुकछूमनमानैं । प्रेमनिक्षेमानिआदिदैकेशवकोऊनमोहिंकहूंपहिचानैं २२॥

हरमहादेवको जैसी गौरी सोहागिनीहैं हरके वामभाग सौं लागी रहती हैं नायका नायकसों कहत है तुम्हारे प्रेमविना मूरति मेरी अडीठकै ईठ चलौ कि रहौ हे ईठमित्र हमारी मूरतिको अदीठकै अदृष्ट करिकै कोई और न देखै तुम चलौ किंवा रहौ इन दोऊ वातनमें जो एकमन मानै सो करौ अदृष्टता तौ लुकांजनसों भी होतिहै उपाय कहतिहैं हमारे शरीरमें विपयक प्रेमहै औ क्षेमकल्याण है आदि पदते बुद्धि है औ मनहै सोभी हमें नहीं पहिचानिसकै ऐसी अदृष्टता नहीं बनिआवै याते नायक नहीं चलिसकै २२ ॥

(अथाशिक्षाक्षेप) दो० ॥ सुखहीसुखजहँराखियेसिखहीसिखसुखदानि ॥ शिक्षाक्षेपकआचरणिछप्पैवारहवानि २३ ॥

सीख सिखायके वारह छप्पयमें वारह तरहकी वानी वचनहैं किंवा निर्दोपहोय ताको भी वारहवानी कहत हैं २३॥

(चैत्रवर्णन) छप्पै ॥ फूलींलतिकाललिततरुननतनफूलेतरवर। फूलींसरितासुभगसरसफूलेसवसरवर॥फूलीकामिनिकामरूपकरिकन्तनिपूजहिं । शुकसारीकुलकेलिफूलिकोकिलकलकूजहिं ॥ कहिकेशवऐसीफूलमहिशूलनफूललगाइये । पियआपुचलनकीकाचलैचित्तनचैतचलाइये २४ ॥

चैत्रमें परदेश जानेको चित्तभी नहीं चलाइये ताहि चैत्र में तरुण जवान ताके शरीर फूले सानन्द भये पतिको काम रूपजानि आदर करतहैं फूलनिको हमारे हृदयविषे शूल त्रिशूल समान मतिलगाइये २४ ॥

(वैशाखवर्णन) छप्पै ॥ केशवदासअकासअवनिबासितसुवासकरि । वहतपवनगतिमंदगातमकरन्दविन्दुधरि ॥ दिशाविदिशनिछविलागभागपूरितपरागवर। होतगंधहीअंधवाधिरभौंराविदेशिनर ॥ सुनिसुखदसुखदसिखसीखिपातिरति सिखईसुखसारखमें । वरजोरहिनबधतविशेषकरिंकामविशिपवैशाखमें २५ ॥

वरजोरकरि कामके विशिषवाण विरहिनको वेधतहैं मकरन्द फूलकोरस हेवरादिशा पूर्वादिशाकोन याको जो भागविभाग सो पराग सों पूरित हैं सो मानों छविसों लागिरही है

कगतिरही हैं भौंरा तो अन्धहोत फूलछोड़ि गजके कपोल पै बैठतहैं विदेशी सीख नहींसुनैं सुनैं तौ आपको सँभारिवे को चेतकरैं आपने सुखद घरजानेको उपायकरैं है सुखद नायक सुखद जो यह सीख शिक्षा ताको सुनौ औ सिखौ यह रतिके पतिकामने सुखकी शाखमें शाखा तो वेदकी होति है इहां कोककी जानिये किंवा हेपति यह रतिकामकी स्त्री किंवा प्रीति ताने सिखाईहै सुखदायक साखीमें जैसे भलेको कह्यो दोहा आदि छन्दसों सखी कहावतिहै वरविरह इत्यादिसाखी२५॥

(ज्येठवर्णन) छप्पै॥ एकभूतमयह्होतभूतभाजिपञ्च भूतभ्रम । अनिलअम्बुआकाशअवनिह्वैजातआगि सम ॥ पंथथकितमदमुकितसुखितसरासिंधुरजोवत । काकोदरकरकोशउदरतरकेहारिसोवत ॥ पियप्रलयजी वइहिविधिअबलसकलविकलजलथलरहत । तजिके शवदासउदासमतिज्येठमासज्येठेकहत २६ ॥

भूतजे अनिल आदिक पांच हैं सो एक भूतमय तेजमय होतहैं पांचभूतहैं यह भेद भ्रमसों जातहै छूटिजातहै अवनी पृथ्वी पद मुकितमद छोड़त सूखेसर सिंधुर हाथी देखत हैं काकोदर सर्प सो हाथीके कर शुण्ड सों भयो जो कोषकहे सम्पुट तामें सोवत हैं प्रवल सब जीव औ अबल सब जीव जाविधि जल थलमें विकल रहतहैं ज्येष्ठ ज्येष्ठमासमें बड़ेलोग कहतहैं २६ ॥

(आषाढ़वर्णन) छप्पै ॥ पवनचक्रपरचंडचलतच हुंओरचपलगति । भवनभामिनीतजतभवनमानह्हुति नकोमति ॥ संन्यासीइहिमासहोतइकआसनवासी । पुरुपनकीकोकहैभयेपक्षियोनिवासी ॥ इहसमयसेजसो

वनालियोश्रीहिसाथश्रीनाथहू । कहिकेशवदासअपाढ़ चलमैंनसुन्योश्रुतिगाथहू २७ ॥

यह पवन चक्र नहींचलतहैं औ जो आषाढ़ में वरको औ भामिनी स्त्री को छोड़तिहैं तिनकीमति मानों भ्रमतिहै श्री नाथ श्रीवामनजी श्रुतिवेद ताको गाथा से गान में किंवा गीतमें २७ ॥

(सावनवर्णन) छप्पै ॥ केशवसरितासकलमिलत सागरमनमोहैं । ललितलतालपटातितरुनतनतरवर सोहैं ॥ रुचिचपलामिलिमेघचपलचमकतचहुंओर न । मनभावनकहंभेंटिभूमिकूजतामिसिमोमन ॥ इहि रीतिरमनरमनीनसवरमनरुलगेरमावनै। पियगमनकर नकहंकोकहैगमनसुनियनाहिंसावनै २८ ॥

लतासों तरवरवृक्षके तनशरीर सोहत हैं चपला बीजुरी रुचि चाहसों मेघजोहैं पति तिनसों मिलिके मनभावन नायक मेघ या रीति सों रमननायक सब रमनीनको रमावन क्रीड़ा करावनलगे आपु रमनलगे गमनकरनको कौन कहिसकै यह छप्पैको भेदहै २८ ॥

(भादौंवर्णन) छप्पै ॥ घोरतघनचहुंओरघोषनिर्घो षनिमंडहिं । धाराधरधरिधरणिमुशलधारानिजलखंड हिं ॥ झिल्लीगनझंकारपवनझुकिझुकिझकझोरत । बाघसिंहगुञ्जरतपुंजकुंजरतरुतोरत ॥ निशिदिनविशे षनिहिशेपामिटिजातसुओलीओड़िये।केशवपियपविदेश विषभादौंभौननछोड़िये २९ ॥

घोर इहां उमड़िबो छोटोशब्द घोषदादुर मोरइत्यादिके इहांलीजिये निर्घोष मेघके शब्द धराधर मेघ धरणीसों लगि

के भिल्ली भींगुर कुंजर हाथीके पुंज समूह जहां राति दिन नहींजानिपरै तुम्हारे आगे ओली ओड़िये है आंचर पसारि भोरी मारिये है याते हे नाथ देश तो पीयूष अमृतहै औ बिदेश विषहै २९ ॥

(आश्विनवर्णन) छप्पै ॥ प्रथमपिण्डाहितप्रगटपितरपावनघरआवैं । नवदुर्गनिनरपूजिस्वर्गअपवर्गहिपावैं ॥ छत्रनदैक्षितिपात्तिलेतभुवलैसंगपंडित । केशौदासअकासअमलजलथलजलमंडित॥रमणीयरजनिरजनीशरुचिरमारमनहूंरासरति । कलकोलिकलपतरुक्वाँरमहिकन्तनकरहुविदेशमति ३० ॥

लागतआश्विन आगे नवदुर्गाकीपूजा अपवर्गमोक्ष क्षितिपति राजा प्रयानकरैं माथे पै छत्रदैकै परभूमिको लेतहैं संग में पंडित रजनीश चन्द्रमा रमारमण श्रीकृष्णचन्द्र कलमनोहर जो क्रीड़ा ताको कल्पवृक्ष सम कुवाँरहै ३० ॥

(कार्त्तिकवर्णन) छप्पै ॥ वनउपवनजलथलअकाशदीसन्तदीपगन । सुखहीसुखदिनरातिजुवाखेलतदंपतिजन ॥ देवचरित्रविचित्राचित्रचित्रितआंगनघर । जगतजगतजगदीशज्योतिजगमगतनारिनर ॥ दिनदानन्हानगुनगानहरिजनमसुफलकरिलीजिये । कहिकेशवदासविदेशमतिकन्तनकातिककीजिये ३१ ॥

वन औ उपवन वाग इत्यादिकमें दीपदान सवहीं सुख सुख सों दिनमें औ रातिमें नायकभी सुखसों खेलेहै नायका भी सुखसों खेलेहै कहूं सुखही सुखसुख राति ऐसी भी पाठहै सुखकारी जो रातिहै तामें देवताको जो विचित्र चरित्रलीला ताको जो चित्र तसवीर तासों चित्रित आश्चर्य्य कियोहै दर्श

नीय कियोहै आंगन जहां मेघकीघटा लिपीहैं ठाकुर गोवर्द्धन को धरेहैं इत्यादि जगती पृथ्वी तामें देवउत्थानी एकादशी को दिन ज्योति रूप ज्योतिरूप जगदीश श्री वावनजी तहां जागतहैं उत्तिष्ठोतिष्ठगोविन्द इत्यादि मन्त्रकरि लोग जगावत हैं तादिन लोग उत्साह करत हैं आछे भूषण जरीके कपड़ा पहिरिकै जगमगात हैं दिनमें दानकीजिये तौ भगवान् बहुत प्रसन्नहोतहैं यह श्री राधिकाजीको महीना है श्री राधिकाजी के स्तोत्रमें कार्त्तिक देवता नाम है श्रीतुलसीजीके सेवनको विशेष माहात्म्य है ३१ ॥

(मृगसिरवर्णन) छप्पै ॥ मासनिमेंहरिअंशकहतयासोंसवकोऊ । स्वारथपरमारथनिदेतभारथमाहिदोऊ ॥ केशवसरितासरनिकूलफूलेसुगन्धगुर । कूजतकलकल हंसकलितकलहंसिनिकेसुर ॥ दिनपरमनरमशीतनगरमकरमकरमयहपायऋतु । करिप्राणनाथपरदेशकहं मारगासिरमारगनाचितु ३२ ॥

महीननमें या महीनाको सवकोई हरिको अंश कहत हैं यह भारथमहिहै दूरान्वयहै श्रीभगवान्को वचन है भारथमें गीता है तहां कह्यो है महीननमें अगहन मेंहों स्वारथ औ परमारथ दोऊबातको देतहै गुरुबड़ो जामें सुगन्धकल अव्यक्त मधुर जो कलहंस जातिविशेष ताको जो कूजित शब्द तासों कलितयुक्त कलअव्यक्त मधुर राजहंसनिके स्वर जहां कल हंसन कलहंसिनि दोऊपाठहैं कलअव्यक्त मधुर जो मोर प-क्षिनके कूजितशब्द तासों कलितयुक्त कलहंस औ कलहंसि-निके स्वरहैं तहां क्रम क्रमसों पहिले कुवाँर पीछे कातिक फेरि अगहन किंवा कर्म्म जोहै पूर्वजन्मको सुकृत ताके करमतों दयाकैं या ऋतुको पायके मगसरमें मार्गपथ तामें चित्तमति करौ ३२ ॥

(पूसवर्णन) छप्पै ॥ शीतलजलथलवसनअसनशी
तलअनरोचक । केशवदासअकासअवनिशीतलअ
शुमोचक ॥ तेलतूलतामोरतपनतापननवनारी । राज
रंकसबछोड़िकरतइनहींअधिकारी ॥ लघुद्योसदीहरज
नीरमनहोतदुसहदुसरूसमें । यहमनक्रमबचनाविचारि
प्रियपन्थनचूकियपूसमें ३३ ॥

शीतल जल औ शीतल स्थल औ शीतल असन भोजन अरोचकहैं नहींरुचैं आकाश विषे औ अवनी भूमिमें जो शीतल तुषारहै सो वियोगिनिके अशुप्राण ताको छोड़ावति है किंवा आंखिसों आँशू छोड़ावैहै आकाश जोहै सो अवनी में शीतल असु ओस ताको छोड़तिहै ऐसे भी कोई कहतहैं तपन को अर्थ आगि छानीको बारिकर करतहैं पूरवमें घरहट कहतहैं ताको तापनो औ नवीन नारी इनको अधिकारी करत हैं रूसमें नायक सों रूठिवेमें ३३ ॥

(माघवर्णन) छप्पै ॥ वनउपवनकेकीकपोतकोकिल
कलबोलत । केशवभूलेभवँरभरेबहुभायानिडोलत ॥ मृ
गमदमलयकपूरधूरधूसरितदशौदिशि । तालमृदंगउ
पंगसुनतसंगीतगीतनिशि ॥ खेलतवसन्तसन्ततसुघ
रसंतअसन्तअनन्तगति । घरनाहनछाँड़ियमाहमेंजो
मनमाहिंसनेहमति ३४ ॥

बहुत जो भाव मनको विकार मत्तता तासोंभरे फूलनिको भूलि जातहैं करीके कपोलपर जातहैं यातरहसोंडोलतहैं फिरत हैं नवेनपंचमी सों होरी को ख्यालहोत है उपंगबाजा हैं सो सुघ प्रवीण सोसन्तहोय किंवा असन्तहोय सो अनंतगतिसों अनेकतरहसों बसंतमें खेलतहैं ३४ ॥

(फागुनवर्णन) छप्पै ॥ लोकलाजतजिराजरंकनिः शंकविराजत । जोइभावतसोइकहतकरतपुनिहाँसनलाजत ॥ घरघरयुवतीयुवनिजोरगहिगाँठिनिजोरहिं । ब सनछीनिमुकमाँड़िआँजिलोचनतिनतोरहिं ॥ पटवास सुवासअकासउड़िभुवमण्डलसबमण्डिये । कहिकेशव दासविलासनिधिफागुनफागुनछण्डिये ३५ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांविशिष्टालंकारवर्णनंनाम दशमप्रभावः १० ॥

युवती युवाको जोरसों पकरिकै गांठिबांधिदेती हैं यह तु-म्हारी स्त्रीभई तिनकहिये तृण ताको तोरैंहैं इनकेरूपपै काहू की नजरि मतिलगिजाय पटवास सुगन्ध अबीर ताकी बास है बिलासनिधि किंवा विलासनिधि फागुन फागुको खेलिबो या प्रभावमें एक आक्षेपालंकार है ३५ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकवि प्रियाटीकायांदशमप्रभावव्याख्या १० ॥

(अथक्रमालंकारगणनालंकारलक्षणम्) दो० ॥ आदिअंतभरिवरणियेसोक्रमकेशवदास ॥ गणनाः सोंकहतहैंजिनकीबुद्धिप्रकास १ ॥

आदिसोंलैकै अन्ततांई जहां क्रमसोंकहिये जहां गणना है सो गणना १ ॥

(छप्पै) धिकमंगनाविनगुणहिंगुण सुधिकसुनतनरी भिय । रीभसुधिकाविनमौजमौजाधिकदेतजुबीनिय ॥ दीबोधिकविनुसाँचसाँचधिकधर्मनभावै । धर्मसुधिकवि

नुदयादयाधिकअरिकहँआवै ॥ अरिधिकाचित्तनशाल ईचिताधिकजहँनउदारमति । मतिधिककेशवज्ञानविन ज्ञानसुधिकविनुहरिभगति २॥

सो गुणको धिक्कारहै जो सुनिकै और रीझैनहीं मोजवक-सील शत्रुपरदयाआवै मंगनको अन्वय गुणसों गुणआगेदया आइवेसों अन्वितभयो २ ॥

सवैया ॥ शोभतिसोनसभाजहँवृद्धनवृद्धनतेजुपढ़ेक छुनाहीं । तेनपढ़ेजिनसाधुनिसाधितदीहदयानाहिँपौंजि नमाहीं ॥ सोनदयाजुनधर्मधरैधरधर्मनसोजहँदानवृ थाहीं । दाननसोजहँसांचनकेशवसांचनसोजुवसैछल छाहीं ३ ॥

सो सभा नहींसोहतिहै जहां वृद्धनहीं सो वृद्धभी नहींसोहै जो कछु पढ़्यो न होय ते वृद्धपढ़े तौभी नहींपढ़े जिनने सा-धनिकी उत्तम पुरुषनिकी साधित उत्तमपुरुषनि जाको करीहै ऐसी जो दीह बड़ी दयाजाके हृदयमें नहींहै धर शरीर विषे किंवा पृथ्वी विषे सो दयाभी नहीं जो धर्म वेदोक्त विधि को नहीं धरे सो धर्म भी नहीं जहां वृथादान वेश्यादिक को सो सांचभीनहीं जामें छलकी छाया झलकवसै कहूंबसै छलमही यह भी पाठहै इहां भी वैसे जानिये ३ ॥

छप्पै ॥ तजहुजगतविनभौनभवनतजातियविनु कानो । त्रियतजुजुनसुखदेइसुखसुतजिसम्पातिहीनो ॥ सम्पतितजिविनुदानदानतजिजहँनाविप्रमति । विप्र तजहुविनधर्मधर्मतजिजहांनभूपति ॥ तजिभूपभूमि विनभूमितजिदीहदुर्गविनुजोवसै । तजिदुर्गसुकेशव दासकविजहांनजलपूरणलसै ४ ॥

स्त्रीविना जो घरकियो सोतजो विप्रकोदेनेविषे मतिनहीं जहां राजा न होय तहां धर्मनहींनिचहै दीहदुर्गबड़ोकोट ४ ॥

(अथगणनाएकवर्णन) दो० ॥ एकआतमाचक्ररविग कशुक्रकीदृष्टि। एकैदशनगणेशकोजानातिसगरीसृष्टि ५

आत्मब्रह्म रविके रथको चक्रभी एकहै गणेशको भी एक दांत है ५ ॥

(दोयवर्णन)दो० ॥ नदीकूलद्वैरामसुत पक्षखड्गकी धार । द्वैलोचनद्विजजन्मपद भुजअश्विनीकुमार ६ ॥

नदीकोतट रामसुत कुशलव पक्ष कृष्णपक्ष औ शुक्लपक्ष किंवा पक्षी के पक्ष औ दोयधारकी तरवार भी होतहै द्विज के जन्म एकतो ब्राह्मणके घरजन्मते एक संस्कारते अश्विनी कुमार दोयहैं ६ ॥

दो० ॥ लेखनिडंकभुजंगकी रसनाअयननिजानि । गजरदमुखचुकरैंडके कक्षाशिखावखानि ७ ॥

कलम की फ़ार अयन उत्तरायन दक्षिणायनचुकरैंडदोय मुखको सर्प कक्षा काकशिखा अलक ७ ॥

(तीनवर्णन) दो० ॥ गंगामगगंगेशदृग ग्रीवरेख गुणलेखि। पावककालत्रिशूलवलिसंध्यातीनिविशेखि ८

श्रीगंगाजी को मगपथ स्वर्ग मर्त्य पाताल में मंदाकिनी स्वर्ग में भागीरथी भूमि में भोगवती पाताल में गंगेश शिव तिनकेदृग ग्रीव गर्दन ताकी रेखा गुण सत्व रज तम पावक अग्नितीनिहैं दाक्षिणाग्नि गर्हपत्यहवनीय कालभूत भविष्यत् वर्त्तमान वलितीनिहैं वालिको कादिके ब्राह्मण भोजनकरतहैं किंवा उदरमेंत्रिवली संध्यातीनि प्रात मध्याह्न सायंकालहैं ८ ॥

दो० ॥ पुष्करविक्रमरामविधि त्रिपुरत्रिवर्णविंद । तीनितापपरितापपद ज्वरकेतीनिसुखेद ९ ॥

पुष्कर तीरथ सो तीनि हैं एक तो बूढ़ापुष्कर कहावत है दूसरो शुद्धावाय तीसरो ज्येष्ठकुण्ड विक्रमबल तनको मनको औ धनको रामदाशरथी दूसोबलभद्र तीसरेपरशुराम विधि क्रिया तीनि शुभ अशुभ औ मिश्रित किंवा वेद विधि लोकविधि कुलविधि औ दैत्यके तीनिपुर थे तिनको शिव ने मास्यो औ त्रिवेणी गंगा यमुना सरस्वती वेद ऋग्वेद साम यजुर्वेद अथर्वण को कहूंगनतहैं कहूं नहींगनतहैं वामें मारणादिकहैं तीनताप हैं आधिभौतिकआधि दैविकआध्यात्मिक औ तीनि परिताप हैं मनपरिताप बलपरिताप औ वीर्यपरिताप स्थानगनाम जैननि को ग्रन्थहै तामें है औ ज्वरके तीनि पावँ हैं सखेद दुखसहित ६ ॥

(चारिवर्णन) दो० ॥ वेदवदनविधिवारिनिधि हरि वाहनभुजचारि । सेनाअंगउपाययुग आश्रमबरणवि चारि १० ॥

वेदको चारिभी मानतहैं समुद्रको चारिभी कहत हैं सात भी कहतहैं हरिके वाहन अश्व सो चारिहैं मेघ पुष्प बलाहक ऐसोन्य औ सुग्रीव औ हरिके भुजभी चार हैं औ सेना के अंग अश्व रथ प्यादा हाथी उपाय चारि साम दानभेद निग्रह युग सत्ययुग आदि चारि आश्रम चारि गृही ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यास वर्ण ब्राह्मण आदि १० ॥

दो० ॥ सुरनायकवारनरदनकेशवादिशावखानि ॥ चतुरव्यूहरचनाचमूचरणपदारथजानि ११ ॥

सुरनायक इन्द्र ताको वारनहाथी ताके रदन दांत चारि दिशाको चारि व आठ व दशभी गनतहैं युद्धमें चारिव्यूहकी रचना हैं शकटाकार क्रौंचाकार धनुषाकार चक्राकार चरण श्लोकके चारिहैं पदार्थ अर्थ धर्म काम मोक्ष ११ ॥

(पांचवर्णन) दो० ॥ पंडुपूतइंद्रियकवलरुद्रवदनगतिवाण ॥ लक्षणपंचपुराणकेपंचअंगअरुप्राण १२ ॥

युधिष्ठिर आदि इन्द्रिय त्वचा श्रोत्र नेत्र जिह्वा घ्राण कवलग्रास सो पांच पंचग्रासी भोजन समयमें करत हैं शिवके मुखपांच गतिमोक्ष सालोक्य सार्थ सामीप्य सारूप्य एकत्व वाण कामके पांचपुराण के पंचलक्षण सर्ग प्रतिसर्ग वंसनन्तर भूम्यादि संस्थानं औ पंचांग तिथि वार नक्षत्र योग करण प्राणपांच प्राण अपान समान उदान व्यान १२ ॥

दो० ॥ पंचवर्गतरुपंचअरुपंचशब्दपरमान ॥ पंचसंधिपंचाग्निभनिकन्यापंचसमान १३ ॥

पञ्चवर्ग कुचुटुतुपुवर्गाः तरुवृक्ष मन्दार पारिजात संतान कल्पवृक्ष हरिचन्दन पञ्चशब्द परिमाण याकोअर्थ केनने कहत हैं पांचशब्दके प्रमाण हैं सूत्र वार्त्तिक भाष्यकोष महाकविके प्रयोग जो इनसों नहीं सधै औ कोषनें होय औ महाकविके प्रयोगमें होय तौ प्रमाणहै सन्धिपांचहैं अचसन्धि हल सन्धि विसर्गसन्धि स्वाधिसन्धि औ प्रकृतिभाव प्रकृतिभाव भी सन्धिहै प्रकृतिभाव कियो जहां आवै श्लोकमें तहां असन्धिदोष अलंकारको नहींलागै अग्नि तीनिकही पांचभी कहतहैं भारतमें वनपर्व है तहां तीर्थयात्राके प्रसंगमें अष्टावक्र सों वन्दीको वचन पंचाग्नयःपंचपदाचपंक्तिः याकी टीकामें दक्षिणाग्निगार्हपत्यआवहनीयसभ्य औ लौकिक औ पंचकन्या अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी १३ ॥

दो० ॥ पंचभूतपातकप्रगटपंचयज्ञजपजानि ॥ पंचगव्यमातापितापंचामृतनिवखानि १४ ॥

पंचभूत पृथ्वी अप तेज वायु आकाश पातकी ब्रह्म असुरापी सुवर्ण को चोर गुरुकी सेजजाय औ इनको संगकर सो

पातकी पातक ब्राह्मणको मारनो आदि और इनको संग भी पाप है औ पंचयज्ञ वंदीवचनटीका में देवयज्ञ भूतयज्ञ भूत पितृयज्ञ मनुष्ययज्ञ ब्रह्मयज्ञ पंचगव्य दूध दही घृत गोबर गोमूत्र माता पंच गुरुपत्नी नृपपत्नी मित्रपत्नी पितापत्नी श्वशुरपत्नी पितापंच जनक उपनेता विद्यादाता अन्नदाता भय त्राता औ इनकी स्त्री सोभी माता जानिये पंचामृत दधि दूध घृत मिश्री मधु १४ ॥

(षटवर्णन) दो० ॥ कुलिशकोणषटतर्कषटदरशनरस ऋतुअंग॥ चक्रवर्त्तिशिवपुत्रमुखसुनिषटरागप्रसंग १५

कुलिश वज्र ताके कोण तर्कशास्त्र षटवेदान्त सांख्य पातंजलि न्याय मीमांसा वैशेषिक दर्शन नाम शास्त्र को है इहां वैष्णव ब्राह्मण योगी संन्यासी जंगम सेवरा यह लोकप्रसिद्ध हैं किंवा दर्शन शास्त्र तहां पढ़नवाले सों लक्षणाकरि अभेद विवक्षाकरी छः शास्त्रके पढ़नवाले वेदान्तीआदि जानिये रस षट मीठा अम्ल कटु कषाय लवण तिक्त ऋतुषट वसंत ग्रीष्म वर्षा शरद हेमन्त शिशिर औ अंगवेद के शिक्षा कल्प व्याकरणछन्द ज्योतिष निरुक्ति औ चक्रवर्त्ती राजायुधिष्ठिर विक्रम शालिवाहन विजयाभिनन्दन नागार्जुन निःकलंकावतारभये चक्रवर्त्ती केतने कहतहैं वेणु वलि धुंधुमार अजपाल प्रवर्त्तक मानधाता शिवपुत्र कार्त्तिकेय तिनके मुखषट हैं औ रागषट हैं॥चौपाई॥भैरव कौशिक औ हिंडोल। दीपक श्रीरागहिंपुनि बोल॥मेघरागपुनि छठयेंमानि। इतेपुरुषतूनिश्चयजानि॥ यह भाषासंगीतदर्पण में है १५ ॥

दो० ॥ षटमाताषटवदनकीषटगुणवरणहुंमित्त ॥ आततताइनरषटगनहुंषटपदमधुपकवित्त १६ ॥

षटवदन कार्त्तिकेय तिनकी माता षट कृत्तिका नक्षत्र हैं तिनके छः तारा हैं औगुणषट हैं संधि १ विग्रह २ पान ३

आसन४द्वैधीभाव ५ संश्रय ६ औ सौर्य धैर्यादि भी कहत हैं आततांई पट आगिलगावै औ काहूकोविषदेइ औ शस्त्रलिये मारिवेकोआवै औ काहूको धनहरिलेइ औ क्षेत्रकोहरै औ स्त्री को हरै औ मधुप भवँराके पटपावँ कवित्त छप्पयजानिये १६॥

(सातवर्णन) दो० ॥ सातरसातललोकमुनिद्वीपसू रहयवार॥सागरसुरगिरितालतरुअन्नईतिकरताल १७॥

तल अतल वितल सुतल तलातल रसातल पाताल औ लोकसातहैं भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक तपलोक जन लोक सत्यलोक सातमुनि भारतके टीकामें कहेहैं मरीचि अत्रि अंगिरा पुलस्त्य पुलह क्रतु वशिष्ठ द्वीप सात जम्बूद्वीप जहां जामुनिकोवृक्षहै प्लक्षद्वीप जामें पाकरिकोवृक्षहै शाल्मलिद्वीप में सेंवरको वृक्ष है कुशद्वीप में कुशहैं क्रौंचद्वीप में क्रौंचपर्वत है शाकद्वीप में शाककोवृक्ष है पुष्करद्वीप में कमल है सूरहय सूर्यके घोड़ासात हैं वारदिन सातहैं सागर समुद्रसातहैं जम्बू द्वीप के क्रम क्षीरससुद्र इक्षु रसोदक सुरोदक घृतोद क्षीरोद दधिमंडोद स्वादूधक स्वरसातहैं निषाद ऋषभ गांधार षड्ज मध्यम धैवत पंचम सातगिरि पर्वत देवता रूपमुख्य हैं मेरु हिमालय उदयाचल विंध्य लोकालोक गन्धमादन कैलास औ साततालसरोवर हैं चारिपर्वत सुमेरु के ओढ़ंघनहैं तामें चारि सरोवर हैं औ मानसरोवर औ विंध्यसरोवर जामें कर्दममुनि तपस्याकरीहै भगवान्की आंखिको आंशुको बिंदुपर्योहै औ भागवत में कथा है औ पंपासर इतने मुख्यहैं सातनरमुख्य हैं कल्पवृक्षआदि पंच एकअक्षयवट औ कैलासमें एकवट को वृक्ष है चारिसौकोश को जाके नीचे चिंतामणि शिर है औ सातअन्न मुख्यकहतहैं प्राचीनदोहा ॥ अरहरि गेहूं शालिपय चना मूंग औ माष । एहीअन्नकदन्नसों चितनचहैअभिलाष ॥ कहूं यमुनाइति करताल ऐसोभीपाठहै सातधारा कहुं यमुना

की भई हैं कोई पुराण में यहभी कथाहोयगी ईति सात हैं अतिवृष्टि अनावृष्टि मूषक शलभ शुक स्वचक्र परचक्र कर्त्तार कर्कीताल संगीत में नाचिवेकी ताल तौ वहुतहैं हम मोहन लीला ग्रंथवनायो है तामें रासके प्रसंगमें वहुतताल लिखीहैं गाइवेकी साततालमुख्यहैं एकताली रूपकजाति इत्यादि कोई कहत हैं सातकर्त्ता हैं प्रकृति औ सत्व रजस्तम ब्रह्मा विष्णु महादेव १७ ॥

दो० ॥ सातछंदसातोपुरीसातत्वचासुखसात॥ चिरंजीविमुनिसातनरससमातृकातात १८ ॥

भारतकी टीका में सातछन्द मुख्य लिखे हैं औ छन्द तौ वहुतहैं ऐसे सवठौर मुख्य जानिये गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् वृहती पंक्ति त्रिष्टुप् जगती सातपुरी अयोध्या मथुरा द्वारका काशी माया अवंती औ कांची सातअंग में त्वचाहैं औ सुख सात हैं रसिकप्रियामें कहे हैं ॥ खान पान परिधानपुनि ज्ञान गान द्युतिअंग । सुभग सँयोग वियोगविलु सातो सुख तिय संग ॥ चिरंजीवि सात हैं अश्वत्थामा वलि व्यास हनुमान विभीषण कृपाचार्य औ श्रीपरशुराम मुनिसातहैं ऋषिपंचमी कोपूजतहैं कश्यप अत्रि भरद्वाज विश्वामित्र गौतम जमदग्नि औ वशिष्ठ सातजातिके नरमनुष्यहैं ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र वर्ण संकर अंत्यज यवन माता सातहैं ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही इन्द्राणी चामुण्डा पटपिता कहिआये तात यह सम्बोधन १८ ॥

(आठवर्णन) दो० ॥ योगअंगादिक्पालवसुसिद्धिकुलाचलचारु॥ अष्टकुलीअहिव्याकरणादिग्गजतरुणिविचारु १९ ॥

योगकेअंगआठहैं यम नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यानधारण समाधि दिशाकेपालनवाले आठ जैसेपूर्वदिशाके

इन्द्र यहाँक्रमते इन्द्र अग्नि यम नैऋत वरुण मरुत कुबेर महादेव इनको भी जानिये आठवसु हैं भारतकीटीकामें जनध्रुव सोम धरा अनिल अग्नि प्रत्यूष प्रभास आठसिद्धि हैं आणिमा महिमा गरिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य ईशत्व वशित्व औ आठपर्वत हिमवान १ निषंद २ विंध्य ३ माल्यवान ४ पारियात्रिकाः ५ गन्धमादन ६ लोकालोक ७ चक्रवाल ८ औ आठ कुल सर्प हैं वासुकिसर्पराजहैं याते इनको गणनामेंनहींलियो तक्षक १ महापद्म २ शंख ३ कुलिक ४ कंबल ५ अश्वतर ६ धृतराष्ट्र ७ वलाहक ८ औ आठव्याकरण इन्द्रचन्द्र इत्यादि प्रसिद्धहैं दिग्गज आठहैं जैसे पूर्वमें ऐरावत यहीक्रमसों पुंडरीक वामन कुमुद अंजन पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीक येभी जानिये तरुणी नायका आठविरहिनी खंडिता कलहंतरिता इत्यादि प्रसिद्ध १६ ॥

(नववर्णन) दो० ॥ अंगद्वारभूखण्डरसवाधिनिकुचानिधिजानि ॥ सुधाकुण्डग्रहनाडिकानवधाभक्तिवखानि २० ॥

शरीरमें नवछिद्र हैं भूमि के नवखण्ड हैं इलावर्त रम्यक कुरु हरिवर्ष किंपुरुष भरतखण्ड केतुमाल भद्राश्वखण्ड रस शृंगारादिनव औ नाहरी के कुच नव औ नवनिधि महापद्म पद्म शंख मकर कच्छप मुकुन्द कुन्द नील खर्व अमृत के नव कुण्ड हैं कोई याको यहअर्थकरतहैं कि पितरनि की यज्ञ में नवप्रकारके कुण्डके भेद हैं सुधा पितरनि को दीजिये ताते नाम ग्रहनव सूर्यआदि नवनाड़ी शरीरमेंमुख्यहैं इड़ा पिंगला सुषुम्ना गंधारी गजजिह्वा पूषा पलाद यानि शंखिनी भक्तिभगवान् की नवप्रकारकी हैं श्रवण कीर्तन स्मरण चरण सेवन अर्चन वंदन दास्य सख्य आत्मनिवेदन २० ॥

(दशवर्णन) दो० ॥ रावणशिरश्रीरामके दशअवतार

रवखानि॥ विश्वेदेवादोपदशादिशादशादशजानि२१॥

रावण के शिरदश भगवान् के दश अवतार मत्स्य शूकर कच्छप नृसिंह वामन परशुराम रामचन्द्र वलदेव औ बौद्ध औ निष्कलंक विश्वेदेवादि पितर दश हैं औ दशदोष मनुष्य के कहेहैं ॥ चोर जुवारी अज्ञअरु कायर मूक कुरूप । अन्ध पंगु अरु बधिर पुनि क्लीवदोष दशरूप ॥ दिशादशहैं औ दशादश हैं अभिलाष चिंता गुणकथन इत्यादि २१ ॥

(विरोधाभासअलंकार) कवित्त ॥ एकथलथितपै वसतप्रतिजनजीवद्धिकरपैदेशदेशकरकोधरनुहै । त्रिगुणकलितबहुवलितललितगुणगुणनिके गुणतरुफलित करनुहै ॥ चारहीपदारथकोलेताचितनितितिदीवेको पदारथसमूहकोपरनुहै । केशौदासइन्द्रजीतभूतलअभूतपंचभूतकोप्रभूतिभवभूतिकोशरनुहै २२ ॥

इन्द्रजीत जोहै सो भूतलमें भूमिमें अभूतव जे पंचभूत अद्भुत जे पृथ्वी अपतेजवायु आकाश ताकी प्रभूति हैं तासों उपजेहैं यहअर्थ भवसंसारमें जो भूत उपज्योहै ताकी शरण हैं रक्षकहैं अद्भुतता कहत हैं हितूको प्यारसों शत्रुको भयसों जीवमें वसतुहैं दोयहाथहैं देशदेशके लोगनि के हाथपकरे है आपने आधीनकरत है औ देशदेश के दण्डको धरनवाले हैं लेनवाले हैं गुणिनके गुणरूप जे वृक्ष तिनको सफल करत हैं गुणलुनिके दानदेतहैं पदार्थ समूहकोदेनवालो ऐसोपर दूसरा नहींहै एकदोयतीनि कहे थल भूमि एकहै पदार्थ समूह वस्तु समूह पदार्थचारि कहिआये २२ ॥

कवित्त ॥ दरशैनसुरसेनरेशशिरनावैंनितपटदरश नहींकोशिरनापियतुहै । केशौदासपुरीपुरपुंजनिकोपालन करपसातहीपुरीसोंपूराप्रेमपाइयतुहै ॥ नायकाअनेकनि

कोनायकनगरनवअष्टनायकानहीसोंमनलाइयतुहैं । नवधाईहरिको भजनइन्द्रजीतजूकोदशअवतारहीकोगुन गाइयतुहै २३ ॥

सुरदेवता सरीपो जिनको तेज औ रूप है औ नरेश जब शिरनावैहैं तब दरकहिये थोरोसैन इशाराहाथको किंवा नेत्र को करि मुजरोलेतहैं जब नरेश शिरनावेंहें तब थोरोसैन करैं हैं एकहूको आपने माथे हाथनहींराखतहैं किंवा सुरसेननरेश शिरनावैहै ताको अच्छीतरहदरशेनहीं अतिदूरते मुजरालेत हैं वैष्णवब्राह्मणआदि पीछे पटदरशनकहे सातपुरी अयोध्या आदि पीछे कह्यो है पातुरिखाना बहुतहैं अनेक नायकान के नायक हैं नगरकोअर्थ नागर गुरुको लघुपढ़ेगो औ नागरप्रवीण हैं औ नव वयक्रम हैं कदाचित् नायकाचाहैं कि इनके मनको वशकरैं तो नहींवशकरिसकती हैं शास्त्रकी अष्टनायकानसों चित्तलगावतहैं शास्त्ररतहैं यहअर्थ क्रमको भेदगणना कही २३ ॥

(अथआशीर्वादवर्णनं) दो० ॥ मातपितागुरुदेवनु निकहतजुकछुसुखपाय ॥ ताहीसोंसबकहतहैंआशिप कविकविराय २४ ॥

और भी बड़ेलोग जानिये २४ ॥

कवित्त ॥ मलयामिलितवासकुंकुमकलितयुतजावककुसुमनखपूजितललितकर । जटितजरायकीजंजीगीवीचनीलमणिलागिरहेलोकनिकेनेनमानोमनहर ॥ पन्नगपतंगअरु किन्नरअसुरसुरमशकगयंदसमचाहतअचरचर । हयपरगयपरपालिकासपीठपरआरिउरपरअवनीशनिकेशीशपर २५ ॥

श्रीरामचन्द्रजी के चरण को बरणन मलय चन्दन नामें

मिली है बालज्ञाकी ऐसो जो कुंकुम केसरि औ रोरी तासों कलितयुक्त औ जावकयुक्त हैं किंवा बालकपनेमें पुरुष के भी जावकदेतहैं औ कुसुमसों पूजितनखहैं जाहि चरणविषै नख कैसे हैं ललित हैं करकिंकरन जामें जंजीर चरण भूषण पग सांकरि अरु जोड़ा भी कहतहैं जराऊकीजंजीर मनोहर नील मणि जटित हैं ताकी उत्प्रेक्षा मानों लोगन के मन लागिरहे हैं पन्नग सर्प पतंग पक्षी अरु किन्नर असुर प्रह्लादआदि सुर ये सब औ छोटेजीव मशक औ बड़ोजीव गयन्द हाथीपर्यन्त जे इनके बीचमेंहैं सो सबसमको अर्थ सब औ बराबरि सम कहिये सब जो अचर स्थावर औ चर जंगम जाहि चरणयुग को चाहत हैं कहूं तीसरी तुक है ॥ चिरचिर सोहौरामचन्द्र के चरणयुग दीबोकरौआशिषअशेषमिलिनारिनर ॥ गय हाथी की पीठ सिंहासन किंवा चौकी इनआदिपर सोहौ यह आशिष २५ ॥

सवैया ॥ होयधौंकोऊचराचरमध्यमेंउत्तमजातिअनुत्तमहीको । किन्नरकैनरनारिविचारकिवासकरैथलकैजलहीको ॥ अंगीअनंगकिमूढ़अमूढ़उदासअमीतकिमीतसहीको । सोअथवैकबहूंजानिकेशवजाकेउदोतउदोसबहीको २६ ॥

यहकवित्व बहुत पोथिन में नहींहै चराचरके बीच उत्तम जातिको होउ किंवा अनुत्तमजाति को होउ अंगीहोउ किंवा मूढ़होउ किंवा अमूढ़होउ सही सांच कोऊअमित्र होउ सो कबहूं जनिअथवो यह आशिष २६ ॥

(प्रेमालंकार) दो० ॥ कपटानिपटामिटिजायजहँउपजैपूरणक्षेम ॥ ताहीसोंसबकहतहैंकेशवउत्तमप्रेम२७॥

क्षेम अनुराग लक्षणासों लीजिये २७ ॥

सवैया ॥ कछुवातसुनैंसपनेहूवियोगकीहोनचहैतु इटूकाहियो । मिलिखेलियजासहुबालककैंकहिनासोंअ्र बोलोक्योंजातकियो ॥ कहियेकहकेशवनैननिसोंविन काजहिपावकपुंजपियो । सखितूबरजैअ्रुरलोगहँसैसब काहेकोप्रेमकोनेमलियो २८ ॥

पावक पुंजदियो देखेविना वरतहे तू प्रेमको नेम काहेको लियो यावात कहिकै लोग हँसतहैं सखीसों विनकपट हृदय की प्रीति कहतिहै सखी तौ मानकरायो चाहतिहै २८ ॥

(अ्रथश्लेषालंकार) दो० ॥ दोयतीनिअ्रुभांतिव हुआनतजामेंअ्रर्थ ॥ श्लेषनामतासोंकहतजिनकीबुद्धि समर्थ २९ ॥

दोयतीनि भांति के अर्थ किंवा वहुतभांति के अर्थ २९ ॥

कवित्त ॥ धरतधरणिईशशीशचरणोदकनिगावत चतुरमुखसवसुखदानिये । कोमलअ्रमलपदकमलाक रकमलकलितवालिलगुणक्योंनउरआनिये ॥ हिरण्यक्ष शिपुदानकारीप्रहलादहित द्विजपदउरधारीवन्दनिवरवा निये । केशवदासदारिदद्विरदकोविदारिबेकोएकैनरसिंह किअ्रमरसिंहजानिये ३० ॥

दारिदद्विरदहाथी तिनको विदारिवेको एक श्रीनरसिंहजी हैं किंवा राना अमरसिंहजी को जानिये नरसिंहजी कैसे हैं कच्छपरूपहोयकै धरणी पृथ्वीको राखतहैं औ ईश जो महा- देव तिनके शीश पै आपने चरणको उदक जल गंगा ताको राखत हैं किंवा धरती को ईश शिव सो जाके चरणोदक को शीशपैधरत भगवान सबको सुखकेदानी दाना हैं या यानको चतुर्मुख ब्रह्मा गावतहैं वेदमें यहअर्थहै फेरि कोमल जो अ-

मल निर्मलजाको पदचरण सो कमला लक्ष्मीजी तिनके कर कनल हाथसों कलितयुक्त हैं लक्ष्मीजी चरण सेवाकरति हैं द्रव्य में जो रहै सो गुण ऐसो लक्षण व्याकरण को लीजिये सौंदर्य उदारता मनोहरत्त्व इत्यादिसों क्यों न उरविषे आनिये किंवा कोमलमृदु लेतो ये हेम में कोमलनाम नरम को कोमल तहांअमल निर्मलपदस्थानहै जाको जलशायीभगवान् हैं सो स्थान कैसोहै कमलालक्ष्मी ताके करकहिये किरण सों अंगकी ज्योतिसों औ कमलासों कलितयुक्तहैं जहांजल तहां कमलवर्णिये पीछे कहिआये गुणन्यायको तीनिलिये रूपगंध सुख यासों वलितयुक्तस्थानहै फेरि कैसे नरसिंहजीहैं हिरण्य कशिपु असुर ताको दानकारी खंडकारी दानको अर्थ हेम में खण्डनभी है औ प्रह्लाद के हितहैं द्विजभृगु ताके पदकहिये पाँव को चिह्न ताको उरविषेधरेहैं वेदानिमें जाको वखानियेहै रानाअमरसिंह कैसो है धरणीके ईश राजा जाके चरणोदक को शीशपर धरतहैं ईश्वरकरि मानतहैं यहअर्थ किंवा धरणी के ईश शिव तिनके चरणोदक को शीशपर धरतहैं औ चतुर गुणी सो मुखसों सबसुखके दानीगावतहैं फेरि कोमलअमल जाको पावत हैं कमलानाम हेम में लक्ष्मीको औ वर स्त्री को कमला वरांगना वासों कलितहैं कलित वलित अनेक अर्थको कहतहैं सेवित हैं जानिये सौंदर्य औदार्य्यादि गुण सों युक्त जो अमरसिंह ताहि क्यों न उरमें आनिये फेरि हिरण्य सो नाताकीकशिपु सेजताकेदाकहे दानकारी हैं शय्यादानदेतहैं बड़ो जोआह्लाद आनन्दता सहितहैं फिकिर नहींआनत सदा आनन्दकरतहैं द्विजपद उरधारी ब्राह्मणके पावनको उरविषे मनविषे राखतहैं किंवा हेममें द्विजनाम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य को है औ पक्षी को है द्विज क्षत्रिय औ वैश्य जाके पद वाक्य आज्ञाको वचन ताको उर में हृदयमें धारणवाले हैं हुक्मभूलतनहीं किंवा द्विजगरुड़ ताहैं पदबैठिवेको स्थानजाको ऐसे

जो भगवान् ताको उरहृदय में धारणवालेहैं हेममें पद्नाम स्थानको शब्दको वाक्यको पावँको चिह्नको इत्यादि किंवा द्विजराजनाम चन्द्रमाको है व्याकरणरीतिसों द्विजरह्यो राज को लोपभयो द्विजकहे चन्द्रमाजानिपरतहै जैसेउग्रकहे उग्र-सेन जानिये सत्यभामा नाम है ताकी प्रतीति सत्याकहे भी होतिहै अरु भामा कहे भी होतिहै द्विज चंद्रमा ताको पद स्थान शिव शिव के भालमें रहे है द्विजपद जो शिव तिनको उरमें राखनिहार हैं उदयपुरकी राज्यमें एक लिंग महादेव हैं तिनको इष्ट विशेष है द्विजपद विष्णु किंवा शिव ते केसेहैं जिनको वेद विषे वखानिये है किंवा अमरसिंहजी वेदको वखानैहैं वेदको व्याख्यान करैहैं किंवा पढ़ै हैं ३० ॥

कवित्त ॥ परमविरोधीअविरोधीकैरहतसबदानिनके दानिकविकेशवप्रमानहै । अधिकअनन्तआपसोहत अनन्तसंगअशरणशरणनिरक्षकनिधानहै ॥ हरभक्त हितमतिश्रीपतिवसतहिय भावतहैगंगाजलजगको निधानहै। केशौरायकीसोंकहैंकेशौरायदेखिदेखिरुद्रकि समुद्रकिअमरसिंहरानहै ३१ ॥

रुद्र है किंवा समुद्र है किंवा अमर सिंह राना है रुद्र कैसे हैं परम विरोधी जेहैं भवानी को वाहन सिंह औ शिव को बाहन वृषभ कार्तिकेय को वाहन मयूर शिव के कंठको नाग गणेशको मूषक ये सब विरोध छोड़िकै रहत हैं दाता जेनरहैं तिनके दाताहैं शिव सो संपत्तिपाय लोग औरनिको देत हैं हेममें दान नाम काटिवेको औ रक्षणको भी है काटनवारे को अर्थ मारनवाला मारनवाला यम औ मृत्यु ताके दानी मारनवालेहैं औ केशव जो भगवान् तिनके कवि हैं शिव के वनाये भगवान् के स्तोत्र हैं फेरि अधिक अनंत हैं जिनको कोई आदि अंत नहीं जानै किंवा अधिकहैं धिक नाम निंदा

को अधिक को अर्थ नहीं है निंदा जिनकी अनिंद्य हैं फेरि अनंतहैं आकाश रूपहैं अष्टमूर्त्ति महादेव हैं तिनमें एकमूर्त्ति आकाश भी है आप शिव अनंत भगवान् किंवा अनंत नाग नाम है ताके संगमें सोहत हैं फेरि अशरणि को शरणनिमें आश्रम में आये रक्षक हैं औ निधान प्रवीण हैं अशरण हैं अशरण नाम रक्षाकर्त्ताको जाको और कोई रक्षक नहीं फेरि शरण एक पद निरक्षक दूसरो पदक निधान तीसरो पद शरण आश्रय विषे आये जे निरक्षक जाको कोई रक्षक नहीं है कनाम सुखको है ताको सुखदेने को निधानहैं प्रवीणहैं किंवा शरण विषे आये जो रक्ष राक्षस रावण आदि तिनको कसुखदेनेको निधान प्रवीण हैं फेरि हुतभुक अग्नि ताहि विषे हितकी मति हैं जाको तीसरो नेत्र अग्निको है याते हेम में श्रीनाम संपत्तिको भी है ताके पति कुबेर तिनके हृदय में वसतहैं कुबेर शिव के भक्त हैं पुराण प्रसिद्ध है औ जिनको गंगाजल भावत है शिव पर गंगाजल चढ़त है औ जंगत्को निदान आदि कारण हैं किंवा हुतभुक हित अर्जुन रोगी अग्निको खांडव वन जरायकै पुष्ट किया है तिन अर्जुनविषे मतिचाह है जिनकी ऐसे जो श्रीपति भगवान् तिनके हृदय में शिव वसत हैं अथवा शिवके हृदय में नारायण वसत हैं नारायण को शिव अति प्रिय हैं याते नारायण कैसेहैं जगत को निदान आदि कारण हैं फेरि शिवको गंगाजल भावत है केशोरायकै सौंहकरि कहेहैं यामें केशोराय भगवान् को देखो यामें भगवान् को भी वर्णन है नारायणको अति प्रियहैं औ नारायण जगको निदान हैं या अर्थ में सौंह सांचभई केशोराय इत्यादि पाद पूर्णार्थ भी जानिये समुद्रपक्ष परमविरोधी देवता औ दैत्य सो जामें रहत नदी समुद्र वर्णन में कह्यो है हंकियोंकेशवकश्यपकोवर देवअदेवनिकोमनमोहै । किंवा परम को अर्थ परश्रेष्ठ मा लक्ष्मीहैं विनाम पक्षी को ताको

रोकनवालो है अपार है पक्षी पार नहीं जाय सकत हैं अवि रोधी होयकै रहतहैं पक्षीसों वाको विरोध नहीं अविरोधी होयकै विरोधीहैं भासतहैं विरोधाभासहै सब दानिनकेदानि याको अर्थ सब वस्तुको देतहै ऐसो को कल्पवृक्ष ताके दानी हैं हेममें दान नाम राखिवेकोभी है कल्पवृक्ष राखनवाले हैं किंवा कल्पवृक्ष देवतानिको दियाहै प्रमाण याको अर्थ यथार्थ ज्ञान को नाम प्रमाण जाको यथार्थ ज्ञान नहीं है केतनोगहि रोहै केतनो उन्नत है केतने जल जीव हैं इत्यादि फेरि समुद्र सब तीर्थनिसों अधिक है बड़ो है पुराण वचन है जेतने तीर्थ पृथ्वीमें हैं तेतने समुद्रमें हैं औ अनंत आप कहिये जल है जामें औ अनंत जाके संगमें जलचर सोहत हैं श्लेषमें शब्द को दूसरो अर्थ करनो याकेलिये अन्वय कीजिये अनंत आप को अर्थकियो अधिक सोहत अनंत संग कको अर्थ जल अभि को अर्थ विषे व्याकरण रीतिसों अधिकहिये जलविषे अनंत बहुत फारसीमें संग नाम पाषाणको है सो सोहत है सोभी वो धर्म जवाहिर को है रत्न परीक्षाको ॥ दोहा ॥ माणिक मोती नीलमणि मरकत हीरा पांच । मुख्य रत्न ये जानिये कहैं राम कवि सांच ॥ पुष्पराग गोमेद पुनि चंद्रजरुप्रवाल । ये चारौ उपरत्न हैं ग्रंथनि कहे रसाल ॥ लहसनियां नाम डायमणी आदि चौरासी जातिहैं शरण कहिये चलनो जो नहींचलै सो अशरण कहावे नगअग अशरण एकजानिये अशरण जो हैं मैनाक ताको शरण इन्द्र पर्वतनिके पक्ष का- टिवेलगे तब हिमालय को पुत्र मैनाक समुद्रमें भाजिगयो ताके निरक्षकहैं निश्चयकरिकै अतिशय करिके रक्षक हैं औ निधानहैं निधिजामें रहतिहै जहां श्रीलक्ष्मीजी रहैं तहां सब निधि रहतिहै हुतभुक वड़वानल तासें जाकी हिनसनि है जाके हियमें मध्यमें श्रीपतिभगवान् वसत हैं श्रीगंगाजी तीसे सो बहुत भावतीहैं किंवा गंगाजीको समुद्र भावतहै जलरूप जो

जगत सृष्टि ताको निदान आदि कारणहै वरुण लोकमें मूर्त्ति मान् जल रहतहै अथ अमरसिंह पक्ष परमविरोधी शत्रु किंवा चोर साहूकार ठग औ बटाऊ इत्यादि सो अविरोधीहै को अर्थ होयकै सब रहत हैं दातनको दाता है चाकर सब इन सों पायकै औरनिदेत हैं किंवा और अर्थ करिये दाननाम रक्षनिको दानी जेहैं सज्जन लोग परकी रक्षा करतहैं ताको दानी रक्षकहै हेममें दाननाम रक्षणको भीहै किंवादानि जु दो पद हे दानीनें विक्रम भोज इत्यादि तिनमें यह नीको आछोदानीहै आदरकै देतहै कविकेशव कहतहैं फेरि प्रमाण हे बड़ोऊंचो जाको चित्तहै ऊंचोचित्तसो मान औ अधिक है सब राजनिमें इनकी अधिकाईहै इन बादशाहकी चाकरीनहीं करी औ बादशाह पासबैठ औ आपु अनन्त हैं जाको अन्त भेद पायो जायनहीं किंवा सब राजानिते अधिक अनन्तपृथ्वी है जाके ऐसो आपुहै अनन्त बहुलोग जाके संगमें सोहत हैं सम्पत्ति बड़ाईपायकै आछेलागतहैं किंवा अनन्तलोगनके संग में सोहतहै अशरणको अर्थ नहींहै शरण बलिबो जाहिविषे चोर औ लुटेरा औ बटपारनके डरसों ऐसे शरणिके पथनिके रक्षकहैं ऐसो प्रतापीहै दुर्गम पथमें डरनहीं औ निधान प्रवीणहै हुतभुक देव तातिनिषे यज्ञादि करिकै हितकारिबेकी मति इच्छाहे जाकी इच्छाको भी नाम मति है औ श्री शोभापति प्रतिष्ठा जामें बसतिहै गंगाजलको जो निदान आदि कारण धर्म्म सो जाको भावत है औ जगको निदान आदि कारण श्रीभगवान् जाको भावत हैं पुराणमें कथाहै जब बावनजीको पावँ ब्रह्मलोक गयो तब ब्रह्माने धर्म्मको जलकरि बावनजी को पावँ धोयोवही जल श्रीगंगाजी हैं ३१ ॥

कवित्त ॥ दानवारिसुखदजनकयातनानुसारकरपत धनुगुनसरससुहायेहैं । नरदेवक्षयकरकरमहरनखरदूष

एकेदूषणसुकेशोदासगायेहैं ॥ नागधरप्रियमानितनाकि मातासुखदानिसोदरसहायकनवलगुनभायेहैं । ऐसो राजारामव्रजरामकिपरशुराम केशोदासराजारामसिंह उरआयेहैं ३२ ॥

ऐसो राजाराम व्रजराम कि परशुराम केशोदास राजा रामसिंह उरआयेहैं जो आगे विशेषण देहिंगे नाहि विशेषण करिकै ऐसो राजाराम श्रीरामचन्द्रजी हैं किधौं व्रजराम बल- भद्रजी हैं किधौं परशुरामजी हैं किधौं बांधवको राजाराम सिंहजीहैं यह केशोदासके उरमें हृदयमें समान आये हैं कहूं ऐसो पाठहै । ऐसो राजाराम व्रजरामके परशुराम कैधौं अभि- राम बलिराम उरआयेहैं । कहूं पाठहै । ऐसो राजाराम व्रज- रामकै परशुराम कैधौं केशोदासस्वामराम उरआयेहैं श्रीराम- चन्द्रजी कैसेहैं दानवके अरि किंवा दानवहैं अरिशत्रु जाके ऐसो जो इन्द्र ताको सुखदाता हैं जनक यातनानुसार जब राजनिसों धनुष नहीं चढ़्यो तब जनकजीको मनो दुःखभयो सो कहत हैं जनकजीको भई यातना पीड़ा ताको अनुसार पायकै जानिकै करपत धनुगुन तब धनुषके गुनको खैंचन औ तोरिबेकेलिये फेरि सरस सुहाये हैं सब राजा हारिगये याते सरस अधिक शोभित भये हैं किंवा जनकजा सीता तिनको तन शरीर ताके अनुसार अनुकूलहोयकै किंवा जनकजाके तनकहिये और अनुसार कियेफिर सीताजीके देखन करकै धनुगुण खैंचतहैं फेरि नरमनुष्य औ देवता ताके दायनाश करिबेको है कर्म्मक्रिया जाकी ऐसो जो रावण ताके हरन कै मारनवाले हैं औ खरदूषण राक्षस ताके दूषण हैं दुष्ट कै मारन वाले हैं या बातको सुन्दरीतरह केशवदास वाल्मीकि आदि जे मुनिहैं तिनने गायेहैं फेरि नागधर प्रियमान नाग नाम श्रेष्ठको भीहै नागश्रेष्ठ जे पुरुषहैं धरको मध्य धराहरसों

ताहिविषे रामचन्द्रजीको प्रियमानतहैं प्रियमन ऐसोभी पाठ है धराविषे श्रेष्ठपुरुषके मनके प्रियहैं लोकमाता लक्ष्मी किंवा तिनको अवतार श्रीसीताजी ताको सुखदाताहैं सोदर कोअर्थ भाई लीजिये एक उदरसों उपजे ऐसो अर्थ नहींलीजिये सो लक्ष्मणजी तिनके जब रावणके हाथकी शक्तिलगी तब सजी- वनि मँगाय सहायकियो रक्षाकरी राजा भाईको नहीं चाहत हैं यह नवीनगुण किंवा निकृष्टजीव गीध ताको मुक्तिदीनी वनचर निकृष्ट तासों मित्रता शवरीके बेरखाये इत्यादि जे अधमोद्धारणत्व नवीनगुण सो भक्तनिको भाये हैं अथ व्रज- राम श्रीबलदेवजी कैसेहैं दानवारि श्रीकृष्ण तिनको सुखदहैं किंवा दाननाम काटिवेको है याते मारिबो लीजिये तासों जो वारेरोंके रक्षाकरै सबल सो निबलको मारिनहींपावै इन्द्रव्रज पर बीजुरी चलाई भगवान् व्रजवासिनकी रक्षाकरी दानवारि कृष्ण तिनको सुखदहैं जनक वसुदेवजी तिनको कंससों भई यातना पीड़ा तासों अनुसार औरठौर जानोहैं जाको देवकी जीके गर्भसों रोहिणीजीके गर्भमें भये करषत धनुगुण हेममें धनुनाम वित्तको औ गोधनकोक कहिये सुखसों राखतहैं व्रज में चरावतिहैं धन गायनिको जाकेगुण सरस अनुरागयुक्त जेहैं भक्त तिनको सोहायेहैं फेरि नर औ देवता तिनको क्षयनाश को करैहै ऐसो जो करमपाप ताके हरणवाले हैं किंवा नरजो रुक्मी ताको देवकहिये क्रीड़ामें उपनाशको करै ऐसो जो क- रम प्रहार ताके हरण हैं पहुँचावनवाले हैं हरणनाम पहुँचा- इवेको औ चोरीको औ विनाशनको रुक्मीको चौपरिखेलत मार्यो फेरि खरदूषणके दूषण तालवनमें गदहाको रूपधरे असुर बहुनथे सरदारको नाश धेनुकथो खर जो दुष्ट ताकेदुष्ट हैं केशौदास गायेहैं याकोअर्थ बहुतजे गायहैं तिनके केशव भगवान्दास सेवकभयेहैं गायनिचराये हैं याते फेरि नागवर प्रियमान औ बलदेवजीको अवतार शेषनागको है यह भक्त

लोक कहत हैं नागको जो धर शरीर ताको प्रियमानत हैं प्रभास क्षेत्रमें अन्तर्द्धान लीलाकरी है तहां सर्पको रूपहोय समुद्रमें जातरहेहैं हेममें लोकनाम मनुष्यको औ मानानाम पृथ्वीको लोगनिको औ पृथ्वीको सुखदाता हैं भूमिको भार उतार्योहै औ भूमिको लियेरहतहैं सोदर दोयपदहैं सो बलभद्रजी दरनाम त्रासको है त्रासन परे सहायकरतहैं जो कोई उनको स्मरणकरै फेरि नवहै नवीन अवस्था जाकी सदा है फेरि गुणकहिये सौंदर्यादि भा कहिये प्रभा ये दोय पदार्थ जिनमें हैं परशुरामजी कैसेहैं दानवारि सुखदहैं जिनको संकल्पको जल ब्राह्मणनिको सुखदहै जनक जमदग्निजी तिनको भई यातनापीड़ा कामधेनु लेतके सहस्त्रार्जुनसों ताके अनुसार ताको पायकै जानिकै धनुपकेगुण करपतहैं धनुपपै चढ़ावतहैं लरिवेकेलिये रस जो रौद्र ताहिसहित शोभित भये हैं किधौं करपतधनु धनु जो गाय ताको करपतकै खैंचतकै तब सहस्त्रार्जुन खैंचिकै लेचल्यो तब जनक जमदग्निजी तिनको जो भईहै यातनापीड़ा तासों होमलधै थो सो गाय हमारीलिये जातहै याते पीड़ा ताको जो अनुसार विचार करिकै गुण जो है द्वेष उनके मारिवेकी इच्छा से मुखपर लालीआई है तासों सरस अधिक सोहायेहैं हेममें धननाम गोधनकोभी है गोधन गाय जो धन वेणुबजावै गोधनचरैनाम देवकोभी स्वामीआनन्द करै । तेरीगलीनिहैजादिनते निकस्यो मनमोहनगोधन गावत । द्वेप चौवीसगुणमेंहैं अनुसार विचारको भी कहतहैं सबरातिनि अनुसारि सुएकमनकीजै सबगुणरूपनिधान गोविंदहिदीजै फेरिनरदेव राजा ताकीक्षयकरैहैं नाशकरैं करम शुभ अशुभ ताके हरणहारे हैं शुभकर्म सों स्वर्ग अशुभसों नरकहोतहै ताको हरणहार हैं मोक्षदाता हैं यहअर्थ जबताई पुण्यपापरहै तबताई मुक्ति नहींहोतिहै किधौं नरदेव जो राजा तिनके क्षयकारी जो कर्म अस्त्र शस्त्रप्रहारजाको हरण संग्रा-

कार है जाको अब मैं निःक्षत्रियमेदिनी करौंगो यह प्रतिज्ञा करीहै फेरि खरतीक्ष्ण जे दोष गुरुकेअपराधकरैं इत्यादि तिन के दुष्टहैं दूरकरनवालेहैं फेरि नागधर शिव तिनकेप्रिय मानौं लोक माता पार्वती तिनके सुखदाताहैं शिवगुरुहैं पार्वती गुरु पत्नी हैं याते सात माता कही हैं ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी इत्यादि माहेश्वरी पार्वती लोकमाताजानिये फेरि सोदर भाई जाको सहायकर्त्ता नहीं है जाके बल औगुणभाये हैं सतज्ञा-निनको राजापक्ष दानवारि देवता ताको यज्ञदानकरि सुखद हैं कुत्सित जो जनलोग सो जनक कहावत हैं व्याकरणरीति सों जातकहियेसमूह जनकबुरेलोग तिनको जातसमूह ताको नाकहियेनहींहै अनुसार उनकेसंगलागनो उनकेपीछे चलनो ज्यहि राजाको बुरेलोगनि के योधन के गुणमद ताको करपत हैं सँचत हैं धनमद नाहींराखैं किंवा करचिपे खतकहिये क्षत है धनुष के गुणको जाको धनुकी प्रत्यंचाको वामहाथमें ढट्ठा परिजात हैं रसनाम हेम सें पराक्रमकोभी है पराक्रमसहित सोहत हैं नरनिमें देवता ब्राह्मण तिनको कर्म जप होमादिक ताको क्षय नाशकरिबे को कर्म हैं जा दुष्टलोगनिको तिनको हरतहैं मारनवालेहैं फेरि दूषणके दूषण श्रीरामचन्द्रजी तिन को केशवदास जे वैष्णव सो होयकै कै तिनमें बैठिकै गायेहैं फेरि नागहाथी ताके धरनवाले पकरनवाले जे लोग तिनको प्रियमानतहैं औ आपनी माता को सुखदाता हैं सोदर भाई की तरह प्रजाकी सहायकरैंहैं भाई सहायकरैं फेरि नवलगुण नवीन जे गुण ऐसे और राजनमें नहीं नयेतरहके गुणसों शो-भत हैं चौथी तुककी पाठ औरतरह पोथिनमेंहै एकपाठ इस तरहभी है कैधौंहैंअमरसिंह मेरेउरआयेहैं जोअर्थ राजाराम सिंह को कियोहै सोई अमरसिंह पै लगाइये कहूं ऐसोपाठहै ऐसोराजारामब्रजराम किपरशुराम किधौंअभिरामबलिराम उरआयेहैं राजाराम श्रीरामचन्द्र ब्रजराम श्रीकृष्ण औ पर-

शुराम औ वलभद्रजी या पाठ में अमरसिंह रामसिंह नहीं श्रीकृष्णचन्द्र पक्षलगावनोहै कहूंपाठ है ऐसो राजारामव्रज-रामकी परशुराम कैधौं केशौदासश्यामराम उरआयेहैं । केशौदास एकवार आयोहै फेरि चरणपूर्णार्थ इहां श्यामराम औ कृष्ण चतुरर्थ सों पंचार्थ भयो श्रीकृष्णपक्ष दानवारि सुखद दानव जे नरकासुर आदि सो फेरि कैसे हैं भगवान् के अरि शत्रुहैं तिनके भगवान सुखद सुखको अर्थ सुन्दर जो ख नाम आकाश जाको परम व्योम कहत हैं जाको ब्रह्महृद कहत हैं ज्ञानी जहां मुक्तहोतहैं सिद्धलोकहैं सिद्धाब्रह्मसुखेमग्ना दैत्याश्चहरिणाहताः । याको अर्थ सिद्धब्रह्म सुखको प्राप्तहोतहैं औ भगवान् के मारे दैत्यप्राप्त होतहैं दानव जे अरि ताको सुख परम व्योमद को अर्थ देनवालेहैं किंवा वारि यमुनाजल तहां को दान जगाति सो जाको सुखद है यमुनामें नाव चलावैहैं व्रजदेविनसों जगातिलेतहैं किंवा वरसानेपास घाटी है उहां व्रजदेविनसों दानलीला करतहैं दानलेने की जो वारि भूमि घाटी सो जाको सुखदहै हेममें वारिनाम भूमिकोभीहै जनक श्रीनन्दजी तिनको वरुणके दूतलेगये तव भयो जो दुःख तव उनको अनुसार कियो पीछे गये करपत धनपगुण धननाम स्त्रीको है (प्रमाण) शीतको सतायो धनराशिमें परन्तु इतर अर्थमें स्त्रीको कहतहैं धन व्रजदेवी तिनसवको अपने सौन्द-र्यादि गुणसों करपत हैं ऐंचतहैं पतिसों प्रेमछोड़ाय आपने वशकरतहैं रस शृंगार ताहिसहित सोहाये हैं नरनिमें देवता जेहैं श्रीनंदजी द्रोणवसुको अवतारहैं किंवा नररूप जो देवता गोप श्रीभागवतमें कंस सों श्रीनारदजी को वचन नंदआदि जे व्रजमें गोप हैं उन सवकी जे स्त्रीहैं तिन्हैं देवताजानौ अग नाम घरको भी है गोपनि के घर में कंसको करदेने को जो कर्म क्रियाथी ताके हरणहार हैं सर्वशोधि नंदादि गोप कंस को करदेतेथे कंसको मारयो तवसों मिटिगयो नंदादि के घर

सों करजातोथो सो छोड़ायो तालवनमें खर जो दुष्ट ताकेदुष्ट हैं कतनेहीं खरनको इन भी मार्‍यो फेरि केशौदास गायेहैं तो केशव भगवान् तिनको लोगनि दासगायोहै दास कह्योहै दास नाम धीवरको है श्रीयमुनाजी में नावचलायोहै तासों किंवा संसार समुद्र के पार करत हैं याते पदहैं साथकरि रघुनाथ केवट पुरोहिंकत हरि गीताके आदि में श्लोकहै तहां कैवर्तकः केशवः फेरि नाग जो काली ताको धरनवालेहैं औ प्रियमान मान जो वड़ाई सो जाकोप्रियहै भक्त स्तुतिकरतहैं सो जाको प्रिय लागतहै किंवा नाग शेषनाग तिनको धर शरीर ताको प्रिय मानतहैं शेषनागपै सोयेहैं लोक माता लक्ष्मी सो जाको सुखदायकहैं किंवा ताके सुखदायकहैं किंवा वामनरूप करि लोक के माता हैं नापनवालेहैं औ सुखदहैं सोदर वलभद्रजी तिनके सहायक हैं किंवा उदरनाम हेममें रणको भी है उदर लराई ताहि सहित वर्तमान अर्जुन आदि भारत में ताके सहायक हैं नवीन गुणसों भायेहैं किंवा सोदर भाई इनके कंसने मारे तिनकी सहाय करी फेरि लैआये देवकीजीकेस्तन पानकराय मुक्तकिये नकार इहां का कुस्वरसों पढ़िये नवल गुण भाये हैं याको अर्थ वलदेवजी के गुण प्रलंव आदि को मारनो सो जाको भायेहैं यह अर्थ किंवा नवल नवीन स्त्री ताको जाके गुण भायेहैं ३२ ॥

कवित्त ॥ भावतपरमहंसजातगुणसुनिसुखपावतसं गीतमीताविबुधवखानिये । सुखदशकातिधरसमरसनेही वहुवदनविदितयशकेशौदासगानिये ॥ राजैद्विजराज पदभूषणविमलकमलासनप्रकाशपरदारप्रियमानिये । ऐसेलोकनाथकैत्रिलोकनाथरघुनाथ कैधौंनाथनाथरा जारामसिंहजानिये ३३ ॥

ये जो विशेषण सो इतने जानिये लोकनाथ ब्रह्माहैं कै त्रि-लोकनाथ श्रीकृष्णचंद्र हैं कै श्रीरघुनाथजी हैं कै नाथ नाथ दिशापालनिके नाथ महादेवजी हैं कै राजारामसिंह हैं यह जानियेहै ब्रह्मा कैसेहैं भावत परमहंस जात परउत्कृष्ट हंस पक्षी विशेष ताकी जो जात कहिये जात सो जाको भावतहै वाहन है याते किंवा परमको अर्थ पर श्रेष्ठ मा लक्ष्मी हैं जिन विषे हरिके वक्षस्थलमें लक्ष्मी रहतिहै ऐसो परम जो भग-वान् सो हंस होयकै जिन ब्रह्माको जातको अर्थ प्राप्तभये सो जिनको भावतहैं सोहातहैं श्रीभागवतमें कथाहै सनकादिने ब्रह्मासों प्रश्नकियो तब ब्रह्माको उत्तर नहीं आयो तब हंसरूप धरिकै भगवान् आयकै उत्तर दियो पहिले पक्षमें हंस जात को गुण शब्द ताको सुनिकै सुखपावतहैं दूसरे पक्षमें भगवा-न्को गुण हंसरूप जो भगवान् आयकै उत्तर दियो पहिलेपक्ष में हंस जातकोगुण शब्द ताको सुनिकै सुखपावतहैं दूसरेपक्ष में भगवान् को गुण हंसरूप जो भगवान् आये सो कहिबेलगे तब सो सुनिकै सुखपावतहैं फेरि संगीत मीत संको अर्थ आ-छीतरह गीत गानहै जाको ऐसो जो वेद सो जाको मीतहित है विबुध बखानिये औ विशेष करिकै जाको बुध कवि बखानें हैं श्रीभागवतके प्रथम श्लोकमें ब्रह्माको आदि कवि कह्यो है कवि नाम पंडितको है हेममें बुधनाम कविको भी है फेरि सुखकी देनहारी जो शक्ति सामर्थ्य ताको धरनवालेहैं ब्रह्मा सों कोई जो सुख चाहत है सोई वरपावत है फेरि सम रस कहिये एकरसनेहीको अर्थ प्यारकरनवाले हैं ब्रह्माकी समान प्रीति सबसों है कोई सुखी कोई दुखी सो आपने कर्मनसों है फेरि बहु वदनहैं चारि जाके वदन मुखहैं औ विदित प्रसिद्ध जाको यशहै यह केशौदास कविने गायोहै किंवा बहुनवदन विषे विदित प्रसिद्ध यशहै केशव को जाको ऐसे ब्रह्मा हैं नव मुखसों भगवान् को यश करत रहत हैं यह अर्थ रामजानिये

याको अर्थ हेममें दास नाम धीवरको औ भृत्यको औ शूद्र को औ दानपात्रको या बातको दास कहिये दानपात्र उत्तम ब्राह्मण तिन गायेहैं मुनिन कह्योहै यह अर्थ फेरि द्विजपक्षी तिनको राजा हंस द्विजनिविषे शोभतहै याते द्विज हंस द्विजराजगर जाको पद चरण सो भूषण सरीषो राजत है मानों पीठिको भूषण है फेरि विमल जो कमल सो जाको आसन प्रकाश जाहिरहै किंवा प्रकाश भयोहै फूल्यो जो विमल निर्मल कमल सो जाको आसनहै फेरि परश्रेष्ठ दारस्त्री ब्रह्माणी ताको प्रियमानियेहै त्रिलोकनाथ श्रीकृष्ण कैसेहैं भाव्रतपरम जाको भा कहिये कांति सोरहे जामें सो भाव्रतसूर्य आदि तिन मों परम हैं श्रेष्ठहैं सहस्रनाम में कोटिसूर्य प्रतीकाश नाम है फेरि हंसजातगुण सुनि सुखपावतहैं हंसनाम सूर्यको तिनसों जात उत्पन्न श्रीराधिकाजी तिनकेगुण सौंदर्यादि सो सखिन ते सुनिकै सुखपावतहैं वृषके सूर्यकोअवतार वृषभानुजीहैं यह पुराण में प्रसिद्ध है सूर्यतपस्याकरी जाके वश श्रीकृष्णहोहिं ऐसी मेरेकन्याहोय किंवा हंसजात श्रीयमुनाजी सो जाकेगुण को सुनिकै सुखपावत हैं श्रीयमुनाजी की उत्पत्ति सूर्य सों है फेरि संनामसुखको जाको सुखदायक जो गीतगान सो जाको मीतछितहै ऐसो जो विबुधदेवता सोबखानतहैं तारीफकरतहैं किंवा मीतयारहै विबुधदेवताजाके ऐसी जोअप्सरा सो जाको संगीत उत्तमगीतगान ताको बखानतिहैं करतिहैं फेरि सुखद शक्तिजोश्रीराधिकाजी आह्लादिनीशक्तिहै ताकोधारणकरतहैं किंवा सुखदशक्ति लक्ष्मीजोसोहै धरशरीरविषे जाकेहेममेंशक्ति नाम श्रीकोभीहै फेरि समरकाम ताके सनेहीहैं बरघो जोकाम ताको उपजायोहै याते फेरि बहुबदन बहुतहैं बदनमुख जाके ऐसो जो शेषनाग सो जाके विदित प्रसिद्धयश ताको गानिये येकोअर्थ गवइयाहीहैं केशौदासकवि कहतहै किंवा बहुकहिये बभ्रु स्त्रीजनजाके बदनमुखविषे विदितहै यशजाको केशौदास

को अर्थ पिछले कवित्तमें करिआये इहां केशोदासकविकहत हैं जानिये फेरि हेममें द्विजनाम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यको भी है पदनाम रक्षाको औ शब्दको भी है द्विजराज क्षत्रियराज यहपद शब्दहै जाकोराजैहै शोभैहै किंवा द्विजराजगरुड़ तापै पदचरण कमल जाको राजैहै शोभै है फेरि मणिमुक्ता आदि वनमाला आदि जे भूषण विमल सो जाके राजत हैं फेरि कमलाआदि परदारको विशेषणहै परदारपरस्त्री ब्रजदेवी सब परदार कैसी हैं कमला हैं वरांगना हैं फेरि सब कहिये उत्तम है प्रकाश अंगको उजास जाको ताको प्रिय मानिये हैं किंवा मानिये याकोअर्थ ये श्रीकृष्ण मानी हैं नायकभी मानीहोत हैं शठको प्रभेद हैं हमारेकिये सभाप्रकाशमेंहै किंवा कमलासन जो ब्रह्मा तिनको प्रकाश उत्पत्तिहै जाहि श्रीकृष्णने परश्रेष्ठदार रुक्मिणीआदि तिनके प्रियमानियेहैं श्रीरामचन्द्रजी कैसेहैं परमहंस सनकादि औशुकदेवआदि योगीश्वर तिनको जात संमूह ताको भावतहैं रामको अर्थ भी है योगीजानिंगे सानन्दहोय सो रामरूप रस इत्यादि चौबीस गुण हैं जिन रामजीके गुणकहिये रूप सो सुनिके सुखपावतहैं संगीतमीत विबुध संगीत के गीत गंधर्व किन्नर देवता सो जाको बखानत हैं उनकेगुणको श्रीरामजी अत्यन्तसुन्दरहैं किंवा जाहि रामचन्द्रजीको हंसजातसूर्यवंशी सो परम अत्यन्त भावतहैं किंवा अत्यन्त सूर्यवंशिन को भावत हैं फेरि संकहिये आछीतरह गीतगान है जाको ऐसो यश सो मीत है जाको फेरि जाको विबुधदेवता बखानतहैं किंवा वि नामपक्षीको नामबुधकहिये पंडित ज्ञानी ऐसो जो काकभुशुण्ड सो जाको बखानत हैं रामायण में गरुड़ काकभुशुण्ड को संवाद है किंवा हंस सूर्य तिनसों जात उत्पन्न जो अश्विनीकुमार तिनको परमउत्कृष्ट भावत हैं कांतिमान है भा कांति सो जानें रहै सो भावनकहिये फेरि सं आछीतरह गान कहिये सकलिगे गीत किंवा

ताको सुनिकै सुखपावत हैं फेरिविको अर्थ विनष्ट है बुद्धिज्ञान जाको ऐसे जे लोग शिला गीध शवरी वनचर इत्यादि सो जाको भीत हैं या वात वखानियेहै अधमोद्धारण लोगकहत हैं फेरि समर युद्ध तामें सुखद याको अर्थ सुखको जो काहे संसार सुखको जो छोड़ावै ऐसी जो शक्ति वरछी रावण की चलाई ताको आपने वक्षस्थलपर धारणकरनवाले जो लक्ष्मणजी तिनके सनेहीहैं प्रिय हैं किंवा सुखद शक्ति जो श्री हेम में शक्ति नाम श्री को भी है सो रहतिहै वर शरीरविषेजाके वक्षस्थल विषे लक्ष्मी वसती हैं समर याको अर्थ सम नाम सबको भी है रको अर्थ व्याकरण रीतिसों देनवालो समकहिये सबपदार्थ अर्थ धर्म काम मोक्ष ताको जो देइ सोसमर कहावै समर हैं सब वस्तु के दाताहैं औ सनेही हैं सबसों प्रीतिकरत हैं फेरि वहु वदन रावण ताकरिकै विदित यशहै जाको रावण के मारिवे के लिये देवतनि प्रार्थना करी तव रामजी प्रगटभये फेरि पद नाम हेममें पावँकी निशानी को भी है जाको द्विजराज भृगु ताके चरण की निशानी विमल भूषण उर्वशी ताहि सरीषा राजैहै शोभैहै ॥ दोहा ॥ क्षमावंतनिको उचित है नीचनि को उतपात । क्या रघुपतिकोघटि गयो जो भृगु मारी लात १ फेरि कमल जल ताको असन भोजनहै जाको ऐसे जे योगी जो जलपान करिरहतहैं ताको है प्रकाश जाको श्रीरामचन्द्रजी को देखत हैं फेरि पर श्रेष्ठ दार स्त्री श्रीसीताजी तिनके प्रिय मानियेहैं किंवा नृसिंहअवतार करि पर शत्रु हिरण्यकशिपु ताको दार फारिवो ताको प्रियमानहैं हिरण्यकशिपुकी आंतरी काढ़ि गलेमें पहिरिलिये नाथ नाथ शिव कैसे हैं नाथ दिशापाल ताके नाथ शिव हैं भावन परमहंस जाको तप तपस्या ताको भाव क्रियाहै भाव नाम क्रिया को भी है रमेहैं सानंद होतहैं हंस परमात्माविषे जटित हैं नग्न हैं भस्म लगायेहैं समाधि लगावेहैं इत्यादि

तपस्याकी क्रिया करि परमात्मा में रमेहैं रमे को रस ऐसो पद्यो जैसे विहारी उन दोहीं अंखियां ककैके अलसौंहींदेह के कैकी ठौर ककै पद्यो तैसे इहां भी जानिये फेरि जातक- हिये जाति औ गुण सत्व रज तम इन करि शून्यहैं ब्रह्मरूप हैं औ जासों लोग सुखको पावत हैं औ संगीत जाको हितहै शिव आप नृत्यकरतहैं संगीत तांडव नृत्य शिव प्रोक्त है औ जाको विवुध विशेष लौकिक ज्ञान करि विहीन वखानिये है भोलानाथ कहियेहै। भोलोकैपायोहै कंत हमार धतूरनिदेखन लूटिलियोहै । फेरि शक्तिधर कार्त्तिकेय ताको सुखद हैं किंवा सुखद शक्ति पार्वती ताको वाम अंगमें धरे हैं फेरि सम रस शांतरस ताके नेहीहैं शांतरस भावैहै फेरि वहु वदन विदित हैं प्रसिद्ध हैं पांच मुख हैं जाको यश गायोहै किंवा वहुवदन कार्त्तिकेय तिनने जिन महादेव को विदित यश ताको गान करयोहै फेरि द्विजराज चंद्रमा ताको पदस्थान हैं फेरि शोभ- तहैं फेरि विमल विनष्ट होतहैं मल पाप जाते ऐसी जो वि- मल गंगाजी सो जाको भूषण हैं किंवा द्विजराज जो चंद्रमा ताको जो पद रक्षा सो जाको विमल भूषणहै आपने माथेपै जो चंद्रमाहै ताकी रक्षाराहुसोंकरतहैं ताहि सो राजतहैं फेरि कमलासन पद्मासन सो जाको प्रकाशहै सव जानतहैं किंवा कमलासन ब्रह्मा तिनसों प्रकाश उत्पत्ति है जाकी फेरि पर श्रेष्ठ जो दार स्त्री पार्वती ताके प्रिय मानिये हैं किंवा परदार भिन्न पद र भिन्नपद पर कहिये श्रेष्ठ जो पदार्थ अर्थ धर्मादि तिनके दाता हैं यह परदाको अर्थ र ऐसो नाम अग्निको है ताको प्रिय मानियेहै तीसरोनेत्र अग्निहै अव राजारामसिंह कैसोहै जोसवक्रियाकोछोड़ितपकरै सोपरमहंससोजाकोभावत है किंवा परमहंसभगवान सो जाकोभावतहैं औ आपनीजाति के गुणसुनि सुखपावतहैं किंवा जातकहिये उपज्यो है गुणरूप जाको राजाको कोईदुष्ट भयो है या वातको सुनिकै सु कहिये

आछीनरहसों सुखपावत हैं मारिडारतहैं चौवीसगुण में द्वेष भी है किंवा परश्रेष्ठ जो हंस अश्व सो जाको भावत है फेरि जातउपज्यो है गुण या घोड़ामें या वात को सालिहोत्री सों सुनिके सुखपावतहै हेममें हंसनाम अश्वकोभीहै फेरि संगीत मीतसंगीत शास्त्रसोंहै हितजाको ऐसे जे विवुध पंडित किंवा विशेषहै ज्ञानजाको ऐसे जे नर्त्तक सो जाको वखानतहैं राजा को संगीतको समुझवार कहत हैं किंवा संगीतमीत जो वि- वुध देवता श्रीकृष्ण किंवा महादेव तिन्हैं वखानत हैं तिनकी स्तुतिकरतहैं औ तीनिशक्तिहैं प्रभावसों उपजै औ उत्साहसों उपजै औ मंत्रसोंउपजै ये तीनिशक्ति सुखद ताको धरनवालो है किंवा प्रजाको सुखद है औ शक्ति वरछी ताको धरनवालो है समर युद्ध ताको सनेही हैं युद्धताको भावत है फेरि वहुत लोगानिके वदनकहिये कहनो ताते विदितप्रसिद्धहै यशजाको वदननाम कहनेको भी है केशौदासकविने गानकियोहै फेरि द्विजराज ब्राह्मणश्रेष्ठ ताको जो पदपालन सोहै विमल भूषण तासों राजैहै किंवा द्विज क्षत्रिय जो राजा तिनको पदस्थान जहां राजतहैं राजा सव चाकरीकरिवे के लिये ओड़छामें घर वनाये हैं जैसे दिल्ली में सवराजानि की ठौरहै सो पद कैसो है जामें भूषणकहिये भूमिकेखाना घर जाको तहखाना कहत हैं सो जामें निर्मलहैं फेरि कमलालक्ष्मी ताको जहां प्रकाशहै वहुत संपत्ति देखिवे में आवतिहै फेरि परदार द्वारपाल ताको प्रियमानतहैं विश्वासकोजानिके कहूं अमरसिंहजानिये ऐसो भी पाठहै तहां यहीं अर्थ अमरसिंहको कीजिये २३ ॥

(अथश्लेषभेद) दो० ॥ तिनमेंएकअभिन्नपद औ रभिन्नपदजानि ॥ श्लेषसुवुद्धिदुवेषके केशवदासवखा नि २४ ॥

हे सुवुद्धि दोय तरह के श्लेष हैं २४ ॥

(अभिन्नपद) कवित्त ॥ सोहतिसुकेशीमंजुघोषाररतिउरवशीराजाराममोहिबेकोसुरतिमुहाईहै । कलरवकलितसुरभिरागरंगयुतवदनकमलपटपदछविछाईहै ॥ भृकुटीकुटिलधनुलोचनकटाक्षशरभेदियतुतनमनआनिसुखदाईहै । प्रमुदितपयोधरदामिनीसीनाथसाथकामकीसीसेनाकामसेनाबनिआईहै ३५ ॥

जहां एकही शब्द अर्थहोय शब्दअर्थको भेदनपरत होय दोऊपक्षमें तहां अभिन्नपद जानिये नाथनायक नाके साथमें कामकी सेना सारिषी कामसेना जोहै नायका सो बनिआई है जैसे दानवारिइत्यादिमें दानवपदार्थ जुदाकियोहै आरिपद जुदोकियोहै फेरि दानव जुदो वारि जुदाकियो ऐसे इहां नहीं है कामसेना कैसीहै सुन्दर लम्बेकेशहैं जाके ऐसी अप्सरा है सुकेशशब्द सुन्दर केशहीकोकहतहैं उहां अप्सराको विशेषण होतहै इहां नायकाको विशेषण होतहै ज्यों सुकेशशब्द और अर्थ करिये तो कठोर में विशेषण होय तो भिन्नपद है जाय सो इहां नहींहै ऐसे मंजु सुन्दर घोषशब्दहै जाके रतिप्रीतिहै यामें भी प्रीति है उर्वशी को अर्थ भाप में उरमें वसी ऐसी वहभी है किंवा राति प्रीतिकरि उरमेंवसी है कलरव अव्यक्त मधुर ध्वनियुक्त वहभीहै यहभीहै वाके वदन कमलपर षटपद भौंराकी छविछाई है याके भी मुख पै प्रमुदित पयोधर कुच उनके भी याके भी इहां मेघको अर्थ नहींतो भिन्नपद होय जाय दामिनी बीजुरी सरीषी वहभी यहभी ३५ ॥

(अथाभिन्नपद) दो० ॥ पदहीमांपदकाढियेताहिभिन्नपदजानि ॥ भिन्नभिन्नपुनिपदनिकेउपजतअर्थबखानि ३६ ॥

यामें दोयलक्षण हैं हेसमें पदनाम शब्दको सो वस्तु को

एकशब्द में दूसरीवस्तु काढ़ै ताको भिन्नपद जानै फेरि एक पदकरि पदनिको भिन्नकरै उपमादेइ सो भिन्नपद में उपमा श्लेष कहावै उपमा देहिली दीपक न्यायकरि दोवार लगाइये ३६ ॥

दो० ॥ वृषभवाहिनीअंगउरवासुकिलसतनवीन ॥ शिवसंगसोहैसर्वदाशिवाकिरायप्रवीन ३७ ॥

वृषभ शब्द बैलको कहत हैं तामें दूसरीवस्तु धर्म ताको काट्यो भिन्नपद भयो बिना तोरे एकही पद को दोय भेद कियो ३७ ॥

(उपमाश्लेष) कवित्त ॥ रजैरजकेशौदासटूटतअरुणलारप्रतिभटअंकनतेअंकपसरतुहै । सेनासुन्दरीनके बिलोकिमुखभूषणनि किलकिकिलाकिजाहीताहीकोधरतुहै ॥ गाढ़ेगढ़खेलहीखिलौनानिज्योंतोरिडारैंजगजययशचारुचन्द्रकोअरतुहै । चन्द्रसेनभुवपालअंगनबिलासरणतेरीकरवालवाललीलासीकरतुहै ३८ ॥

हे चन्द्रसेन भूमिपाल विशाल बड़ी जोरणभूमि सोई आंगनहै तहां तेरी करवाल तरवार सो बालककी लीलासीकरत है करवाल विशाल रणसों आंगन है अभेदकरि एक कियो या पदको फेरि भिन्नकियो करवाल विशाल रणमें लीलामारिबो रूप क्रियाको करतिहै बालक आंगनन में बिलासकरत हैं लीलानाम बिलासको औ क्रियाको रजैरज रज जो रजोगुण सो रजधूरि है फेरि तरवार में रजोगुण बालकपक्ष रज धूली सर्वत्र एककरि भिन्नकरनो अरुण रुधिर तरवारते टूटि परै है इहां मुखते लार प्रतिभटभटभट प्रति इहां अंकनि ते मारानके ओरानिके अंकमें पसरतु है जातहै पसरतु ऐसोपाठ

तो पसरिजातु है फेरि सेना सोई सुन्दरी है ताके मुखभूषण को विलोकिकै सेनाके मुख देखिकै सुन्दरी के भूषण देखिकै तरवार किलकिकै चमकिकै बालक किलकारि करिकै फेरि गाढ़े जेगढ़हैं ते खेलिबेके खिलौनाहैं तरवारने गढ़नोरे बालक ने खिलौनातोरे तरवार जयकोपावै बालकयशकोपावै बालक धूरिमें लोटै खिलौनातोरे तो लोग बुरो नहीं कहैं स्याबासी देतहैं तरवार चारु आछे जे योद्धा तिनसों अरेहैं हठैरै बालक चन्द्रमा लेन को हठैहै ३८ ॥

दो० ॥ बहुरयोएकअभिन्नाक्रियअौविरुद्धक्रियआन ॥ सुनिविरुद्धकर्माअवरानियमाविरोधीमान ३९ ॥

पांचभेद श्लेष के फेरि कहत हैं एक अभिन्नक्रिय दूसरो अविरुद्धक्रिय तीसरो विरुद्धकर्मा चौथोनियम पंचम विरोधी अरु वर्ण्य अवर्ण्य में एकाक्रियालागै सो अभिन्नक्रिया ३६ ॥

(अथअभिन्नक्रियाश्लेष) कवित्त ॥ प्रथमप्रयोगियतुवाजिद्विजराजप्रतिसुवरणसहितनाविहितप्रमानहै । सजलसहितअंगविक्रमप्रसंगरंग कोशतेप्रकाशमान धीरजानिधानहै ॥ दीनकोदयालप्रतिभटनिकोशालकरै कीरतिकोप्रतिपालजानतजहानहै । जानहैविलीनहूवै दूनीकेदानदेखिरामचन्द्रजूकोदान किधौंकैरामकृपान है ४० ॥

रामचन्द्रजी को दान है किधौं कृपान तरवारि है श्रीराम-चन्द्रजी के दानको देखिकै दूनी कहिये दुनियां संसार ताके दान विलीनह्वैकै छपिजात हैं दानकैसो है प्रथमहीं पहिले प्र-योगियतु है दीजियतु है बाजी अश्व द्विजराज ब्राह्मण में औ

अथ ताको पीछे औरानिको दीजियतु है फेरि सुवर्ण सहित हैं नचिह्नितको अर्थनहींकियोहै प्रमाणजाको दानदेनेको प्रमाण नहीं फेरि दान सजलहैं संकल्प के लिये जललीजियेहैं सजल जाको अंगहै जल विना आछो नहीं है किंवा हितप्रीति सों जाहिदान जाको अंगहै सहित अंगमें विष्णुप्रीति दानकरत हैं राजनि के विक्रम पराक्रम के प्रस्ताव में रंगशोभा है जैसे युद्धवीर शोभा तैसे दानवीर शोभा है जो याचक माथो मांगे तो माथोदेइ सो दानवीरविक्रमबिनादान नहींहोय फेरि कोश भंडार ते प्रकाशमानहैं इहां दानको अर्थदेनो औ जोवस्तु दीजिये सोभीदान धीरजविधान जेपुरुषहैं तेकोशते प्रकाशमान करतहैं प्रतिभट वरोवरिके दाता किंवा शत्रु ताको शालकरै है कृपानकैसीहै पहिले प्रयोगियतुहै पहिलेमिलाइयेहै तरवारको काहूके अंगसों योगकरियेहै मारियेहै यहअर्थवाजीअश्व द्विज क्षत्रिय तिनके राजनिसों फेरि तरवार सुवरण है सुन्दर जो वर्ण रंग सो जामेंहै तरवार एतने शत्रुपै चलाइये यह प्रमाण नहीं कियो है किंवा तरवार को नाम निस्त्रिंश है निस्त्रिंशको अर्थ तीस आंगुलीसों अधिकहो अधिक केतनो यह प्रमाण नहीं कियो है फेरि कृपाण सजल है जलपानिपजामेंहै फेरि अंग मूठि तासहितहै किंवा सहित याको अर्थ हितको अर्थ धारण औ सको अर्थ विद्यमान अंग कटि औ हाथ ताहिविषे विद्यमानहै धारण जाको फेरि विक्रम पराक्रमको जाको प्रसंग चरचा है युद्ध वीरनिको फलाना गढ़ ऐसे मारियै ताको रंग शोभा किंवा चाहतको करति है किंवा रंग प्यार चढ़ावति है रंगनाम प्रीतिको भी है हरिसों रंगलाग्यो प्रीति जानियेकोश म्यान तासों प्रकाश मान होतहै जाहिसों क्षत्रिय धीरजको पावतहैं हमारे पास तरवारि है शत्रु आवेगो तो मारैंगे धीरजको नियान अतिशय करधारण रणमें जासों होतहै किंवा धीरज निकरिके बहुत धीरजनिसों जाको रणमें धार ग्रहणहै

दीन इहां कायर प्रति भट योद्धा इहां क्रिया प्रयोगियतु वह दानसों औ कृपाणसों लागी फल विरुद्ध। दान प्राणको पोषै है तरवार प्राणको करपैहै एक क्रियासों बहुतको अन्वय होय श्लेषही में होय यह नियम नहीं विना श्लेष भी होय यही लक्षण जानिये ४० ॥

(अथविरुद्धक्रिया) सवैया ॥ कलुकाहूसुनोंकलबोलतकोकिलकामकीकीरतिगावतसी । पुनिवातिकहैकलभाषिनिकामिनिकेलिकलांनिपढ़ावतिसी ॥ मुनिवाजतिवीनप्रवीननवीनसुरागहियेउपजावतिसी । कहिकेशवदासप्रकासविलाससवैवनशोभवढ़ावतिसी ४१ ॥

कल अव्यक्त मधुर मधुर भाषिनि कामिनी वातें कहतिहै सो केलि कलानिको मानौं वढ़ावति है नवीन नयोराग प्रेम वाको मानौं उपजावति है प्रकाश जो विलास तामों मानौं वनकी शोभा को वढ़ावतिहै इहां क्रिया जुदी जुदी है कोकिलको वोलवो औ केलि कलाको पढ़ाइवो औ वीणाको वाजिवो फल जो है वनकी शोभा वढ़ाइवो सो एक है जुदी जुदी क्रियानिको जहां वहुत करें फल एक होय ऐसो याको लक्षण जानिये कोई प्राचीन ग्रंथको मत है नवीन के मतमें मनुक्तास्पदवस्तूत्प्रेक्षा एक शब्द में अर्थ अनेक सो श्लेष काहूनो कल अव्यक्त मधुर कोकिल वोलति है वन जो घर ताकीशोभा वढ़ावति है मानों हेमभें वन नाम घरको औ जलको औ वनको भाषा में कला चतुराई को भी कहतहैं कल भाषिनि कला चतुराई की वोलनिवाली है प्रवीण तुम पराये मनोरथ औ चेष्टा ताको जानतहो ऐसे लगाइये ४१ ॥

(अथविरुद्धकर्म) कवित्त ॥ दोऊजनगवन्ततेजवन्तवलवन्तअतिदुहुनिकीवेदनिवखानीवातऐसीहै । दोऊ

जानेंपुण्यपापदुहुनकेऋषिवापदुहुनिकी देखियतमूरति सुदेसीहै ॥ सुनोदेवदेवबलदेवकामदेवप्रियकेशौराय कीसौंतुमकहोजैसीतैसीहै । वारुणीकोरागहोतसूरजक रतअस्तउदोद्विजराजकोजुहोतयहकैसीहै ४२ ॥

दोऊ सूर्य चन्द्रमा भगवान्‌हैं हेममें भगवान् नाम इतनी वस्तुनको सूर्य औ ज्ञान औ माहात्म्य औ यश औ वैराग्य औ मुक्ति औ रूप औ वीर्य औ प्रयत्न औ इच्छा औ श्री औ धर्म औ ऐश्वर्य चन्द्रमामें श्रीशोभाहै याते भगवान् सूर्यको पिता कश्यपऋषि चन्द्रमाको पिता अत्रिऋषि कोईकहतहै हेकाम-देवप्रिय हेदेवदेव हे श्रीबलदेव तुमसुनौं तुम वारुणी मदिरा को जानतहौ वारुणी नाम पश्चिमदिशाको रागहोतही उप-जतही सूरजको अस्तहोतहै सूर्यदेखिवेमें नहींआवतहैं दूसरो अर्थ मदिराको रागप्रेम होतही सूरअस्त होतहैं नाशकोप्राप्त होतहैं औ पश्चिमदिशा में चन्द्रमाको उदयहोत है श्लेष में द्विजराज ब्राह्मणको राजा चन्द्रमा ताको वारुणी मदिरा के रागसों क्योंकरि उदय ऐश्वर्य को प्राप्तिहोय यहकहौ ब्राह्मण को उदय न प्रकाश यह विरुद्धकर्म उदयमें श्लेष वचनहैं त्रि-भिर्विप्राविनश्यंति हालाहलहलाहलैः तीनिवस्तुकरि ब्राह्मण को नाशहोतहै हालामदिरा औ हल के चलाये औ हलाहल विष ताको साधनाकिये ४२ ॥

(अथनियम) कवित्त ॥ वैरीगायब्राह्मणकोकालैसव कालजहांकविकुलहीकोसुवरणहरकाजहै । गुरुसेजगा मीएकबालकैविलोकियतुमातंगनिहींको मतवारेकोसो साजहै ॥ आरिनगरीनप्रतिकरतअगम्यागौनदुर्गनिहीं केशौदासदुर्गतसीआजहै । राजादशरथसुतराजाराम चन्द्रतुमाचिराचिरराजकरौजाकोऐसोराजहै ४३ ॥

जहां एकअर्थसों दूसरोअर्थ निकरै सो औ नियमहोय यह याको लक्षण सुवरणमें दुर्गतिमें शब्दसों दो अर्थनिकरै औ नियम याको नहीं औ दूसरो अर्थ निकरै है सो उदाहरण है हे श्रीरामचन्द्र तुम चिरचिर बहुत बहुतकाल राजकरो जो तुम्हारो यातरहको राज्य है जाहि राज्य में गाय ब्राह्मण को वैरी सदा एककाल है आयुर्बल घटै एकयम वैरी हैं औरवीर नहीं यहअर्थ अर्थमें सों निकरयो कविही सुवरणकोहरेहैं और नहीं इहांभी अर्थमें सों अर्थनिकरयो सुवरणसोना औ अक्षर सो याको उदाहरण नहींजाहि शत्रुकी नगरीप्रति कोई राजा नहींजाइसक्यो याते अगम्यागमन लंकाआदि तहां तुमगौन करतहौ और ठौर अगम्या गौननहीं यह नियम कियो दुर्गति में श्लेष दुखसोंजानो औ नरक ऐसे जानों ४३ ॥

(अथविरोधीश्लेष) सवैया ॥ कृष्णहरैहरयेहरैसम्प तिशम्भुविपत्तिइहैंअधिकाई । जातककामअकामनि कोहितघातककामसुकामसुहाई ॥ छातीमेंलक्षिदुरावत वेतौफिरावतयेसबकेसंगधाई । यद्यपिकेशवएकतऊह रितेहरसेवककोसतभाई ४४॥

हरयेहरैं याकोअर्थ धीरे धीरे सम्पतिको हरतहैं शम्भु वि- पत्तिको हरत हैं फेरि काम जाको जातकपुत्रहै औ जे काम जे पुरुषहैं जो कामना नहींकरत हैं तिनको औ जो निःकामकहे स्त्री विषयक कामनहींराखैं तिनके हितहैं शम्भुकामके घातक हैं सकाम जेहैं कामनाकरिकै भजत हैं तिनके सहायकर्ता हैं वे भगवान लक्ष्मी को छाती में छपावत हैं ये महादेव पार्वती लक्ष्मीको वरदानकरि सबके संगमें फिरावत हैं जो भी हरि हरात्मकरूप एकहैं तौभी हरमहादेव को हरिते सेवकभक्तिनि सत्यभावहै अच्छा भावहै सुभाव और स्वरूप एकहै जो हरि

फेरं सो हरनहींकरतहैं यहविरोध दोयाविरुद्ध अर्थमिले हैं याते श्लेष एकशब्द के दोयअर्थ सोनहीं लक्ष्मीको अर्थ रमा औ संपत्ति याते इहां श्लेषनहीं ४४ ॥

(अथसूक्ष्मालंकार) दो० ॥ कौनहुंभावप्रभावतेजानेंजियकीबात ॥ इंगिततेआकारतेकहिसूक्षमअवदात ४५ ॥

कोई क्रिया के प्रभाव सामर्थ्यते जीवकी बात जानीजाय इंगित चेष्टाते क्रियाते आकार स्वरूपते ऐसी सूरतिबनावै जो मनकीबात जानीजाय अवदात शुद्धतहां सूक्ष्मालंकार ४५ ॥

(यथारसिकप्रियायां) सवैया॥साखिसोहतगोपसभामहिगोविंदवैठेहुतेद्युतिकोधरिकै । जनुकेशवपूरणचन्द्रलसैचितचारुचकोरनिकोहरिकै ॥ तिनकोउलटोकरिआनिदियोकेहुंनीरजनीरनयोभरिकै । कहिकाहेतेनेकुनिहारिमनोहरफेरिदियोकलिकाकरिकै ४६ ॥

चारुता सुन्दर तासों मुखकी शोभा ते चन्द्रमासों मुख है याते चकोरनिके चित्तको हरिकै वैठेहुते कहूं चित्तचाइ चकोरनिको यहभीपाठहै चकोरनिके चित्तकी चाहको किंवा चारु आछे जे चकोरहैं तिनके चित्तहरिकै चुरायकै जो परायेकेमन की बात जानिजाय ताको चकोर कहतहैं चकोर जेहैं नजरिबाज तिनने भी इनकी क्रियाको नहींजान्यो वेभी इनकेमुख की शोभादेखि थकिरहे कलीकरिफेरिदियो नीचोमुखकिये हैं नायकाकी आंखिते नवीनआंशू आयेहैं जब तुम्हारे संगमेंथीं तब नाहींथो कमल जबकलीहोयगो मुद्रितहोयगो रात्रिसमय तब मिलेंगे नायका ने कमल पठायो या क्रियासों नायक ने विरहजान्यों नायक ने कलीकरि पठायो नायका ने रात्रिविषे मिलनजान्यों यहक्रियाको उदाहरण है ४६ ॥

(अथलेशालंकार) दो० ॥ चतुराईकेलेशतेचतुर नसमुझतलेश ॥ वरणतकविकोविदसवैताकोकेशव लेश ४७ ॥

चतुराई के लेशते जहां थोरीचतुराई की क्रियाविषे जाने चतुरलोग थोरो भी समुझि नहींसकें सो लेशालंकार ४७ ॥

सवैया ॥ खेलतहैंहरिवागेवनेजहांवैठीप्रियारतिते अतिलोनी । केशवकैसेहूपीठिभैंदीठिपरीकुचकुंकुमकी रुचिरौनी ॥ मातसमीपदुराइभलेतिनसात्त्विकभावनि कीगतिहौनी । धूरिकपूरकीपूरिविलोचनसूंघिसरोजन्ह ओढ़िओढ़ौनी ४८ ॥

लोनी लावण्ययुक्त दीठिकैसीहै कुचपरलगायो जो कुंकुम केसरि ताकी रुचिकांतिते रमनीयहै कुच कुंकुमकहेसों पीरी केशरिलीजिये औ कुचकेरंगसों अतिपीन होनीकोअर्थ होनी हुई जे कपूरकी धूरिसों आंशूछिपायो कोईसूंघिके कमलआदि तव माथो हलायकै सराहहै क्या अच्छाहै याने कंपारोमहू छपायो मोढ़नी ओढ़े रोमांचहितको नहींदेखनोहोय ताहिये हितकी दृष्टिपरै तौभी खबरि परिजाय यह प्रेमसंबरणीनद तीर चलावै प्रवीण अंधेरीरातिमें औ तीर कान्हको लागै नो नीर- दाजकोखबरिपरैहै गुरुजननेनहींसमझी नायका दीठिनारि ४८॥

(अथनिदर्शना) दो० ॥ कौनहुंएकप्रकारतेसतअस रुअसतसमान ॥ करियेप्रकटनिदर्शनासमुझतसकल सुजान ४९ ॥

कोई एकप्रकार ते भेद ते किंवा सादृश्यते कोई प्रकारहू ते यहअर्थ सत्अच्छा असत्बुरा याको समान तुल्य करिये कुवलयानन्द के मतपर भाषाभूषण ताको यहलक्षण है जहां

असत् सत्को करै क्रियाहीतौं उपदेश क्रियाकरि असतवस्तु औ सत्वस्तु को बुझावैं रविसोंनाशितमवोधई जगतविरोधी नाश यहअसत् को उदाहरण रविसों नष्टह्वैकै अन्धकार लोकनिको समुझावतहै जो जगत विरोधीहोय ताको नाशहोय सत्को उदाहरण जतवतफलनिजवृद्धिको करिहितकुमुदप्रकाश चन्द आपनीवृद्धिको फलजतावैहै । लोकनिकी जोवृद्धि कहियेतो हितकोभलोकरै इहां कवित्वमें दोऊबातकहीहैं४६॥

कवित्त ॥ तेईकरैंचिरराजराजानिमेंराजेराजातिनहीं केलोकलोकलोकनअटतुहै । जीवनजनमातिनहींकेधन्य केशोदासऔरनकेपशुनिज्योंदिननिघटतुहै ॥ तेईप्रभु परमप्रसिद्धपुहमीकेपति तिनहींकीप्रभुप्रभुताईकोरटतु है । सूरजसमानसोमामित्रहूअमित्रकहूंसुखदुखआपने उदैहीप्रगटतुहै ५० ॥

जो राजा मित्रको औ अमित्र शत्रुको आपने उदयमें ऐश्वर्य बढ़तमें सुखदुखको प्रगटकरैहै मित्रकोसुखदेत यहअच्छी बात है औ अमित्रको दुखदेत है जो आपनो उदयहोय तौ मित्रको सुखदीजिये अमित्रको दुखदीजिये सूर्य चन्द्रमा यह लोगनिको समुझावे हैं ऐसो अर्थकिये कुवलयानन्द के मत सों मिल्यो जो राजा ऐसोकरै ताको लोक लोक में लोकनाम यश श्लोकनाम यश श्लोक औ पद्यको भाषामें लोककहे सो नहींममानहै यह भलोफल जो ऐसो नाहींकरतहैं ताको पशु को लेखोदिन घटतु हे बीततहै बुरोफल ५० ॥

(अथऊर्जालंकार) दो० ॥ तजैननिजहंकारकोयद्य पिघटैसहाय ॥ ऊर्जनामतासोंकहैंकेशवकविकविराय ॥ सवैया ॥ कोवपुराजोमिल्योहैविभीषणह्वैकुलदूषणजी वैगोकौलौं । कुम्भकरन्नमरयोमघवारिपुतोरुकहानडरौं

यमसौलौं ॥ श्रीरघुनाथकेगातानिसुन्दरिजानहुतकुश लातनतौलौं । शालसवैदिगपालनिकोकररावणकेकर वालहैजौलौं ५१ ॥

याको नाम ऊर्जस्वति है लक्षणयाको अब नवीनग्रंथ में रसको औ भावको अंग तहांरस औ भाव तहांहोय सो ऊर्जस्वति जानिये इहां केशव को कियोलक्षणनहींहै लक्षण अलंकारको नत जैसो ऊर्जालंकारको वपुराइनि रावणको वचन मन्दोदरीसों हे सुन्दरि मघवा रिपु मेघनाद मार्यो तो कहा भयो तुम मतिडरो एकरामजी शत्रुहोयमार्येहैं जो तो कहिंग सैकरन यमआवैं तहांताई मतिडरो जबताई रावण के हाथ में करवाल तरवार है इहां कुम्भकर्ण मेघनाद को नाशभयो तौभी रावण को अहंकार नहींगयो ऐसे लोग कहत हैं किंवा वीररस को अंगरौद्ररस भयो यह जानिये ५१ ॥

(अथरसवतअलंकार) दो० ॥ रसमयहोयसुजानि येरसवतकेशवदास ॥ नवरसकोसंक्षेपहीसमुझोकरन प्रकास ५२ ॥

रस औ भाव जाको अंगरसहोय तहां रसवत रसवतजानि जहांवातरसभरीहोय ५२ ॥

(अथशृंगार) सवैया ॥ आननिहारीनआनकहींन नमेंकलुआननआनहींकैसो । केशवकाहूसुजानन्जान नजायकह्योमनजानतुजैसो ॥ लोचनशा नहिंमैतनजा तसमातसिहातअघातनतैसो । ज्योंनरहातविहातकहूं बलिजातसुवातकहांनेकवैसो ५३ ॥

नायका नायकसों अनुरागसहित कहति है किन्तु मन शपथहै तुमसों और हमारेप्रियनहीं जाकोशपथ करों याको स्थायी भावहै न आन अन्यथा औरतरह नहीं कहतिहूं सांच

कहतिहै तुम्हारे तन शरीरमें औ आननमुखमें आनहीं केसो औरहीतरह को प्रकाशहै तुम सुजान प्रवीणहौ हमारे मनकी वात जानतहौ यहवचन अनुभाव जैसो तुम्हारो स्वरूप को मन जानत है तैसो कह्यो नहींजातहै जब कहिबे लागियतुहै तव स्वरभंग होतहै सात्विक औ लाज आवति है यहसंचारी नायकवचन हमारे लोचन तुम्हारी शोभाको पीवतहैं औ तुम्हारी शोभा में पैठतजातहैं औ सिहातहैं धवा हम ऐसोरूप पियो जेतनो बहुत पीवतहैं तैसो तृप्त नहींहोतहैं हर्ष संचारी दूनोंमें नायकावचन जो हमैं विहात छोड़तके नहींरहात नहीं रहाय तुम्हारीवलिजातहौं नेकुबैठो वचनकहो तुम्हैंहम कबहीं नहींछोड़ंगे केतने रस संचारी तुल्य शृंगारसदाकोरस यहपुष्ट भयो नायका नायक आलम्बन विभाव इहां लालसाभी संचारी एकांतस्थल उद्दीपन विभाव अनुभाव सात्विक संचारी सवामिल्योरस भयो ५३ ॥

(अथवीररस रामचंद्रचंद्रिकामें) छप्पय ॥ जिहिशरमधुमदमर्दिमहासुरमर्दनकीनो । मारयोकर्कशनरकशंखहनिशंखसुलीनो ॥ निष्कंटकसुरकटककस्योकैटभवपुखंड्यो । खरदूषणात्रिशिराकबन्धतरुखंडविहंड्यो ॥ कुम्भकरणजिनमदहरयउपलनप्रतिज्ञातेटरयउ । तिहिवाणप्राणदशकंठकेकंठदशौखंडितकरयउ ५४ ॥

हेममंथरनाम जलकोभीहै मधुदैत्यको वाणसों नहींमारयो दुर्गामें कथा है जिन भगवान् जल में मधुदैत्यको मधु ताको मर्दिमारि यहअर्थ मुरकोभी मारयो कर्कश कठोर नरकासुर को मारयो शंखासुर को मारिकै पांचजन्य शंखलीनो सुर देवननकी कटक सैन्य ताको निःकंटक करयो तरुयमलार्जुन तिनवालकपने में खंडटूककियो तारिकै तिनभगवान् ने वाण सों दशकण्ठ रावण के कण्ठ खंडितकिये प्राणलियो जानिये

खरतके कायरतानहींल्याये उत्साहस्थायी भगवान औ असुर आलम्बन पलनप्रतिज्ञा ते टरयो यामें जो निकरें सो निकारिये शरीर वीररसभयो याको कोई रौद्ररसको उदाहरणकहैं हैं सो भ्रम सों इहांकोप नहींभासैहै ५४ ॥

(अथरौद्ररस) छप्पय ॥ करिआदित्यअदृष्टनष्ट्यमकरौंअष्टवसु । रुद्रनिबोरिसमुद्रकरौंगंधर्वसर्वपसु ॥ वलितअबेरकुबेरवलिहिगहिदेउँइंद्रअव । विद्याधरनिअविद्यकरौंविनासिद्धिसिद्धसव ॥ लैकरौंआदितिकीदासिदितिअनिलअनलमिलिजाहिजल । सुनिसूरजसूरजउगतहीकरौंअसुरसंसारसव ५५ ॥

सूर्यको अवतार सुग्रीवहैं तिनसों श्रीरामचन्द्रजीके वचन हे सूर्य सुग्रीव तू सुनि सूर्य के उगतकै संसार को वलसों जो रावरी सो असुरकरों असुरको अर्थ नाहींहै सुर देवता जाविषे ऐसोकरौं असत यहभीपाठहै जो नाहीं कर्तव्य सो करौं संसारमें यमको औ आठवसु हैं तिनको नष्टकरों गंधर्वनिको पशु वकराकरौं मारिवे के लिये वलित अबेर कहिये सत्वार वलित कहिये युक्त सम्भार संयुक्त यत्नसों यहअर्थ कुबेर को औ वालिको पकरिकै इन्द्रकोदेउँ अबेर कोई वरुणको कहतहैं अविद्यमान करौं मारौं यहअर्थ सिद्धनि को सिद्धिहीन करौं अनिल पौन अनिल अग्नि ये जल में मिलिजाहिं ऐसो करौं कोपस्थायी उग्रता संचारीवचन अनुभाव रावणविभाव सीताजीसों वियोगमें प्रलापई निरपराध देवतनिको नाहिं इत्यादि संचारी ५५ ॥

(अथकरुणारस) सवैया ॥ दूरतेदुंदुभिदीहधुनीन गुनीजनुपुंजकीगुंजनगाढ़ी । तोरणतूरणतूरवजैवरनाचतभाटनगावतठाढ़ी ॥ विप्रनमंगलमंत्रपढ़ैअतदूखैनवा

रवब्रढिगठाढ़ी । केशवतातकेगातउतारातिआरतिआ रतिमातहिवाढ़ी ५८ ॥

जब दशरथजीदेहछोड़ी पाछे भरतजी मामाकेघरते आये तेहि प्रसंग को कवित्तहै पुंजसमूह गुंजशब्द तोरण वाहिरको दरवाजा तूरणकहिये सिताबी सो तूरनगारा नहींवाजैहैं विप्र मंगल मंत्र नहींपढेहैं औ वारवधू वेश्या भी ढिगनजीकठाढ़ी नहींदेखतहैं वेश्यादरशन पयानमें पुरप्रवेश में मंगलकारी है पुत्रको भी तातकहतहैं तातभरतजी के गात आरती केकयी जी करतीहैं आरतिपीड़ाबाढ़ी दशरथजी देहछोड़ी याते किंवा माताको विधवादेखि भरतजीको पीड़ाबाढ़ी दुन्दुभीआदिको अभावदीपन इष्टदशरथजीको नाश ताते शोकस्थायी करुणा रस ऐसे जानिये ५८ ॥

(अथभयानकरस) सवैया ॥ रामकिवामजुल्यायेचु रायसुलंकमेंमीचाकिबेलिवईजू । क्योंरणजीतहुगेतिन सोंजिनकीधनुरेखननाखीगईजू । वीसाविसेवलवंतहुते जोहुतीदृगकेशवरूपरईजू । तोरिशरासनशंकरकोपिय सीयस्वयम्वरक्योंनलईजू ५७ ॥

मंदोदरीको वचन रावणसों लंकामें मीच मृत्यु की बेली लता सीतारूप बोई हैं श्रीलक्ष्मणजी धनुषसों रेखाकरि श्री सीताजीको राखिगयेसो रेखा नाखी दूरकरी नहीं गई बाहिर जब निकरीं तब हरी कहूं लाँघिगई यह भी पाठ है वीसवि- स्वा तुम बलवंतही थे हुतीदृग केशव रूपरई याको अर्थ औ श्रीसीताजी तुम्हारे दृगमें सौंदर्यसों रई रमीथी लगीथी सीता विभाव वचन अनुभाव भय स्थायी मंदोदरीको भया- नक रस स्त्री बालक नीच याको भयानक रस होतहै किंवा तटस्थ को ५७ ॥

(पुनः) वालिवलीनवंच्योपरखोरिसुक्योंवचिहोंनम कोनिजखोरहि । केशवक्षीरसमुद्रमथ्योकहिकेमनवांधि हैंसागरथोरहि ॥ श्रीरघुनाथगनोंअसमर्थनदेखिविना रथहाथिहिघोरहि । तोरयोशरासनशंकरकोजिहिशोच कदातुवलंकनतोरहि ५८ ॥

मंदोदरी वचन पर जो सुग्रीव ताकी खोर खोट अपराध कियो वाकी स्त्री हरी तुमको तो निज आपनी श्रीरघुनाथजी की खोर खोट अपराध कियो है श्रीरघुनाथजी को असमर्थ मति जानें मंदोदरी को भयानक रस किंवा या वात सुनि श्रोतनि को होतहैं ५८ ॥

(वीभत्सरस) पद्मावतीछन्द ॥ सिगरेनरनायकअ सुरविनायकराक्सपतिहियहारिगये । काहूनउठायोअ रुनवढ़ायोटरयोनटारेभीतभये ॥ इनराजकुमारनअ तिसुकुमारनलैआयेसवलाजभरे । व्रतभंगहमारोभयो तुम्हारोऋषितपतेजनजानिपरे ५९ ॥

विश्वामित्रसों जनकजीको वचन सव जे नरनायक राजा औ असुरनि के विनायक राजा सरदार राक्षस पति रावण हे ऋषि हमारो व्रतभंगभयो औ तुम्हारो तपस्या को तेज जान्यो नहीं गयो येवालक तुम्हारे तपस्याके तेजने नोगहि नो नोरहि कोई प्राचीन ग्रंथमें ऐसो भी निंदात्मक वीभत्सहै वालकनि देखि जनकजी को ग्लानि ये धनुषको कहा उठावहिंगे ५९ ॥

(अथअद्भुत) कवित्त ॥ आसीविषसिंधुविषपावक सोंनातोताकोहुतोप्रह्लादसोंपिताकोप्रेमकूटयोहै । द्रोप दीकीदेहमेंखुथीही कहादुःशासनखरोईखिसानोंगेंचिच सननछूटयोहै ॥ पेटमेंपरीक्षितकीपैठिकैअचाइनीचजन

सबहीकोबलाविधिबानलूटयोहै । केशवअनाथनिकोना
थजोनरघुनाथहाथीकहाहाथकोहथ्यारकरिलूटयोहै ६०

अनाथनिको नाथ रघुनाथ जो न बचावे तो नहीं बचे रघु
नाथहीने इन सबकी रक्षाकरी है प्रह्लादसों जब पिता हिर-
ण्यकशिपुको नेह घूटयो कहे घटयो जब कोपकियो तब आ-
सीविष जो सांप तासों कटायो औ फेरि सिंधु विष जो हला-
हल सो दियो औ आगिमेंडारयो प्रह्लादको इति सबसों कलु
नानाथो जो बच्यो प्रभुने रक्षाकीन्ही द्रौपदी की देहमें खुथी
नाम थातीथरी जो वस्तु काहूको माल सौंपिये सो खुथी कहा
धरीथी प्रभु सहायकरी अश्वत्थामाके चलाये ब्रह्मास्त्रने सब
ईको बल हरयो प्रभुने रक्षाकरी गजको जब ग्राहने पकरयो
तब प्रभु छोड़ायो प्रह्लाद नहीं मरयो द्रौपदी को चीर क्यों
करि बढयो यह विस्मयते अद्भुतरसभयो ६० ॥

(पुनः) केशौदासवेदविधिसाथहीवनाईव्याधशवरी
कोकोनेशुचिसंहितासिखाईहै । वेषधारीहरिवेषदेख्यो
हैअशेषजगतारकाकोकौनेशिखतारकपढ़ाईहै ॥ बारा
णसीबारनकरयोहैकहूंबसवास गणिकाकबहुंमणिकर्णि
कान्हाईहै । पतितानिपावनकरतजोननन्दपूतपूतनाक
बहिंपतिदेवताकहाईहै ६१ ॥

भगवान्ने वेदकीविधि सो साथही बनाईहै साथही बनाई
है अर्थ सहित बनाईहै निरर्थक नहीं बनाई है सो पवित्रहोय
ब्राह्मणहोय यज्ञादिकको करै सो मुक्तिहोय यह वेद विधि है
तो व्याध औ शवरी मुक्तभई इन्हें शुचिकी संहिता ग्रंथको-
नने सिखाईहै यह विस्मय एक राजाने भगवान्को वेषबना-
योथो वाको कार्य भगवान् ने सिद्धकियो वेषधारी जो हरि
भयोथो ताको वेष स्वांग अशेष संपूर्ण जगत्ने देख्यो पद है

नृप कन्याके कारणे इकभयो वेपधारी काम लब्ध पाये उनको वाकी पैज संधारी। वेपधारीको काज सिद्ध होय याते विस्मय इहां तटस्थ देखनवालेको अद्भुनरस औ वेपधारी को भी भयो कहूं कर्त्ताको कहूं अनुकर्त्ताको कहूं तटस्थको समझोन्ह नारका राक्षसी ताको कौन शिष्यकरि तारक मंत्र पढ़ाई है जिस तारक मंत्रकी सीख शिक्षा ऐसे जपिये यह कौन ने पढ़ाई है पूतना कव पतिव्रता कहाईथी गणिका कवहिं पतिव्रता कहा- ईथी पूतना कवहिं मणिकर्णिका नहाई ऐसो भी पाटहे नंद- लालने पवित्रकियो ऐसे लोगनको मुक्ति यह विस्मय अद्भुत रस है ६१ ॥

(अथहास्य) सवैया ॥ वैठतिहैंतिनमेंहठिकैजिनको तुमसोंगातिप्रेमपगीहै । जानतिहौंनलरा नदनेनोकीहृन कथारसरंगरंगीहै ॥ पूजैगीसाधसबैसुखकीननलागको केशवज्योतिजगीहै । भेदकीवातसुनेतेकछूवहमालकत मुसक्यानलगीहै ६२ ॥

नायकसों दूती वचन प्रेमकी गति क्रियाकरि तुमसों जो प्रेमसों पगीहैं तिनमें वैठतिहै तुमसों अनुराग रंगी जिस व्याह दमयंती को अनुराग भयो उद्दीपन मुसक्यानि में हास्य रस ६२ ॥

(अथशांत) सवैया ॥ देइगोजीवनिवृत्तिवहैप्रभुहै सगरेजगकोजिनदैये । आवतज्योंअनउद्यमतेसुखत्यों दुखपूरवकेकृतपैये ॥ राजऔरंकसुराजकरोमनकाहेको केशवकाहूडरैये । मारनिहारउवारनिहारसुतोसबकेसि रऊपरहैये ६३ ॥

वहु जो प्रभुहै सो जीवनिकी वृत्ति जीविका सो देइगो सगरे जगको दैहै देतहै पूरब के कृत कर्म राजा औ रंक दरिद्र सब

राजकरो याको अर्थ जब धरयोरहे हमें कोई काम नहीं काहू को कोई ताहूको डरावेगो मांगेगो तो हम नाहीं देहिंगे इत्यादि उर इहां जगतसों निर्वेद शांत रस किंवा शांति ६३ ॥

(अथअर्थांतरन्यास) दो० ॥ औरआनियेअर्थजहँऔरवस्तुबखानि ॥ अर्थान्तरकोन्यासयहचारप्रकारसुजानि ६४ ॥

जहां और अर्थ को बखान कथन होय ताको पुष्टकरिवेके लिये औरही अर्थ आनिये चारि भेद अर्थांतर न्यासहैं ६४ ॥

(यथा) सवैया ॥ भोरेहूंभौंहचढाइचितैडरपाइयेकैमनक्योंहूंकरेरो । ताकोतोकेशवकोरहियेदुखहोतमहासुकहोइतहेरो ॥ कैसोहैतेरोहियोहरिमेंरहिऔरैनहींतनछूटतमेरो । बूंदकदूधकोमारयोहैबांधिसुजानतिहौंमाईजायोनतेरो ६५ ॥

श्रीयशोदाजीसों कोई ब्रजदेवीकी उक्ति मनको कोईतरह करेरो कठोरकरि जो भोलयसौ उरमाइयेतो ताको दुखहोत है हमारीओर देखै हरिको ऐसो बांध्योहै तेरेहियो मन कैसो है हरिमें हरिविषे जान्योंनहींजातहै रहितू औठिरहि वाले मति मेरो छोरयो तनु थोरो भी नहीं छूटत है ऐसो गाढ़ो बांध्योहै याते तेरीप्रीति हरिविषे नहींहै या बातको पुष्टकरिवे के लिये कह्यो तेरो जायो नहींहै तू जनमायो नहीं है ६५ ॥

(अथभेद) दो० ॥ युक्तअयुक्तबखानियेऔरअयुक्तायुक्त ॥ केशवदासविचारियेचौथोयुक्तायुक्त ६६ ॥

चारिभेद कहतहैं एकयुक्त १ दूसरो अयुक्त २ तीसरो अयुक्तयुक्त ३ चौथोयुक्तायुक्त ४ । ६६ ॥

(अथयुक्तलक्षणं) दो० ॥ जैसोजहांजुबूझियेतै

सोतहांसुआनि ॥ रूपशीलगुणयुक्तिवर्णमेंयुक्तवखा
नि ६७ ॥

रूप औ शील औगुण जहां केवल युक्तिसों ठहराइये सो
युक्त ६७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ गरुवोगुरुकोदोपदूपितकलंकक
रिभूपितनिशाचरीनिअंकलिभरतहैं । चंडकरमण्डलतें
लैलैतौप्रचण्डकरकेशौदासप्रतिमासमाननिभरतहैं ॥
विपधरबन्धुहैअनाथनिकोप्रतिबन्ध विपकोविशेपबन्धु
हियोहहरतहैं । कमलनयनकीसौंकमलनयनमेरचन्द्र
मुखिचन्द्रमातेन्यायहीजरतहैं ६८ ॥

विरहिनीको वचन सखीसों कमलनयन पुण्डरीकाक्षभग-
वान् तिनकी शपथ हमारे जे कमलनेत्रहैं सो चन्द्रमासों जरत
हैं सो न्याययुक्त है चन्द्रकैसोहै गरुवोकहिये भारी है यही है
यहअर्थ गुरुजोबृहस्पति तिनसोंकियो जो दोपअपराध तासों
दूषित है बृहस्पतिकी स्त्री चन्द्रमाने हरी चन्द्रमा सों बुध उ-
त्पन्न भयो औ कलंकसों भूषितहै कलंकभरयो है यहअर्थ [illegible]
में निशाचरीनाम व्यभिचारिणीकोभीहै अंकनाम [illegible]
पापको भी निशाचरी व्यभिचारिणी ताको पाप [illegible]
धरत है यहअर्थ रात्रिमें व्यभिचार होत है किंवा निशाचरी
राक्षसी ताको अंकभरतहैं छुवत हैं फेरि चंडकर सूर्य तिनके
मण्डल ते प्रचण्ड जो करकिरण तिनको लैलैके जो [illegible]
नामहीनासें निकरत हैं अमावस के दिन चन्द्रमा सो सूर्य
एकत्ररहे हैं फेरि चन्द्रमा शीघ्रगति [illegible] चन्द्रमा
में सूर्यकी किरण हैं सूर्यकी किरण चोरिलिआवै है [illegible]
को तापकरत है चोरहै औ दुःखदायी है विषधर [illegible]
बन्धुहितहै यातेभी दुखदायीहै अनाथनाहीहै [illegible]

ऐसी जो विरहिणी ताको प्रतिबन्धु दुखदायी है विष औ चं-द्रमा मनमथ ने उत्पन्न भयेहैं याते विशेषकरिबन्धुहै यासों हृदय हरै है कन्दै है कलंकयुक्त है युक्तिसों रूपकह्यो फेरि सूर्य के किरणकरि यामें प्रकाशहै यहप्रकाशहीन श्यामहै यहभी रूप कह्यो सूर्यकी किरण चोरिकै भाजैहै याते स्वभावकह्यो जाहि देखे हृदयडरै है यहगुण ऐसो औरभीकाढ़िये भीलपक्ष याको लगावन हैं भील कैसे हैं गरुवोगुरु जो ब्राह्मणआदि तासों कियो जो दोष लूट्यो मारयो तासों दूषित हैं औ कलंकपाप तिन्हिसों भरेहैं निशाचरी भीलनी चण्डतीव्र असह्यहैं कर सं-इल ताते प्रचण्ड जोरावर तासों वन में कर दण्ड लैकै प्रति मास मास २ प्रतिमांस लेलेके बेंचिबे के लिये वनमें निरत हैं भीलके रूप शील औगुणकह्यो ६८ ॥

(अयुक्तअलंकार) दो० ॥ जैसोजहांनबूझियेतैसो तहांजुहोय॥केशवदासअयुक्तकहिवरणतहैंसबकोय६९

जैसो जहां नहींचाहिये तैसो वर्णनहोयपै आछोलागै६९॥

(यथा) कवित्त ॥ केशौदासहोतिमारासिरीयेसुमार सिरीआरसीलैदेखिदेहएसीयेहैंरावरी । अमलवतासे ऐसेललितकपोलतेरे अधरतमोलधरैदगतिलचावरी ॥ एहीछविछकिजातवनमेंछबीलेलाल लोचनगवाँरछीन लेहइतआवरी । वारवारवरजतिवारवारजातिकतमैले वारवारोंआनिवारीहैतूबावरी ७० ॥

मारकाम ताकी श्रीशोभा सो सुमार श्रीहोतिहै जो घावसों न बचै सो सुमार सखी नायकासों कहति है ऐसी तुम्हारी शोभा है कामकी शोभाको मोहनकरैहै ऐसो जो कह्यो चा-हिये सुमारकरिबो नहींचाहिये किंवा रति की शोभा स्त्री के गणनमें लज्जितहोति है चाहिये कामकी नहीं चाहिये सुख

आरसीलैं देखि ऐसो चाहिये कपोलकी उपमा चनामा नहीं चाहिये मुखतमोलधरेचाहिये अधरमें पानकोरंग चाहिये नेत्र में श्यामता श्वेतता है सो तिलचावरहैं यह भी नहींचाहिये तेरे नेत्र गवाँरलोग जे हैं ते आनिलेहिंगे यह भी नहीं चाहिये मैं वारवार तोको वरजतिहौं तू वारिवारि जातहै इनको मेंन धार मलिनदिन में शनिश्चर औ अमावस्या ऐसे दिननें में आनिके तोपे वारिडारतिहौं किंवा वाराआननकिया कन्यान हैं नायका कवहीं वाहिरनिकरीनाहीं ताको सखी अचकचाइ कहि रोकतिहै सखीकी अज्ञानता नायकाके रूपकीहानि नहीं याते इहां अन्धपन्थ विरोधी दोष नहींमानतहैं जैसे चावरमें तिलदेखिपरै ऐसे इहां अलंकारकी प्रतीति होतिहै यद्यपि कोई नास्तिक के किये अलंकार है ताको मतहै अपने मनमें तो दोषही है ७० ॥

(अथअयुक्तयुक्त) दो० ॥ अशुभैशुभह्वैजातजहँ क्योंहूंकेशवदास ॥ इहैअयुक्तैयुक्तकविवरणतवुद्धिविलास ७१ ॥

पहिले अयुक्त अयोग्य कहे पीछे युक्तकहे ७२ ॥

(यथा) सवैया ॥ पातकहानिपितासंगहारिनगर्भकेशूलनितेडरियेजू । तालनिकोवंधवोवधरोरकोनाथकनाथचिताजरियेजू ॥ पत्रफटैतेकटैऋणकेशवकैसेहूतीरथमेंमरियेजू । नीकीसदालगैगारिदगैनकोटाइनलोनुगयाभरियेजू ७२ ॥

हानि आछीनाहीं पर पापकी होय तो आछी हारि आछी नाहीं है पिताके संग में होय तो आछी प्रथम में गर्भमें शूल चलैहै तासों डरनहीं तलावको वांधिवो और दरिद्रनाहीं वध आयुर्वलको कागदफाटे सो आछोनहीं ऋणको कागद फाटै

सो आछो पाप के सम्भोग ते तो पापकी हानि आछी ७२ ॥

(यथा) सवैया ॥ आगेह्वैलीबोइहैजुचितैइतचौंकिउतैंदृगपैंचिलईहैं । मानिवेकोवहईप्रतिउत्तरमानियेवातनुमौनमईहै॥रोषकीरेखवहैरसकोरुखकाहेकोकेशवछोंड़िदईहै।नाहिंयेहांतुमनाहींसुनीयहनारिनईनकीरीतिनईहै ७३ ॥

इहां नायकाकीओर चितैके फेरि चौंकिकै फेरि और और को नेत्रखैचिलेनो यह क्रियासों मानौं नायकको आगे है ले आवनोहै बड़ो आदरसों लेआवनो है कोई बात नायक कहै ताको प्रतिउत्तर जवाब मानिये बात सुनिकै मौनगहै तौ जानिये मानिलीनी रोष क्रोधको जतावै ऐसी जो रेखा भौंह के बीचमें त्रिवली करनी सोई रसकीतरह हैं सूधी बातको काहे को विश्वासते छांड़िदीन्हों है यह नहीं जानी जाति है किंवा अक्षरको औ हे अक्षर को छांड़िदीनी है हे प्रिय का कहतहो ऐसे नहीं बोलति हैं नाहीं कहना सो इहां स्वीकार है नजरि फेरिवो आदिअशुभ अयोग्यहै सो सब आछोलागतिहै ७३ ॥

(अथयुक्तअयुक्त) दो० ॥ इष्टैवातअनिष्टजहँकैसेहूह्वैजाय॥सोईयुक्तायुक्तकहिवरणतकविसुखपाय ७४॥

इष्ट जहां अनिष्टहोय ७४ ॥

(यथारसिकप्रियायां) सवैया॥ शूलसेफूलसुवासकुवाससीभाकसीसेभयेभौनसभागे । केशववागमहावनसोजुरसीचढ़ीजोह्नसवैअँगदागे ॥ नेहलग्योउरनाहरसोनिशिनाहघरीककहूंअनुरागे । गारीसेगीतविरीविपसीसिगरेहीशिगारअँगारसेलागे ७५ ॥

जो भागभरे थे अनेक सामग्री सों जो रचना जामें थी

जोन्ह चांदनी देखे ज्वरसीचढ़ीहै औ तन अंगनि में दागन है विरह में फूलइत्यादि इष्टहित हैं सो अनिष्टभये ७५ ॥

(पुनः) सवैया ॥ पापकिसिद्धिसदाऋणकीवृद्धिमृकीरतिआपनीआपकहीकी । दुःखकोदानजुसूतकन्हानजुदासीकिसंततिसंततफीकी ॥ बेटीकोभूषणभोजनरांडकोकेशवप्रीतिसदापरतीकी । युद्धमेंलाजदयाअरिकोअरुब्राह्मणजातिसोंजीतिननीकी ७६ ॥

सिद्धिइष्ट है पापकी सिद्धिहोय तो अनिष्ट दान आछो है पै दुख में ग्रहशांति के लिये दीजिये सो आछो नहीं ऐसे जानिये ७६ ॥

(व्यतिरेक) दो० ॥ तामेंआनभेदकछु होइजुवस्तु समान ॥ सोव्यतिरेकदुभांतिकेयुक्तिसहजपरमान ७७ ॥

जोवस्तु समान बराबरिहोय तामें भेदल्यावे एकयुक्ति व्यतिरेक दूसरो सहज व्यतिरेक ७७ ॥

(युक्तिव्यतिरेक) कवित्त ॥ सुन्दरसुखदअतिअमलसकलविधिसदलसफलबहुसरसमंगीतनों । विविधनवासयुतकेशौदासआसपालराजैद्विजराजतनपरमपुनीतसों ॥ फूलेईरहतदोऊदीबेहूकोभतिपालदेनकामनानिसबमीतहूअभीतसों । लोचनवचनगताबिनइतनोईभेदइंद्रतरुवरअरुइंद्रइंद्रजीतसों ७८ ॥

इंद्र तरुवर कल्पवृक्ष औ इंद्रजीत तासों इतनोई भेद है कल्पवृक्ष में लोचन नहीं है औ वचन नहीं है पांवोंते नहीं जड़ है याते अगत बिना है इंद्रजीत में लोचन आदि सब हैं इंद्रतरु कैसो है सुन्दरहै सुखद है अति अमल निर्मल है सन्तत क्रिया करिके दल पत्र औ बहुत फूल हैं जामें सरस

वेश है संगीत को अर्थ संग कहिये सुख ताके गीत गानसों लोक सुखदायक कहत हैं याते वेश जानिये अनेक तरह के गंधयुत हैं फूल के औ फलके औ पत्रके गंध जाके आसपास पक्षिराज गरुड़ ताको परम पवित्र तन शरीर तासों राजत हैं इंद्रतरु औ इंद्रजीत दोऊ देनेको फूले रहत हैं वृक्ष तौ फूल सहित इंद्रजीत फूल्यो सानंद रहतहैं प्रतिपल कामनाकोदेत हैं मीत सोभी तैसो औ याचक अमीतहोय ताहूसों भी तैसो किंवा के याके अर्थमें सोहै मीतहूको अमीतहूको देत है ऐसे जानिये इंद्रजीत केसोहै जतने प्रजाके सुखद राजाहैं तिनमें यह सुंदरहै आछोहै फेरि सबजे विधिक्रिया स्नान दान यजन इत्यादि करिकै अमल निर्मल हैं फेरि दल सेना ताहि सहित हैं फल कहिये लाभ ताहि सहितहैं सदा जाको राजाकरदेत हैं फेरि संगीत शास्त्रसों बहुत अनुराग युक्त हैं फेरि अनेक तरह के सुंदरवास वस्त्र तासों युक्तहैं फेरि आसपास द्विजरा-ज ब्राह्मण श्रेष्ठ शोभत हैं फेरि परम पवित्र तन शरीरसों राजत हैं ७८ ॥

(सहजव्यतिरेक) सवैया ॥ गायबराबरिधामसबैध नजातिबराबरिहीचलिआई ।केशवकंसदिवानपितानि बराबरिहीपहिरावनिपाई॥बैसबराबरिदीपतिदेहबराव रिहीविधिबुद्धिबड़ाई । येअलिआजुहीहोहुंगीकैसबड़ी तुमआंखिनहींकीबड़ाई ७९ ॥

नायकासों सखी वचन धाम घर बराबरि जैसो घर बड़ो श्रीवृषभानुजी को तैसोई श्रीनंदजी को और सब धन संपति बराबरि औ कंसको दीवान सभा तहां तुम्हारे औ श्रीकृष्ण के पिताने बराबरि पहिरावनि शिरोपावँ पाई विधि क्रिया विवाहादि उत्सव में जैसो दान उपदान वृषभानुजी कियोहै तसोई नंदजी कियो है आंखिकी बड़ाई आंखि तुम्हारी बड़ी

है तासों बड़ी क्योंकरि होहुगी आंखि बड़ी है इतनो भेद यह श्लेष आदि युक्ति देखकरि नहीं कह्यो [illegible] नायक की आंखिके प्रमाणसों तुम्हारी आंखि [illegible] बड़ो है ७६ ॥

(अथअपह्नुति) दो० ॥ मनकीबस्तुदुरायनुख औरै कहियेबात ॥ कहतअपह्नुतिसकलकवि यासोंबुधिअवदात ८० ॥

मनकी बात तो दुराइये मुहसों और बात कहिये ८० ॥

कवित्त ॥ सुंदरललितगतिबलितसुबासअतिसरस सुवृत्तिमतिमेरेमनमानीहै। अमलअदूपितसुभूषितल[illegible]पितसुवरणहरणमनसुरसुखदानीहै ॥ अंगअंगनीकोभावगूढभावकेप्रभावजानैकोसुभावरूपपविपहिचानीहै । केशवदासदेवीकोऊदेखी तुमनाहींराजप्रगटप्रवीणराय जूकीयहबानीहै ८१ ॥

कोई आपनी सखीसों पूछैहै तुम कोई देवी देखी [illegible] नायका कहतिहै हे राज यह प्रवीणराय की बानी है [illegible] पतिको कहतिहै देवी कैसीहै सुंदरिहै औ ललित [illegible] स्वर्गादि प्राप्तिहै याते सुबास सुंदर जो बास [illegible] अति बलित युक्त है औ सरसहै अधिक [illegible] औ मतिहै जाकी फेरि अमलहै औ [illegible] दोष नहीं कह्योहै सुंदर भूषणनसों भूषितहै औ [illegible] वर्ण रंगहै मनको हरणवाली है सुर [illegible] अंगअंग के तरह तरह के गूढगुन जो भाव [illegible] प्रभावशक्ति ऐसी चेष्टाकरैहै तो याके मनमें बात [illegible] करैगो मनोरथकी जाननवाली है [illegible] आत्मारूप है जाको पचिकै महत्तपस्या करिकै [illegible]

पहिचानीहै प्रवीणरायकी वाणी कैसीहै सुन्दर है औ ललित जो राग प्रातसमय को ललितादि सबराग जानिये ऐसो पीछे भी कहिआये हैं ताकी जो गतिलेने की क्रिया तासों वलित है युक्त है वाणी औ अतिजामें सुवासु सुगन्ध है बोलै है तब सुगन्धआवैहै मुखतें सो वचनमें ठहरायो फेरि सरसरसीलीहै फेरि सुन्दर जो वृतछन्द सो कहिवेमें मतिइच्छाहै जाकीमति इच्छाको भी नाम है आछीतरह छन्दही में बोलिये फेरि अमल साफहैं अदूषित दोपरहित जे सुभूषण उपमारूपकआदि जे अलंकार तासों भूषित हैं सुन्दरजे वरण अक्षर जे मनको हरें सोहै जामें ऐसे जे स्वर निषाद ऋषभआदि तासों करि सुखकी दाताहे अंगकहिये सहित इन्द्रजीत तिनको अंग के गूढ़गुण जे भाव मनकी वृत्ति ताके जो प्रभाव उत्कर्ष प्रौढ़ मनोरथ ताको जानिवे को सुभाव है जाको इन्द्रजीतकी या मरजीहै या वातको कहति है फेरि हृदयको भाव अभिप्राय रूप है जो कछु काहूके हृदयमें उपजै सो कहतहैं या वातको पचिकै पहिचानी है कहूं भाव रुचि यहभी पाठ है हृदय में जैसो भाव उपजै तैसोई मुखपै कांति होय क्रोध हर्ष आदि मुखपै जान्यो जात है ताको पचिकै असरम कर आछीतरह विचारिकै पहिचानति है कहिदेतिहै अव ऐसी मरजीहै ८१॥

कवित्त ॥ कारेसटकारेकेशलोनीकछुहोनीवैससोनेते सलोनीद्युतिदेखियततनकी । आछेआछेलोचनचितव निओंचलनिआछीमुखमुखकवितावमोहैमतिमनकी ॥ केशवदासकेहूंभागपाइयजो वागगाहिसासानिउसासैंसा थपूजैरातिरनकी।वेटीकाहूगोपकीविलोकीप्यारेनंदलाल नाहीलोललोचननिवेड़वावेड़पनकी ८२ ॥

इतिश्रीकेशवदासविरचितायांकविप्रियायामे कादशःप्रभावः ११ ॥

पहिले नायक ने तारीफकरी सो ऊपरी काह्नेसुनिलीनी तासों नायक छपावैहै अपह्नुतिकोअर्थ छपावनो है प्यारे नंद-लाल तुम काह्नगोप की बेटी बिलोकी है बड़पनकी बहुतना-रीफ की तारीफमाफिक यहअर्थ पननामस्तुतिकोभी है नायक कहतहै हे लोल लोचनि चंचल नैनि बड़वा घोड़ी बड़पनकी बड़ेमोलकी देखीहै गोपसुता कैसी है कारे औ सटकारे चढ़ा उतार के ऊपर कछु मोटे नीचेपतले ऐसे केश हैं जाके लोनी सुन्दर कछूको अर्थ अनिर्वचनीयकही न जाय ऐसी होनवाली बैस है जाकी औ सोनेते सलोनी लावण्यभरी चमकनी यह अर्थ तनकी द्युतिदेखियतहै औ सुखदायक जाको मुख है औ कवितासों मनकीमतिको मोहतिहै किंवा मनको औ मतिको और वक्त है कोई भाग्यसों जो वाको बागडोरी तामें गहिपा-इये पकरिलीजिये तो वाके जे सुगन्ध श्वास हैं ताके उसासें चलै सो तौ रतिरूप जो रण ताकी साथपूजे बड़ापक्ष हाथ सटकारे जाके केशवार हैं औ लोनी आछी है वयक्रम करि कछु आगे होनिहारहै फेरि सोनेते सलोनी चम्पारंगकी है जिन लगाम ताकरि मुखसों सुखदेतहै मुखजोर नहीं है किंवा च-लन आछी सुखकी है रहवालचलै है औ मुख चिपे जो करि ताविच क्षणता प्रवीणता बागके इशारासों दौरै है चलै है खड़ीहोतिहै ऐंड़ाचाबुकको कामनहीं याते मनकी मति कहा चाह ताको बिमोहै है विशेषकरि लुभावनारी है मननाह जो जलदहोय मनचाहै तो धीरी होय कवितानाम हन में बिच-क्षणकोभी कह्योहै जैसेमुहसंग घोड़ाकहतहैं घोड़ापशु नाम भूठि कहाजानै तैसे विचक्षणता ठहराई है याको जो बाग पकरिपाइये तो सासनि उसासैं जयताई सोलनमें एक लोम में तुरत यहअर्थ रणकी जो रति प्रीति ताकी साथपूजे तुरत जीतिहोय यहअर्थ ग्यारहयें प्रभावमें एननंकहे कसाल्हेहार १ गणना २ आशिष ३ प्रिय ४ श्लेष ५ अभिलपदश्लेष ६ नि-

ञ्नवद्दश्लेष ७ उपनाश्लेष ८ अभिन्नक्रियश्लेष ९ विरुद्धक्रिय श्लेष १० नियमधर्मा ११ नियम १२ विरोधी १३ सूक्ष्म १४ लेश १५ निदर्शना १६ ऊर्जस्वित १७ रसवत १८ शृंगार-रस १९ रौद्र २० वीर २१ करुणा २२ भयानक २३ वीभ-त्स २४ अद्भुत २५ हास्य २६ शांत २७ अर्थांतरन्यास २८ युक्त २९ अयुक्त ३० अयुक्तयुक्त ३१ युक्तायुक्त ३२ युक्तव्य-तिरेक ३३ सहजव्यतिरेक ३४ अपह्नुति ३५ अलंकाररस सब मिलि पैंतीस कहे ३५ ॥ ८१ ॥

इतिश्रीहरिचरणकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायांकविप्रिया टीकायामेकादशप्रभावः ११ ॥

(अथयुक्तिअलंकार) दो०॥ बुद्धिविवेकअनेकबल उपजतनर्कअपार॥ तासोंकविकुलयुक्तिकहि वर्णतअमित प्रकार १ (युक्तिभेदकथनं) दो०॥ वक्रअन्यव्यधिकरणक हि औरविशेषसमान॥ सहितसहोक्तिमेंकही उक्तिसुपंच प्रमान २ (वक्रोक्तिलक्षण) दो०॥ केशवसूधीबातमें बरण तटेढ़ोभाव ॥ वक्रोक्तितासोंकहत सहासवैकविराव ३॥

बुद्धिके विवेक विचार ते बहुततर्क उपजत है ताको नाम युक्ति १ एक वक्रोक्ति दूसरी अन्योक्ति तीसरी व्यधिकरण उक्ति चौथी विशेषोक्ति पांचई सहोक्ति, २ सूधी बात में टेढ़ो भाव आशय ३ ॥

(यथारसिकप्रियायां) सवैया ॥ ज्योंज्योंहुलाससोंकेश वदासविलासनिवासहियेअवरेख्यो । त्योंत्योंबढ़ोउरकंप कछूभ्रमभीतभयोकिधोंशीतविशेख्यो ॥ मुद्रितहोतसखी वरहीमेरनैनसरोजनिसांचकैलेख्यो । तेजुकह्योमुखमोह नकोअरविंदसोहैसोतोचंदसोदेख्यो ४ ॥

खंडिताको वचन सखीसों विलास निवास नायकको ... जामें अनेकतरह के विलास हैं वक्रकथन में परन्तो विलास निवास है हियहमारो मनने अवरेख्यो लक्षित कियो उर में कम्पा सात्त्विक सो इहां क्रोधसों जानियें वक्रता नेत्र कमल शीतल हैं सो तातें भय यहसूधीबात चन्द्रमासों अतिप्रकाश है जाकी सूधीबात है कलंकित यह वक्रता ४ ॥

(अन्योक्ति) दो० ॥ औरहिप्रतिजुबखानिये कछुऔर कीबात ॥ अन्यउक्तियहकहतहैं बरणतकविनअबात ५ ॥

और प्रति औरसों कहिये कछु औरकीबात औरकी ... कृत ५ ॥

(यथा) सवैया ॥ दलदेख्योनहींजड़जाड़ोवड़ोअरु घामघनोजलक्योंहरिहै । कहिकेशववायुवहैदिनदावदहै धरधीरजक्योंधरिहै ॥ फलहैंफुलनाहिंकितौलोंनुहींकहि तोपहिभूखसहीपरिहै । कछुआंहनहींसुखसोमनहींकहि कीरकरीरकहाकरिहै ६ ॥

सम्पतिहीन राजाको कोई सेवन है ताहि सुनाउँ करीर वृक्षपै बैठ्योहै शुक तासों कहत हैं सम्पूर्णराजसों ... सम्पत्तिहीनको नहींसेइये करीरको भाषामें ... बहुतहैं रे जड़मूर्ख शुक दलपातदेख्योनहींहै यातें याते ... बहुतलागिहै वायुपौनके वहै बनमें लागिलागे ... में डाढ़ाकहत हैं दावकेदहेसों दिनकहिये विपाति ... तुम्हारो शरीर धीरज क्योंकरि धरि है ... फलैगो नाहीं ६ ॥

(यथा) अंगअलीधरियेअंगिराटनआजुनगौनन आवनदीजै । जानतहौंजियतातसखीनकेलाजनहूं ... साथनदीजै ॥ थोरहियोसतखेलततेअलगीउनसोंनिहं

देग्वनजींजें । नाहकेनेहकेमामिलेआपनीछाहँहुकीपरतीतिनकीजें ७ ॥

नायकसों छपिके प्यारकरिआई है सखी ताहि सुनायके अन्यसम्भोग दुःखिता कहतिहै हे अली अंगियारूपभी सखी उननायक के लिये उननायकपास जातकै तौ ताहूको अंगपै नहींधरिये औ निद्रारूप सखीको आजुते आवने नहींदीजिये औ हमारे जीवसों अंगिया औ नींद सखी हैं तिनको हमसों जैसो नाता सम्बन्धहै सो मैं जानतिहों लाजहू सखीकोसाथ नहींलीजिये थोड़हीदिनते तेऊ वे अंगियाआदि सखी हमारे जीवसों खेलनलागी हैं हमारे प्राणको खिलौनाकियोहै जिन्हैं देखि हमजीवती हैं यककहतिहै मामिला व्यवहार ७ ॥

(व्यधिकरनोक्ति)दो० ॥औरहिमेंकीजैप्रगट औरहिकोगुणदोष॥उक्तिइहैव्याधिकरनकीसुनतहोयसंतोष८॥

और के गुण दोष और में प्रगटकीजै ८ ॥

(यथा)कवित्त॥जानुकटिनाभिकूलकंठपीठभुजमूलउरजकरजरेखरेखीबहुभांतिहै।दलितकपोलरदललितअधररुचिरसनारसनिरसरसमेंरिसातिहै॥लेटिलेटिलोटपोटलपटातिवीचवीचहांहांहूहूं नेतिनेतिवाणीहोतिजातिहै । आलिंगनअंगअंगपीड़ियतुपद्मिनीके सौतिनके अंगअंगपीड़ानिपिरातिहै ९ ॥

आलिंगन में अंगअंग पद्मिनीके पीड़ियतुहै वह जो पीड़ा नायकके मसलिबेसों है सो सौतिनके अंगमें पिरातिहै दुखातिहै नाभीके नजदीक करजनख ताकी रेखासों रेखहै उरही है रददांत सों कपोल दलित मर्दितहैं फेरि रदसों दलित जो अधरतामें ललित रुचि है रसना जीभ सो रसको आस्वादन

करतिहै नेति नेति यहमतिकरै नायका के अंगपीड़नदोपनै सौतिनको पीड़ादोष जानिये ९ ॥

(यथा)कवित्त ॥ राजभारसाजभारलाजभारभूमिभारभवभारजयभारनीकेहीअटतुहौ। प्रेमभारपनभारकेशवसंपत्तिभारपतिभारयुतअतियुद्धनिजटतुहैं ॥ दानभारमानभारसकलसयानभार भागभारभागभारघटनाघटतुहैं ।एतेभारफूलनिज्योंराजैराजारामशिरातिहिदुखशत्रुनकेशीरषफटतुहैं १० ॥

भार अख्तियार औ बोझा साज सरंजाम पन प्रतिज्ञा पतिभार सबमें पतिहो किंवा प्रतिष्ठा या बानसों यक दोयके युद्धनिसों जूटतहैं भाग्यके भारको जो घटना क्रिया ताहि करैहैं भार राजारामसिंह बांधवके शिरपैहै ताके दुखसों शत्रुनके शीर्षमाथा सो फाटतहैं इहां रामसिंहके गुणनसों शत्रुनके शीश फाटिबो दोष या उदाहरणमें संदेह शीश फाटिबेको कारण सो राजापै है शीश फाटिबो कार्य शत्रुन बिषै है असंगति भासैहै यातेगुणते दोषको उदाहरण साफ है न१०॥

(यथा) सवैया॥पूतभयोदशरत्थकोकेशवदेवनकेघरबाजबधाई। फूलिकैफूलनकोबरषंतरुफूलफलैनचहौमुखदाई॥क्षीरवहीसरितासबभूतलधीरसमीरसुगन्धसुहाई।सर्वसुलोकलुटावतदेखिकेदारिदकेहृदरारम्भोवाई ११

सरिता क्षीरवही भूतल तरहटी को नाम है उसी हेमकी तटमें भी वही गुणते दरिद्रको देह फटिबो दोष ११ ॥

(विशेषोक्ति)दो० ॥ विद्यमानकारणसकलकारजहोइनासिद्ध॥सोईउक्तिविशेषमयकेशवपरमप्रसिद्ध १२ ॥

कारण हेतुसों जहां रहै १२ ॥

सवैया॥कर्णसेदुष्टतपुष्टहुतेभटपापसोपुष्टनशासनटारे । मोदरसैनदुशासनसंसबसाथसमर्थभुजाउसकारे ॥ हाथीहजारनकेबलकेशवखैंचिथकेपटकोडरडारे ।द्रौपदिकोदुर्योधनपैतिलअंगतऊउघरयोनउघारे १३॥

पापसों,अतिपुष्टहुतेशासनआज्ञा दुश्शासन सरीपे भाइन की सेनाथीं औ उनके संगमें समर्थ लोगथे भुजाको उसकारे हे उसकाय है वस्त्र खैंचिबेको डरडारे निडरहायके कर्णआदि अंग उघारिबेके कारणहैं अंगउघारिबो कार्य नहीं भयो १३॥

(रसिकप्रियायां)कवित्त॥ सिखैहारीसखीडरपायहारी कादंबिनीदामिनीदिखायहारीदिशिअधिरातिकी । झुकि२हारीरतिमार२हारिउमारहारीझकझोरतित्रिविधगतिबातकी॥दईनिरदईदईवाहिऐसीकाहेमतिजारतजुरैनदिनदाहऐसेगातकी।कैसेहूंनमानैहोंमनायहारीकेशवदासबोलिहारीकोकिलाबुलायहारीचातकी १४॥

सखी वचन नायकसों कादंबिनी मेघमालादिशा जाहि ओर नायक है रतिप्रीति कपटि झपटि हारी सखी नायकसों कहतिहै दैव विधाता निर्दय है वाहि ऐसी आकी बुद्धिसरीषी बुद्धि तुम्हें काहेको दईहै दीन्हीहै तुम मनावतहो नाहीं तुमभी रूठि बैठेहो नायकसों उराहने को वचन यह भी मिलापकराइबेको अनुकूल है ऐसी गातकी ऐसे सुकुमार गातकी जो है नायका ताको विरह में उपजी है दाह सो राति दिन जारति है दाह भी मान छुड़ाइबेको अनुकूल कारण है कोई कहतहै सखी कहतहै विधातासों वाहि नायकाको ऐसी निर्दयमति काहेको दीन्हीहै निर्दयमति मान हठकरिबेको कारणहै तहां ऐसे लगावतहैं या नायकाको विधाताने निर्दयी

मति दीन्हीहै ऐसे नायकसों नेहथो जो मोनिके दिनमें आ नायकसों मिलि आवनी सो वृद्धि आजु नहीं है १४ ॥

सवैया ॥ कर्मक्रियाद्विजद्रोणनहींतिनकोपनकाहूमें जायनटारयो।भीमगदाहिधरैधनुअर्जुनयुद्धजुरे निनमें यसहारयो ॥ केशवदासपितामहभीपममीचकरीदशहू दिशिचारयो । देखतहीतिनकेदुर्योधनकोपदमानुहुँहा थपसारयो १५ ॥

कृपाचार्य कहूं कृत ऐसो पाठहै जिनको कियो भीषमपि-तामहने मीचमृत्यु औ चारिहु दिशाको यश कियो तिन दे देखतकै ये सब दुर्योधनके रोकिबे के कारण हैं रोकिबो नहीं भयो १५ ॥

सवैया ॥ वेईहैंबानविधाननिधानअनेकचमू जिन ज्ञो रहईजू । वेईहैंबाहुवहैधनुधीरजदीहदिशा जिनय जई जू॥वेईहैंअर्जुनआननहींजगमेंयशकीजिनवेलि दे खतहीतिनकेतवकावनितीकहिनारिहिनाद १६ ॥

बाणको जो विधान चलाइबेकी क्रिया ताके निधान इहां जानिये चमू सेना हईमारी कायाजाति शिखि छीतरह बिनामारे बिना घायलभये ऐसो अर्जुन को कारण है रक्षा नहीं भई १६ ॥

(सहोक्ति)दो० ॥ हानिवृद्धिशुभअशुभकछु द्ध प्रकास॥होयसहोक्तिसुसाथहीवरणतकेशवदास १७॥

जहां संयोग होय तहां १७ ॥

(यथा) कवित्त ॥ शिशुतासहितमईमंदगति निगुणनिसोंवलितललितगतिपाईहै।मोहनि डीहैगईकुटिलअतितेरीवाणीमेरीरानीसुनत

शवदासनुखहामहीमिखैहीकटितट क्षणक्षणसूक्षमक्षी णताविलाईहै । वारबुद्धिवालनिकेसाथहीवढीहैवीरकुच निकेसाथहीमकुचउरआईहै १८ ॥

गति जो चंचलथी सो शिशुता समेत मंदभई शिशुता की भी हानि भई ताके संग गतिकी चंचलताकी भी हानि भई यह गूढ़ ध्वनिमें निकरयो हानि अशुभहै औ लोचन में गुणनिसों युक्त ललित गति पाईहैइहां वृद्धि कही है गुण भी आये ललित गति पाई है शब्दहीसों अगूढ़ है शुभ है मुखके हासकी हीसिखैं यासों वालक बुद्धिथो सो वारनि के साथ वढ़ी १८ ॥

(अथ व्याजस्तुतिनिंदा) दो० ॥ स्तुतिनिंदामिस होतजहं स्तुतिमिसनिंदाजानि ॥ व्याजस्तुतिनिंदावहै केशवदासवखानि १९ ॥

निंदा के मिसकरि अथवा छलकरि स्तुतिकरै औ स्तुतिके छलकरि निंदाकरै १९ ॥

(स्तुतिकेव्याजकरिनिंदा रसिकप्रियायां) कवित्त ॥ शीतलहू हीतलतुम्हारेनवसतिवहतुमनतजतातिलता कोउरनापगेहु । आपनोज्योंहीरासोपरायेहाथव्रजनाथ देकैतोअकाथसाथमैनऐसोमनलेहु ॥ एतेपरकेशवदास तुम्हैंनमवाहिवाहिवहै जकलागीभागीभूखसुखभूल्योगे हु । माञ्योमुहञ्चाज्योक्रिनक्षलनिक्षवीलेलालऐसीतोग रिनसोंतुमहींनिवाहोंनेहु २० ॥

हे छवीलेलाल ऐसी गवाँरिनिसों तुमहीं प्रीतिनिवाहतहौ गवाँरि पदसों नायकाकी निंदाकरतिहै औ नायककीस्तुति निकरतहै औ याहीमें नायकाकी स्तुतिकरैहै नायककीनिंदा

निकरन है शीतल जो तुम्हरो हृदय तामें वह नायका नाहीं बसतहै यह नायकाकी निंदा आधी ठौरमें नाहीं कहनि है नायककी स्तुतिहै नायकाको हृदय विरहसों तमकहनें यह प्रीति समुझतिहै तुम्हारे विरह नाहीं व्यापन कठोर हृदय हौ नायकाकी स्तुति नायककी निंदा गूढ़ है नायककी स्तुति नायकाकी निंदा प्रकाश है तुम निज थोरो औ याको नाय को घर हृदय ताको नाहीं जानतहौ तुम तामें ठौरमें बसत हौ नायककी स्तुति नायकाकी निंदा प्रकाश तुम्हें यह सुम्भ-तिहै नाहीं हृदयमें राखनिहै तुम ऐसे निश्चय याके पास जाते नहीं नायका स्तुति नायककी निंदा आपनो जीव ही-रा सो बहु मोल अकाथ निरर्थक ताके साथ मोल सर्गाथो-रो मोलको तुमहीं सो सतपुरुष लेतहै फिरि तुम्हारो मन हीरा सो कठोर वाको मन मोम सो कोमल तुम हीरा सो अमो-लिकदियो मोमको लियो या बातको तुम्हें परवाह नहीं या नायकाको वह लकलागीहै हमारो मनगयो तुमपरवारो । यह निंदा है वाकी आसक्तिहै यह स्तुति यह ऐसे तुम भूलें तुम नहीं भूले इहां प्रकाश बरु तुम तो याको सुगंध चंदनसों मारयो भूषितकियो या नायका ने एक क्षण न छा-ही छाड़्यो भाजिगई नायकाकी निंदा नायककी स्तुति और वाने आपनो मुख मंडितकियो शृंगार साजि तुमसों मिलिबे को आईथी किंवा तुम एक दिन याको मैं मायो केसरि आदिसों तोभी भीतरसों छल नहीं छाड़्यो याको छाड़िके तुम चलेगये छल नहीं छांड़्यो तुम छलीनिंदा यहां सुन्दरी स्तुति फेरि देखिबेको आछेहो भीतर कपटभरेहो यहां वा-च्यके प्रभावते यह ध्वनि ऐसे जानिये ऐसे सयोगपनसों तुम नेह निवाहतहो इहां स्तुतिके छलसों निंदा नायककी है ।

(यथाव्याजनिंदास्तुति)कवित्त ॥ केसरिकपूर ...तकीगुलाबलालसूंघतनचंपकचमेलीचाहिनोंहै । नि

नकीतूपासवानचूकियेतेश्रासपासठाढ़ीकेशवदासकीनी भयभ्रमभोरीहै ॥ तेरीकौनोकृतकिधौंसहजसुवासहीते वसिगईहरिचितकहूंचोराचोरीहै । सुनहिअचेतआईइ हहैननहींनरुतोसीग्वालगोकुलगोवरहारिथोरीहै २१॥

काल इतनी वस्तु नहीं सूंघतहैं पासवान पासखड़ी रहन वाली स्त्री ताको तू भयसों भ्रमसों भोरीकीनी यह नायक के चितचढ़ी भ्रमसों क्रोधकरे यह भय याके अधीन नायक क्यों भयो यह भ्रम किंवा नायककी इष्ट वस्तुसों आसक्ति छूटी यह कहा दशा भई याते भय तोसों जो आसक्ति नहीं जानी और अनुमान करिवेलागी याते भ्रम कछू ठीक करि नहीं सकी याते भोरी सुकृत पुण्य है अचेत तू सुन नायक पास आई है या कारणते इहां निंदा निकरतिहै स्तुति भी निकर तिहै गोनाम नेत्र सो वरकहियै श्रेष्ठहैं जाके तिनकरिकै हारी मनकी हरनवाली थोरीहै दोय एक हैं किंवा कोई होय तो होय नहीं तो नहीं नायक तोसों अति आसक्तभयो रूप गुण तेरोसो नहीं है उनसों नायक आसक्तहोय तो वड़े घरकी हैं जाकी तोहिं पासवान वूझिये येतेरी सहज सुवास भीहै सुनैहै तू नायकको अचेतकरिवेको मोह उपजाइवेको आईहै मोह संचारी ताको लक्षण अचेतहोनो यह हेत प्रीति तो औरसों नाहीं है सखी माननीसों कहतहै निंदाकी मिसकरि कपटसों स्तुति करति है चमेली तोरीहै याते वरषाऋतु हैं ताहिं वि- ना सब ऋतु के फूलनको नहीं सूंघत है याते काल विरोध नहीं २१ ॥

(यथा) कवित्त॥ जानियेनजाकीमायामोहतिमिलेहू मोहिंएकहाथपुण्यएकपापकोनिवारियै । परदाराप्रियम तमातंगसुताभिगामीनिशिचरकोसोमुखदेखो देहकारि ये ॥ आजलौंअजादिराखैवरदाविनोदभावैयेतैपैअना

थअतिकेशवनिहारिये । राजनिकेराजाछांड़िकीजतुनि लकताहिभीषमसोकहाकहींपुरुषननारिये २२ ॥

युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें शिशुपालको वचन श्रीकृष्ण सों निंदाकरत स्तुति निकरति है जाकी माया कपटसों भिन्न नहींके मोहतिहै जानीनाहीं जातहै एकहाथ याको पुण्यकोहै औ एकहाथ याको पापकोहै लोगनिके देखाइवेके लिये दान करे है फेरि छीनलेत है यावातको निवारिये है नहीं करिये होहूं विचारिये यहभी पाठ है फेरि परदार व्रजदेवी तिन है प्रियहैं फेरि मत्तरहत हैं मातंगसुत अमर में मातंगनाम चं-डालकोहै ताके सुतको अभिगामी है ताके संग फिरतहै याके सामने जातहै कथाहै स्वभक्त डोमको पुत्रथो तासों भगवान् प्रसन्नथे श्रीभागवत को वचन है निरपेक्षहोय मुनिहोय औ शांतहोय सबको बरोबरि देखतोहोय ताके पीछे फिरतिहौं निशिचर राक्षस शरीर श्याम है फेरि आजलों अजनाई धा-राईदिन छोड़ेहोत हैं अज बकराआदि पशु ताको व्रजमेंराखे थाचरावै थावरनि सों जोहै विनोदक्रीड़ा सो जाको भावै है राजनि में कबबैठयो एतेपै याको अर्थ एतना यामें कहिये दोषहै फेरि अतिअनाथ हैं कोई लोगनि को नाथ राजानहीं है लोग भीषमको नपुंसक कहतहैं अथस्तुति आदि भगवान की जोहै माया सो जानीनहीं परति है मिलेपरभी लोगनि देवतनिको भगवान्को दरशन होतहै तोभी मोहनि है भक्-तनको भगवान् मिलतहैं तोभी माया मोहति है श्रीकृष्ण तो सब देखत हैं सब यादव जानत हैं भगवान् कोई नहीं जानै पुण्यकिये स्वर्गहोय पापकिये नरकहोय जाको भगवान् मुक्त कियो चाहत हैं ताको पुण्य पापको निवारण करै जब पुण्य पापजाय तब ब्रह्ममें लीनहोय ऐसो वेदवचन परश्री जो रमा लक्ष्मी ताके प्रियहैं मातंग हाथी ताको सुतगज सो फेरि मत्त

थी हथिनीके संग में लेके सरोवरि में विहार करिबे गयेथो तब ग्राहने पकरयो तब याके अभिगामी सामने गयेथे नि-शिचर चन्द्रमा ताको सो जिनको मुख है देहकारिये याको अर्थ देवता मनुष्य आदि के शरीरको करनवाले हैं अवताईं सो ब्रह्म ब्रह्माआदि जे देवता तिनकी रक्षाकरतहैं फेरि वरद हैं वरके दाता हैं विनोद रासआदि क्रीड़ासो भावत हैं फेरि सुदामासों क्रीड़ाकरी पढ़े है । दाता कौन कौतुकी ऐसो मन्दिर देखि सुदामाभीता । फेरि अति अनाथ हैं जिनको कोई नाथ नहींहै सबके ईश्वर हैं सबके ईश्वरयेहैं किंवा अनाथ जो बैल जाकी नाथमें नाथनाहीं ताको जो विनोद सो जाको भावत है अयोध्या को राजा नग्नजित तिनकी प्रतिज्ञाथी कि सात बैलहैं तिनको जोनाथै ताहीको यह नाग्नजिती कन्या व्याहि देहिं श्रीकृष्णनेनाथे इहां निन्दामें सरस्वतीने स्तुतिकरी २२॥

(अमितलक्षण) दो० ॥ जहांसाधनैंभोगवे साधक कीशुभसिद्धि । अमितनामतासोंकहत जाकीअमित प्रसिद्धि २३ ॥

जासों कार्यकी सिद्धि कीजिये सो साधन २३ ॥

(यथा) सवैया ॥ आननसीकरसीककहाहियतोहि तनेअतिआतुरआई । फीकोभयोमुखहीसुखरागक्यों तेरेपियाबहुवारबकाई ॥ प्रीतमकोपटक्योंपलटयोअ लिकेवलतेरीप्रतीतकोल्याई । केशवनीकेहिनायकसों रमिनायकबातनहींबहराई २४ ॥

नायका अन्य संभोग दुःखिता ताको वचन सखीसों सी-करपसेव कीकणा सीत्कार औ धकधकी सुखही सों मुख में अधरको रंग इहां साधन सखीसों साधक जो नायका ताकी सिद्धि संभोगरूप ताको भोगकियो २४ ॥

सवैया ॥ कोगनैकर्णजगन्माणिमेनृपमाथमेबन्दनरा जनहीको । जानेकोखानकिनेसुलतानमोश्रावोराहाबु दीशाहदिलीको ॥ श्रोड़छेश्रानिजुरयोकमिहिकेशवशाह मधूकुरसोंशकजीको । दोरिकैदूलहरामनराजोनिकरेग्रो श्रपनेशिरकीरतिटीको २५ ॥

जाके संगमें राजनहीं की फौज तहां कर्ण औ जगन्नाथ राजाको कोगनै खान उमराव औ सुलतान बादशाह सब तक शाहसों जाको जीवकी शंका है मधुकरशाह प्रधान निनकी सिद्धि दूलहराम भोगी २५ ॥

(अथपर्यायोक्ति) दो० ॥ कौनहुंएकश्रदृष्टते श्रनहीं कियेजुहोय । सिद्धिश्रापनेइष्टकीपर्यायोक्तिसोय २६ ॥

श्रापने इष्टकी सिद्धि कोई कर्म वशते किया बिना सिद्ध होय २६ ॥

कवित्त ॥ खेलतहीसतरंजश्रलिनमेंश्रापहितहां हरिश्रायेकिधौंकाहूकेबुलायेरी । लागेमिलिखेलनमि लिकैमनहरेहरेदेनलागेदांवश्रापुश्रापुमनभायेरी ॥ उ ठिउठिगईमिसमिसहीजितहितिनहोदवशयेतंहीं रहेछबिछायेरी । चौंकिचौंकितिहिछिणगयेकानी ली जलजसेलोचनजलदसेकेआयेरी २७ ॥

सखीसों सखी बचन श्रापुते तहां आये किधौं काहूके बु लायेआये सबसों मिलिके औ सब के मनसों मि मि २ श्राहिस्ते२ राति करिवेके लिये प्रथम मिलन है जलभरि आये आँशू सात्त्विक भयो नायका के सखी पठाय बुलाई नाहीं प्रहर्षणसों इनको भेद पहिले यतनपीछे यतनबिनासिद्धि इहांपहिले यतननाहीं २७ ।

(अथयुक्ति) दो० ॥ जैसोजाकोबुद्धिबलकहियेतैसो रूप । ताकोकविकुलयुक्तियहबरणतबहुतसरूप २८ ॥

जैसो जैसो जाको बुद्धि औ बल औ रूप होय तैसो कहिये २८ ॥

कवित्त ॥ मदनबदनलेतलाजकोसदनदेखियदपि जगतजीवमोहिवेकोहैंक्षमी। कोटिकोटिचंद्रमानवारिवा रिवारिडारोंजाकेकाजब्रजराजआजलौंहैंसंयमी ॥ केशौदाससबिलासतेरेमुखकोसुवाससखीसुनिआरसहीसार सनिलेरमी । मित्रदेवक्षितिदुर्गदंडदलकोषकुलबलजा केताकेकहौकोनबातकीकमी २९ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांद्वादशःप्रभावः १२ ॥

सखी वचन नायकासों कै देखिकै पायदसों लैआइये तेरो मुखदेखि मदन काम ताको वदन मुख सो लाजको सदनघर ताको लेतहैं लज्जारूप जो घर तामें पैठत है अतिलाज करतु है हमारो मुख ऐसोनाहीं मदन संसारको सुंदरतासों मोहिवेको जोभी समर्थहै कामके मुखकी उपमा स्त्रीकेमुखको कवि नाहीं देतहै याते ऐसो अर्थ लाजको सदन तेरो मुख देखिकै मदनसो वदन कथनसो ग्रहण करत हैं तेरे मुखकी तारीफ करने लागत हैं किंवा वंदननाम नमस्कारको औ स्तुति को भाषामें वंदनको वदनपढ्यो वंदन स्तुतिले चलत हैं जगतको मोहित करत हैं सो अपमोहित होतहै है वारि है थोरेदिनकी कोटि चन्द्रमानको तेरे मुखपै वारि वारि डारों तेरोमुख देखिवेको ब्रजराज आजलों संयमीव्रत लिये हैं वाहीको मुखदेखैं औरको मुख नाहीं देखैं फेरि विलास सहित जो तेरो मुख ताकी जो सुवास सुगन्धहै ताको आरसही सहजही कछुश्रम

नाहीं करनोपरयो सुगन्ध वस्तु ग्वाइये लग सुगन्ध हरने के लिये ऐसो श्रमनहीं करनोपरयो सरस निकसनानि को ग्रहण करिकै रमीहैं वामें रमिगईहैं मिलिगईहैं कमलमें भैर सुगन्धी की सुवासहै किंवा लेशब्द आदि वाचकहैं सामसानिसों [illegible] जेतनी सुगन्धवस्तुहै तामें रमिरहीहै किंवा नागरनि को पेलि पकरिकै जोरावरीसों रमिरहीहै मिलिरहीहै नैर मन्दकी सु-वास कमलनिमेंहै यहअर्थ आगे ऐसी बालनहींथी और कोई बातकी कमी न थी कमल कैसेहैं मित्रसुगंधी जाको देवना है क्षिति जो भूमि सो जाको दुर्गहै कठिन स्थानहै जलमें रहत है याते जल औ वन औ पहाड़की ठौर दुर्ग है [illegible] है नालहै औ दलपत्रहै औ जाको कोशहै कमल [illegible] है औ कुलजाति जाकोहै देनमें बलनास रूप जाको है किंवा कुलको बलहै जाको बहुत कुलहै जैसो कमल है तैसो कहौ दुर्ग आदि पदते ध्वनिमें राजाकह्यो २६ ॥

द्वादशयें प्रभावमें पांचभेद उक्तिके कहे और वक्रोक्ति १ अन्योक्ति २ व्यधिकरणोक्ति ३ विशेषोक्ति ४ सहोक्ति ५ व्याज स्तुति ६ व्याजनिंदा ७ अमित ८ पर्यायोक्ति ९ युक्ति १० ये अलंकार कहे ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायां कविप्रियाभरणाख्यायां कवि-प्रियाटीकायांद्वादशःप्रभावः १२ ॥

(अथसमाहित) दो० ॥ हेतुनक्योंहूंहोत नहंदैवतो गतेकाज ॥ ताहिसमाहितनामकहि बरणतकविशिरताज १ ॥

कोई कारणते कार्यकी सिद्धि नाहीं होय पीछे दैवसंयोग ते होय १ ॥

(यथारसिकप्रियायां) कवित्त ॥ कविमोंकवीन्द्र

भानकीकुवँरिआनुरहीहुतीरूपमद्मानमदछकिकै । मा
रहूतेंनुकुमारनन्दकेकुमारताहिआयेरीझनावनसयानस
बताकिकै ॥ हँसिहँसिसौंहिकरिकरिपायँपरिपरिकेशौराय
कीसौंजबरहेजियजकिकै । ताहीसमैउठेघनघोरघोरदा
मिनीमीलागीलौटिश्यामघनउरसौंलपकिकै २ ॥

सयान चतुराई करिकै जब कछु उपाय नहींचलो तब जकि
रहे आश्चर्य सो मानिरहे घनमेघ गाजिउठे यह उद्दीपनहै
औ तीको भय उपजावत है मुखफेरि सोई थी सो लौटिकै
करवटफेरिकै मेघकी गर्जना सों मानछूट्यो यह दैवयोगहेतु
हँसिबो आदि तासों मान नहींछूट्यो २ ॥

सवैया ॥ सातहुद्वीपनिकेअवनीपतिहारिरहेजियमें
जबजाने । बीसबिसेव्रतभंगभयोसुकह्योअबकेशवको
धनुताने ॥ शोककीआगिलगीपरिपूरणआयगयेघन
श्यामबिहाने । जानकीकेजनकादिककेसबफूलिउठेतरु
पुण्यपुराने ३ ॥

जनकजीने जान्यो कि हमारी प्रतिज्ञाको भंगभयो विहाने
प्रातसमय घनश्याम श्रीरामजी आये पुराने बहुत दिनके जे
पुण्यरूप तरु तेफले याहीते घनश्याम कह्यो मेघसों वृक्ष फू-
लतहैं शोककी आगि घनश्याम सों बुझी राजा सबथे तिन-
सों कार्य नहींभयो श्रीरामजी बिनबुलाये आये यह दैवकर्म्म
को योग ३ ॥

दो० ॥ साधिसाधिऔरैमरैऔरैभोगैंसिद्धि ॥ ता
सोंकहतसुसिद्धिसबजेहंबुद्धिसमृद्धि ४ ॥

करिकरि सञ्चिसञ्चि सिद्धवस्तु और भोगकरैं ४ ॥

सवैया ॥ मूलनसोंफलफूलसबैदलजैसीकछूरसरी

तिचलीजू । भाजनभोजनभूषणभामिनिभौननभरीभन भांतिभलीजू । डासनआसनवासनवासस्वासनयान विमानथलीजू । केशवकैमहाजनलोगमरंभुवभोगनि लैलैवलीजू ५ ॥

मूल जरसों लेके सब फूल औ फल औ दलपत्र जेतो कछु रस औषध ताकी रीतिमें चलीआईहै सोभी सो महाजन राखत हैं महाजन राखनवाले को उपलक्षणहै जो वस्तु हो जो संग्रहकरै सो इहां महाजन जानिये भाजन पात्र अन्न भोजन मेवा मिठाई औ भूषण हैमीमें भवननाम घरको औ नारको भामिनि स्त्रीसों भवननाम कटाक्ष आदि तासों भरीहै त्रिया घरनिमें भरीहै वेश्या औ परकीया भवसंसारमें भलीभांति भवनाम हैममें कल्याण कोभी है कल्याणसों भलीभांति है ताको जोरावर औ भोग करिवेमें जे समर्थहैं ते सबहै भोगवत हैं आसननाम हैमसें हाथीके कांधाको औ विछौना पीढ़ा आदि औरनको भी होतहै डासन सतरंजी आदि आसन विष्टर आदि अनुप्रास के लिये औ शब्दके ज्ञानके लिये ... घासनि घरनिको वास वस्त्र वाहन घोड़ा आदि ... आदि हैममें सातखण्डको घरसो विमान ... सब और वनावत हैं और भोगवतहैं ५ ॥

छप्पै ॥ सरघासंचिसंचिमरंशहद्भनुपानकरतमुख । खनिखानिमरतगँवारकूपजलपथिकपियतसुख ॥ बान वानवाहिमरतफूलवांधतउदारनर । पचिपचिमरतसहिंग वारभपभोजनकिरतवर ॥ भूषणअनुनारनाहिनानिनरहिं भामिनिभूपितकरततन । कहिकेशवलेखकलिखिलिखिमरहिं पंडितपढ़हिंपुरानगन ६ ॥

सरघामधुकी माखी सो मधुको सञ्चनकै मुखमाहि ...

श्रन्नको भोगी शहरके मुख कहिये श्रेष्ठ लोग पानकरत हैं प- थिक नुलनां पीवनहैं बागवान माली मिहनति करतहैं सुवार कहिये जो रसोईकरे रसोईदार गण समूह इहांभी वैसेही जानिये ६ ॥

(प्रसिद्धालंकार) दो० ॥ साधनसाधैएकभुवभुगवैसिद्धिश्रनेक ॥ तासोंकहतप्रसिद्धसबकेशवसहितविवेक ७ ॥

एक जहां साधनक्रियाको करै संसार सेवाकीसिद्धि अनेक को भोगकरावे ७ ॥

सवैया ॥ मातकेमोहपितापरितोषनकेवलरामभरेरिसभारे । औगुणएकहीश्रर्जुनकोक्षितिमंडलकेसबक्षत्रियमारे ॥ देवपुरीकहँश्रौधपुरीजनकेशवदासवड़ेश्ररुवारे । शूकरस्वानसमेतसबै हरिचन्दकेसत्यसदेहसिधारे ८ ॥

माता रेणुकाजी तिनके मोहसों पिता जमदग्निजी तिनको केवल संतुष्ट करिवेकेलिये राम परशुरामजी बड़े रिससों भरे अर्जुन सहस्रार्जुन कामधेनु हरी इहां दुष्टरूपाको फल अनेक को भोगकराये देवपुरी स्वर्ग तहांको अवधपुरीके जनलोग बूढ़े बारेबालक शूकर श्वान समेत हरिश्चन्द्र राजा अयोध्या- हीकोथो किंवा हरिचन्द्र रामचन्द्र ८ ॥

(विपरीतश्रलंकार) दो० ॥ कारजसाधककोजहांसाधनबाधकहोय ॥ तासोंसबविपरीतक्योंकहतसयानेलोय ९ ॥

कार्यको सिद्धिकरै करावै ताको जो साधन जासों सिद्धि कीजिये सो बाधकहोय १ ॥

कवित्त ॥ नाहनेनाहरत्रियजेघरीनेमांपकरियालेघ रवीथिकावसावतिवननिकी । शिवहिशिवाहूमेंदपारति जिनकीमायामायाहूनजानैछायाछलतितननिकी ॥ गा थाजूसोंकहाकहौंएेसिनकीसुनेमिखसांपिनिग हिनसिर रहितफननिकी । क्योंनपरेबीचबीचआगिओंनमहिन कैंबीचपरीअंगनाअनेकअंगननिकी १० ॥

कोई प्रिय सखी नायका को सुनाय काहूसों कहति है ये त्रिय ऐसीहैं नाहको रुठायके नाहर करिके अर्थ करिदेति हैं औ घरघालेहै घर गवांवति है औ वनकी जो थीथी गह ना हां बसावतिहै ऐसीहै शिवके आधेअंगमें शिवापार्वती रहति हैं तामें भी भेद जुदागी करिसकेहैं जिनके तनकी जो छाया तासों जो छलनकी ठगिवेकी माया कपट ताको माया जो है संसारको मोहित करतिहै सोभी नाहीं जानतिहै लिया जो है माया कपट तासों माया जो कोईहै सोभी नहीं जानिसके छलति ऐसो भी पाठहै जिनके तनकी छाया कांति सो छलि लेतहै अमरमें छायानाम सूर्य्यकी स्त्रीको औ कांति को औ प्रतिविम्बको औ छांहको फेरि फननायक जो नागहैं ते सिर सहित सापिनिहैं नायक नायकासों बीचनफावत जो न परे उनको परवो बीच आगिभी नहीं सहिसके जाने ते अंगनकी जे हैं अंगना सुन्दरि स्त्री तिनने बीचपारयो है सो कैसे नायक नायका ताको साधन सखी सो बाधकभई मिलन नाहीं आ श्चर्यको १० ॥

कवित्त ॥ साथनसहायकोउहाथनहथ्यारसुनाग जूकोयज्ञकोतुरंगगाहिराख्योर्इ । काहिनककोटीमारमोटीछोटीकाकपक्षपांचहीवरसकेन युद्ध अभिलाखयोर्इ ॥ नीलनलअंगदसहितजामवन्त हनुमन्तसे अनन्तजि ।

नीरनिधिनाख्योई । केशौदासदीपदीपभूपनिसोंरघुकु लकुशलवजीतिकेविजयरसचाख्योई ११ ॥

श्रीरामजीको अश्वमेधको घोड़ा कुशलवने बांध्यो तहां युद्ध कियो जिनके साथमें सुजानलोग नहीं हैं कछोटी काछ काछेहैं माथमेंहोय सो चोटी कानके नजदीक केशराखैं सो काकपक्ष कहावतहैं औ अलक कहावत हैं औ पांचवरषके हैं अभिलाष्यो चाह्यो जिन हनुमन्तने नीरनिधि समुद्र नाख्यो कहे नांघ्यो जहां यज्ञ कार्य्यको साधक कर्त्ता श्रीरामचन्द्रजी तिनको साधन पुत्र कुशलव सोई वाधकभये ११ ॥

(अथरूपक) दो० ॥ उपमाहीकेरूपसोंमिल्योवरणि रूप ॥ ताहीसोंसवकहतहैंकेशवरूपकरूप १२ ॥

उपमाके रूपसों मिल्यो उपमेयको रूप वर्णिये १२ ॥

दो० ॥ वदनचन्द्रलोचनकमलवाहुपाशज्योंजानि ॥ करपल्लवअरुभ्रूलताविंबाधरनिवखानि १३ ॥

वदनसो चन्द्रहै उपमाचन्द्रहैताको उपमेय मुखतामों मिलिकै अभेदकरि कह्यो चन्द्रसो मुख ऐसो नहीं कह्यो वांह जोहै सो पाशवन्धि जियमेंजानो विम्बफल होतहै यह साधारण अवभेद कहतहैं १३ ॥

दो० ॥ ताकेभेदअनेकमेंतीनैकहेसुभाव ॥ अदभुत एकविरुद्धअरुरूपकरूपकनाव १४ ॥

ताहि रूपकके अनेक भेदहैं में इहां तीनभेद कहे १४ ॥

(अद्भुतरूपक) दो० ॥ सदाएकरसवर्णियेऔरन येहिसमान ॥ अदभुतरूपककहतहैं तासोंवुद्धिनिधान १५ ॥

एकतरह एकरस जामें हानि वृद्धि नहीं १५ ॥

कवित्त ॥ शोभासरवरनाहिंफूल्योईरहतनाहिंराजै राजहंसनिसमीपसुखदानिये । केशोदासश्रासपासतौ रभकेलोभबनेघ्राननिकेदेवभौरभ्रमतबखानिये ॥ होत ज्योतिदिनदूनीनिशिमेंसहसगुनी सूरजसुचन्द्रचन्द्र मनमानिये । प्रीतिकोसदनकृइसकैनमदनपै गोकुल वदनजगजानकीकोजानिये १८ ॥

कोई सखी श्रीरामचन्द्रजीसों कहतिहै हेसूर्यवंशी के मित्र सूर्यवंशी याते पांचे सूर्य सूर्यवंशी [illegible] ताके मित्र जगतमें श्री जानकीजी को वदन सो [illegible] है जानिपरत है शोभा जो कोई सरोवर तामें [illegible] रहतहै यहअद्भुत फेरि सखीजो है सो राजहंसिनी [illegible] में राजतिहै तिनको सुखदहै आसपास घने बहुत जो [illegible] सुगन्ध ताके लोभते घ्राण नासिका के दूनों [illegible] पृथ्वीहै सो भ्रमर सो भ्रमतिहै फिरतिहै और [illegible] घ्राण के लोभ ते नहींआयसकै जयन्त इन्द्रकोपुत्र [illegible] ताकी वहदशाभई पृथ्वी लुगाईहै जो माना [illegible] करि माथोभी मूंघिसकैहै भोरी ठौर भौरहै [illegible] दविजातिहै किया भौर के फिरिबेकी क्रिया [illegible] की क्रियाको उपमानहै दोषनहीं दिनमें चन्द्रमा [illegible] है या मुखते चारु सुन्दर चन्द्रमा को नहींमानिये [illegible] को सदनघरहै यहप्राकृत जो मदनकाम [illegible] है शोभा सरोवरसों अभेदकिये ऐसे औरसी [illegible] मुखसों कमलसों अभेद सदाफूल्यो रहत है [illegible] घटतिहै वढ़ति है यहसदा दूनी सौगुनी होतिहै [illegible] चन्द्रमाको समान नहीं ऐसे अद्भुत जानिये [illegible] धन लगावति है रामलक्ष्मण के समीप फूल्यो रहत है ऐसे कहत है १८ ॥

(विरुद्धरूपक) दो० ॥ जहँकहियेअनमिलकछूसुमिलसकलविधिअर्थ ॥ सोविरुद्धरूपककहैंकेशवबुद्धिसमर्थ १७ ॥

जहां अनमिल बात कहिये ऊपरसों अनमिल भासे अर्थ अनमिल नहींहोय जहां एकअर्थ में एकअर्थ अन्तर्भूत रहे जान्योजाय औरग्रन्थमें रूपकातिशयोक्ति याकोकहतहैं १७॥

सवैया ॥ सोनेकिएकलतातुलसीबनक्योंबरणौंसुनिबुद्धिसकैछ्वै ।केशवदासमनोजमनोहरताहिफलेफलश्रीफलसेंच्वै ॥ फूलिसरोजरह्योतिनऊपररूपनिरूपिताचित्तचलैछ्वै । तापरएकसुआशुभतापरखेलतबालकखंजनकेद्वै १८ ॥

प्रथमदर्शन नायकको नायकाकोभयोहै ताको वचन सखीसों तू याबातने सुनि तुलसीवन श्रीवृन्दावन तामें एकसोनेकी लता है लता सो उपमान तासों उपमेय नायका जानिपरतिहै काकुस्वरसों कहतिहै बुद्धि छुइसके नहीं छुइसकै यह अर्थ मनोज काम ताके मनके हरणवाले श्रीफल से दोयफल फूले हैं कुच जानिये सरोजसों मुखजानिये रूप के ठहरावने में चित्तमन सोद्रवहोय चुइचलै है तापर एक सुआ शुक नाशिका जानिये शुभआछे खंजनके बालक नेत्र कहतके अनमिल अर्थ अर्थसुमिल १८ ॥

(अथरूपकरूपक) दो०॥ रूपभावजहँवर्णियेकौनिहुबुद्धिविवेक॥रूपकरूपककहतकविकेशवदासअनेक १९॥

रूप औ भाव मनको विकार जहां वरणिये १९ ॥

सवैया ॥ काछेसितासितकाछनीकेशवपातुरिज्योंपुतरीनविचारो। कोटिकटाक्षचलैंगतिभेदनचावतनायकने

हनिन्यारो ॥ बाजतुहंमृदुहासमृदंगसुदीपतिदीपनिको उजियारो । देखतिहौंहरिदेखितुम्हैंयहहानिहैआंखिनहीं मेंअखारो २० ॥

(रसिकप्रिया) हे हरि तुम देखतहौ तुम्हैं देखिकै नायकाने आंखिनमें आंखिकी ठौरमें अखाराना[illegible]कीठौर [illegible] है सित सफेदरंग असित श्यामरंगहै सोई काछनी [illegible] ताको काछे पहिरे पूतरीसो पातुरिहैं अभेदकियो [illegible] सो नाचकी जो गति ताको भेद है [illegible] इत्यादि गतिभेद हैं नेह जोहै सो नायक है सो नचावनहार [illegible] नेत्रके हासमें तो शब्दनहीं याते ऐसे लगाइये निनारो बाज- त हैं मृदुहास मृदंग आंखिनमें तो अखारो [illegible] मृदुहास सो मृदंगहै सो निनारो जुदा बाजत [illegible] दीप्तिप्रकाश सो दीपकको उजेरो प्रकाशहै [illegible] इत्यादिक वस्तुमें देखिकै यामें मनको बिकार[illegible] करि इतना अधिक कह्यो याते रूप रूपक २० ॥

(अथदीपक) दो० ॥ बाचिक्रियागुणद्रव्य[illegible] एहुंकरिइकठौर ॥ दीपकदीपति[illegible] मौर २१ ॥

प्राचीन ग्रन्थवाच्य चन्द्रिकाहै तहां जानिक्रिया गुण [illegible] ऐसो पाठहै इहां भी बाचिकीठौर जानिये [illegible] क्रियावाची गुणवाची द्रव्यवाची जो शब्द [illegible] इत्यादि क्रियावाची हैं नीलपीत इत्यादि गुणवाची [illegible] सों जुदानहींरहै सो गुण द्रव्यघट वृक्ष इत्यादि [illegible] एकठौरमें वरणिये तहां दीपक अलंकारकी [illegible] हतहैं इहां वर्ण्य अवर्ण्यको एकधर्म [illegible] २१ ॥

दो० ॥ दीपकरूपअनेकहैंमैंवरणौंहैरूप ॥ मणिमालातासोंकहिकेशवसवकविभूप २२ ॥

मैं दीपकतरहके वरणौंहैं ताहीसों कविभूपसणि औ माला कहतहैं एकमणिदीपक दूसरो मालादीपक २२ ॥

(मणिदीपक) दो० ॥ वरपाशरदवसंतशशिशुभताशोभसुगन्ध ॥ प्रेमपवनभूषणभवन दीपकदीपकवन्ध २३ ॥

शुभता कल्याणपन औ शोभा काहूकी येसव दीपक अलंकारके वन्धु हैं इनसों दीपक पुष्टहोतहै २३ ॥

दो० ॥ इनमेंएकजुवरणियेकौनहुंवुद्धिविलास ॥ तासोंमणिदीपकसदाकहियतकेशौदास २४ ॥

इनमें वरपा आदिमें एकभी ज्यों वरणिये ऐसेजानिये २४॥

(यथा) कवित्त ॥ प्रथमहरिणनैनिहेरिहेरिहरिकीसों हरपिहरपितमतेजनिहरतुहै । केशौदासआसपासपरमप्रकाससोंविलासिनिविलासकछूकहिनपरतुहै ॥ भांतिभांतिभामिनीभवनकहूंभूखे भवसुभगसुभायशुभशोभाकोधरतुहै । मानिनिसमेतमानिमानिनीनिवशकारिमेरो मनतेरोदीपदीपतिकरतुहै २५ ॥

हे मानिनि मानसमेत मानिनी को वशकारी जो है श्रीकृष्ण अन्वयदीजिये सखी नायकके पक्षकी कहतिहै मेरेमनको जीयप्रकाशक आनन्ददायक ऐसो जो कृष्ण सो तेरे मनकी दीतिप्रकाश आनन्द ताको करतहीहोयगो कहाभयो जो अवार रूठिबैठी पहिले हरिणनैनी जे नायका हैं हरिकी सों याको अर्थ हरिके सामने हरपिके तमको जो तेज प्रवलता ताको हरतिहैं दीपकको धर्महै तमको नाशकरतहै इहां नाहीं

देख्योथो जवताई सोभये जो विरह तासों उपज्योजोई तम कहूंको श्लोक है प्रियाविरह जे तम ताको श्रीकृष्ण के आस पास चहूंओर अंगको फैल्यो जोहै बड़ोप्रकाश तासों विला-सिनीनायका ताको तो विलास कटाक्षआदि कछुकछोनहीं परतु है औ भांति भांति के भामिनि के भौन घर ताको भू-षित करतहै श्रीकृष्णके अंगकोप्रकाश फेरि हरि कैसो है भव नाम हेममें शुभकोभी है भवकल्याण युक्त जाको कोई अमं-गलनहीं फेरि शुभ सुन्दर है फेरि आछी शोभाको राजत है हरपिवेसों प्रेम तम तेज नाशिवे में दीपकप्रकाशक भामिनी को भवनको भूषितकरते भवन भी वरगयो ऐसे भी कहत हैं जिनके लिये भामिनि आपने घरको शिंगारति है भवपदमों शुभकह्यो याहीते भव संसार नहींकह्यो सुभगसो शुभगा कहीं सबबात जाकी आछी है ऐसे जानिये जामें गुणगन सो द्रव्य हरिण इत्यादि द्रव्यवाची शब्द है हरि हेरि तत्तुदे इत्यादि क्रियाशब्द है जो कीजिये चेष्टा सो क्रिया प्रकाश गुण २५ ॥

कवित्त ॥ दक्षिणपवनदक्षियक्षिनीरवनिल्गगिनोन नकरतलौंगलवलीलताकेफरु । केशोदामहेमरकमन कोसरसकनतनुतनुतिनहूंकोमहितमकतभरु ॥ क्योंहूं क्योंहूंहोतहठिसाहसाविलासवश चंपकचमेलोमालिमा लतीसुवासहरु । शीतलसुगंधमंदगतिनंदनंदजीनोंगा वतकहांतेतेजतोरिवेकोमानतरु २६ ॥

सखी पवनके प्रसंगकरि मान छोड़ावति है दक्षिणदिशा सो जो पवन है सो दक्षसमर्थ है यक्षनीरमण जो कुबेर तिनको अर्थ तहांताई अर्थात् मलयसों कैलाशताई जातेसो मलयते तोभी लवंगलताको औ लवलीवृक्षको जागीत है तथा नारि फलको ऐसे मन्द है यह अर्थ यक्षिनीरवनि एतो औ पद है

तू यक्षिनीसी सुन्दर रमणी स्त्री है जागिके लोल चंचलनहीं करतिहैं लवंगादि को कहूं दक्षिणीलतानिलगि वहभी पाठ है केसरि नागकेसर किंवा केसर ताके जे कुसुम फूल ताको जो कोष गुच्छा ताको जो रस मकरंद ताकी जो तनु तनु छोटी कणिका ताहूको भरभार नाहीं सहिसकत है डारतोजात है कलेहू कैसेहूं हठसों राहस जोरावरीसों चम्पकलताआदि जे नायका हठकरती हैं जोरावरीसों पकरिलेतहैं तब इनके विलास वशहोत हैं इनको वनहै ताहिसों जागेविना आगेनहीं जायसके सुवास सुगन्ध श्लेषमें वस्त्र ऐसो है नन्दनन्दन की शपथकरिकहतहों मानरूपवृक्ष इहां पवनवर्णन सुगन्धवर्णन यक्षिनी सरीपी तू सुन्दरि शोभावदनी किंवा पवनकी शोभा वरणी पवन इत्यादि द्रव्यलोल करनो इत्यादि क्रिया शब्द शीतल सुगन्ध गुण २६ ॥

(मालादीपक) दो० ॥ सबैमिलैंजहँवरणियेदेशकालबुधिवंत ॥ मालादीपककहतहैंताकेभेदअनंत २७ ॥

क्रिया गुण द्रव्य वाची जो शब्द सो जहां मिलायकै वरणिये वरषा शरद इत्यादि लीजे देशकाल भी वरणौ बुधिवंत २७॥

सवैया ॥ दीपकदेहदशासोंमिलैसुदशामिलितेजहिज्योतिजगावै । जागिकैज्योतिसबैसमुझैतमशोधिसुताशुभतादरशावै ॥ सोशुभतारचैरूपकोरूपकरूपसुकामकलाउपजावै । कामसुकेशवप्रेमवढ़ावतप्रेमलैप्राणपियाहिमिलावै २८ ॥

देह सो दीपकहै सो दशा जो अवस्था यौवन तासों मिली औ दशावतीको भी नाम है दशा अवस्था औरवंतीतेज नाम हेममें वल औ प्रभावको भी है तेजपट्टता औ अग्नि तासों मिलिके ज्योति प्रकाशभयो पीछे ज्ञान भयो समुझि-

वेलागी दीप पाक्षि ज्यों नाहीं देखियमें आ[illegible] सो [illegible]ग्यो तम अज्ञान औ अंधकार ताको दूरिकरिके शुभ आनंद ताको देखावैहै हेममें रूप नाम आकृतिको औ [illegible] को भी सो जोहै शुभ तासों आकृति को जो [illegible] ताको रचैहै मनमें यगावैहै यह सुंदर पदार्थहै [illegible] क्रिया शब्द प्रकाश इत्यादि द्रव्य शोभा है शुभनाम [illegible] सो मिलायके घरगयोहै औ यौवनको काम है २८ ॥

कवित्त ॥ घनानिकीघोरसुनिमोरनिकेशोरसुनि[illegible] सुनिकेशवअलापआलीजनको । दामिनिदमकदेखि[illegible] पकीदिपतिदेखिदेखिशुभसेजदेखिसदनसुवनको ॥ कुं कुमकीवासघनसारकीसुवासभई फूलनिकीवाससनि[illegible] लिकैमिलनको । हँसिहँसिमिलेदोऊअनहीननारिमान छूटिगयोएहीछोरराधिकारमनको २९ ॥

आलाप कथन इहां सुनिवेक्रिया सुघनकीघोर आदि [illegible] है सदन घर सुवनको फूलको इहां देखि क्रियासों [illegible] वाहीतरह क्रिया गुण द्रव्यको जानिये घरपा [illegible] शुभ आनंद है शुभ है सुगंध है प्रमहै घनमें मोर [illegible] है ऐसे जानिये २९ ॥

(अथप्रहेलिका) दो० ॥ बरणतबस्तुदुरायजहँ[illegible] नहुंएकप्रकार ॥ तासोंकहतप्रहेलिकाकविकुल[illegible] दार ३० ॥

बस्तुको कोई एक तरह छपाय[illegible] ३० ॥

दो० ॥ शोभितसत्ताईसशिरउनसाठिलोचन[illegible] छप्पनपदजानोंतहांबीसबाहुबरदोसि ३१ ॥

हरि औ शिव औ ब्रह्मा ये तीनों देवता सहित [illegible]

सहित सूर्यमंडलमें रहतहैं एकमस्तक हरिके शिवके पांच ५ चारिमस्तक ब्रह्माके ४ एक लक्ष्मीजीके १ एक सावित्रीके १ एक पार्वती के १ एक गरुड़ के १ एक वृषभके १ एक हंस के १ एक सूर्यके १ औ संध्या सूर्यकी स्त्रीहै १ औ छाया भी सूर्यकी स्त्रीहै १ परन्तु कोई छाया नहीं लेतहै शनैश्चर लेत है भवानी को वाहन इहां वृषभही लीजिये सिंह नाहीं और अरुण को एक शिर १ औ सातअश्व ताके सातमुख ७ हरि के नैन दोय २ शिव के नेत्र १५ ब्रह्मा के नेत्र ८ लक्ष्मी के नेत्र २ पार्वतीके २ सावित्रीके २ गरुड़के २ वृषभके २ हंस के २ रविके २ छायाके २ संध्याके २ अरुणके २ अश्व के नेत्र १४ सात अश्वके अट्ठाईस २८ चरण वृषभके चारि ४ अरुण के चरण नहीं औरनिके दोय दोय जानिये चारिभुज भगवान् के औरनि के दोय दोय ऐसे जानिये ३१ ॥

(प्रभाकरमण्डल) दो० ॥ चरणअठारहबाहुदश लोचनसत्ताईस ॥ मारतिहैप्रतिपालकैशोभतग्यारह शीश ३२॥

दोय चरण भगवान् के २ दोय लक्ष्मीजी के २ दोयगरुड के २ दोय महादेव के २ दोय पार्वती के २ चारिवृषभके ४ चारि सिंह के ४ चारिबाहु भगवान् के ४ दोय लक्ष्मीजीके २ दोय महादेव के २ दोय पार्वती के २ लोचन दोय भगवान् के २ दोय लक्ष्मीजी के २ दोय गरुड़के २ पंद्रह महादेवके १५ दोय पार्वतीके २ दोय वृषभ के २ दोय सिंहके २ विष्णु रूप पालन करतहैं शिवरूप संहारतहैं शीश भगवान के १ एक लक्ष्मीजी के १ एक गरुड़के १ पांच महादेव के ५ एक पार्वती के १ एक वृषभके १ एक सिंह के १ । ३२ ॥

दो० ॥ नौपगुनवहींदेनतादैपक्षीजिहगेह ॥ केशव सोइराखिहैइंद्रजीतयशदेह ३३ ॥

सातअश्व सूर्यके ७ एक वृषभ १ एकसिंह १ ऐरावत १ ब्रह्मा १ विष्णु १ शिव १ सावित्री १ लक्ष्मी १ पार्वती १ सूर्य चंद्रमा शिवके माथेमें १ अग्नि एक शिव के माथेमें १ पक्षीदोय २ गरुड़ १ औ हंस १ जाके घरमें कहाँ अरुणपक्षी है पै घरमें सूर्यमंडलके बीच नहीं रहतहैं वे बाहर रथ [illegible] हैं याते ग्रहण नहीं किया ऐसो सूर्य है ३३ ॥

(अर्कमण्डल) दो० ॥ देखैंमुनैनग्वायकछु [illegible] वतीजाति॥ केशवचलतनहारईवामगगिननराति ३४ ॥

लोग चलतिहैं वे जो पथसों नहीं हारतहैं [illegible] कहतहैं पथ जानिये राह है ३४ ॥

दो० ॥ केशवताकेनामकेआखरकहियदोय ॥ [illegible] षणमित्रकेउलटदूषणहोय ३५ ॥

मित्रको राज कहिकै बोलिये राज इहा आनो उलटि [illegible] पढ़ै जरा बुढ़ाईको नाम सो दोष है सबही जानो ३५ ॥

(राज)दो०॥जातिलतादुहुंआखरहिनामकहुं [illegible] य॥ सूधेसुखमुखभक्षियेउलटअंबरहोय ३६ ॥

लता वाकी जातिहै दोय आखरको नाम है [illegible] इये तौ सुखको सुखहोय सूधे आखर दाख उलटे पढ़ै [illegible] को कोई वस्त्र विशेष है ३६ ॥

(दाख) दो० ॥ सबसुखचाहैभोगयोजोपियपरहि वार॥ चंद्रगहैजहँराहुकोजेहोतिहिदरबार ३७ ॥

वीरबलको दरबान चंदथोजाकोई जातो ताकोगहतो ३७ ॥

दो० ॥ ऐसोमूरिदिखायसखिजियजाननमन [illegible]॥ पीठलगावतजासुरसछातीसीरीहोय ३८ ॥

पहेलीको भेद किटारी भी है देखताई में [illegible]

समानें बैठयो कहे हमें या ठौरमें मग्नवेदावोक्त वजावनवा-ला यारीको बताय देतहै फेरि कहे हमें रूख देखावो तब पलासको बताय देतहे पलाश वृक्ष विशेष औ जो बिछौना करे सो भी पत्रवर्ती पूंछति है सखीसों हे सखि मुरिके फि-रिके मोहिं कोई ऐसी वस्तु बतावो पीठिसों आंचके पुत्रलप-टे है तो जाके रससों अनुरागसों छाती शीतल होतहे पुत्र वाही ठौरमें हे ऐसे जानिये ३८ ॥

(परवृत्ति) दो० ॥ जहांकरतकछुऔरहीउपजिपर तकछुऔर ॥ तासोंपरिवृतिजानियहु केशवकविशिर मोर ३९॥

और कार्यकरत और कार्य उपजै ३९ ॥

(यथारसिकप्रियायां) सवैया ॥ हँसिबोलतहीसुहँसेसवकेशवलाजभगावतलोकभगे । कछुवातचलावत घेरचलैमनआवतहीमनमत्थजगै ॥ सखितूजुकहैसुहु तीमनमेरेहुजानिइहैनहियोउमगै । हरित्यनिकुडीठिप सारतहीअंगुरीनपसारनलोगलगे ४० ॥

सखी कहतिहै तू नायकसों बोलिमिलि तब नायकावचन नायकसों बोलतही सबलोग हँसें हँसति हैं निंदत हैं सुखके विलासको कार्यकियो निंदाभई लाजको छोड़त लोग हमसों भाजत हैं हमें जातिमेंसों काढ़तहैं हरिकी कछुवात चलावत है तब घेर चरचा चलतहे हँसिबोलतही इत्यादि प्रथमवचन शिंगार सबलोग हँसत० इत्यादि दूसरो वचन इनके मत में वीभत्सरस लोगजाति में सों काढ़ति हैं छीछी करत हैं ऐसे ग्लानि मनमत्थजगै शिंगारहृदय नहीं उमगै ग्लानि होत है परपनिसों वीभत्सडीठ पसारिबो शृंगार चेष्टालोग आंगुरी पसारि हमें बतावत हैं यह वीभत्स यहकवित्त रसिकप्रिया में

रसदोष में कह्योहै प्रत्यनीकरसको उदाहरणहै जहां [illegible] रसको मिलापहोय सो प्रत्यनीक शृंगारको विरोधी [illegible] याते इहांपरिवृतको उदाहरण क्यों दियो [illegible] जुदा जहां रसदोषहोत है तहां भी अलंकार [illegible] अलंकार दोष में दियोहोतो औ याही कवित्त के [illegible] उदाहरणदेतो तो कविको भ्रमनिकरनो लाजनिये [illegible] में तू पियसों रसकीन प्रीतिभई तब चन्द्रमुखी [illegible] नवीन इहां लाजसंचारी औ रस औ प्रीतिस्थायी [illegible] सों रसदोष है अलंकार उपमा तो निकरत है [illegible] रसदोष यह सब हमारो कियो दोष के निर्णय [illegible] ग्रन्थ है तामें स्पष्ट है ४० ॥

सवैया ॥ हाथगह्योव्रजनाथसुभावहीछूटिगई [illegible] धीरजताई । पानभयेमुखनैनरचीरुचिआरसीदेखि [illegible] हमठाई ॥ दैपरिरंभनमोहनमोमनमोहिलियोस [illegible] खदाई । लालगोपालकपोलनखक्षतनेरदियेतमहा [illegible] छाई ४१ ॥

सखी वचन नायका सों सुन्दरभाव मनके [illegible] तेरोहाथ गह्यो तब नायक के धीरकहिये [illegible] किंवा धुरिधीरज ताको भारि [illegible] पान तौ मुखखात है नैनने आपनी रुचि [illegible] आरसीलैदेखिके हसठाई सांचीकहै इहां [illegible] परिरम्भण आलिंगन तेरेकपोलमें लालने नखक्षत दिये [illegible] तू महाछबिसों छाइगई घावकरत शोभाउपजी ४१ ॥

सवैया ॥ जीवदियोजिनजन्मदियोजगजाहीकी [illegible] तिबड़ीजगजानै । ताहीसोंवैरमनोवचकाय [illegible] वकोउरआनै ॥ मूपकतेआपिसिंहकरयोफिरिनाही [illegible]

मकुबरोपावैतानै । ऐसोकछूयहकालहैजाकोभलोकरि चैमुबुरोकरिमानै ४२ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांत्रयोदशप्रभावः १३ ॥

जाको भलोकरियतु है सो बुरो मानति है भलाकरत बुरा भागीउठी ज्योति जाहि भगवान्सों मनकृतवैरकरै कायकृत वैरकरै किंवा तिनकीकृत करणीको नहींमनमेंल्यावै एकऋषि के आश्रम में मूपकथो ताने ऋषिको कह्यो मोहिं विल्लीमारै चाहतिहै ऋपिने कह्यो तूभी विल्लीहो फिरि कुत्तासों मरयो ऐसे करते सिंहकियो जब सिंहभयो तब ऋषिको मारिवे को चाह्यो तब ऋषिने फेरि वाको मूपककरिदियो तेरहअलंकार या प्रभाव में कहे १३ समाहित १ सुसिद्ध २ प्रसिद्ध ३ विपरीत ४ रूपक ५ अद्भुतरूपक ६ विरुद्धरूपक ७ रूपकरूपक८ दीपक ९ मणिदीपक १० मालादीपक ११ प्रहेलिका १२ परिवृत्त १३ । ४२ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायां कविप्रियाटीकायांत्रयोदशप्रभावः १३ ॥

(अथउपमालंकारवर्णनम्) दो० ॥ रूपशीलगुण होयसमज्योंक्योंहूंअनुसार ॥ तासोंउपमाकहतकविकेशवबहुतप्रकार १ ॥

रूप शील स्वभाव औगुण इननिकरि जहां समता होइ कोई तरह १ ॥

(नाम) दो० ॥ संशयहेतुअभूतअतिअद्भुतविक्रियजानि ॥ दूपणभूपणमोहमयनियमगुणाधिकआनि २॥

संशयोपमा १ हेतूपमा २ अभूतोपमा ३ अद्भुतोपमा ४ विक्रियोपमा ५ दूपणोपमा ६ भूपणोपमा ७ मोहोपमा ८

नियमोपमा ९ गुणाधिकोपमा १० यादोहामें दशनामहैं २॥

दो० ॥ अतिशयउत्प्रेक्षतकहोंश्लेषधर्मविपरीत ॥ निर्णयलांछनिकोपमाअसंभावितामीत ३ ॥

अतिशयोपमा ११ उत्प्रेक्षतोपमा १२ श्लेषोपमा १३ धर्मोपमा १४ विपरीतोपमा १५ निर्णयोपमा १६ लांछनिकोपमा १७ असम्भवोपमा १८ आठउपमा या दोहामें कही ३॥

दो० ॥ बुधिविरोधिमालोपमाऔरपरम्परऱूप ॥ उपमाभेदअनेकहैंमेंवरणोइकवीस ४ ॥

विरोधी बुद्धिहोय विरोधोपमा १९ मालोपमा २० परम्परोपमा २१ इमिकविराज इकइस भेदकहे संशयोपमाले के बाईसभेदहोतहैं संकीर्त बाईस ऐसे चाहिये ४ ॥

दो० ॥ जहांनहींनिरधारकछुसबसंदेहस्वरूप ॥ सो संशयउपमासदावरणतहैंकविभूप ५ ॥

जहां निरधारण निश्चय नहीं ५ ॥

(रसिकप्रियायांयथा) सवैया ॥ खंजनहैंमनरंजनहैं शवरंजननैनाकिधौंमतिजीकी। मीठीसुधाकिसुधाधरकी द्युतिदंतनिकीकिधौंदाड़िमहीकी ॥ चन्द्रभलोमुखचन्द्र किधौंसखिसूरतिकामकीकाहूकोनीकी । कोमलपंकजकै पदपंकजप्राणपियारेकीमूरतिपीकी ६ ॥

सखीसों नायका नायककी सुन्दरता कहतीहै खंजनमनके रंजनकरनवालेहैं किधौं नैन मनके रंजनकरनवालेहैं मेरे जीकी जो मतिहै निश्चयकरी जो मतिहै सो कहौ किधौ मति नाम इच्छाकोहै जीवकीइच्छा खंजननैन यहूतनाहतहै किधौ नायक के नेत्रको प्राण अतिप्रिय हैं किधौ पियनायक की मूर्ति सन्देहही कियो निश्चै काहुकी नहींकरी जासों कहे

कहै तासों उपमानोपमेय भासे है खंजन औ नैन इत्यादि जानिये ६ ॥

(हेतूपमालक्षण) दो० ॥ होतकौनहूंहेतुतेअतिउत्तमसोहीन ॥ ताहीसोंहेतूपमाकेशवकहतप्रवीन ७ ॥

कोई एक कारणते हीन जो वस्तु सो उत्तम श्रेष्ठहोय ७ ॥

कवित्त ॥ अमलकमलकुलकलितललितगतिवेलिसोंवलितमधुमाधवीकोपानिये । मृगमदमरादिकपूरधूरिचरिपगकेसरिकोकेशवविलासपहिचानिये ॥ झेलिकेचंवेलीकरिचंपकसोंकेलिसेइ सेवतीसमेतहेतुकेतकीसोंजानिये । हिलिमिलिमालतीसोंआवतीसमीरजवतवतेरोमुखवासस्वाससोंवखानिये ८ ॥

ऐसो है के जव समीर पवन आवत है तव तेरो मुखवास औ श्वास सो कहियेहै कहूं सुख मुखवास ऐसो पाठ है सुखदायकजो तेरोमुख ताको जो सुवास ताको समान कहियत है पवन मुखवासको अनुत्तमहै इन हेतुसों उत्तमभयो तव मुखकी समता पाई पवन कैसे होय अमलहोय भूमिकी रज आदि लियेत आवतहोय जलमें स्नानकरि आवतहोय औ कमलके कुलको दलितकिये होय वाको मसले होय वासोंलग्योहोय औ ललितगति मंदगतिहोय वेलि लतासों वलित मिल्योहोय फेरि माधवी वासंती लता ताको मधु फूलकोरस ताको पानिये पियेहोय मृगमद कसतूरी औ कपूरको पांवसों चूरिकै धूरिकिये होय कहनो तो गंधलियेहै ताको इतनीतरहनों कह्यो नेयार्थ दोपभासे है चमेलीको थासिकै लागिके सेवतीको सइके ताहि सहित केतकीसों प्रीति ८ ॥

(अभूतोपमा) दो० ॥ उपमाजायकहीनहींजाको

रूपनिहारि ॥ असम्भूतउपमाकही केशवदासवि चारि ९ ॥

उपमा नहीं कही जाय ९ ॥

(रसिकप्रिया) कवित्त ॥ दुरिहैक्योंभूषणवसनद्युति योवनकीदेहहीकीज्योतिहोतिद्योसऐसीरातिहै ॥ नाह कोसुवासलागेह्वैहैकैसीकेशव सुभावहीकीवासभौंरभीर फारेखातहै ॥ देखितेरीमूरतिकीमूरतिविसरतिहौंलालन केदृगदेखिवेकोललचातहै । चलिहैक्योंचन्द्रमुखीकु चनिकेभारभयेकचनकेभारतेलचकिलकिजातहै १० ॥

सखी नायकको सुनायकेकहतिहै भूषण वसन जो यौवन की द्युति क्योंकरि दुरि है तेरी देहकी ज्योतिसों दिनसोऐसी रातिहोति है तेरी मूरतिकीसूरति सौंदर्य देखिके लाल विलखातिहौं जब तेरे बड़े कुचहोहिंगे तब हे चन्द्रमुखी कैसे चलिसकैगी दिनसी रातिहोतिहै औ चंद्रमुखी यह पदनको में उपमा निकरतिहै सो नहीं लेनी नाहको सुवासलागे कैसो होयगो याकी उपमा सो कही नहीं जातिहै ऐसे जानिये १० ॥

(अद्भुतोपमा) दो० ॥ जैसीभईनहोतिअब आगेक हैनकोय ॥ केशवऐसेवरणियेअद्भुतउपमाहोय ११ ॥

आगे कोई नहीं कहैगे याते भूत भविष्यत् वर्तमान जानिये ११ ॥

सवैया ॥ प्रीतमकोअपमाननमानानिवानिसयाननि रीझिरिझावै । वंकविलोकनिबोलअमोलनिबोलतकेशवमोदवढ़ावै ॥ हावहुभावप्रभावसुभायकेभावतिभा मिनिचित्तहरावै । ऐसेविलासजोहोहिंलरोजनेतोउप मासुखतेरेकीपावै १२ ॥

सखी नायकाको राजी करिवेके लिये कहतिहै यातरहके बिलास जो सरोजमें होहिं तब तेरे मुखकी उपमाको पावै तीन कालमें यातरहके बिलास कमल में नाहीं संभवै याते अद्भुत प्रीतमको अपमान न आदरको करनवालो होय औ नाननिको आदरनिको करै औ बुद्धिसों चतुराईसों आपुरीझै और को रिझावै हाव भावकरिकै औ भाव संचारि लज्जा आलस्य इत्यादि औ मनोहर तो कोई सुभावहै सुंदर शृंगार देखत नैनको कोहिभो इत्यादि ताके प्रभाव सामर्थ्यताकरिकै हे भामिनि भावनि क्रिया निवारिकै ज्यों चित्तको हरै कहूं पाठहै हावहू भाव सुभावके भावनि चित्त चुरावै याको अर्थ औ हाव भी यामें होय औ भाव संचारी सात्विक औ सुभावके भावनिसों मनहर क्रियानिके प्रभाव सामर्थ्यता करिकै हे भामिनि ज्योंकर चित्तको कमल चोरावै १२ ॥

(विक्रियोपमा) दो० ॥ क्योंहुंक्योंहूबरणियेकौनहुंएकउपाय ॥ विक्रियउपमाहोतितहंबरणलकेशौराय १३॥

कहूं कोई तरह वरणिये कहूं कोई तरह वरणिये कोई एक उपमायनसों १३ ॥

कवित्त ॥ केशौदासकुंदनकेकोशतेप्रकाशमानाचिंतामणिओपनीसोंओपिकैउतारीसी । इंदुकेउदोततेंउसीरणसीकाढीसबसारमसरसशोभासारतेनिकारीसी ॥ सौधकोसीमोधीदेहसुधासोसुधारीपाव धारीदेवलोकतेकिसिंधुतेउधारीसी । आजुयासोंहंसिखेलिबोलिचालिलेहुलालकाल्हिएकबालल्याबोंकामकीकुमारीसी १४ ॥

दूतीका वचन नायकासों कुंदन सोना ताको कोश संपुटते प्रकाशमान है याते अति गोरी चिंतामणिकी जो ओपनी तासों निलादैके उतारी है बनाई है चिंतामणिकी है जैसी

ओपनमें करे तैसी ओपचढ़े ओपनी होतिहै जासों तरवार कटारीको घसिकै चमक काढ़ै हैं चांदनीसैं त्योंहिं [illegible] खोदिकै काढ़ीहै याते आनंद दायक याके अंगकी ज्योतिहै सरस जो सारस कमल ताकी जो शोभा ताको जो भाग [illegible] शोभा याते सुकुमारता अमृतसों सुधारी सींचलों [illegible] अमृतसों माधुर्य देवलोक ते आई याते औ निपुने निकाई याते अलौकिक शोभालीनी कालिह में ऐसी कामिनी [illegible] आवों याते याकी निंदा नहीं ठौर ठौर सुभाव [illegible] १४ ॥

(अथदूषणोपमा) दो० ॥ जहँदूषणगणवर्णियेभूषणभावदुराय ॥ दूषणउपमाहोतितहँ बुधजनकहतबनाय १५ ॥

जहांदोषसमूहवर्णियेताकोभूषणशोभाताको [illegible] १५ ॥

(रसिकप्रिया) सवैया ॥ ज्योंकहूंकेशवसोमसरोजसुधासुरभृंगनिदेहदहेहैं । दाड़िमकेफलश्रीफलविद्रुमहाटककोटिककष्टसहेहैं ॥ कोककपोतकरीअहिकेहरिकोकिलकीरकुचीलकहेहैं । अंगअनूपमवाप्रियकेउनकोउपमाकहुवेईरहेहैं १६ ॥

नायकको मानस विचारि मुखकी उपमा जो सोमचंद्रमाकी कहौं तो सुधासुर जे अमृतके पावनवाले [illegible] चंद्रमाकी देहको दहतहैं क्षीणकरत हैं यह अर्थ [illegible] अमृतपिये सो एक कला चंद्रमाकी सदा घटतिहै [illegible] है औ सरोजकहो तो याको भृंगनिने पावनसों [illegible] दियोहै दाड़िमके फल दांतनकी उपमासो तो बनमें [illegible] औ पवनके मारे फटतहै श्रीफल नारियल सो [illegible] मा विद्रुम मूंगासो ओठकी उपमा सो तो खरा [illegible] यह खरा दुख हाटक सोना औ केसरि सो रंगकी उपमा को

कञ्चुक तासों कुचको ऐसे जानिये उनके अंगनकी उपमाको उनहीं के अंगहैं सोम आदि के दोष वरणे उनकी शोभाको दुराई १६ ॥

(भूषणोपमा) दो० ॥ दूषणदूरदुरायजहैंवरणतभूषणभाय॥भूषणउपमाहोतितहैवरणतकविकविराय १७॥

दूषणको छिपाय भूषण वरणिये १७ ॥

कवित्त ॥ सुवरणयुतसुरवराणिकालितपुनिभैरवसों मिलिगतिललितवितानीहै ।। पावनप्रगटद्युतिद्विजनकीदेखियतदीपतिदिपतिअतिश्रुतसुखदानीहै ॥ शोभा शुभसानीपरमारथनिधानी दीहकलुषकृपानीमानीसब जगजानीहै । पूरबकेपूरेपुण्यसुनियेप्रवीणरायतेरीबानी मेरीरानीगंगाकोसोपानीहै १८ ॥

कोई सखीकहतिहै हेमेरी रानी प्रवीणराय तेरीवाणी गंगा जीको पानीहै गंगाजीको पानीकैसोहै सुन्दर तो वर्ण उज्ज्वल ताहिसों युक्त है सुरवर बड़ेदेवतासों युक्तहै भैरव शिव तासों मिलितहै फरि जाने ललितगति सुन्दरगति प्रवाह ताहि वितानीहै किंवा ललितगति मुक्ति ताको करीहै पानीकी अधोगतिहै औ पानी में बूड़िमरे अगनिहोति ताको छपाई श्लेष में शब्दकेअर्थसों समतालीजिये उहां दूषणदुराइवेपर तात्पर्य नहीं औ स्तुतिभूषणहोय यहभीचाहनहीं जैसे क्षणदानप्रिय सूर्य कैसोहै क्षणदा रात्रि ताको छपाई श्लेष में शब्दके अर्थ सों समता लीजिये उहां दूषण दुराइवे पर तात्पर्यनहीं औ स्तुति भूषणहोय यहभी चाह नहीं जैसे क्षणदान प्रिय सूर्य कैसोहै क्षतदारात्रि ताकोप्रियनाहींहै नायकाकैसीहै क्षणदान को रात्रिनके प्रियमानतिहै इहांश्लेषहै क्षणदान प्रियकहे सूर्य को दोषनहीं छिपायो औ स्तुति तो नहींनिकसी इतनो श्लेष

सों बीचफेरि गंगाजीको पानीकैसोहै पावनहै प्रगटहै [illegible]
जहां द्विजनकी गतिहै ब्राह्मणकरिबेको [illegible]
यतहै फेरि दीप्ति जोकांति तासों अनिंदापनहै [illegible]
जाकी श्रुतिप्रचाई सों सुखदाता है आछी [illegible]
औ परमारथमें परम जोअर्थ द्रव्य किंवामोक्ष [illegible]
निधिहै रत्नाकर की स्त्री है याते कलिकालको जो [illegible]
ताको काटिबेको कृपानी तरवार मानी है [illegible]
है पूरुबदेशको पूरो पुण्यहै जहां गंगाजीमें [illegible]
बातकही गंगाजी के पानी के दोषदुराये [illegible]
पमादीनी याते भूपणोपमा वाणीकैसीहै [illegible]
तासों युक्त है वरश्रेष्ठ आछे जे [illegible]
तासों कलितयुक्त है फेरि भैरवरागसों [illegible]
रागकी गति प्राप्ति है जाहि वाणीको फेरि [illegible]
द्युति जहां द्विजदान ताकी देखियतहै द्विजदान [illegible]
चमक तासों अतिशोभै है श्रुति जे कान [illegible]
आछीजामें शोभाहै परमआछो जो अर्थ [illegible]
वान्के गुणगावतिहै याते दीह बड़ो जो पाप [illegible]
कृपाणी लोगनि ने मानी है संसार [illegible]
पुण्यहोय तब सुनिबे में आवै है प्रवीणराय [illegible]
सुखदायकहै ताहि कलिकलुप कृपाणी [illegible]
हैं सो नहीं उपमा में दुराइये उपमेयमें नहीं १८ ॥

(अथमोहोपमा) दो० ॥ [illegible]
हुंविधिननजाय ॥ ताहीसोंमोहोपमा [illegible]
राय १९ ॥

जैसे काहूको रूपहोय अनूप ताको समान [illegible]
मनजाय वाको समान वहहै ऐसी बात [illegible]

कवित्त ॥ खलतनखेलतकैहासीन्हनानिहां [illegible]

नकानगानतानबातसोंबहै। ओढ़तनअंबरानिडोलतदि गंबरसोशंबरज्योंशंबरारिदुखदेहकोदहै ॥ भूलिहूनसू घेफूलफालि २कुम्हिलातजात खातबीराहूनबातकाहूसों कहै।देखिदेखिमुखचन्दकेशवचकोरसमचंदमुखचंदहू केविम्बसोंचितरहै २० ॥

सखी नायकासों कहतिहै हे चन्दमुखी तेरे मुखचन्दको देखिदेखिके नायक चकोर के समान चन्द्रमा के बिंब मंडल की ओर चितरहतहै तेरे मुखकी आकृति चन्द्रमासों मिलति है खेल चौपरआदि नहीं खेलति है तान जाको बानसमान लागतिहै शंबरारि कामसों याको दुखदेकै देहको बरावत है शंबर ज्यों जैसे शंबरदैत्यको दुखदियो जैसे फूल कुम्हिलात जातहै मुखकेअनुरूपसदृश चन्द्रमाहै यहमोहसोंदेखतिहै २०॥

(नियमोपमालक्षण) दो० ॥ एकहिसमजहँबरणिये मनक्रमवचनविशेख ॥ केशोदासप्रकासवशनियमोप मासुलेख २१ ॥

एकही की समता जहां बरणिये शुभ ऐसोभी पाठहै तहां एकही उपमाकी शुभ शोभा जहां बरणिये २१ ॥

कवित्त ॥ कलितकलंककेतुकेतुअरिसेतगातभोग योगकोअयोगरोगहीकोथलसों। पूनोहींकोपूरणपैप्रति दिनदूनोहोतक्षणक्षणक्षीणछबिछीलरकोजलसों ॥ चंद सोंजुबरणतरामचन्द्रकीदुहाईसोईमतिमंदकविकेशवकु शलसों। सुन्दरसुवासअरुकोमलअमलअतिसीताजू कोमुखसखिकेवलकमलसों २२ ॥

सखी सों सखीवचन सीताजीको मुख सो केवल कमलहै एक कमलहीसों समतावरणीहै चन्द्रचन्द्रमासों नहीं चन्द्रमा

केसोहै ग्रहण कियो है कलंकरूप केतु पताका जाने [illegible] जो केतु दैत्यको अरि चन्द्रमा फेरि संतज्ञाके अंग में [illegible] है यहअर्थ फेरि भोगको अयोगहै अभिलाषि [illegible] दो० ॥ अरीखरीसटपटपरी बिधुआधेमगदेखि । औ [illegible] अयोग है कामको उद्दीपक है याते योगी [illegible] औ [illegible] थल ठेकानोहै जो सदा छायामें रोवे ताको रोगन [illegible] वचन है किंवा हीरोग कहिये हृदय मन ताको जो [illegible] दुख ताको ठेकानोहै चन्द्रमा मनकोदेवताहै मनको [illegible] अमरआदि चन्द्रमा सों होत है पूनोहीं को तो [illegible] दिनप्रति दिनदिनमें दूनोहोतहै [illegible] है शोभाकी हानि होत है क्षीणचन्द्र [illegible] यात्रामें गिनत नहींराखतिहै ताराकी गणना करत [illegible] चंद्रमाको पापग्रह कहतहैं याते दुख औ क्षणक्षण [illegible] छविक्षीण परतिहै जैसे छीलर थलको जल जो बहुत [illegible] न होय ताको नाम छीलर काकु ध्वनि कुशल सो [illegible] णहै नहीं प्रवीणहै यह अर्थ सुंदर आदि गुण [illegible] औ मुखमें भी एक कमलहीको समकह्यो [illegible] पाठमें उप-मान कमल ताहीको शोभत उपमा लागत कह्यो २२ ॥

(गुणाधिकोपमा) दो० ॥ अधिकनहूंते अधिकगुण जहांवरणियतुहोय ॥ तासोंगुणअधिकोपमा कहतसबै कविलोय २३ ॥

अर्थ जाहिर है २३ ॥

कवित्त ॥ वेतुरंगश्वेतरंगसंगएकअंगनहूंनहीं [illegible] गरंगपैकुरंगमीतसे । येनिशंकअंकयज्ञवेसयोंकलंकोंदा सयेकलंकरंकवेकलंकहीकलीतसे ॥वेपियत्रशाहिनिस [illegible] निधीशकेरसैजुसांचहूंसुनीतनपुनीतवेपुनीतसे । [illegible]

अंधिविनाविनादियेनदेहिवे भयेनहैंनहोहिंगेनइन्द्रइ न्द्रजीतसे २८ ॥

इंद्र जोहै सो इंद्रजीत के समान नहीं कवहूं भयो न है औ न कवहूं होयगो इंद्र कैसोहै जाके संगमें श्वेत रंगको एक अश्वहै औ इंद्रजीत कैसोहै अनेक तुरंग जाके सुरंगहैं सुंदर रंगहैं कितने लाल अश्वहैं केतने श्यामहैं केतने अव- लकहैं औ केतन्यो ऐसे हैं जिनके अंगके रंगपै कुरंग मीतसे कुरंग हरिण सोहै मीन जाको ऐसो जो चंद्रमा ताहि सरीषा श्वेत वारिये इतना अर्थ छिपाहै कहूंहै मुरंग अंग अंगके यह भी पाठहै अंग कहिये तरह अंग अंगके तरह तरह करिके चंचलता करिके कूदिवेकरिकै दौरिवेकरिकै कुरंग जो हरिण ताके मीनसेहैं सेको अर्थ इहां मानौं कुरंगके मीतहैं मानौं कुरंग हरिण इनसों मैत्री करतहैं ये दौरिकै हमैं पकरिनलेहिं फेरि ये इंद्रजीत यज्ञके अंक निशानी कुंडमंडपयूप जासोंनि- शंकहै कोई केतनो यज्ञकरो वे इंद्रडरतहैं कोई शतयज्ञ करै तो हमारो इंद्रासन छिनायलेइगो इंद्रजीत कलंककरिकै रंक दरिद्रहै इनको कलंक नाहींहै वे इंद्र गौतमकी स्त्रीसों कलंक करि कलितयुक्तहै सुधानिधि चंद्रमा तिनको ईश शिव तिनके रसको प्रेमको किंवा तिनकी भक्तिके स्वादको सांच वातमें भी ये मुनीतिहै जानतहै यह दंडमुवाफिकहै तौभी नीतिशा- स्त्र देखे विना दंड नहीं देतहै इंद्रजोहै सो पुनीत भीहै धर्मा- त्मा भी है औ वेपुनीत अधर्मी सोहै वृत्रासुरकी हत्यालागी पुराणमें कथाहै भवताई इंद्रको यज्ञभाग नहीं देइ तवताई नहीं देवतहैं सवनें अधिक इंद्र तासों अधिक गुण इंद्रजीत को कह्यो २६ ॥

(अतिशयोपमा)दो०॥एककछूएकैनिपैसदाहोयरस एक॥अतिशयउपमाहोतितहँवरणतमहितविवेक २५

एक कोई वस्तु एकही विषे एकरस एक तरह [illegible] नहीं प्राप्तभई एसो वरणों २५ ॥

कवित्त ॥ केशौदासप्रगटअकाससोंप्रकासपुनिईश्वरकेशीशरजनीशअवरेखिये । थलथलजलजलअमलअचलअतिकोमलकमलबहुवरणनिशेषिये ॥ [illegible]ठौरबहुनाहिंनअचलयशवसुधानुधानिप्रियअवरेखियेखिये । एकरसएकरूपजाकीगीतासुनिसुनितेरोमोबदनतैसोतोहिंविषेदेखिये २६ ॥

आकाश सो आकाश करिके जाको प्रगट प्रकाश [illegible] रजनीश चंद्र सो ईश्वर महादेव के शीशमें [illegible] निहारिये है थलथलमें ठौर ठौर औ जल जल विषे [illegible] निर्मल औ अचल कवहूं जाय नहीं जलको औ कमल [illegible] दूनोंको विशेषण संभवे है अनेक रंगके कमल [illegible] अमृतनिको लेखियेहै विचारियेहै गीतगान [illegible] तो ठौरठौरमें है तेरोमुख तोहिं विषे है २६ ॥

(उत्प्रेक्षोपमा) दो० ॥ एकदीपतिएककीहोत [illegible] कनमाह ॥ उत्प्रेक्षतउपमासुनोकहीकविन[illegible] २७॥

एक कोई की एक जो दीपति प्रकाश शोभा [illegible] होय कविनके नाह सरदार २७ ॥

कवित्त ॥ न्यारोहीगुमानमनमीननि[illegible]नियत[illegible]नियतसवहीसुकेसेनजताइये । गर्व[illegible] वाणवाणनिकोआनआनभांतिचितुकेसे[illegible] ॥ [illegible]शोदाससविलासगीतरंगरंगनि [illegible] गननिगाइये । सीताजीके[illegible] ठैहैकमलखंजरीटहूमेंपाइये २८ ॥

न्यारे सेतागसों जुदो प्रमाण मीनके सनमें मानिये है श्रीसीताजीके नैननकी निकाई शोभा सो हमहीं में और में नाहीं है सबकोही कहिये मनलों जानतहै सुकोअर्थ सो वात कैसे हमहीं नहीं जनाइये काकु स्वरसों जताइये जाहिरकियेही है नैन क्रिया नयही सब कोई जानत हैं गुप्त नहीं को कैसे क्यों नहीं जताइये कानके वाणनिको परिमाण अपरिमित और और नरहके गर्व मीनमें ऐसी मोहन क्रिया कहां है फेरि श्री सीताजीके नैननिकी निकाई सौंदर्य हमहीमें हमारे नेत्रनि में है या वातको कुरंग जो हरिण ताकी जो अंगना स्त्री ताके अंगनमें रहिवेकी ठौरमें गाइयेहै वे सब गावैहैं कहै हैं यह अर्थ हमारे नेत्र कैसेहैं सविलास हैं जैसे कटाक्ष आदि को विलास सीताजी के नेत्रनिमें है तैसो हमारे नेत्रनिमें फेरि हमारे नेत्र भी गीतहैं प्रसिद्धहैं लोगनि तारीफकरी है फेरि हमारे नेत्र भी रंगरंगनिसों युक्त हैं सीतासेनता तासों युक्त हैं मीन आदि वह सब झूठेहैं कमलनि विषे औ खंजनविषे भी पाइये देखिवेमें आवैहै केवल उनहीं विषे नहीं एक श्री सीताजीके नेत्रनकीशोभा मीनआदि अनेकमें वरणीहै२८॥

(श्लेपोपमा) दो० ॥ जहांस्वरूपप्रयोगियेशब्दए कहीअर्थ ॥ केशौतासोंकहतहैंश्लेषोपमासमर्थ २९ ॥

एक रूपको शब्दकरिये उपमान उपमेयसों भिन्नरूप कै नहीं लागे एकहि अर्थ करि लागे २९ ॥

कवित्त ॥ सगुणसरससवअंगरागरंजितहैसुनहुस भागवड़ेभागवागपाइये । सुन्दरसुवासतनुकोमलअ मलमनपोड़शवरपमयहरपबढ़ाइये ॥ वलितललितवा सकेशौदाससविलास सुन्दरशृंगारल्याईगहरुनल्याइ

ये ॥ चातुरीकीशालामांभ चातुरहैनंदलालचंपककी
मालाबालाउरउरभाइये ३० ॥

सखी नायकसों कहतिहै हे नंदलाल यह जो चातुरी की
शालाघरहै जामें चित्रकारी आदि चतुराई करति किंवा कोई
उपरीआवै तो देखि नहीं सकै ताके मांझ थीचतें चातुरी जा-
यके जलदहोयके कहूं चातुरहै यह भी पाठहै चंपाकी माला
सरीपी जो यह बालाहै सो छातीसों उरझाइये लगाइये यह
अर्थ माला कैसीहै गुनडोरा ताहि सहितहै सरस रसनाहित
है सूखी नाहीं है फेरि सब याके अंगपत्रनों पीतरंगनों रंगे
विधाताने हे सभाग वड़भाग त्रिभाग फरसवंदी जामें किंवा
जुदी जुदी जातिके वृक्ष जुदेजुदे लगायेहैं ऐसे बागनिमें पाइ-
येहै फेरि सुंदर है फेरि सुगंधहै जाके तनु शरीरमें किंवा मन
शरीरको सुवास करैहै किंवा सुवास है तनु शरीरको कोमल
लगतिहै हे अमल मन षोड़शवर्षमय सोरहवर्षकी चंपाके फू-
लमें सुगंध बहुत होतहै हरषको बढ़ावनिहै फेरि अलिन
आछे वासवस्त्रसों लपेटीहै सुगंध जानो न रहै वाने नविलास
विलास सहित जो मालिनि सो बनायके ल्याईहै गहरु विलं-
ब मति कीजिये बालापक्ष भले गुनसहितहै फेरि सरस और
नायकनते वेशहै किंवा शृंगार रससहित है फेरि सब अंग
जाके रागकेसरि मेंहदी जावक इत्यादिसों किंवा अनुरागनसों
रंगेहैं हे सभाग बड़े भाग्यसों बागमें पाइये है फेरि सुंदर है
फेरि सुवासहै सुंदरबास घरहै जाको भले घरकीहै सो ललित-
तलौ है किंवा कोमल तनु शरीरहै जाको औ अमल निर्मल
जाको मनहै औ सोरह वर्षकी है औ हरषको बढ़ावनि है सो
ललित वस्त्रसों वेष्टितहै औ सविलासहै सुंदरि जो सखी सो
शृंगारिकै ल्याईहै गहरुविलम्ब नहीं लगाइये ऐसे अर्थ किये
लच्चण नहीं लागे तासों ऐसे लगाइये लहुरु माला कैसी

डोराहै यामें भी चोटी बंधन नीवीबंधनके डोराहैं ये भी चौ भी सरस वेशहैं येभी वोभी राग रंग तासों रंगीहैं हे सभाग बागबागी में याको भी पाइयेहै हे अमल मन सुंदर जाकेतन में गंधहै औ कोमल है औ सविलास जो पुरुषहै ताकी दोऊ सुंदरीहैं आछी हैं शृंगारके बनाइके ल्याई है मालिनि औ सखी ३० ॥

(धर्मोपमा) दो० ॥ एकधर्मकोएकअँगजहांजानि चतुहोय ॥ ताहीसोंधर्मोपमाकहतसयानेलोय ३१ ॥

एक धर्म को जहां एक अंगहोय कोई तरह करि जहां वरणिये धर्म रस आदि जानिये ३१ ॥

कवित्त ॥ उजरेउदारउरवासुकिविराजमानहारके समानउपमानआनटोहिये । शोभितजटानिवीचगंगा जीकोजलविंदुकुन्दकलिकासेकेशौरायमनमोहिये ॥ नखकीसरिखाचंद्रचन्दनसीचारुरज अंजानिशृंगारेहैंगर लरुचिरोहिये । सवसुखासिद्धिशिवासोहैशिवजूकेसंग जावकसोपावकलिलारलाग्योसोहिये ३२ ॥

शिवके उरविषे उज्ज्वल औ उदार बड़ो ऐसोवासुकिनाग विराजमानहै किंवा शिवके उज्ज्वल निर्मल औ उदार बड़ो उरविषे सो हारके तुल्यहै जाकी उपमा और नहीं खोजिये हारकी उपमाहै जलविंदु जो है सो कुंदकी कलीके समान है चंद्रमा नखरेखा सरीषोहै मुग्धाको नख नायकको भी वरणतेहैं। स्यामगात नखरेख विहारी । गरलविषे ताकी रुचिकांति सो अंजन शृंगारहै नायकाको अंजन लाग्योहै इहां एक धर्म कौन है शृंगार रसनाको एक अंग आभा समान जानि परैहै पूरो शृंगार शिव विषे नहीं भासै वासुकि को हार के समान इत्यादिकहै सो धर्मोपमा ३२ ॥

(विपरीतोपमा) दो० ॥ केशवपूरेपुण्यके[illegible] हीन ॥ तासोंविपरीतोपमाकेशवकहतप्रवीन ३३ ॥

पुण्यके पूरे सुकृत के पूरेजाको आगे सम्पति[illegible] फेरि हीनभाग्य करिकै जानिये पूरुष पूरगुणनिके[illegible] है पहिले शूरता आदि गुणसों पूरे ३३ ॥

सवैया ॥ भूपितदेहविभूतिदिगम्बरनाहिन[illegible] अंगनवीनो । दूरिकैसुन्दरसुन्दरीकेशव[illegible] दरिकीनो ॥ देखिविमंडितदंडिनसोंभुजदण्ड[illegible] दण्डविहीनो । राजनिश्रीरघुनाथकेराजकुमण्डल[illegible] कमंडललीनो ३४ ॥

जाकी देह सम्पत्ति सों भूपितथी सो अब दिगंबर[illegible] नाहिनशब्द तरह बाचक है अम्बरनाहिन[illegible] शून्यहै किंवा नाहिनको अर्थ नहीं है अम्बर[illegible] दिगम्बर अंगभयेहैं दुरिकै छपिकै सुन्दरपुरुष औ सुन्दरि[illegible] दोरिकै जल्दी सों दरी कन्दरीमें मन्दिरम्बरकीनो[illegible] दण्ड औ दोऊदण्डनिसों लाठिसोंमण्डित[illegible] तरवारि रूप जो दण्ड ताहिकरि[illegible] औ काहूको दण्डदेय थे इनदोऊ[illegible] इहांलगाइये श्रीरघुनाथकी रा[illegible] मण्डल को छांड़िकै आपनो देश छांड़िकै कमण्डल[illegible] दण्डीभये हैं राजा भाग्यके पूर्वजन्मसों[illegible] थो सो अब हीनभये ३४ ॥

(निर्णयोपमा) दो० ॥ उपमाअरु[illegible] णादोपविचार ॥ निर्णयउपमा[illegible] सार ३५ ॥

उपमाइति स्पष्ट है ३५ ॥

कवित्त ॥ एककहैअमलकमलमुखसीताजीकोएक कहैचंद्रमाइआनंदकोकंदरी । होइजौपैकमलतौरैनिमा हिंनकुचेरीचंद्रजौतौवासरमेंहोयद्युतिमंदरी ॥ वासर कमलरजनीहीमेंमुखचंद वासरहूरजनीविराजैजगवन्द री । देखेंमुखभावतनदेख्योईकमलचंदतातेमुखिमुखै सखिकमलनचंदरी ३६ ॥

सखीसों सखी कहति है एककवि कहत है श्रीसीताजी को मुख अमल कमलहै एककवि कहत है आनन्द को कन्द जो मुख सो चन्द्रमा इहैरी सखी वासरमें दिनमें कमल की शोभा है औ रजनी राति में चन्द्रमाको मुख शोभत है मुख जोहै सो जगवन्द है जगतजाकी स्तुतिकरत है सो मुखदिन में औ रात में विराजतहै शोभतहै मुख तो देखे सों भावतहै कमल चन्द्रदेख्योनहीं भावतहै नहभावत कमलचन्द यहभी पाठहै कमलचन्द्र को दोषकह्यो मुखको गुणकह्यो ३६ ॥

(लक्षणोपमा) दो० ॥ लक्षणलक्ष्यजुवरणियेबुधि बलवचनविलास ॥ हैलक्षणउपमासुयहवरणतकेशव दास ३७ ॥

एकवस्तु लक्षण निशानीहोय एकलक्ष्यहोय जासों लक्षण सो जानिये सो लक्ष्य ३७ ॥

कवित्त ॥ वासोंमृगअंककहैतोसोंमृगनैनीसवैवासों सुधाधरतोहूंसुधाधरमानिये । वहद्विजराजतेरेद्विजरा जिराजैवहकलानिधितोहूंकलाकलितवखानिये ॥ रत नाकरकेतोउ केशवप्रकाशकरअंबरविलासकुवलयाहित मानिये । वाकेशीतकरकरतूहीसीताशीतकरचन्द्रमासी चन्द्रमुखीसवजगजानिये ३८ ॥

सखीकीउक्ति नायकासों वानों चन्द्रमानों लोग मृगअंक कहतहैं मृगहै अंक विषे जाके तोसों मन मृगनैनी। [illegible] भी सुधाधरहै सुधाहैअधरविषे जाके द्विजवांन [illegible] पंक्ति सोहतिहै कला चतुराई की निधि [illegible] चन्द्रमा औ हे सखि तू रत्नाकरसमुद्र ताको प्रकाश करनवाला [illegible] वाला चन्द्रमापुत्रहै तूलक्ष्मीहै याते किंवा रत्नके [illegible] तेरेअंगमेंहैं तिनको प्रकाशकरि फेरि दोऊको [illegible] औ अम्बर वस्त्र कुवलयरात्रि विकासी कमल औ [illegible] भूमिमण्डल तीसरी तुक में श्लेषको लक्षण [illegible] शब्द ते लक्ष्यलक्षण जानिये याते श्लेषोपमा [illegible] चन्द्रमा के कर किरण शीतलकरनवाले हैं तेरे कर हाथ शीतल हैं चन्द्रमुखी तोहिं चन्द्रमासी सबजगजानतहै चन्द्रमा औ [illegible] लक्ष्य मृगनैनी इत्यादि निशानी सोई लक्षण ३८ ॥

(असम्भवोपमा) दो० ॥ जैसेभावनसम्भवैतैसोकर तप्रकास॥होतअसम्भावितवहांउपमाकेशवदास३९ ॥

जैसी वस्तु जामें नहींसम्भवै जो होय भी [illegible] भवै तैसो प्रकाशकरै ३९ ॥

कवित्त ॥ जैसेअतिशीतलसुवासमलयजमाहिंअन लअनलबुद्धिवलपाहिंचानिये । जैसेकोनोकामवशको मलकमलमाहिंकेसरोईकेशोदासकंटकजानिये ॥ जै सेविधुसधरमधुरमधुमयमहि [illegible] खानिये । सुन्दरिसुलोचनिसुवचानितुतिनैनैतेरेतुम आखरपरुखरुखमानिये ४० ॥

मलय चन्दन अतिशीतल है औ सुवास [illegible] बुद्धिके बलसों वामें अनिल अग्नि पहिचानिये [illegible] तो वासें आगिनिकरे आगि वासें [illegible]

के दलमें कोमल कमलके कोश में केसराजोहै सोई कंटकसो होतहै विरहिनी को विरह समयमें इहांभी नाहींसम्भवै जैसे विधुमधर मधुरमुमय महिमोहै याकोअर्थ जैसे विधुचन्द्रमा नथर भागतहित अखण्डित यहभर्य हेम में मधुरनाम प्रिय वस्तुको औ स्वादुको औ रसको नाम विधुसधर अखण्डित मधुरप्रिय जो माधुर्य ताहि मयहै पृथ्वीको मोहन है मोहरुख विरहिनी मोहमूर्छा नाहीदुखतौरहै जाको सो विरहिनी विष कहतिहै औ विषमय असहा कहतिहै हेसुदती सुन्दरहैं दांत जाके तेरो तेरोमुखमें परुषकठोर आखरमानियेहै नहींसम्भवै है सो कहिये ४० ॥

(विरोधोपमा) दो० ॥ जहँउपमाउपमेयसोंआपस मांझविरोध ॥ सोविरोधउपमासदा वरणतजिनहिंप्रबोध ४१ ॥

अर्थ स्पष्टः ४१ ॥

कवित्त ॥ कोमलकमलकरकमलाकेभूषणकोकेशौदासदूषणशारदशशिठाईहै । शशिअतिअमलअमृतमयमणिमयसीताकोवदनदेखिताकोमलिनाईहै ॥ सीताकोवदनसवसुखकोसदनजाहि मोहतमदनदुखकदननिकाईहै । आधोपलमाधोजूकेदेखेविनुसोईशशिसीताकोवदनकहूंहोतदुखदाईहै ४२॥

कमल कोमल है फेरि कमल लक्ष्मी के करको भूषण है शरदको जो शशि सो ताको दूषणकरत हैं संकुचितकरत हैं शरद में धोतन कमल गलिजात हैं अमृतमय जो शशि सो मणिमय मणिकहे भूषण जहां ऐसो सीताजीको मुखदेखिकै मलिनहोत है सीताजीको वदन जाहि देखिकै मदन मोहित होतहै जाकी निकाई दुखको कदननाशक है माधोजीको श्री-

रामचन्द्रजी को देखेबिना बिरहमें सो शशिवदनको दुखदाई होतहै चन्द्रमासों सीताजी के मुखमों परस्पर विरोध ४२ ॥

(मालोपमा) कवित्त ॥ मदनमोहनकोहैरूपकोरूपककैसोमदनबदनऐसोजाहिजगमोहिये । मदनबदनकैसोशोभाकोसदनश्याम जैसोहैकमलमलोचननिजोहिये ॥ कैसोहैकमलजैसोआनँदकोकंदशुभकैसोहैसुचंदजैसोउपमानटोहिये । कैसोहैसुचंदयहकेशवकुँवरकाहूसुनौंप्राणप्यारीजैसोतेरोमुखसोहिये ४३ ॥

मदन जो काम सो मोहन जो श्रीकृष्ण तिनको रूप सौंदर्य ताको रूपक है समता करनवालो है सखी नायका सों कहतिहै नायका पूंछतिहै कैसोहै मदनबदन जाहि श्रीकृष्ण को देखि जगत् मोहिजानै जैसोहै फेरि नायकापूंछतिहै शोभा को सदन जो श्याम सो मदन बदन कैसो कहिये समान है तब सखी कहतिहै कमलकी रुचि जाके लोचननि में जोहिये है देखिये है नायका पूछतिहै जैसो शुभ आछो आनन्द को कन्दमूलहोय फेरि पूंछतिहै सो कन्दकैसोहै जा तो चन्द्रमा को उपमान टोहिये है खोजियेहै और नहीं चन्द्रकैसोहै श्रीकृष्ण सरीषो सखी सुनो प्राणप्यारीसे कान्ह जैसो तेरोमुख शोभित है तैसो शोभत है यह प्राचीन मतकी मालोपमा है चमत्कार नहीं नवीनमत की मालोपमा चमत्कारहै ४३ ॥

(परस्परोपमा) दो० ॥ जहांअभेदबखानियेउपमाअरुउपमान॥तासोंपरस्परोपमाकेशवदासबखान४४ ॥

परस्पर उपमालागै अभेद चाहिगाइये ४४ ॥

कवित्त ॥ वारिनबड़ेनबहुनाहिनैरहस्थलि रहानैनबुद्धिवंतनारीश्रोननरसे । अंगीनन्अनंगीनानछन्नै

नमेलननन्यारऊनशूरेरणथावरलग्ररसे ॥ दूबरेनमोटे रंकराजाऊकहेनजायें मरणग्रमरग्ररुग्रापनेनपरसे । वेदहूनकछुभेदपावतहेकेशोदास हरजूसेहेरेहरिहरहेरे हरिसे ४५ ॥

हरिजूसे हैं होहरि हरिसे याको अर्थ कोई कोई सों कहत हैं हो सम्बोधन हर महादेव सरीपे हरिहैं हर हैं हरिसरीपो महादेव हैं एक है यहअर्थ स्यार कायरनहीं औ शूरनहीं मरे भी नहीं अमरभी नहीं अवतार जहांदेखिये है तहां आवि-र्भाव तिरोभाव भी है फेरि अवतार सवबनेभी हैं अगोचरहैं यहअर्थ ४५ ॥

(संकीर्णोपमा)दो० ॥ वंधुचोरवादीसुहृदकल्पवृक्षप्र भुजानि॥समारिपुसोदरग्रादिदैइनकेग्रर्थवखानि ४६ ॥

संस्तुत में उपमा वाचक है ताके अर्थ में एक बन्धुआदि शब्द सब हैं ४६ ॥

कवित्त ॥ विधुकोसोवंधुकिधौंचोरहास्यरसकोकिकुं दनिकोवादीकिधौंमोतिनकोमीतहै । कल्पकलहंसको किक्षीरनिधिछविप्रक्षहिमागिरिप्रभाप्रभुप्रगटपुनीतहै ॥ ग्रमलग्रमितग्रंगीगंगाकेतरंगसम सुधाकोसमूहरिपु रनकोग्रभीतहै । देशदेशादिशिदिशिपरमप्रकाशमान किधौंकेशोदासरामचन्द्रजीकोगीतहै ४७ ॥

विधुको बन्धु है अर्थ नें निकस्यो विधुके समान है आर्थी उपमानई सब उज्वल कहतहै हास्यरस उज्वल है ताको चोर है किधौं मोमतिनको मीतहै किधौं उत्प्रेक्षा वाचक है मीत उपमावाची है याते संकर बहुत उपमा है याते संकीर्ण कलहंस को कल्पवृक्ष है सम है यहअर्थ क्षीरनिधि की छवि को पृच्छनिहारो है तु हमें सरीपोहै हिमालयकी प्रभाको प्रभुहै

सुधाको समूहहै औ रूपकोरिपु कुटाई नाकीभी वन्धु [illegible] श्वेतहै ४७ ॥

दो० ॥ कोकिलसेंअतिकृष्णघनकारि[illegible] ॥ मृगमृगऐसोराजसोऐसोवरणनलाज ४८ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांविशेषालंकारवर्णनंनाम चतुर्दशप्रभावः १४ ॥

हीनोपमा अधिकोपमा दोष है यहदोहा वहुत पोथिन में नहीं है कोकिल छोटो ताकी उपमा [illegible] उपमा मृगराजको अधिक जो मृगराज ताकी उपमा मृग [illegible] ऐसी नहीं वरणिये ४८ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतायांकविप्रियाभरणाख्यायां चतुर्दशप्रभावव्याख्या १४ ॥

(अथनखशिखवर्णन) दो० ॥ सविताकि[illegible] वरणेकविताअंग ॥ कहौंयथामतिवरणि[illegible] प्रत्यंग १ ॥

प्रामाणिक पोथिनमें नखशिख वर्णन नहीं है [illegible] भाई वलभद्र तिन नख शिख वनायो याते [illegible] वनायो किंवा पीछे वनायो है याते सब पोथिन में [illegible] या प्रभाव के अन्त में चाहिये सो आदि में [illegible] टीकाकरत है सविता सूर्य ताके उपा[illegible] पाई ज्योंजिसतरह कविताकेअंगवरणे त्यों [illegible] के प्रत्यंग एकएक वरणत हैं १ ॥

दो० ॥ कहौजुपूरवपंडितनजानीजिननीनानि ॥ तिनकीकविताअंगकीउपमाकहौंवखानि २ ॥

जानि कहिये समुझ २ ॥

दो० ॥ जगकेदेवीदेवकोश्रीहरिदेवबखानि ॥ ताह रिकोश्रीराधिकाइष्टदेवताजानि ३ ॥

जगकी जो देवी दुर्गाआदि औ देवता महादेवआदि तिन के देव श्रीहरि हैं इष्टदेवतासों है किंवा इष्ट है औ देवता को अर्थ क्रीड़ा रासआदि ताकी करनवालीहैं ३ ॥

(भूषित) दो० ॥ तिनकेभूषतभूषणानित्रिभुवनपति केअंग ॥ तिनकेकेशवदासकविवरणतहैप्रत्यंग ४ ॥

लीलाकरैं तव आपने भूषण श्रीकृष्णको पहिरावैं तिहारो भूषणहों पहिरौं पिय अपनो तुम्हैंपहिरावों तुम्हैंकहों वृषभानु लाड़िलीहों नन्दनन्दकहावौं । सूरदास को पद है प्रत्यंग सब अंग ४ ॥

दो० ॥ नखतेशिखलौंवरणियेदेवीदीपतिदेखि ॥ शि खतेनखलौंमानुषीकेशवदासविशेखि ५ ॥

देवताको पावँकीओरते वरणिये औ मानुषीको शिखाकी ओर ते वरणिये ५ ॥

(चरणउपमा) दो० ॥ उपमाऔरसमानसबइत नोभेदबखानि ॥ जावकयुतपगवरणिये मेंहदीसंयुत पानि ६ ॥

पुरुषके चरणकी उपमा औ स्त्रीके चरणकीउपमा समान हैं इतना भेद जावक महावरयुक्त पावँ वरणिये मेंहदी युक्त पाणि वर्णिये ६ ॥

(जावकवर्णन) दो० ॥ रागरजोगुणकोप्रगटप्रातिप क्षीकोभाग॥रंगभूमिजावकवरणिकोपरागअनुराग ७॥

रजोगुणकोरंगहै भाग प्रातसमय तामें लालीहोतिहै ताको

प्रतिपक्षी शत्रुहै तैसो है यहअर्थ औ रंगभूमि नाचिबो ठौरिहै तैसो वरणिये कोपको रंग औ अनुराग को रंग ७ ॥

कवित्त ॥ कोमलअमलताकोरंगभूमिकैधौंयहशोभियतिअंगनकैशोभाकोसदनको । अरुणदलनिपरकीन्हौंकैतरणिकोय जीत्योकिधौंराजीवगणगनजीवकमलको ॥ पलपलप्रणयकरतकिधौंकेशौदासमानोनिरक्योपूरवानुरागपियमनको । एरीनृपभानकीकुमारितेरेचार्णमेंहैंजावककोरंगकैसुहागसौतिजनको ८ ॥

कोमलता औ अमलता ताकी रंगभूमिहै कै किधौं शोभा को जो सदन घर ताको आंगनहै पावर्है कै अरुणदल ललाम है सो कैसोहै जापे तरणि सूर्य कोपकियोहै कोपको रंग मान औ कमलाल तासों अति लालई जानिये किधौं पाणनि के राजीवकमलके गणसमूह ताको जोरजोगुणगवी ताको जीत्यो ताको शत्रु है प्रणय प्रेम अनुरागलालहै ८ ॥

(पावँवर्णनम्) दो० ॥ अतिकोमलपदपाणिपल्लवकमलसमान ॥ जलजकमलसेचरणकहिकविकहिथलजप्रमान ९ ॥

कमल के पल्लव पत्रसमान पल्लव नाम पत्रहीं कोहै किंवा कमल समान कोमल सो पल्लव पत्र जैसो जलमें उत्पन्न भयो जो कमल तेहिसदृश चरणकोकहौ सो थलकमल करिकैकहौ चरण थलकमलहै करिकै याकोअर्थ अनेककरिकै यह प्रमाण है ९ ॥

कवित्त ॥ गंगाजूकेजलमध्यकंठकेप्रमाणपैठि पढ़िपढ़िसूरमंत्रआनंदबढ़ावहीं । केशौदासधामजलजातिलहैएकरसठाढ़ेएकपायँकोटिकलपनशावहीं ॥ कोमलअ

नतनभयेकमलानिवासभये सुन्दरसुवासमनयदपिभ्रमा वहीं । पायोपदब्रह्मसुतपदामिनिपदमिनितेरेपदपदवी कोपदपैनपावहीं १० ॥

पद्मनि कमलानिने ब्रह्मासुत पुत्र है ऐसो पद पदवी बड़ाई पाईहै हे पदमिनि तेरेपदकी बड़ाईहै ताको एकपद एकभाव भी नहींपायसकैं रत्ती मासा पाव ये थोरोशब्दवाचीहै कमल तपस्याकरतेहैं सूर्यको मंत्रपठत हैं काहूको बुरानहीं मनावत हैं आनन्द बढ़ावत हैं कोटिकल्प वितावतहैं तपस्या सो ऐसे भये हैं मन कमल को चाहनो फिरत है १० ॥

(पादांगुलवर्णन) दो० ॥ अंगुलीचंपककीकली जीवनमूरिप्रमान ॥ ताराराविशशिसुमनगनमनगनिन खनिसमान ११ ॥

नायक की जीवनमूरि आंगुली वर्णों नख सुमन फूल है मानों औ मणिगणके समान नख ११ ॥

दो० ॥ विछियावांकअनौटकीनाहिनउपमाआन ॥ शोभाप्रभातरंगगतिहंसअंशतनुत्रान १२ ॥

वांक अनौटकोभेदहै शोभायुत प्रभाजामें चमकरहै ताको औ तरंग सो जानों रूपनदी को तरंग अंशु किरण तनत्राण बख्तर जिरह ताहि सम १२ ॥

सवैया ॥ चंपकलीदलहूतेभलीपदअंगुलीवालकी रूपरसैंहैं । शुभ्रसुदेशलसैंनखयोंजनुप्रीतमकेदृगदेव वसैंहैं ॥ वांकअनौटवनीविछिआनिविभूपितज्योतिज रायग्रसैंहैं । केशवसोमसरोजनिऊपर कौपिमनौतनुत्रा णकसैंहैं १३ ॥

रूप जामें रसिरह्योहै भीजिरह्यो है दृग नेत्र ताके देवता

सूर्य चन्द्रमावसेहैं चांक अनोटसों बनी कविन्हीं आंगुरी छिछिआनकी ज्योतिसों विभूषित हैं बिछिआ जो जगत जानेलसेहैं कहूं असे यहभी पाठहै तहां लखिये बैठेहैं मानोंमानों सोम चन्द्रमा औ सरोजकमलन जानिये केलियें मानोंलनत्राण वख्तर पहिरेहैं नखकी समता चन्द्रमा करतहै पाव की समता कमल करतहैं याते १३ ॥

(नूपुरवर्णन) दो० ॥ नूपुररक्षायन्त्रमुनिलोचनगुनगतहार ॥ जावकयशपाठकमधुप जामिकबन्धुनिवार १४ ॥

रक्षाकोयंत्रहै किधों रक्षाकोमतिहै काहूकी नजरि न लगि जाय याके लिये औगुण के जे गणसमूह ताके नेत्रहै जामिक कोतवाल १४ ॥

कवित्त ॥ गतिनकेहारकिविहारकेपाहरूरूपकिधौं प्रतिहाररतिपतिकेनिलयके । हंसगतिनायककिगुण गायककिश्रवणसुहायककिमायकेहंमयके ॥ केधौं मखमूलअलिकुलकुनत किकेधोंप्रातिधुनितमुमानिनि चयके । हाटकघटितमणिश्यामलजटितपगनूपुरयुगल किधौंबाजेहैंविजयके १५ ॥

अनेकतरहकी गतिरूप जे स्त्रीहैं तिनके गलेके हारहैं कि बिहार के पाहरू यहहै पाहरू कोतवाल कहूं पाठहै बिहार के पाहरू हरि किधौं विहार के जो पाहरू हैं तिनकी हरी चौतरा में हरी हरति है लोहकी होय सो बेरी कहावै बांधवेकेलिये होय सो हरीकहावत है रतिपति काम ताके निलयघर ताके प्रतीहार हैं [illegible] को भी नाम द्वारपालको भी नाम हंसकीसी गति तिनके के नायकहैं जो स्त्रीन को नागिनोंमिसा है तो [illegible] दैत्यके कोई सम्बन्ध में गायारी हैं किधौं [illegible]

कुनतबोलत अलिकुलहैं रतिमें जो शब्दहोय ताकोनाम मणि नरतिकुलनके जो समूह ताके प्रतिधुनिके करनवालेहैं हाटक सोना तासों घटित रचितहै १५ ॥

(जेहरिवर्णन) दो० ॥ जेहरिजयकंकणकलितकेश वदासमुजान ॥ मालाशालाशुभसभा सीमासमसो पान १६ ॥

जे हरिजीति को कंकण कलित अनेकार्थ शब्द है तासों कलित सरीषी जानिये मालासी जे हरिशाला घरसी शुभकल्याण ताकी सभाशुभकी जो सीमा मेड़ सोपानसीढ़ी १६ ॥

कवित्त ॥ कोमलकमलकूलनूपुरनवलअलिकुलन कीशालाकिधौंकेशवसुभायकी । चरणसरोवरसमीपकि धौंबिछियाकुनतकलहंसनिकीबैठकबनायकी ॥ गजनि कीहंसनिकीजीतिगतितेरीगति बांधीजयकंकणकीशो भासुखदायकी । अमिलसुमिलसीढ़ीमदनसदनकीकि जगमगैपगयुगजेहरिजरायकी १७॥

कमल सो अमल चरण जानिये ताके कूलनज़दीक नूपुर सोई नवीन अलिकुल है ताकी नीकी सुभावही की आली शाला घर जेहरिहै बिछिया सोई कुनत बोलत कलहंस है तिनके बैठिवेको स्थान किधौं जेहरिहै गजनिकी औ हंसानि की गतिको तेरीगति ने जीतिकै विजय को जनावै ऐसो कंकण बांध्योहै किधौं सुखदाई शोभाहै औ जे हरिके बीचबीच कोरहोत है सीढ़ीभी अमिलसुमिल ऊंची नीचीहोतिहै १७ ॥

(उरूवर्णन) दो० ॥ उरूकरीकरकोलिसमकरभशो भमोलीन ॥ चक्रवाकथलपुलिनसम वराणानितम्बनि पीन १८ ॥

कवित्त ॥ कोमलकमलमुखिनेरयेयुगलजानुमेंयेन्न वीरजकेमनहिंहरतुहैं । सौरभसुभायशुभरंभामेंसदन अरुकेशवकरभहूकीशोभानिदरतुहैं ॥ कोटिरतिराजब्रजराजशिरताजकीसों देखिदेखिगजराजलाजनिमग्न हैं । मोचिमोचिमदरुचिसकलसँकोचशोचसुधिआयेशुण्डनिकीकुण्डलीकरतुहैं १५ ॥

सखीवचन नायकासों युगल जानु दोऊजंघा सो ब्रजवीर श्रीकृष्ण तिनके मनको हरै हैं कहूंपाठ बलहि हरतु हैं जंघा देखि मूर्छितहोतहैं मूर्च्छा आये बलनहीं रहतहै स्वभावहीं सों जाको सौरभ सुगंधताहै स्वभावको सौरभ सुगंध शुभ तासों ताको सदन घरहै औ रंभा केला तेसोंहैं अन्वय जानिये करभ हाथको अवयव पीछे कहे ताकी शोभा निदरनिके घटि जातिहै कोटि रतिराज काम ताके ब्रजराज सो शिरके ताज कलँगी समान है श्रेष्ठ हैं यह अर्थ तिनकी सौं सौंह शपथ करतिहौं मेरोशुंड ऐसो सुंदर नाहीं याते गजराज लाजनि मग्न हैं मदकी रुचिशोभा ताको छोड़ि सबतरह सो संकोच शोचनि विचारिकै तेरी जंघाकी जब सुधिआवतिहै तब शुंडकी कुंडलीकरतहैं शुंडसमेटि कुंड सो बनावतुहैं १६ ॥

(नितंबवर्णन) कवित्त ॥ चहूंओरचितचोरचारुचाकचक्यचक्रमणिसुन्दरसुदरशनदरशनहीनेहैं । दिनिमुनत्नखनिघटाइवेकोसुखरुख मुरनिवढ़ाइवेकोकेशवप्रवीनेहैं ॥ सबहीकेमननिहरनकरिहरिहूकेमनमथिवेकेसाथ हाथदीनेहैं । रुचिशुचिसकुचिसकेलिकैलगाइवेको हूनयेचतुरानितंबचक्रकीनेहैं २० ॥

कटिते पीछलो भाग सो नितंब चहूंओर है गिर्दहै जिवा

चहूंओरनसों चिनको चोरत है मणिको जैसो चक्रवाक होय तैसो यामें चाकचाक्य चमचमाहटहै औ सुंदर सुदरशनचक्र सोहै फेरि सुदरशनकरिकै हीनहै कपरासों छपायोरहतहै औ सुदरशनचक्रको भी दरशन सबकोऊको नहींहोतहै वा चक्र सों यह नयोचक्रहै यामें अधिकगुणहै वहचक्र जोहै सो दिति सुत दैत्य ताके सुखको घटाइवेको प्रवीणहै औ सुर देवता तिनको बढ़ाइवेको सुखरुख सुखको रुख तो रहै जाकी औ प्रवीणहै यह चक्र अधिक है सब जे सुखीजन तिनके मनको हरणकरिवेको वा चक्र सबके मनको नहीं हरतहै काहूको भय उपजावत भी है और वा चक्रसों हरिको मन नहीं मथोजात है यासों हरिहूके मन मथिवेको जब नहीं मिलै तब व्याकुल हरिवेको कोई चतुर जो याको बनावनिहारहै तानें बनायकै मनमथके हाथमें दीनहै मनमथके वशमें करिदीनेहैं सखी नायकासों कहतिहै हे तरुणि रुचि कांति शुचि पवित्रता औ संकोच याको समेटि काहू चतुर त्रिधाताने तेरो जो नितंब सो नयो चक्र कीन्यो है २० ॥

(कटिउदररोमावलीवर्णन) दो० ॥ कटिअतिसूक्षम उदरद्युतिचलदलदलउपमान ॥ रोमलतातमधूमअ तिचारुचिटीनसमान २१ ॥

कटि अतिपातरी वर्णिये फेरि उदरपेट ताकी द्युति वर्णिये औ चलदल पीपल ताको पात वर्णिये ताकी उपमा दीजिये रोमावलि तौ तम अंधकारसम धूमसम वर्णिये अति सुंदर वर्णिये चींटी पिपीलिका कीड़ी कहत हैं ताकी पंक्ति सम वर्णिये २१ ॥

कवित्त ॥ भूतकीमिठाईजैसीसाधुकीझुठाईतैसीस्या रकीढिठाईऐसीक्षीणक्षहूंअतुहै । धीराकोसोहासकैशौ

दासदासीकोसोसुखशूरकोसोशंकअंकरंककैसोबिनुहै ॥ सूमकोसोदानमहामूढ़कोसोज्ञान गौरीगौरकोसोमानमै रंजानसमुदितुहै । कौनहूंसवाँरीवृषभानुकी कुमारी कहि तेरीकटिनिपटकपटकोसोहितुहै २२ ॥

हे वृषभानकी कुमारी तेरी कटि निपट कपट [illegible] है किंवा छहूऋतुमें क्षीण तेरीकटि रहतिहै सो कपट [illegible] सरीपीहै कहिवेकोहै दासी टहलमें रहनिहै [illegible] वेको है अंकनाम हेममें दुखको [illegible] दुख रंक दरिद्र ताको जैसो वित्त धन गौरी पार्वती गौर महादेव पार्वती मानिनी नहीं होय महादेव मानी नहीं [illegible] जो मानकरै सो जुदारहै दोनों समुदित हैं मिलित [illegible] यह संदेह करावतहै जैसे भूनकी मिठाई [illegible] है कै झूठहै खबरि नहीं परै केतने पद [illegible] शूरको उत्साह वाढ़ेहै शंका नहीं शंका होय तौ [illegible] होय केतना पद सूक्ष्मता जतावत [illegible] दासी [illegible] थोरीहै ऐसे निकारिये २२ ॥

(रोमावलीऔउदरवर्णन) कवित्त ॥ [illegible] गवानवोईहैशृंगारवेलि सींचिकै [illegible] हिये । किधौंहरिनैनखंजरीटनिकी [illegible] दासनखपंकरेखरोहिये ॥ किधौं [illegible] टव्वरटूटिवेकोमंत्रलिखिलोचननिजोहिये । [illegible] रशुभसुन्दरीकीरोमराजी किधौं [illegible] रुसोहिये २३ ॥

वागवान [illegible] है हरिकेनैन सोई खंजन [illegible]

नरनें आगी है जो पंक ताकी रेखा रोमावली प्रगटभई है चलदल पीपर ताके पात परपियको कपटरूप जो याको ज्वर है ताके टारिबेके लिये यंत्रलिख्यो है विधाताने लोचननिसों जोहियेदे देखियेहे चित्तकी जो चतुरई ताकी चोटीहै २३ ॥

(कुचवर्णन)दो०॥चकवाककुचवर्णियेकेशवकमल प्रमान ॥ शिवगिरिघटमठगुच्छफल शुभइभकुंभस मान २३॥

कुच ऐसे वर्णिये जैसे चकवा चकई को जोड़ा औ शिव की मूर्त्तिसे औ पहारसे गुच्छा फूल को इभ हाथी के माथा पर के कुंभ समान २४ ॥

कवित्त ॥ किधौंमनोहरमणिहारद्युतिसुरखेलैंयोवन करभकुंभशोभनदरसहैं । मोहनीकेमठकिधौंइंदिराकेमं दिरकिइंदीवरइंदुमुखीसौरभसरसहैं ॥ आनँदकेकंदकि धौंअंगहैअनंगहीकेबाढ़तजुकेशौदासबरसदरसहैं । ए रीवृषभानुकीकुमारीतेरेकुचकिधौं रूपअनुरूपजातरूप केकरसहैं २५ ॥

किधौं मनोहर जो मणि को हार सो द्युति युक्त जेहैं सुर तारा सो जहां खेलत हैं किंवा सुरको अर्थ जो आछीतरह दानकरै सो सुर कहावै महादेवसों जो वरचाहै सो वर पावै याते सुर महादेव लीजिये किधौं मनोहरजो मणिको हारहै तामें द्युति शोभायुक्त जो सुर महादेव सोक्रीड़ा करतहैं किंवा मनकोहरै सोमनोहर ऐसेजकुच तामें मणिकोजोहारहैसोद्युति युक्त सुरहै सोक्रीड़ा करतहैं किधौं किंवा किधौं मनको जोहर मधर जोकुच जाहिमें नायकाको मनवसतहै ताको निहारिकै द्युति शोभासोईहै सुर देवता सोखेलैहै मूर्त्तिमानशोभारहतिहै

यह अर्थ, किधौं, यौवन सोई है कनक [illegible] नहिं [illegible] हैं शोभन जाको दरशन है मोहिनी जो माया [illegible] के मठहैं जहां विद्यार्थ दगडी इत्यादिक हैं [illegible] ताको मन्दिर कमल है ताहि विषे इंदीवर श्याम [illegible] नीचे गोरे ऊपर श्याम सखी कहति है [illegible] गन्धहै सरसवेशहै किधा अनंगकाम ताके [illegible] में बाढ़त है तेरे रूपके अनुरूप योग्य हैं किधौं [illegible] ताके कलशहैं २५ ॥

(भुजवर्णन) दो० ॥ करपंकजपल्लवचरण [illegible] लतासुपास ॥ रत्नतारकाकुसुमसरनखन [illegible] स २६ ॥

करकोपंकजसे औ पल्लवसे चरणों औ भुज [illegible] कमल ताकी जर मृणाल नाहि सरीरा औ [illegible] रस्सी औ रत्नसरीषी तारासरीषी औ कुसुम सरीषी औ [illegible] सरीषी नखरुचि है जामें २६ ॥

कवित्त ॥ केशौदासगोरेगोरेगोलकामभ [illegible] मिनिकेभुजमूलभाइसेउतारेहैं । [illegible] नसेपरशतदरशतकंचनसेकठिनसुधारेहैं ॥ [illegible] लबाहुदेखिरी केहरनाह [illegible] चारेहैं । मलिनमृणालनुलपंकमें [illegible] तिनमेंछेदकरिडारेहैं २७ ॥

भामिनि के भुजमूल गोरे गोरे हैं औ गोल [illegible] काम के शूल के हरणवारे हैं [illegible] जानिये मानो विधि ने खराद पै [illegible] दीसत हैं विधाताने कठिनाई सौं कठिन [illegible] चेरी कंकण मनको पाशिबे को चाषिबेको मृणाल में [illegible]

शोभादेखि मलिनभयो तब आपनो मुख पंकमें छपायोदेखो ताबके भुजनि वाकी छातीमें तीखछेद कियो है मृणाल में छेद होत है २७ ॥

(करभूषणवर्णन) कवित्त ॥ गजराकरनिगजमोतिनकेअतिनीकेजिनकीअजीतिज्योतिकेशौदासगाईहै । वलयचलितवरकंचनकलितमणि लालकीललितपौंचीपौंचनिबनाईहै ॥ श्वेतपीतहरितभलकभलकातिलाल श्यामलमुमिलमेरेश्याममनभाईहै । मानौंशूरसोमकीकलासकेलिआपनीयो आपनीसखीकोसुखपायपहिराईहै २८ ॥

गजराकरभूषण सो गजमोतिन के अति नीके विराजत हैं गाइये बखानिये कंचन सों कलित युक्त ये जो वलयचूरी तासों चलित वेष्टित करत हैं लालमणि जो माणिक ताकी ललित पहुंचानि में बनाई है मोती श्वेत सोना पीत काँचकी चूरी सो हरितभी औ श्यामल श्याम भी ताकी भलक सो हाथमें भलकाति हैं सुमिलत हैं अनमिलनहींहै जहां जो चाहिये तहां सो तैसो है सखी कहति है हमारो हित जो श्याम श्रीकृष्ण तिनके मनमें सोहाईहै मानों सूर सूर्य सोम चन्द्रमा तिनकी कला सकेलिकै समेटिकै आपनीयो आपनी भी कला समेटिकै याते प्रकाशविशेष आपनी सखीजोहै मृणाल ताको पहराई है चन्द्रमा उगतके लाल है श्वेत चांदनी है कलंक श्याम है २८ ॥

(नखांगुलीमुद्रिकावर्णन) कवित्त ॥ गोरीगोरीआंगुरीनिरातेसेरुचिरनख औरअतिपैनेपैनेरचिरुचिकीनेहै । रतिजयलिखवेकीलेखनीसुरेखाकिधौंमीनरथसारथीकेनोदननवीनेहैं ॥ किधौंकेशौदासपंचबाणजूकेपंच

वाण सकलभुवनजिनवशिकरिदीनेहैं । कंचन[illegible] मणिमून्दरीललितमानों पियपरिजननमनहाथकरिली नेहैं २९ ॥

रुचिर सुन्दर नख हैं कोर कहिये अग्रभाग सो [illegible] पैने तीक्षण तीक्षण पैनाये सों तीक्षणहोनेहैं [illegible] बनायके रुचिकांति युक्त नखनिको कीनेहैं [illegible] जीति लिखबे को लेखनी कलमहैं [illegible] होतिहै सुरुख यह पाठ है तो [illegible] जाको ऐसो जो काम ताके सारथी ताको [illegible] की छरी है पूरुष पैनाकहत हैं नवीन [illegible] सम्पूर्ण भुवनको वशकरिदीनोहै कंचनसोंयुत [illegible] सुन्दर है सो मानों नायककी परिजन [illegible] हितलोक ताके मन हाथकरिलीनेहैं वशकरि [illegible] की वड़ाई करतहैं २९ ॥

(मेंहदीसंयुतहाथवर्णन) दो० ॥ [illegible] ककीराचीमेंहदीसाथ ॥ तिहुंपुरनायक[illegible] काहाथ ॥ सवैया ॥ राधिकारूपनिधान[illegible] मनोक्षितिकीछविछाई । [illegible] गगौरिकीदौरिगोराई ॥ मेंहदी[illegible] इनकेमनमोहिनीलाई । [illegible] राकोमनदेखनआई ३० ॥

पानिनि हाथनि में क्षिति [illegible] शोभा है सो छायरही है [illegible] इन छोटे जीवन औ सूक्ष्मजीव [illegible] वाकी गहिकहिये ग्राही पकरन [illegible] में गोरनाम ताजको भीहै मेंहदी [illegible]

मेंहदीलगाय वेंदी मेंहदीकी लगाईहै हाथमें घने बहुत तासों मनमोहनके मनमोहिवेको मोहिनी जो कोइमाया सो लगाई है बेंदी नहीं हैं इन्द्रवधू वीरवधूटी सावनकी डोकरीभी कहत हैं अरविन्द कमल के घर में कमलरूप घर में इंदिरा लक्ष्मी ताको मानों देखिवेको आई हैं ३० ॥

(कंठऔपीठिवर्णन) दो० ॥ कंठसुकंबुकपोतद्युति केशवदासप्रमान ॥ पीठिकनककीपट्टिकाजानतसकल सुजान ३१ ॥

कण्ठ कम्बु शंख ताहि सरीपा वर्णिये अरु कपोत कबूतर ताकी द्युति वर्णिये पीठि कनककी पाटीसरीपी वर्णिये ३१ ॥

कवित्त ॥ सुरनरप्राकृतकवित्तरीतिआरभटीसात्वि कीसुभारतीकीभारतीयोंभोरीकी । किधौंकेशौदासकल गानतासुजानता निशंकतासोंवचनविचित्रताकिशोरी की ॥ अंबुसाईकीसोंमोहेंअंबिकाऊदेखिदेखि अंबुजन यनकंबुग्रीवगोलगोरीकी । वीणावेणुपिकसुरशोभाकी त्रिरेखारुचिमनवचक्रमनिकिपियमनचोरीकी ३२ ॥

सखी नायकसों कहति है सुरभाषा में नरभाषा में प्राकृत भाषामें जो कवित्तकरिवेकी रीतिहै सोभी औ आरभटी सात्विकी औ भारती रसिकप्रियामें वृत्तिकहीहै भारतीयो याको अर्थ इनसबकी भारती भी वा नायका ने भोरीकरी है इनसों वाकी शोभा वरणीनहींजातीहै भोरीभोरीली किशोरीनायका जो है वाकी वचन विचित्रता जो है चित्र बोल बोलै है जब निशंकतासों बोलैहै सब्याहै मधुरगानहीं है किंवा सुजानता प्रवीणताहै वह किशोरी जो नायकाहै वाकी जो वचन विचित्रता है जब सखिनसों निशंकता सों विचित्र वचन बोलै है लज्जीली कोई ऊपरी सुनि न लेय यह शंका सों किधौं मधुर

गानता है मधुरगान सुनत जो सुन्दरान है सो ताके [illegible]
वचन सुनत होतहै कियों प्रवीणनाई है [illegible]
तिनकी शपथकरि कहतहौं हे अम्बुजनयन [illegible]
सोभी कम्बुशंखसी जो गोलग्रीवा [illegible]
होतीहै कण्ठमें तीनिरेखा हैं सो वीणाको स्वर [illegible]
स्वर पिक कोकिलको स्वर ताकी जो शोभा है सो [illegible]
है किधौं सोई तीनिरेखाकी कांति है [illegible]
पियजोहै तुम तुम्हारो मन चोरयो ताकी [illegible]
क्रम मनोहर वाचयादि क्रिया ताकरि [illegible]
चोरी गनिवेके लिये दूसरी रेखा काढ़ी है [illegible]
अंबुजनयन यहभीपाठहै तहांसखीनो [illegible]

(कंठभूषणवर्णन) कवित्त ॥ [illegible]
मोलचित्तगोलग्रीव लोलनैनदेखिदेखिजातनर[illegible]
कै । श्यामश्वेतपीतलालकंबुकंठकंठमाल[illegible]
कहीरहीजुज्योतिजागिकै ॥ केशोदास[illegible]
रहैमनोसमतरागिनीनिरागराजरंगजागिकै । [illegible]
वासतेप्रकाससोमजूकयो अनेकभांति[illegible]
खलागिकै ३३ ॥

नायका की जो गोलग्रीवा सो [illegible]
मोललेति है आपने वशकरनि [illegible]
वशकरतिहै यह जो नायकको गवैया सो [illegible]
को देख भाजिजातहै ऐसी कण्ठमाला [illegible]
मगाय रही है सो कही नहींजानि है कण्ठमाला [illegible]
के आसपास रागिनीनि [illegible] रागराज [illegible]
जागिरह्यो है सबकी ज्योति चन्द्रमा [illegible]
प्रकाशकरैहै कथाहै [illegible]

ने प्रकाश करयो है याते अनेकतरह की किरण मयूख जागि रही हैं सूर्यको रंग उगतु के लालचन्द्रमा को औ कलंक को रंग ३३ ॥

(पीठिवर्णन) कवित्त ॥ केशवकुवँरदेखीराधिकाकुवँरिश्रानुसोवतिसुभायसेजजननीजनककी । वेणीमेंवनायगुहीकाहूश्रलीभांतिभली कुन्दनकीकलीतनतनकतनककी ॥ पीठिमेंतिनकीप्रतिमूरतिविलोकियतपूरतनयनयुगसूरतिवनककी । हरिमनमथिवेकोमानोंमनमथलिखरूपकेरुचिरश्रंकपट्टिकाकनककी ३४ ॥

सुभावहीसों सहजै माताकीरतिजी औ पिता वृषभानकी सेजपै सोवे थी कुन्दनकी कली कैसी हैं तनिक तनिक छोटा छोटा तन शरीरकी आकृतिकी पीठि में तिनकी स्त्रीकी प्रतिमूरति बिम्ब देखियत है वानिककी सूरति ताको नायक के दोऊ नयनको पूरतहै भरतहै कलीसों रूपके सुन्दर अंक अक्षर पीठि सोने की पाटी है ३४ ॥

(चिवुकवर्णन) दो० ॥ कज्जलमनरसछीटछबिरदनराहुकीश्रान ॥ फांककामशरचिवुकको श्यामलविन्दुवखान ३५ ॥

कज्जल विंदु वरणिये पियको मनलाग्योहै वरणिये शृंगाररसकी छीटलागीहै वरणिये छवि युक्त वरणिये राहुको रदनदांत ताकी निशानी वरणिये आन और भी उपमा दीजिये औ कामके बाणकी फांकली ठोडीको कहिये चिवुक ऐसो वरणिये औ श्याम विंदु बखानिये ३५ ॥

कवित्त ॥ शोभनशृंगाररसकीसीछीटसोहैफांककामशरकीसीकहांयुगतिनिजोरिजोरि । राहुकोसोरदनरह्यो

हैचुभिचन्द्रमाहिं तर्मकोमुहागकियोंडारयोतिननोरि तोरि ॥ चतुरविहारिज्झकोचित्तमोचिहटिरह्योचितचैन केशोदासलोतिमनचोरिचोरि । ननकोचिबुकनिनैरगार मेरीसाखिडारोवारिलरूपातिलोत्तमासकोरिकोरि ३६॥

कामके शरकी फांकसी सोहतिहै पुकनिको जोरि और सखी कहतिहै दोहामें कह्योहै आन और भो कहिये नखी अँधेरी राति तनको सोहागहै चिबुकटिरह्यो है नागिनओहै ... सो तिल तेरी ठोडीपर है निवात्तमा अप्सरा ३६ ॥

(अधरदांतवर्णन) दो० ॥ अधरबिंबपल्लवबरणि प्रगटप्रवालसमान ॥ मुक्तादाड़िमकुन्दमणि हीरादशनप्रमान ३७॥

अधर नीचलो ओंठ बिंब लाल फलहोनहै पल्लव ... लाल पत्र प्रवाल मूंगा दांत दाड़िम के बीजहैं कुंद ... मणिसमान हीरा समान ३७ ॥

कवित्त ॥ अधरअरुणअतिमुधमुधाके ... अमलदलद्युतिछीनिलीनिहै । केशवगरब ... तकौनकामविद्रुमकठोरकटुबिंबमतिदीनिहै ॥ ... रेखआधिसूधीसूधीसविशेख चतुरचतुरमुख ... नीहै । मानोमैनगुरुहरिताहीकेनयनगतिनितिनिलीनहै कहूंबियोगानिदीनिहै ३८ ॥

सखी सखीसों किंवा नायकासों कहतिहै अधर अतिअरुण लालहैं सुबुधि औ सुधाके धरनवारे हैं ... कोमल अमल जे दल पत्र तिनकी द्युति छीनिलीनी ... शत्रुहैं आधी उपमा कठोर जो विद्रुम मूंगा ... प्रतीप बिंबकी उपमा दीजिये तो बिंब ... नर ... और

सो हीन होतिहै यदिजातिहै उपमा देनेको नहीं चले, सूक्ष्म सो नहीं अतिसुंदर जे अधर तिनके ऊपर जे रेखाहैं सविशेष और निकी ऐसी नाहीं बनाइवेमें प्रवीण जो चतुर मुख ब्रह्मा सो रचिके सवाँरिके कीनीहै मानों मैन काम गुरुहै हरि जो नायक ताके नेत्रकी जो गति और नायकापर जानों ताको गनि गनिलैवेको आजु वा नायका को देखनो छोड़ायो वा नायकासों आसक्तथा देखेथा सो आज छोड़ायो गनिगनिके लिखादीनी ताकी एक लकीरकरी दूसरीकीदूसरी ऐसे जानिये कहूं पाठहै मानों मैनपुर हरिनाहके मथन मन गुनगनलीवे कहूं लिखा गनिदीनीहै हरिनाहको मनमथिवेको गुणकोसमूह लेवेको लिखा चतुराई गनिके रेखाकाढ़िकै दीनीहै ३८ ॥

(दांतवर्णनं) कवित्त ॥ सूक्ष्मसुरेखसूधीसुमनवतीसीमानोंलक्षणवतीसीहूंकीमूरतिविशेखिये । रातीहैर तीकरुचिरवेलमत्रकिधौंशशिमंडलमें सुरनिकीसभाअवरेखिये ॥ किधौंपियधुगुतिअखंडताकेखंडिवेकोखंडन कोकेशवतरककुलिलेखिये । दीनीदूनीकलाविधितेरेमुखचन्दकोसुन्यायहीअकाशचंदमंदद्युतिदेखिये ३९ ॥

सखी वचन सुमन कुंदके फूलसी, वतीसी, वत्तीस दांत वत्तीस लक्षण कहेहैं स्त्रीके ताकी मूरति विशेष रहै यह विशेषण दीजिये है ताकी विशेषमूर्त्तिहै परस्त्री पाससोंआवै ऐसी युक्ति बनावै जो अखंड युक्ति ताके खंडन के लिये झुठायंत्र के लिये कुलि संपूर्ण ज्योतिपी न्यायशास्त्र ताको खंडन टूक-टूककरिके दांत बनायेहैं टूटी नहीं जाय ताके खंडनको दांत सब तर्क न्यायशास्त्र ताके कुल परिवारहै न्यायही वाजिवीहै मुखहै दूनीके आगे एक गुना मंदहोतहै ३९ ॥

कवित्त ॥ किधौंसातौंमंडलकेमंडनमयंकमधिवीजुरी

केवीजसुधासींचिकैउगायेहैं । किधौंअलवेलीकोचमेलीकीचमकचौकाकिधौंकीरकमलमेंदाड़िमदुरायेहैं ॥ किधौंमुकताहलमहावरमेंराखेरंगि किधौंमणिमुकरमेंमुखसुहायेहैं । केशौदासप्यारीकेवदनमेंरदनछविसोरहोकिरणकाटिवत्तिसवनायेहैं ४० ॥

सातो मंडलके सातो द्वीपको मंडन भूषण जो सर्वाक चंद्रमा ताके बीचमें बीजुरी के बीज सुधासों सींचिकै उगाये हैं जनमायेहैं अलबेलीको चौंक दांत तामें चमेली की [illegible] कलीहैं मणि मुकुर मणिको दर्पण मुख तामें सुन्दर [illegible] सोहायेहैं चंद्रमाकी सोरह कला तासों किरण काटिकै वर्णन कियेहैं सो बत्तीस दांतहैं ४० ॥

(अथहास) दो०॥ज्योतिजुन्हाईदामिनीदीपतिसुधाप्रकास॥महिमामोहमरीचिकीरुचिमोहनीसुहास ४१ ॥

ऐसो हास वरणिये ज्योति दीप्ति जोन्हाई चांदनी [illegible] की दीप्ति औ अमृत को प्रकाश मोहकी महिमा [illegible]चिका मृगतृष्णा मोहिनी जो माया ताकी [illegible] ४१ ॥

कवित्त॥ किधौंमुखकमलमेंकमलाकीज्योतिहोनी [illegible]धौंचारुमुखचन्द्रचन्द्रिकाचुराईहै । किधौंमृगलोचनमरीचिकामरीचिकिधौंरूपकीरुचिररुचिशुचिसोंदुराईहै॥ सौरभकीशोभाकेदशनघनदामिनीकी [illegible]हीकीचतुराईहै । एरीगोरीभोरीतेरीथोरीथोरीहांसीमेंमोहनकीमोहनीकिगिराकीगुराईहै ४२ ॥

कमला लक्ष्मी की ज्योति चारु जो मुख चंद्रमा [illegible]द्रिका चांदनी चंद्रमाकी चोराईहै मुख भीतर [illegible] नीचंद्रिका बाहिर पसारी है मृगलोचनको मरीचिका मृग[illegible]-

ताकी रुचिहै रूपरजत श्वेतहै ताकी रुचिर जो सुंदर रुचि कांति ताको शुचि श्वेतको नामहै आपनी शुचि श्वेत तासों दिपाईहै सौरभ सुगंधता ताकी शोभाहै दशन जो श्वेतघन मेघ ताकी दामिनि किधौं किंवा दशन जो घननिविड़ किधौं चतुरि जो नायका ताके चित्तकी चतुराईहै हंसी किधौं हमारे मोहनकी मोहनीहै किधौं गिरावाणी ताकी गोराईहै ४२ ॥

(मुखवासवर्णन) दो० ॥ मदनजीविकासुखजननि मनमोहिनीविलास ॥ निपटकृपाणीकपटकीरातिशोभा मुखवास ४३ ॥

मदन की जीविका जियावनवाली उपजावनवाली औ सुखकी उपजावनवाली औ मनकी मोहनवाली ऐसो जाको विलास है कपट काटिवेको अतिकृपाणी तरवारिहै औरनि की प्रीति ताकी परमशोभा है ४३ ॥

कवित्त ॥ किधौंभयोउदितअनंगजूकोअंगउरसुरभितेअंगरागदाहेदेहदुखको। किधौंचित्तचातुरीचमेली चारुफूलिरहीफैल्योवासकेशवप्रकासकरमुखको ॥ किधौंपरमलप्रेमपूरणावतंसनिको किधौंवरवाणीवनमाली केवपुखको । किधौंपायेप्राणपतिहृदयकमलफूल्योताको गंधवन्धुकैसुगन्धसुखमुखको ४४ ॥

उरमें मनमें अनंगकाम ताकेअंग उदित प्रगटभयेहैं काहे ते सुरभिते मुखकी जो सुरभि सुवास ताते औ सुरभि नाम वसन्तकोहै वसन्त ते काम प्रगटहोतहै प्रसिद्ध है याते मदन जीविकाप्रगटभई भंगभंग वनाईहीथे अवउपजेहैं तामें भयो है रागप्रीति तासों देहको जो दुखथो हमारे सवहै पै देहनहीं या दुखको दाहत है वरावत है याते सुखकी उपजावनवाली सुखवास इहां कामको सुख उपजायो कहूं नायक को सुख

उपजावैहै किधौं चित्तकी जो चातुरी सोईहै अमन्दीसो सुन्दर फलिरही है ताको सुवास सुगन्ध फलिरह्यो है हम में प्रकाश नाम स्फुटको औ हासको औ उद्योतको नाम औ प्रसिद्धको नाम मुखको प्रकाश करनवालो प्रसिद्धकरनवालो याको सो मुख काहूको नहीं जाकी ऐसी वास है किंवा मुखको प्रकाश उद्योत ताको कर किरणहै किधौं पूर्ण जो है प्रेमसो सम्पन्न कर्णफूल ताको परमन्न मनोहर गंध है किंवा मुख में जो वर श्रेष्ठ वाणी सरस्वती है ताकी वनमाला नाम की वास है किंवा वाके शरीरको वास है किंवा प्राणपति नायककोनायके हृदय कमल फूल्योहै ताके गन्धके बन्धुहै याको सदृशहै किधौं सुख दायक गन्धमुखको है किंवा सुखरूप मुखको गन्ध है प्रकाश कर मुखको ऐसो पावहै तो मुख पुनरुक्त ४४ ॥

(मुखरागवर्णन) दो० ॥ अरुणोदयराजीवमेंअंग रागअनुराग ॥ रूपभूपरातिराजसों राजतमुखमुखराग ग ४५ ॥

राजीव कमल में अरुणको उदय है काहू के संग को राग रंगहै किधौं अनुराग है रूपभूप जो है रूपको राजा सोई रति राज काम तासों राजैहै सुखदायक काम जो मनको रागरंग किंवा रूप भूप याको अर्थ आछो जो रूप तेरोमाईहै रतिराज काम तासों सुखदायक मुखराग सोहतहै किंवा अपनेरूपमाहीं रूपसो औ भूपकामसो तेरो मुखराग सोहतहै जब कामचेष्टा होतहै तब सौ बहुत सुन्दरि लागतिहै ४५ ॥

कवित्त ॥ केशौदासरागरागिनीनकोकिअंगरागनाके धौंद्विजसेवतहैंसंध्यामलीभोरकी । अरुणारदनपदुरन्नन कीखानिकिधौंउहहीभलकभलकातिचन्द्रचोरकी ॥ किं धौंभापाभूपणकीमाणिनकोचाकचक्य पोरत्न नचितनो

लिनेरेचितचोरकी । लागिरह्योअनुरागकिधौंनाहनैन निकोकिधौंरुचिराचीतेरेतरुणीतमोरकी ४६ ॥

मुखमें राग रागिनी है ताके अंग के रागहैं अंगराग द्विज ब्राह्मण औदांत भोरकीसंध्या मानौं द्विजदांत सेवतहैं अरुण लाल जे हैं दांत सो बहुत रतनकी खानिहैं उहकी याको अर्थ वही जो रतनकीझलकहै सो कि को अर्थ किधौं चहूंओर झल-कतिहै चाकचक्या बहुत चमकजोहै सो तेरो चितचोर भाषा सरस्वती ताके भूषणको नायक ताके चित्तकी जो चालगति ताको चोरिलेति है और नायकानि पास चित्त नहींजायसकत है किंवा चालिहूं नायकपास है तरुणी सखी कहति है तमोर पानकी रुचि तेरे राचीहै ४६ ॥

(रसनावर्णन) दो० ॥ रसनाकोमलवर्णियेकोविद अमलअलोल ॥ केशवदेवीरसनिकी रसहिश्रवणमृदु बोल ४७॥

कोविद पंडित प्रवीणजानिये औ रसमधुरआदि छः किंवा शृंगारआदि ताकी देवी देवताहै औ जाको कोमल वचन सो रस को श्रवैहै ४७ ॥

कवित्त ॥ देखतहीआधेपलवाधीजातिवाधासवरा धानूकीरसनासुरूपकीसीरानीहै । आछीआछीबातनि कीजननीजगमगाति रसनिकीदेवीकिधौंपाचिपाहिचानी है । केशौदाससकलसुवासकीसीसेजकिधौंसकलसुजा नताकीसखीसुखदानीहै ॥ किधौंमुखपंकजमेंशक्तिकौतो सेवोद्विजसविताकीछविताकीकवितानिधानीहै ४८॥

सवतरह की जो व्याधि पीड़ा सो व्याधीजातिहै रोकीजाति है दुखनहींरहै देखतके सुख उपजत है बाधा व्याधीजाति या

चमत्कार नहीं अनुप्रास के लिये निर्माय जननी उपजावन वाली रसनिकीदेवताहै सो पनिके श्रमसों पिछानीहै सुजानता प्रवीणताकी सखीहै किधौं मुखकमलमें कोई शक्ति देवी कि किंवा भगवान्‌की शक्ति श्रीलक्ष्मी ताको द्विजराज सोई द्विज ब्राह्मणहैं ताको सेवत हैं दांतकैसेहैं सगिना मूर्ख ... है कांति है ताकी ताहि दांतनिकी जीभ कैसी है कविता की निधानहै निधिसों जैसे सम्पत्ति उपजतिहै तैसे जीभसों कवि शक्ति उपजतिहै ४८ ॥

(वाणीवर्णन) दो० ॥ वाणीवीणावेणुअलिगुंजनि किन्नरगान ॥ शोभतशुभवहुअर्थमय केशवदासबखान ४९ ॥

वीणाके शब्दसी मधुर वर्णिये वेणु बांसुरी अलि भौंरा औ किन्नरको गानसो औ थोरीबातमें बहुतअर्थ निकरै ४९ ॥

कवित्त ॥ कामकीदुहाईकैसुहाईसखीमाधुरीकीइन्दिराकेमंदिरमेंभ्याईउपजतिहै । सुरनिकीसुरंगीकिधौंनादहूकीसोदरीकिचातुरीकीमाताऐसीवानानिसजतिहै ॥ रागराजधानीअनुरागिनीकीबहुरानी मोहेंदीखिदानीकेशोकोकिलालजतिहै । एरीमेरीव्रजरानीतेरीवरवानीकिधौंवानीहीकीवीणसुखमुखमेंवजतिहै ५० ॥

याकी यात कामकी दोहाई है कामराजा ताकी दोहाई कोई मेटिनहींसकै जो बहुनायकसों कहतिहै सो मानति है किधौं माधुरी जो मधुरताहै ताकी सखीसी सोहाई है माधुरी उपमाधुरीसी है इंदिरा लक्ष्मी तिनको मन्दिर कमल तामें भ्याई प्रतिध्वनि सी उपजैहै प्रगटहै इंदिराके मन्दिरकी प्रतिध्वनि याकी वाणी है सातस्वर हैं निषादआदि ताकी सुरी देवता है किंवा ताकी स्त्री है नाद जो आनन्द ताकी सोदरी

अहिनिहै चातुरी की माताहै ऐसीबातनिको साजेहै सवाँरे है राजधानी राजस्थान दधिदानी कृष्णवाणी सरस्वती की जो वीणा तैसी सुखरूप मुखमें बाजतिहै ५० ॥

(कपोलवर्णन) दो० ॥ मुकुरमधूककपोलसमकेशवदासप्रमान ॥ तिलप्रसूनतूणीरसम शुकनासिकाबखान ५१ ॥

मुकुर दर्पण मधूक महुआ सो पीतहै किंवा सम बराबरि ऊंचा नीचा नाहीं नासिका तिलको प्रसून फूल सम तूणीर तरकस औ शुक सुआसी ५१ ॥

कवित्त ॥ किधौंहरिमनोरथरथकीसुपथभूमिमीनरथमनहूंकीगतिनसकतिछ्वै । किधौंरूपभूपतिकीआसनरुचिररुचिमिलीमृगलोचनिमरीचिकामरीचिकै॥ किधौंश्रुतिकुण्डलमकरमरकेशौदासचितयेसेचितचकचौंधिकेचलतच्वै । गोरेगोरेगोलअतिअमलअमोलतेरेललितकपोलकिधौंमैनकेमुकुरद्वै ५२ ॥

हरिको जो मनोरथ इच्छा रूप रथ ताकी सुपंथ भूमि है समताकही मीनरथ काम ता कामनकी जो गतिहै सो छुई नहीं सकै भगवान्की प्रियाहै याते रूप जो राजाहै मृग जे हैं लोचन नायक के ताको मरीचिका मृगतृष्णा ताकी मरीचि किरण होयकै नायका मिली है प्रातभई है मरीचिका देखि मृग चौरेहै तैसे नायका के पीछे नायक दौरैथो सो आज तू मिलीहै सखी मिलेपर नायकासों कहतिहै श्रुतिके कुंडल सो मकरमाहहैं मकराकृत कुंडल बरणतहैं ताके सरसरोवर कपोलहैं चित्तचकचौंधिजातुहै मदनकेमुकुर दर्पणद्वै दोऊहैं ५२॥

(नासिकावर्णन) कवित्त ॥ केशवसुगन्धश्वाससिद्ध

निकेगुहाकिधौंपरमप्रसिद्धशुभशोभतसुवासिका । किधौंमनमथमनमीनकीकुवेणीकिधौं कुन्दनकीसीवलोललोचनविलासिका ॥ मुकतामणिनकीहैमुकतिनगरीकिधौंकिधौंसुरसेवनहैंकाशीकीप्रकाशिका । चितवतनपताकोतुंगतोयनिधिताकेतोचकीतरंगकेनकीनासिका ५३ ॥

सुबास जोहै श्वास सोई है सिद्धनाकी किधौं सुंदर नासा कंदराहै परमप्रसिद्धहै सब जाननहै शुभ [illegible] सोभनहै औ सुवासिका सुवास करनवालीहै किधौं [illegible] परमनाम अप-सरको भी है प्रसिद्ध जाको सब जानिहै सो शुभ [illegible] अर्थ [illegible] च्छौ औ भ ऐसो नाम ताराकोहै नभमें सोनाहै [illegible] नाकी नासा की उपमाहै परमअप्सरा आगे चलिधवारो है प्रसिद्ध औ सुंदर भ कहिये तारा बृहस्पति औ शुक्र जाके है [illegible] नासिका [illegible] शुभको तालव्य शकारहै ऐसो कहो तो भाषामें सब [illegible] दंत्यही जानिये फेरि आछावास सुगंध ताकी [illegible] [illegible] भतहै याकी सुगंधसों और भी वस्तु वस्त्र आदि सुगंधमान है मनमथ काम ताकी जो मणि सो मणि [illegible] [illegible] णीहै जाहि पात्रमें मछरी पकरिके धरिदेतहै सो पात्र [illegible] कहावतहै किंवा काम सो धीवरहै ताकी कुवेणी है नासा [illegible] मन मीन ताको पकरिके धरेहै कुंदन सोना ताकी [illegible] दोऊ नेत्रके बीचमें सीमा मेड़बनाई है [illegible] [illegible] बिलास लोचन लोल चंचलहै मिलि न जाहिं [illegible] [illegible] के लिये कुंदनकी मेड़बनाई है किंवा दोऊ नेत्रके [illegible] [illegible] की सीमाहै लोल नाम चंचलको औ जामें तृष्णा [illegible] ताको भी नामहै चाहभरे जे नायकके नेत्र ताकी [illegible] बिलास करावनवालीहै मुक्ता औ मणि ताकी [illegible] [illegible]-गीमें मुक्तामणि बहुतहैं नाक स्वर्गको भी नामहै किंवा [illegible]

सोई मुक्तिलोक है ताकी मुक्तिदायक पुरी बैकुंठहै सुर देवता औ सुर नासिकाको पौनचलतिहै सो तासों प्रकाशकीप्रकाश करनवारीहै काशीको भी सुर देवता सेवत हैं त्रिभुवन को जो रूप ताको तुंग ऊंचो बड़ो जो तोयनिधि समुद्र ताकेजल की तरंगहै किधौं हे तरुणि तेरी नासिका है ५३ ॥

(नाकमोतिवर्णनं) दो० ॥ केशवआनँदकंदफल सुधावृंदमकरंद ॥ मनमतंगकोदीपगणि नकमोतीजगवंद ५४ ॥

सुगमार्थ ५४ ॥

कवित्त ॥ केशौदाससकलसुवासकोनिवाससखिकिधौंअरविंदमधिबिंदुमकरंदको । किधौंचंद्रमंडलमेंशोभितअसुरगुरुकिधौंगोदचंदजूकेखेलैसुतचंदको ॥ बाढ़ैरूपकामगुणदिनदूनेहोतकिधौंचंदफूलसूंघतहै आनंदकेकंदको । नाकनायकानहूंतेनीकोनकमोतीनाकमानौंमनउरझिरह्योहैनंदनंदको ५५ ॥

सखी नायका सों कहतिहै हे सखि सकल सुबासको निवास जो है अरविंद कमल औ मकरंद फूलकोरस चन्द्रमंडल मुख मोती असुरगुरु शुक्र चन्द्रकोसुत बुध मुखसों चन्द्रमुक्ता सोहै फूल ताको किधौं सूंघतहै तासों रूपबाढ़त है औ काम के गुण मोहन तासों दूनो दिनदिनमेंहोतहै नकमोती सुंदर लागतहै यहअर्थ कोई नायका में लगावतहै तामें रूपबाढ़त है औ कामबाढ़तहै औगुणतोमें दिन दिन दूनोहोत है तेरी नाक में नकमोती जो है सो नाकस्वर्ग तहां की जो नायका हैं तिनके नकमोती सों नीको लागतहै ५५ ॥

(लोचनवर्णनं) दो० ॥ लोचनचारुचकोरसम चातक

मीनतुरंग ॥ अंजनयुनअलिकामशर [illegible] रंग ५६ ॥

चातक पपीहा औ कामको बाण औ [illegible] ५६ ।

कवित्त ॥ पियमनदूतकिधौंप्रेमरथदूतकिधौं [illegible] भूतवपुवासकेसुरंगहै । चितवनचहूंओरप्रानन [illegible] चोरचंदकेचकोरकिधौंकेशवकुरंगहै ॥ बाणनद [illegible] खेलिवेकेखंजनकिरंजनकुवेंरकामदेवकेतुरंगहै । [illegible] सरलीनमीनकुवलयरसभीननलिननवीनकिधौं [illegible] रंगहै ५७ ॥

पियके मनकी हकीकति सब [illegible] की बात सबकहिदेतहैं सुन सारथी [illegible] वपु शरीर हैं औ सुन्दर रंगहै किंवा [illegible] कहत चलन क्रिया जिनकी सुन्दर है [illegible] चकोर हैं चकोरकी उपमा नेत्रकी है किंवा [illegible] जो मदन गर्व ताके दूरकरनवाले [illegible] श्रीकृष्णको पुत्र काम जाकेरहै ताके [illegible] किंवा कामदेवके रंजनकी ठौर [illegible] है शोभारूप जो सरोवर तासों [illegible] रसराग तासों भीने कुवलय [illegible] नवीननलिन कमलहैं बहुरंगहैं [illegible] है किंवा बहुरूपिया हैं अनेक [illegible] ५७ ।

(अंजनवर्णन) दो० ॥ विषशृंगाररस [illegible] तकलाज ॥ मनरंजनअंजनसबै [illegible] ५८ ॥

विष वर्णिये शृंगाररस [illegible] तम किंवा पूर्णपातक लाजयुत वर्णिये ५८ ।

कवित्त ॥ किधौंरसराजरसरासितअसितकिधौंलालि तविशिषविषवलितसुभालके । किधौंजगजीतवेकोरा जारतिनाथहाथबाहनबनायेकेशौदासचलचालके ॥ अ तयातपातककिचितचोरिवेकोतम देखिवेकोनंदलाल लालिकैकालके । लागिरहीलोकलाजखंजननयनकि धौंपियमनरंजनाकिअंजनहैबालके ५९ ॥

रसराज शिंगाररस सोहैं रस जल वासों रासित हैं युक्त हैं शिंगारश्याम है तासों असितश्याम भयेहैं कै किधौं विष सों वलितयुक्त वाकोभालहै लोहको भालहोतहै ऐसो विशिषवाण है किंवा में भालिके देखिकै कहतिहौं रतिनाथ कामसो आपनेहाथसों बाहनवनायेहैं शिंगारेहैं रंगहैं चलचाल चलच कै किधौं अंधेरेमें चोरीहोतहै तम अन्धकार लालकरै लालचे करे में कथनिहुं तरह देखौं पूरवमें सिंहनी कहत हैं कालिकौ खंजनसे श्याम श्वेत नयन तामें लोककी लाज किधौं लागि रहीहै पियके मनको रंजन राजीकरावनवाले अंजनहैं ५९ ॥

(भृकुटीवर्णनं) दो० ॥ भृकुटीकुटिललताधनुषरेखा खड्गअनूप ॥ केशवदाससुपाससम वरणश्रवणकरि कूप ६० ॥

भौंहको कुटिल टेढ़ीकरि वर्णिये औ लतासी औ धनुषसी औ रेखासी औ तरवारसी औ पाशबन्धनसी श्रवण कान वो कूपकरि वर्णौ ६० ॥

कवित्त ॥ किधौंलागीपंकजकेअंगपंकलीकाकिधौंके शवमयंकअंकअंकितसुभायको । यन्त्रहैंसुहागकोकिमें अनुरागको किमंत्रनिकोबीजअधऊरधअभायको ॥ आसनशृंगारकोकिकामकोशरासनहै शासनलिख्योहै

प्रेमपूरणप्रभायको । रोषरूपवेषादिपर्यायविशेषनयभा मिनीकीमांहिंकिधांभानहायभायको ६१ ॥

पंकजको पीककी लकीर अंक निशानीनागोहै किधा अंक बीचमें पंककीलीकलागीहै किधों मयंकको अंकलल्यो है सुना शा को अंकित श्यामता सुभावहीको है किधों सौभाग्य को मंत्र नायकको अनुराग बढ़ाइबे को मंत्र है किधों मंत्रनि में नाकि होत है कैसो अधिक कहिये नीचो ऊरधकहिये ऊपर ना को अभावहै मुखमण्डलके नीचे नहीं औ ऊपरही धीनमें गुरा- सन धनुष पूर्णप्रभाव सामर्थ्य जाको ऐसो जो प्रेम ना हा शा- सन आज्ञाहै मानमें रोष क्रोधको नरकुंजनि है विपरमास है ताको वेषस्वरूप है जाको ऐसो कोई पीयूषकमून विशेष है भामिनीक्रोधवाली किधों हावलीलाआदि भावलेनागी किधा भावमनको विकार ताको प्रगटकरति है हावनाव को भौन घर है ६१ ॥

(कर्णवर्णन) दो० ॥ रागरचनभाजनभवनशोभनश्र वणपवित्र ॥ केशवलोचनलाजकेमनकेमंत्रीमित्र ६२॥

रागजाकोभावेहै रचन कहनवाना भाजनपात्र औ भवन औ भण्डार वर्णिये लाज के नेत्र मनके मंत्री औ मित्र औ पवित्रकहिये पवित्री जासों चरणामृतलेतहैं नेमे ६२ ॥

कवित्त ॥ रागनिकेआगरविरागकेविभागकरमनके भंडारगूढ़रूढ़केरचनहैं । ज्ञानकेविचारकिधोंनन रतनके तनकनककचोरीहरिरसअचवनहैं ॥ श्रुतिनिके रूपकिधों मनकेसुमित्ररूपकिधोंकेशोदासकूपभूपकेनयनहैं । ला जकेनयनकिधोंनयनसचिवकिधों नयनक्रान्तगनदेख केश्रवनहैं ६३ ॥

रागनिके आगर प्रवीण हैं विराग विशिष्टराग एकराग में दूसरो रागमिले और रागहोत हे जैसे छायावट औ गौड़ सारंग इत्यादि आमेजी रागन के विभागकरनेवाले यामें इतना अंश औरराागन को है किंवा विराग ताको करनवाले हैं यह भलोराग गावतहै यहबुरोराग गावतहै जो मसलहतिकीवात सुनें सो अपने में राखे याते भण्डार हैं गूढ़शब्द जाको अर्थ कठिन औ रूढ़नाम फलानोनाम कौनकोहै ताको रचनकहन वाले हैं व्याकरणरीति सों जानिये विवर विल छोटा छोटा है शरीर जिनको हरिको जो रस ताके आचमनी पवित्री हैं चरणामृतलेने को जैसी छोटीकरछी होतिहै किंवा हरिकेरस के पानकरनवालेहैं स्त्रीको वेदको अधिकारनहींहै हेममें श्रुति नाम वाणीकोभीहै औ सुनिवेकोहै ताके कूपलीजिये रूपसौं-दर्य जो कोई राजतहै ताके घरहैं लाजकेनेत्रहैं किधौं नेत्रनके सचिव मंत्री हैं नेत्रके कटाक्ष शर के लक्ष निशाना हैं केकोमर्थकिधौं ६३ ॥

(कर्णफूलताटंकवर्णन) दो० ॥ मनिमनिमयताटंक युगललितलक्ष्यपरिमान ॥ तरुणतरणिचलचक्रसेके शवकुसुमसमान ६४ ॥

मनोकहो युगदोय मणिमय ताटंक कर्णभूषण लक्ष्य निशाना तरुण युवा प्रचण्ड दोपहरी को सूर्य जैसो चलचंचल वातकहतमें औ चक्रसरीषा औ फूलसों ६४ ॥

कवित्त ॥ पहिरेकरणफूलदेखीहैकुमारीएकसुनहुकुवंरकान्हशोभैसुखदानिये।तिनकेतनकीज्योतिजीतेज्यो निवलसबकेशवअनन्तगतिकैसेउरआनिये ॥ मानोंकामदेवन मिदेवजूकेवैरकाम साधेशारसाधनानिलक्ष्यनुअ

मानिये । दुहूंदिशिदुहूंभुजभृकुटीकमाननानिनयनकटा क्षवाणवेधतनजानिये ६५ ॥

कर्णफूलकी शोभा सुखदानीहै तिन कर्णफूलनि [illegible] ज्योतिवंत सूर्य चन्द्रमाआदि फिरि कर्णफूल अनन्तगानि [illegible] हैं अनन्त जो भगवान् तिनसों गनिचक्रनो [illegible] याको अर्थ चक्रको सकोअर्थ सारीप या वानको उरमें आनिये है मनमें लाइये है कहूंपाठ है अनन्तगनि कैसे उर आनिये ताकी गतिक्रिया अनन्त है जानी नहींजानहु सो [illegible] में ल्याइये विचारिये एकदोय गति [illegible] विचारि [illegible] र्द्धनकवि॥निषेधनविधिस्पर्शनन्वीनाटंकलांछ ॥ [illegible] को कहत हैं नायका माथोहलायके नाहीं कहत है [illegible] नायका ताको जो तांडव नृत्यहिलिये सो नाहीं [illegible] जो कर्त्तव्य ताको स्पर्शकरनिहै नाहींकहतिहै [illegible] है मानों कामदेव जोहै सो वामदेव महादेवसों [illegible] लेने के लिये शरचलाइवे की साधना तिनको [illegible] इस्ताभालानिको साधैहै करहै ताको नाटंक लक्ष्य निशाना [illegible] अनुमान कीजिये है कामदेव दुहुं दिशि दुहुं [illegible] भृकुटी कमानतानिके नेत्रके कटाक्ष [illegible] तिनसों [illegible] ताटंक के तनको यहजानिये किंवा [illegible] जानियेहै किंवा दोनोंहाथमें कमानलै [illegible] दाजी जानी नहींपरहै ६५ ॥

(कर्णभूषणखोटिलाआदिवर्णन) दो० ॥ [illegible] सीकिधोंपीपरीजनुपताकमनमीन ॥ सरस [illegible] शकेशोभतदीपनयीन ६६ ॥

चलदल पीपर तेसी पीपरपत्ता कहत हैं [illegible] ताका सरीपी मनसरीपी मीनसरीपी सरस [illegible]

आकाशको कलश अथवा में कलशकी आकृति मिले है नयोदीप ६६ ॥

कवित्त ॥ खोटिलाखाचितमणिसोहतवानिकवनेकन कलशरुचिरुचिररवनहै।तनकतनकतनतीतरीतरल गतिमानहुंपताकापीतपीड़ितपवनहै ॥ कालिंदीकेकूल कूलजातजलकेलिकहकालहीसराहेमेरेकालीकेदवनहै। केशोदासमुंदरअवनव्रजसुन्दरीकेमानौमनभावनेकेभा वतेभवनहै ६७ ॥

मणिसोंजटित खोटिलाहै सोहैहै वनावसों वन्योहै कनक कलश की रुचि अथवावीरवन नायक ताको रुचिर लागति है किंवा रुचिर सुंदर है रवन विहार में बाजे नहीं है तरल तारकी तीतरकीसी तरल चंचलता की गतिहै वोलनमें हि-लतिहै पौनसों पीड़ित हिलाई कालिह तोहिं सराहैथे काली नागको दमनकर्ता श्रीकृष्णचंद्र सखीसों सखी कहतिहै भा-वतो नायक ताके मनको भावते सोहावने घरहैं ६७ ॥

(ललाटवर्णन) दो० ॥ कनकपाटिकासमकहौकेशव ललितललारु ॥ शोभनशोभाकीसभा अर्द्धचन्द्रमा चारु ६८ ॥

शोभाकी आछीसभा समूहहै औ आधेचंद्रमाके सम ६८॥

कवित्त ॥ केशवअशोककिधौंसुन्दरशृंगारलोककन ककेदारकिधौंआनंदकेकंदको । शोभाकोसभाकिधौंप्र भाकोप्रभावदेखिमोहेहरिरायसखीनंदनसुनन्दको ॥ च मकतिचारुरुचिगंगाकोपुलिनकिधौं चकचौंधेचित्तमति मंदहूअमंदको । सेजहैसुहागकीकिभागकीसभाहैशुभ भामिनिकोभागकीधौंभागचारुचंदको ६९ ॥

अशोक जामें फिकिर नाहीं ऐसो शृंगार रस ताको स्थानहै किधौं कनक के उपजिबेको केदार खेतहै सो सोनामें सुंदरता वा खेतकीहै किधौं आनंदको खेतहै किधौं आनंदके कंदमूल उपजायबेको किधौं शोभाको खेतहै किधौं शोभाके सुंदरभाव सत्ताविद्यमानताहै किधौं प्रभा कांति ताको प्रभा सामर्थ्य है नंदको सुंदर नंद जो हरिराय राजा है नंदको देखतही मोहिरहतहै श्रीगंगाजीको पुलिन ऐसोहै गंगाजी अज्ञान ताको अमंदमति ज्ञानवान् जाहि देखि नायकाको चित्त चकचौंधितहै नायकाको लगाइये तौ सहाय किधौं नायकाको चित्त चकचौंधतहै किधौं चंद्रमाको भागहु ६९ ॥

(अलकवर्णनं) दो० ॥ अलकचिलककोवर्णियेश्यामलअमलसुपास ॥ अतिचंचलअतिचारुअति सूक्ष्मकेशवदास ७० ॥

चिलक युक्त वर्णिये पाश फांसी सर्पिणी सूक्ष्म मंद घास ७० ॥

दो० ॥ डोरडारडगडीठिगुनतमाविषयमुनाजान ॥ छायामायाकामकीकायाकुशलबखान ७१ ॥

अलक डोरिसी औ डारसी औ डीठिसी जो नम जामें डिगिजात है नहीं ठहराति है तम अंधकारसी विषसी औ यमुनाजानो छायासी कामकी मायासी शरीरसी कहिये ७१ ॥

कवित्त ॥ केशवकसाहैकिअनंगकीसुरंगअंगनिमें नकुरंगनिकीचालहहरकातिहैं । पियमनपानिबेकोपाननी सीपसारीकिधौंउपमाकोमेरीमतिभयभटकातिहैं ॥ नय णितनूजाखेलैतारानाथसाथकिधौं हाथपरैनिनरनिक णिमटकातिहै । सुनिलोललोचनिनिवनानिनेहनिकौं अलकैकिअलकअलिकलटकतुहै ७२ ॥

कसा चाबुक अनंगकी सुंदरभूमि रंगभूमिहै कुश्तीकरिवे की ठौर काम यामें आइके मनको पछारतहै किंवा सुरंगभूमिहै सुढारभूमिहै चीकनीभूमिहै याते कुरंग जो हरिण ताके लोचननकी चाल हटिजातहै चीकनी ठौरमें चल्यो नहीं जातहै अर्थ यह नेत्र या ठौरमें लगिरहत हैं डगडीठि गुण यह लक्षण अरु पियमन पालिवेको अर्थ फांसिवेको फांसि फांसि जाल उपमा देनेको भव संसारमें भटकैहै फिरैहै तरणि सूर्य ताकी तनूजा बेटी श्रीयमुनाजी सो श्याम हैं तारानाथ चंद्र सो सुख जानिये किधौं चंद्रमा के हाथ तम अंधकार ताकी खो हाथपरी हाथचढ़ीहै लोल लोचनि तू सुनि नवल नवीन जो नेह ताकी किधौं निधिहै किधौं तेरी अलक छूटीहै किधौं अलक जोहै लिलार तापै अलिक छोटे भौंरा लटकत हैं अलिकोअर्थ भौंराकोअर्थव्याकरण रीतिसों छोटालीजिये ७२॥

(मुखमण्डलवर्णन) दो० ॥ अमलमुकुरसोवर्णिये कोमलकमलसमान ॥ अकलंकितमुखवरणियेचारुचंदपरिमान ७३ ॥

अमल कहिये औ मुकुर दर्पणसों औ चंद समान ७३ ॥

कवित्त ॥ ग्रहानिमेंकीन्होगेहसुरनिमेंदेस्योदेहशिव सोंकियोसनेहजाग्योयुगचारयोहै। तपनिमेंतप्योतपजलधिमेंजप्योजपकेशौदासवपुमासमासप्रतिगारयोहै ॥ उडुगणईशद्विजईशओषधीशभयो यदपिजगतईशसुधासोंसुधारयोहै । सुनिनंदनन्दप्यारीतेरेमुखचंदसम चंदपनभयोकोटिछंदकरिहारयोहै ७४ ॥

ग्रहको लवपूजतहैं तिनमें तौ घरकिये पूज्यभयो सुरनिको देहदेकरि देख्यो देवता अमृत पान करतहैं याते कला क्षीण होतहै चारिहू युगमें जागरणकियो यह भी तपस्या है सूर्य

चंद्रमा अमावसको एक ठौर रहत हैं तपन सूर्य तामें तपश्चर-
स्या तप्यो है कह्योहै किंधौं तपन आगि [illegible] तप
तपस्याकेलिये तप्यो तापत्यो जलधि समुद्र [illegible]
प्यो गारयोहै गलायोहै क्षीणकियोहै तपस्यानों [illegible]
पाईउडुगणतारा तिनकोईशभयोकोटिकंद नर [illegible] ७४॥

(केशपाशवर्णन) दो० ॥ मोरचौंरमैवालनमयमुनासो
जलमेह॥ मोरपक्षसमवरणियेकेशदलहिनमनेह ७५ ॥

सनेह ते व फूले लतासों नीकनो ७५ ॥

कवित्त ॥ कोमलच्यमलचलचीकनेचिकुरचारुचित
येतेचितचकचौंधियतकेशौदाम ॥ [illegible]
छुटेतेछुवेछुवानिकोरमटकोरहैमुनावहीमदामुखाम ॥ [illegible]
निकैप्रकासउपहासनिशिवासरको कोनोहैसुकेशीयमुना
सजायकैअकास । यद्यपिअनेकचन्द्रमाथपाक्षिमोरन [illegible]
जीत्योएकचन्द्रमुखिरुखतेरेकेशपास ७६ ॥

चल चंचल चिकुर केशपाश छिपा [illegible]
उपहास हंसी प्रकाश जाहिर सुकनके [illegible]
करै सुकेशी अप्सरा ताके केश एसे [illegible]
आकाश में स्वर्गसे किधौं [illegible]
में अनेक चंद्रमाहैं तोभी एक चंद्रमा [illegible]
रुख पक्षसों केश हो पाश समूह जीत्यो ७६ ॥

(वेणीवर्णन) दो० ॥ [illegible]
नाय ॥ अशिनिशियमुनाधार अहि [illegible]
पाय ७७ ॥

असि तरवारि निशा राति अहि सर्प [illegible]
सुखदायक ७७ ॥

कवित्त ॥ चंदनचढ़ायचारुकुंकुमलगायपीछेकिधौं निशिनाथनिशिनेहसोंदुराईहै । किधौंवंदीवंदनाछिरकि क्षीरसांपनिसमीपमुधानिधिसुधाशोधलेनआईहै ॥ के शौंदासहासरसमिलिअनुरागरासससरसशृंगाररसधारा धरआईहै । मिलिमालतीकीमाललालडोरीगोरीगुहैवे णीपिकवेणीकीत्रिवेणीसीवनाईहै ७८ ॥

मालती चमेली की माला मेलिकै राखिकै केशनिमें लाल डोरीसों गोरी सखी गूंथेहै वेणीचोटी पिकवैनी कोकिलकंठी नायका की सो त्रिवेणीसी शोभै है चन्दन श्वेत कुंकुमलाल निशानाथ चन्द्रमा मुख तामें निशाचोटी श्याम नेहप्रीतिसों छपाईहै किधौं काहून वंदीपूजीहै वन्दनरोरीसों औ क्षीरदूध सों छिरकोहै ऐसी सांपिनिहै चोटीशुद्ध सुधा चँवेलीको फूल की समता हासरस सों मिलिकै अनुराग रूप जो रसजल है तासों मिलिकै सरसआछी जो शिंगाररसकी धारा सो धरा पृथ्वी की ओर दौरी है ७८ ॥

(वंदीवर्णन) दो० ॥ वेंदीवरणतसकलकविकेशव ललितलिलार ॥ भागसुहागनरेशसम रविशशिउदि तउदार ७९ ॥

नरेश राजा उदार बड़ो ७९ ॥

(शिरभूपणवर्णन) दो० ॥ माँगफूलशिरफूलसबवे णीफूलबनाव ॥ रूपभूपजगज्योतिजन सूरजप्रगटप्र भाव ८० ॥

मांगफूलइत्यादि तीनिभूषणहैं रूप सोईहै भूपराजा ताकी ज्योति जागैहै दीपै है किंवा जनुको अर्थ मानों जगतमें सूर्य को प्रभाव प्रगटैहै ८० ॥

दो० ॥ मोतिनकीलरशीशपरशोभतिहैइहिभांति ॥ चारुचंद्रमाकीचमू घनमरालकीपांति ८१ ॥

चमू सेना किंवा चन्द्रमा चमूनारायन सघन किंवा मेघना पर मरालहंसनकी पांति ८१ ॥

कवित्त ॥ वेणीपिकवेणीकीत्रिवेणीसीबनायगुहीकं चनकुसुमरुचिलोचननिपोहिये । केशोदामकेलिरहीकु लशीशफूलद्युतिफूल्योतनमनमेरोन्यावहीमोहिये ॥ बं दीजगमगतुजरायजरयोताकीज्योति जीत्योहैअजीन ... पमानआनटोहिये ।मानोइनपांवड़निपांवधरिआयदोऊ सोहतसुहागशिरभागभालसोहिये ८२ ॥

कंचनसों पीत कुसुम हैं किंवा कंचन के कुसुम हैं तिन की रुचि लोचननिको पोहे है गूंथिलेति है नगायनिनि ... फूलसी शीश फूलकीद्युति नायककी सखी ... न्यायत्राजत्रीमोहतहै बंदाने अजीनकोजीत्यो ... प्रधान वेणी जाको बर्णतहैं ये जो वेणी ... त्रिछौना तापरपांवधरिके दोऊआये सोहाग सौभाग्य ... तौ शीशफूलरूप शिरपे सोहत है भाल ... वेंदा सोहतहै ८२ ॥

(अंगवास)दो० ॥ सहजसुवासशरीरकी आकर्षण ... धिजानि॥ अतिअदृष्टगतिदूतिकाइष्टकहतानानि ८३॥

आकर्षण खेंचिबो नायक के मन कौतुककी ... है अदृष्ट है गतिक्रिया ताकी ऐसी दूती है ... सुवास ८३ ॥

कवित्त ॥ कमलवदनकरनयनचरण... मदहगनिविलासहैं । भृकुटीकुटिलकचनैन...

यकुंदकलिकासेदन्तचन्दनसोहासहै ॥ कुंकुमशरीरकुम
कुमानिकोस्वेदनीरअंबरकोकेशौदासअंबरविकासहै ।
ननकरूपणाविधि किधौंइष्टदेवताअदृष्टगतिदूतिकाकीस
हजमुबासहै ८४ ॥

नयनआदि पांचअंगकमलहैं कुरंगमद कस्तूरी तासोंपूरण लगाये जे दृग ताको जाको विलास है कटाक्षको चलावनो है कस्तूरी आंखिमेंलगावतिहै रसिकप्रिया केशवमेद जवादिसों मांजिइनेपरआंजेमेंअंजनहै कहूं ऐसो पाठहै कपूर कुरंग मद कटाक्ष विलासहै श्वेत श्याम कटाक्षको विलासहै ऐसो जानिये भृकुटी भौंहटेढ़ीहै औ कचकेश सो मेचकश्याम हैं सब सुगन्धमयहैं चन्दनको जाको हास विधाता ने बनायोहै कुंकुम के सरिताकी गन्ध शरीरमेंहै कुमकुमा गुलाबको पानी ताको विधाता ने पसीना बनायोहै अम्बर समुद्रसों निकरैहै सुगन्ध होतहै ताको अम्बरवस्त्रमें विकासहै ऐसी तीनिप्रकार की अंगमें सुबास है ८४ ॥

दो० ॥ वसनसहेलीसिद्धिसम कायामायाहाव ॥
शोभासुभगसुहागअति लाजलाजकोभाव ८५ ॥

वसन वस्त्र ताकी सहेली वर्णिये कायाशरीर औ मायाको भावक्रिया सुन्दर शोभा वर्णिये सोहागकहिये अतिलाज कहिये औ लाजको आयुर्बल वस्त्रगये लाजनाहींरहै ८५ ॥

कवित्त ॥ किधौंयहकेशवशृंगारकीहैसिद्धिकिधौंभा
गकीसहेलीकेसुहागकोसुहावहै । यौवनकीजायाकिधौं
मायामनमोहिबेकीकायाकिधौंलाजकीकिलाजहीकोआ
वहै ॥ लाखलाखभांतिनकेपियहीकेअभिलापपहिरेव
नायकिधौंशोभाकोसुभावहै । सारीजरकसीजगमगति

शरीरकियोंभूषणजरायहीकियोनिकोजगवहे ८६ ॥

सोहागको सुन्दर हाव विलासनि पिय के [illegible] सोई मानों वस्त्रकरि पहिरे है शोभा को सुन्दर [illegible] विद्यमानता है मूर्त्तिधरे शोभा ही है यौवनको [illegible] लाजको आयुर्बल है जगत के जे भूषण तिनकी [illegible] अंगमें जराउ किये हैं ८६ ॥

(सर्वांगवर्णनरसिकप्रियायां) कवित्त ॥ चंद्रको भागभालभृकुटीकमानऐसी मैनकेसेनैनशरनैननितिनिरसहे । नासिकासरोजगन्धवाहसेसुगन्धवाहदारयोसिदशनकेशौवीजुरीसोहासहे ॥ [illegible] उदरअरुपंकजसेपायगतिहंसकीसीजानहे । [illegible] पालएकगोपिकामेंदेवतासी [illegible] सीवासहै ८७॥

चन्द्रमा को भागटूक समान भाल [illegible] चढ़ाये नैनविलास कटाक्ष नासिका [illegible] जो पवनहै सो सरोज जो कमल [illegible] तैसो सुगन्धहै ग्रीवा [illegible] भुजभ्रमायेहैं मध्यको उदाहरण [illegible] जन नहीं रसिकप्रिया की टीका [illegible] ८७ ॥

(सर्वभूषणवर्णन) कवित्त ॥ [illegible] रीजरायजड़ीजेहरन्वरीतोसबु [illegible] सुन्दरीउदारपोंचीकंकणवलयचुरी [illegible] गुपालिका ॥ वेणीफूलशीशफूल [illegible] टिलातिलकनकमोतीसोहेंबालिका । [illegible]

सज्योतिजगमगिरही देहधरेश्यामसंगमानौदीपमालि
का ८८ ॥

अनवट अंगूठाको भूषण घूँवुरी क्षुद्रघंटिका कांची भी कहतहैं जालिका समूह उदार सुंदर औ पहुची औ नवैया कांई करण भूषणहै त्योंटिला कर्णभूषण बालिका बाला नील वस्त्रमें ज्योति अंगकी जगमगायरही है औ दीपमाला अमावसकी राति तामें जगमगातिहै ८८ ॥

(अंगदीप्तिवर्णन) दो० ॥ कंचनकेसरिकेतकीचप
लाचम्पकचारु ॥ कमलकोशगोरोचना तियतनद्युति
अवतारु ८९ ॥

कंचन आदि तियके तनकीद्युति अवतार सो वर्णिये तन की द्युति सो वर्णिये उपजैहै ८९ ॥

सवैया ॥ राधाकेअंगगोराईसीऔरगोराईविरंचि
वनावनिलीनी । कैमतवुद्धिविवेकसोएकअनेकविचार
निमंदृगदीनी ॥ वानिकतैसीवनीनवनावतकेशवप्रत्युत
हैगईहीनी । लैतवकेसरिकेतकिकंचनचंपककेदलदामि
निकीनी ९० ॥

श्रीराधिकाजूके अंगकीगोराई समान विरंचि ब्रह्माने और गोराई बनाइबेकी क्रियालीनी ग्रहणकरी बुद्धि औ विवेकज्ञानसों एकसबकराकरिकै उपजायकै दृगकी गतिदीनी ऐसे न लगाइये तो दृगदीने।देखाति दर्पण त्यों दृगदीने।रासिक प्रिया है तैसी गोराई वनिजाय ऐसो वानिक बनाव बन्यो प्रत्युत अब बनाव उहै वा कालमें गोराई नहीं भई वैसी नहीं बनी तब वाहीसों इतने बनाये ९० ॥

(गतिवर्णन) दो० ॥ राजहंसकलहंससमआतिगति

मन्दविलास ॥ महामत्तगजराजकी वरणकेशोदा स ६१ ॥

राजहंस प्रति जाको चरण औ [illegible] होय और [illegible] सफेदहोय सो राजहंस कहावै ६१ ॥

कवित्त ॥ किधौंगजगजनिकोराजनिहैअंकुशरणीच रणविलासनिकोआरमसजनिहै । चलितअनंतगति ललितशृंगारवेलिफूलेफलहावभावफलनिफलनिहै ॥ किधौंकलहंसनिकीशंकामकेशोदास किधौंराजहंसि नीकीलाजसीलगतिहै । किधौंनंदलालकेलोचननकी शृंखलाकितेरीलोललोचनिअलोलअंगनानिहै ५२ ॥

सखी नायकासों कहतहै हे लोललोचनि अलोल [illegible] तारहित तेरी अतिगतिहै सबगजगनिको [illegible] यहआनि गतिको अर्थ किधौं गजराजनि को अंकुश [illegible] याहि देखि हाथिनको आपनीगतिको मदछूटिजात है [illegible] चरणको जो वढ़ाइबो विलास औ [illegible] ताको साजैहै गति कोई पदार्थहै [illegible] अनन्त जो ललित लालित्य तासों वलितयुक्त [illegible] तेरी गति सो शिंगारकी वेलिलताहै तामें हाव विलास [illegible] फूलफूलेहैं गतिसों विलास उपजतहै [illegible] तासों फलीहै जैसो मनमें विकारउपजै [illegible] में कहूंभय कहूं हरषइत्यादि तहां [illegible] जो गतिहै सो कलहंसनिकी शंका [illegible] देखि जानीजातहै कलहंस ने [illegible] राजहंसनि को लाज लागति है [illegible] तैसी हमारी गति नहीं सुन्दरि [illegible] धिबे की ६२ ॥

(संपूर्णमूर्तिवर्णन) दो० ॥ चंद्रकलाउडुदामिनीकन
कशलाकालखि ॥ दीपशिखाऔषधिलता मालावाला
देखि ९३ ॥

उडु तारागण शलाकाछरी औषधीसी औ लतासी ९३ ॥

सवैया ॥ तारासीकान्हतरायनसंगअचन्द्रकलानि
शिचन्द्रकलासी । दामिनिसीघनश्यामसमीपलगैतन
श्यामतमाललतासी । आधिकीऔषधसीकहिकेशव
कामकेधाममेंदीपशिखासी । सोनेकीसींकसीदूरभयेते
लसैउरमैंउरहारप्रभासी ९४ ॥

ज्योंति तारा नक्षत्र चंद्रमा के मंडल के नजदीक रहतहै
ताही नक्षत्रको चंद्रमा कहावत है सवादोय नक्षत्रको जब
भोग करैहै तब एकराशिको भोगहोतहै तारायन नाम चंद्रमा
को ताराहै अयनमें घरमें किंवा ताराहै अयनमें पथमें जाको
काहू जो तारायन नाम चंद्रमा तिनके संगमें तारासी शोभ-
तिहै अचंद्रकलानिसी चंद्रकलासी नाहीं है चंद्रमाकी कला
जामें ऐसी निशा जो अमावसकीतामें चंद्रकलासी शोभतिहै
किधौं घनश्यामके समीप दामिनीहै घनश्याम मेघ भी तमा-
लवृक्ष सरीषो जोहै श्याम श्रीकृष्ण तिनके तनसों लतासी
लागतिहै आधि मनको दुख कामसों भयो जो मनको दुख
ताकी औषधहै किधौं कामके घरमें दीपकी शिखाहै दूरतेसो-
नाकी सींकसी लसतिहै जब नायक के कांधे हाथ राखिउरमें
लसैहै लटकैहै तब उरमेंछातीमें हारसी शोभासी सोहतिहै ९४॥

छप्पै ॥ महिमोहनमोहनीरूपमहिमारुचिरुरी । म
दनमंत्रकीसिद्धिप्रेमकीपद्धतिपूरी ॥ जीवनमूरिविचित्र
किधौंजगतीवमित्रकी । किधौंचित्तकीवृत्तिभृत्तिअभि

लापचित्तकी॥कहिकेशवपरमानंदकीआनंदराकी॥किधौं धरनआधाररूपभवधरनकोराधाहरिबाधाहरन ९५ ॥

मही पृथ्वी ताके मोहनवारे श्रीकृष्ण तिनको मोहिनीरूपहै उनकी वशकरनवारीहै महिमा बड़ाई कान्ति शोभा आदि करि रूरी आछीहै प्रेमकी पूरण पद्धतिहै इनकी कृपासों प्रेम लक्षणा भक्ति पावत हैं पद्धति राह जगके जीवन मंत्र मोहन सोहै मित्र प्रियमनाकी विचित्र जीवनकी मूरति है किधौं श्रीकृष्णके चित्तकी वृत्ति स्थिरिरूपहै श्रीकृष्णको चित्त उनहीं में रहतहै औ श्रीकृष्णके चित्तकी अभिलाष चाह ताकी भूमि पोषण जासों होतहै परमानंद श्रीकृष्णकी परमशोभा आनंद शक्तिहै किधौं भवधरण श्रीकृष्ण तिनको आधार रूप है पृथ्वी जोहै राधा सो हरिको जो भईहै बाधा पीड़ा तिनके विरहसों किंवा कामसों ताकी हरनवारीहै ९५ ॥

दो० ॥ इहिविधिवरणहुसकलकविअविरलनामविभंगअंग॥कहीयथामतिवरणिकविकेशवपानगतंग ९६ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांनखशिखवर्णनंनाम चतुर्दशप्रभावः १४ ॥

अविरल निरंतर ९६ ॥

इतिश्रीकविप्रियायांनखशिखवर्णनंनामचतुर्दशप्रभावः १४ ॥

(अथजमकालंकारवर्णन) दो० ॥ अव्ययेतअनव्ययेतअरुजमकवरणिकरिदेत ॥ अव्ययेतविनुअंतरहि अंतरसोसव्ययेत १ ॥

जहां अंतराल नहीं परै और पदनसों सो सव्ययेत १ ॥

(आदिजमक) दो० ॥ सजनीसजनीरदनिरखिहै

रपिनचतुरतमोर ॥ पीयपीयचातकरटत, चितवहहरि कीओर २ ॥

नायकासों सखी वचन है सजनी, सजन सनन्द वरसिवेको नेगार नीरद अब ताको देखिके हरषिके मोर जोहैं सो इह या ओर नाचत हैं पद जहां फेरि कहै अर्थ और होय सो जमक पीउ पीउ प्रिय जो नायक ताकूं तू पीऊ आदर सहित देखत यह बात चातक कहतहै ऐसे तो कहतहै हरिकी ओर देखो २ ॥

(मध्यजमक) दो० ॥ मानकरतसखिकौनसों हरितू हरितूआहि॥ मानभेदकोमूलहैताहिदेखिचितचाहि ३ ॥

हे सखी तू कौनसों मानकरतिहै तूही हरि है हरिमें तोमें भेद नहीं मिलिरही है प्राचीन दोहा ॥ राधाहरिहरिराधिका नामैकहुअननाहिं । गोरेहूतनहोतहैं श्यामरूपपरछाहिं॥ आहि जोहै मानसों पीड़ा ताको तू हरितूरिकरि आहिमतकरै ताहि नायक को चित्तसों चाहि अभिलापिकै देखि ३ ॥

(तृतीयपदजमक) दो० ॥ शोभाशोभितअंगननहय हीननहयसार ॥ वारनवारनगुंजरतविनदीनेसंसार ४ ॥

आगनी शोभा सों शोभितकरै भूषितकरै ऐसी अंगनि को नायकनि को पूर्वजन्म में दियेबिना नहींपाइयेहै औ हयसार नवेला में हयघोड़ाकोहीसत नहींपाइये औ वारन हाथी औ वारनान दरवाजा तहां न गुंजरतहै संसारहै ४ ॥

(चतुर्थपद) दो० ॥ राधाकेशवकुवँरकीबाधाहरहुप्रवीन ॥ नकमुनावहुकरिकृपा शोभनवीननवीन ५ ॥

सखीवचन है राधा शोभन सुन्दरनवीन नईवीणाबजाइ के नवीन नवीन जमक ५ ॥

(आद्यन्तजमक) दो० ॥ [illegible]
निरूपभानकुमारि ॥ गावहु कोमल [illegible]
रतारि ६ ॥

हरिके श्रीकृष्ण के केवल [illegible]
गीतिकेसेहैं सुखकेकरता करनवारे [illegible]
हाथसों तालबजायके ६ ॥

(द्विपदजमक) दो० ॥ अलिनी अलिनी [illegible]
तरवरनिविहंग ॥ त्योंमनमथमनमथन [illegible]
संग ७ ॥

अलिनी भौंरी अलि भौंरा सो [illegible]
मनमथकाम ताकेमनको मथन करनवारो [illegible]
के संगमें वसतहै ७ ॥

(त्रिपदजमक) दो० ॥ आरस [illegible]
इचन्द्रमुखिदेखि ॥ तुरमनीरजनीचर [illegible]
लेखि ८ ॥

आरस आलस ताहिसहित सो [illegible]
कमलसेहैं तेरे हे चन्द्रमुखि चन्द्रमा [illegible]
रमनीयतर अतिसुन्दर [illegible]
प्रधानगनत हैं किंवा [illegible]
लेख्यो जानो ८ ॥

(पाद्यन्तपादादिजमक) दो० ॥ [illegible]
पियमानिमानतिहारि ॥ [illegible]
नेचित्तविचारि ९ ॥

मानिनी सों सखी [illegible]
निहार हरिपरम [illegible]
तू जानजानो ९ ॥

(क्रियादांतजमक) दो० ॥ जिनहरिजगकोमनहरयो बामबामदृगचाहि ॥ मनसावाचाकरमणा हरिवनितावनिताहि १० ॥

हे बामन बामजोहै सुन्दरदग तासों चाहि देखि हरि सो वनिता म्यो वनिके स्त्रीकोविपयनायकै वशकरिहैं किंवा ताहि हरिकी तू वनिता स्त्री बनिके अर्थ वनोहोउ १० ॥

(उत्तरार्द्धजमक) दो० ॥ आजुछवीलीछविवनीछोड़िअलिनिकेसंग ॥ तरुणितरुणिकेतरामिलौकेशवकेसवअंग ११ ॥

सखीवचन छवीलीसखी ताके संगकोछोड़िदे हेतरुनितरु वृक्षके तरमिलो केशवके श्रीकृष्णके सवअंगसों छवीली छबि नायका की किंवा नायककी ११ ॥

(त्रिपादजमक) दो० ॥ देखिप्रवालप्रवालहरिमन मनमथरसभीनि ॥ खेलनिवहसुन्दरिगई गिरिसुन्दरीदरीनि १२ ॥

तृतीयचरण में नहीं और सवमें जमक प्रवाल नवपल्लव ताकोदेखि उद्दीपनहै याते प्रवाल उत्तम जो नायका सो हरि धिये मनकरि मनमथकामसों रसअनुरागसों लीनभई पहार की सुन्दरी जो दरी कन्दरा तामें दरीदरी जमक १२ ॥

दो० ॥ परमानदपरमानदहिदेखातिवनउपकंठ ॥ यहअवलाअवलागिहैमनहरिहारिकेकंठ १३ ॥

सखीसों सखीवचन परमउत्कृष्ट आनन्दसों परको मान आदरको देनवाले जे कृष्ण तिन्हें देखति है वनको उपकण्ठ नजदीक इह जो अवलास्त्री सोअवयासमय विपलागिहै लागेगी नायक के मनकोहरिकै हरि श्रीकृष्ण तिनके कण्ठसों देखति

उपकण्ठ यामें जमकनाहीं है तीनिचरणमें जमक है १३ ॥

दो० ॥ जूझिगयोसंग्राममेंसूरजसूरजदेखि ॥ दिवि
रमनीरमनीयताजिमूरतिरतिसमलेखि १४ ॥

संग्राममें लराईमें जूझिगयो शूर सुभट ताको सूरजदेखो
सूर्यहीभयोहै दिविस्वर्ग ताकी रमणीअप्सरा रमनीय सुन्दरि
ताको तजिके जाकी मूरति रति समान लखी जूझिगयो या
चरणमें जमकनहीं तीनिचरण में जमक है १४ ॥

(चारिहूंचरणमेंजमकयथा) दो० ॥ नहींउरबसीउ
रबसीमदनमदनवशभक्त ॥ सुरतरवरतरवरतजेनंदनं
दआसक्त १५ ॥

नंदनंद नंदजीको जो आनन्दिन करै ऐसे जे श्रीकृष्णचन्द्र
तिनमें जे आसक्तहैं अनन्य शरण जे भक्त तिनके मनमें उर-
बसी जो अप्सरा सो नहींबसी औ मदन जो काम ताको जो
मद ताके वशमें भक्तनहीं हैं सुरतर कल्पवृक्ष ताको तर स्वरूप
ताकीतरहछोड़तहैं वासों कछूमांगननहीं हैं १५ ॥

(अथअव्ययेतजमकयथा) दो० ॥ अव्ययेतजमक
निसदाचरणहुंइहविधिजानि ॥ करोव्ययेतविकल्पनाज
मकनिकीसुखदानि १६ ॥ इतिअव्ययेतजमकसमातः ॥

अव्ययेतजमकनिकी विकल्पना विशेषकरि रचना सुख-
दायक कहतहौं इतिअव्ययेतजमकसमातः १६ ॥

(अथसव्ययेतजमक) दो० ॥ माधवमाधवगानिता
पावहुकान्हकुमार ॥ पूजेमाधवनियमसों गिरिजाको भ
रतार १७ ॥

सखीवचन है राधिका माधव लक्ष्मीको पति जैसो जो है
कान्हकुमार ताको तुम पतिपति पावो जो माधव वैशाख में

निगमनि शिवकुंजी कहूं पूजिउमाधव यहभीपाठहै धवधव को जनकआदि में सो पदको व्यवधानहैं आदि में माधव है औ नागर चरनमें माधवे बहुतपदके व्यवधानसोंभी जमक होतहै १७ ॥

(आदिअंतजमक) दो० ॥ सीयस्वयम्बरमांभजिन सुखनिनवकराम ॥ तादिनतेउनसखिनसोंतजेस्वयम्बरधाम १८ ॥

श्रीसीताजीके स्वयंवरमें स्वयं आपु वर श्रेष्ठ धाम घरको तजे तपस्याकरिबेलगी किंवा आपनो वर पति औ धाम घर ताको तजे स्वयंवर स्वयंवर १८ ॥

(अथपादान्तनिरन्तरजमक) दो० ॥ पापनशातयों कहतहैंरामचन्द्रअवनीप ॥ नीपप्रफुल्लितदेखियों विरहीविरहसमीप १९ ॥

श्रीरामचंद्र अवनीप राजा कहतके जो जातरह पापनश नहे भाजतहै ताहीतरह नीप कदंबको फूल्योदेखिके त्यों ताहीतरहसों विरही जे नायक हैं ते विरहसों नशतहैं भाजतहैं नायका के समीप जात है किंवा समीप विरही नायका सो औ दुखको तकाउतहै ताको विरह ज्यों जातहै ताहीतरहसों नायक जाय मिलत है नीप नीप और चरण है याते अपेक्ष नहीं १९ ॥

(शांतरसयथा) दो० ॥ जैसेछुवैनचंद्रमाकमलाकरस विलास ॥ तैसेहीसबसाधुपरकमलाकरनउदास २० ॥

चंद्रमा जोहै विलास सहित प्रफुल्लित जो कमलाको आकर समूह ताको नहीं छुवतहै रात्रिमें फूले कमल दूसमदिन में चंद्रमाहै तो किरणहीन तैसे ताहीतरह उदास विरक्त जे साधु हैं ते न करनिसों परायेकी जो कमलालक्ष्मी ताको नहीं छुवतहै कमलाकर कमलाकर २० ॥

(आद्यन्तजमक) दो० ॥ परमतन्वियोंशोभित तपरमईशअरधंग ॥ कल्पलताजैसेमालमें कल्पवृक्ष के संग २१ ॥

परम तन्वी कृशांगी पार्वती शिवके अर्धअंगमें प्रथमच- रण द्वितीयचरणकी आदिमें परमपरम [illegible] २१ ।

(अथत्रिपादादिजमक) दो० ॥ दानदेतयोंशोभित दीननरनिकेहाथ ॥ दानसहितज्योंराजहीं मत्तगजनि केमाथ २२ ॥

दानमदजल प्रथम तृतीयचरणकी आदिमें दान [illegible] ॥

(अथचतुष्पदादिजमक) दो० ॥ नरलोकहित [illegible] सदानरपतिश्रीरघुनाथ ॥ नरकनिवारणनाम [illegible] नर वानरकोनाथ २३ ॥

चारिहु तुककी आदिमें नर नर पद [illegible] किये जमक नहीं होय याते यह अर्थ नरनाम [illegible] तरह लोगनिकी रक्षाकरत हैं कपूर [illegible] नरनाम नारायणको ताहि [illegible] नर [illegible] नरको नाथ ऐसो भी पाठ है तहां [illegible] २३ ॥

(अथसुखकरजमक) दो० ॥ [illegible] सुखकरवरणजान ॥ जमकमुनोंकविराय [illegible] रौंवखान २४ ॥

सुखकरवरणों या वातजानों २४ ॥

(अथदुखकरजमक) दो० ॥ मानमें [illegible] नसमानसचाहि ॥ मानसहारिदेमातको मान [illegible] नाहि २५ ॥

कोई साधुजन कोई गर्वपूरुपनी [illegible]

धन को मनादर मतिकरौ तू कैसोहै मानसरोवर है मानगर्व ताहूं मानसरहै बहुतगर्वतोमेंहै यहअर्थ आपनेमानस आपने मनविषे मानस याकोअर्थ ना कहिये लक्ष्मी ताको नसकहिये नाश है जाको लक्ष्मीजी को नहिंदेखिबेमें आवैहै यहसम्पति को नहीराखतिहै तोभी तू चाहिये ऐसेपुरुषकी तू अभिलाषा करि ऐसेको संगकरौ तौ भलाहै मानस हरिकेमीतको मानस दासको भी कहतहैं हरिके मीत हरिके भक्त ताके जे मानस दास हैं हरिदासनि के दास २५ ॥

दो० ॥ वरणीवरणीजातिक्योंसुनिधरणीकेईश ॥ रामदेवनरदेवमणिदेवदेवजगदीश २६ ॥

श्रीरामचन्द्रजी यज्ञकियो है तहां ब्राह्मणनकी वरणीकरी है सो हर्षाकति कोई मुनि कोई राजासों कहतिहै हेधरणीके ईश तू या बातनें सुनि श्रीरामजी की करी जो ब्राह्मणन की वरणी है बहुतधनदैकै वरणीकरीहै सो क्योंकरि वरणीजाय श्रीरामजीकैसे हैं देवमुनि नरदेवराजा तिनविषे मणिसरीषे जे प्रकाशमान हैं बडेराजाहैं शोभा के देवकहिये स्तुतिकरन वालेहैं फेरि कैसेहैं देवकहिये देवता ताको देवआनन्दहैं जाते फेरि जगत के ईशहैं ऐसो अर्थकिये देवके भिन्नभिन्न अर्थभये जो तुषा अर्थकरिये तौ देवकोअर्थ नहींफिरै जमकमें पदकी पुनरुक्तिहोय अर्थ भिन्नभिन्नहोय देवको अर्थ व्याकरणरीति सों कियो याते दुष्कर २६ ॥

दो० ॥ राजराजसंगईशद्विजराजराजसनमान ॥ विपविपधरअरुसुरसरी विपविषमनउरम्थान २७ ॥

कोई काहूसों महादेवको कहतहै ईशमहादेव सो कैसो है राजराज कुबेर तिनसों जाकोसंगहै अलकापुरीमें सदा महादेव कुबेरहतहैं कुबेर महादेवकेभक्तहैं औ द्विजराज चंद्रमा सो जाके संगमेंहै फेरि राजा जिनको सनमानकरतहैं चाहत

है राजा सब तपस्याकरि शिवसों मनोरथ पूरणकरत हैं सो विषजाके कण्ठमेंहैं औ विषधर सर्पजाके कण्ठमें हैं औ सुरसरी श्रीगंगाजी तिनको विषजल जिनके शीशपै है इनको न विषमअक्षमति उरमें मनमेंआनि विषजलको नाम भाषा में अप्रसिद्ध याते दुखकर २७ ॥

छन्दप्रवानिका ॥ प्रमानमाननाचहीं । अमानमान राचहीं ॥ समानमानपावहीं । विमानमानधावहीं २८ ॥

मानकहिये ताल ताके प्रमाण नाचत हैं अमान कहि अमितमान कहिये ज्ञानअमित है ज्ञानजाको जो गंगीनगान पढ़है सो राचैहैं राजीहोतहै जैसो नाचै है ताके समान बराबरि मान आदरपावैहै आदरपाये सों गर्वकर जो विमान है तापै चढ़िकै दौरो फिरतहै बहुतगर्वकरतहै मान कोअर्थ आन व्याकरणरीति सों कियो याते दुष्कर २८ ॥

दो० ॥ कुमतिहारसंहारिहठहितहारिणीमहारि ॥ कहारिसातविहारवनहारिमनुहारिनिहारि २९ ॥

सखीवचन मानिनीसों नायक औरसों भाषक है कन्सों प्रीतिनहीं ऐसी जोकुमति ताको दरिद्रहारि करि मैं नाम कबहुं न नहींजाउगी ऐसो जो है हठ ताको संहारि हठको नाश करि करो यहअर्थ हितहारनी जे सखी हैं नायकसों तेरी प्रीति है ताको झूठीवातचतायकै जो सखी छोड़ावतिहै ताको मारि मारो उरते दूरिकरो यह अर्थ वन में विहारकरो हरिनायक ताकी जो मनुहारि निहोरा ताकी ओर निहारो देखो हरि निहोरा करत हैं एक हार पदको कहूं विलगाय विहार कियो कहूं संपद लगाय संहार कियो याते दुष्कर २९ ॥

चौपाई ॥ सुरतरवरमेंरम्भावर्ना । सुरतरवरमेंरम्भावर्ना ॥ सुरतिरंगिनीकारिकिन्नरी । सुरतिरंगिनीकारिकिन्नरी ३० ॥

सुरतरुमय कल्पवृक्षमय बहुतहैं कल्पवृक्ष जहां शशी रंभा कहिये कदली ताकी बनीकहियेबनहै तहां सुरतिको जो रव शब्द नूपुरको भूरिको बाजिबो भूषणादिके शब्दकरिके रंभा अप्सरासो बनीबगीचोंमेंहैक्रीड़ा करतिहै फेरि स्वर सप्तस्वर निषाद आदि ताकी तरंगिणी नदी सरीषी जामें बहुत स्वर रहतहैं ऐसी किन्नरी करमें हाथमें कोई बाजाहै जाके फेरि स्वरनसों कोईरंगानकरै अनुराग युक्त करै ऐसी तहां किन्नरी है किन्नरकी स्त्री है ३० ॥

दो० ॥ श्रीकंठउरवासुकिलसतसर्वमंगलामार ॥ श्रीकंठउरवासुकिलसतसर्वमंगलामार ३१ ॥

उर सर्प जोहै वासुकि ताकरिके श्रीकंठ जोहैं महादेव सो शोभतहैं महादेव कैसे हैं सब जो कल्याण मंगल ताको अमारहैं राशिहैं लौकिक काम जिनको नहीं है ईश्वर हैं याते फेरि सर्व मंगला भवानी कैसी हैं मार कहिये माला सरीषी हैं फूलनकै मालाकी उपमा स्त्रीको देत हैं नायक के कंठसों लागतिहै याते फेरि कैसी हैं श्री शोभा युक्त जाको कंठ है उरगको अर्थ उरछातीविषे गकोअर्थ प्राप्तहोय वासुकि कहिये फूलकी माला उरविषे प्राप्त सोहतिहै जाके ३१ ॥

सवैया ॥ दूषणदूषणकेयशभूषणभूषणअंगनिकेशवसोहैं । ज्ञानसंपूरणपूरणकेपरिपूरणभावनिपूरणजोहैं ॥ श्रीपरमानन्दकीपरमापरमानन्दकीपरमाकहिकोहै । पातुरसीतुरसीमतिकोअवदातरसीतुलसीपतिमोहैं ३२ ॥

अवदातरसी तुलसीपतिमोहैं अवदात श्वेत जो रस शांत ताकी रसी कहिये भक्तजनसों सब श्रीतुलसीजीके पति भगवान् तिनको मोहत हैं आपने वश करतहैं राजीकरतहैं यह अर्थ भक्त कैसे हैं दूषण राक्षस तिनके दूषण दुष्ट श्रीरामचंद्र

भी तिनको जो यश सोई है भूषण गहना ताके भूषण सोई अंग सुखनिमें ताके ऐसो शोभन है केशव कवि कहत हैं फेरि भक्त कैसे हैं संपूर्ण जो ज्ञान ताके पूर प्रवाह पूरण प्रवाह करिके बहुत ज्ञानकरिके परिपूर्ण भर्ग पूर्ण जो भावना विचार ताकरिके पूर्ण व्याप्त सब ठौर भगवान को जानत हैं जैसे कहै जलेविष्णुः थलेविष्णुः इत्यादि किंवा ब्रह्मरूप करिके श्रीपरमानंद भगवान् तिनकी जो परमा शोभा ताविषे पर कहिये तत्पर जेहैं आसक्त जेहैं तिनको आनंद देतुहैं मान आदर करिके जानतहैं देतहैं ऐसे दाता तिनकी जो परमा परम श्रेष्ठ लक्ष्मी संपति सो तिन भक्तनिको कछु नाहीं है संपति को नहीं चाहत हैं किंवा मा लक्ष्मी तिनको नद समुद्र तिनकी जो परमा बड़ी संपति रत्नाकर कहावत है सो जाको कछु नहीं तद्वत्सरितापति चुलुकवत्स्वल्पाकर इत्यादि श्रीपरमानंद की परमा पर इतने को अर्थ ऐसेही जानिये फेरि तिन भक्तिनकी मुनिको पातुर वेश्या ताकीसी कहिये श्री शोभा सो जाको तुरसी खट्टी लागतिहै आछी नहीं लागति है ३२ ॥

(अनुप्रासयथा) चौपाई ॥ जोतूमालिनकहूँकहूँना लहि । तौहूँकहूँइकबातरमालहि ॥ तोकहँदेउँबनमालहि मालहि । मोकहँतूमिलवैनंदलालहि ३३ ॥

जहां पद फेरिफेरि आवें सो जमक जहां अक्षर फेरिफेरि आवै या मात्रा कोई होय सो अनुप्रास कहावै है मालिन जो तू काहूसों न कहे औ इहांसों हमारे संग कहूँ हूरि चलै तो तोसों मैं एक रसीली बात कहौं तो मैं ताको बनीबनाई बन माला देउं जो मोको नंदलालसों मिलावै इहां हूनि अनुप्रास है ३३ ॥

चौपाई ॥ जैसेरवैजयश्रीकरवालहि । त्योंअलिनी

जलजातरसालहि ॥ ज्योंवरषादूषैविनकालहि । त्यों हगदेखनचहतगुपालहि ३४ ॥

हलंतरगिना नायका सखीसों कहतिहै अब नायक तोको नहीं चाहत है हमारे दृग या तरह देखिवेको चाहत हैं जैसे नरनारि तो नाहीं चाहति पैरतिभये जय श्रीजीतिंकी शोभा आपुहीनों करवालकारनेहैं प्राप्तहोत है जैसे अलिनी भ्रमरी विना बुलाई जलजातको औ रसाल फूल्यो जो आंब ताको प्राप्तहोतहै तीसरी तुकमें दुर्लभकहतहै जैसे कोई बिना समय चौमासा बिना बरपा को हरप करै वरपाहोय तो आछी तब बरपाको कहापावै तैसे अबनायक कहां देखिवेमें आवै ३४ ॥

सवैया ॥ स्यंदनहांकतहोतदुखीदिनदूरिकरैसबके दुखदंदन । छंदानिजानीनहींजिनकीगतिनामकहावतहै नंदनंदन ॥ फंदनिपांडुकेपूतनिकीमातिकाढ़िकरैमहिमो हनिकंदन । चंदनचेरीकेअंगचढ़ावति देवअदेवकहैं जगवंदन ३५ ॥

स्यंदन रथ अर्जुनको ताको हांकतकै दुखीहोतहैं छंदवेदने जाकी गति क्रिया नहीं जानी जिनकी मतिपांडुके पूत युधि-ष्ठिर आदि तिनके फंदमें पेचमेंपरीथी कबहीं द्यूतकरैथो कबहीं सारथी करैथो मही भूमि तामें मोहको काटिकै निकंद करै जर नाही नहीं राखे चेरी कूबरी इहां छेकानुप्रास है बहुत पोथिनमें जो तू सखि इत्यादि दोय दोहा स्यंदन इत्यादि एक कवित्त कुमति हरि इत्यादि दोहा के आगे है सो अयु क्त है ३५ ॥

दो०॥ इहिविधिऔरहुजानियेदुखकरजमकअनेक॥

वरणितचित्रकवित्तअव सुनियोमहितविवेक ३६ ॥
इतिश्रीकविप्रियायांजमकअलंकारवर्णननाम
पंचदशप्रभावः १५ ॥

दुखकर जमक अनेक भांति के [illegible] ३६ ॥
इतिश्रीहरिचरणदासकृतायाकविप्रियाभरणाख्यायां
कविप्रियाटीकायांपंचदशप्रभावः १५ ॥

(अथचित्रालंकार) दो० ॥ केशवचित्रसनुद्रमें [illegible] तपरमविचित्र ॥ ताकेबूंदकेकणकहि [illegible] मित्र १ ॥

चित्र जो है सो काव्य को स्फोटक [illegible] चित्र नाम [illegible] को है इहां वचनसों अद्भुत होतहै शब्द अर्थ सों नहीं चित्र में ध्वनि काढ़िये तो ध्वनि निकरे पै चमत्का नाहरहै [illegible] नहीं याते उत्तम मध्यम नहीं केशव [illegible] कणिका किंवा बूंदकी कणिका १ ॥

दो० ॥ अथउरधबिनुबिंदयुतजानिरसहीन [illegible] ॥ वधिरअंधगनअगनकोगतिचलअंगविचार २ ॥

अथ विंदु विसर्ग ऊर्ध्व बिंदु अनुस्वार [illegible] अनुसारकी अपेक्षासों अधविंद [illegible] अनुस्वार विसर्ग युक्त होय [illegible] पढ़ो चित्र भंग नहीं होय पनः [illegible] होय सो कह्योहै नानुस्वार [illegible] जतकरिके हीनहोय औ [illegible] वधिर दोष नहीं औ अंध दोष नहीं [illegible] रग रस गुण इत्यादि [illegible] तीसरे प्रभावमें [illegible]

है याको भाषिके दोहामें अदोष ठहरावत है कहूं अंगनवि-चार ऐसो पाठहै इन सब तो चित्रकाव्य के अंगनिको गनि-यत है चित्रकाव्य के अंगहैं २ ॥

दो० ॥ केशवचित्रसमुद्रमेंइनकेदोषनदेख ॥ अक्ष रमोटपातरचबजयएकैलेख ३ ॥

मोटे संयोगी गुरु पातरे लघु चकार औ वकार जकार औ यकार इतने एक जानों इनते चित्र भंग नहीं ३ ॥

दो० ॥ अतिरतिगतिमतिएककरिबहुविवेकयुताचि त्त ॥ ज्योंनहोयक्रमभंगत्योंवरणौंचित्रकवित्त ४ ॥

अतिरति अतिप्रीति औ मतिकी गति बुद्धि और ठौर न जाय ताको एक करिके निरोष्ठमें और वर्गको अक्षर न आवै औ गोमूत्रिका आदि में अक्षरको क्रम नहीं जाय ४ ॥

(निरोष्ठ) दो० ॥ पढ़तनलागैअधरसोंअधरवरण त्योंमंडि ॥ औरवर्णवरणौंसबैउपवर्गहिकोछंडि ५ ॥

अधर नाम नीचेके ओंठको है तौभी भाषामें दोऊ ओंठ-नको कहतहैं सुंदर शृंगार अधरनहीं में मुसुक्यानिको थानो गोरसन्ने रसते अधरानिको वरण अक्षर पढ़तके अधरसोंअ-धर ओंठसों ओंठ न लागे याते चित्र अद्भुत भयो ऐसोअक्षर लिखे उवर्ण औ पवर्ग इनको छांड़िके ५ ॥

कवित्त ॥ लोकलीकनीकीलाजलीलतसेनंदलाल लोचनललितललोललीलाकेनिकेतहैं । सोहानिकोशोच नसंकोचलोकलोकनिको देतसुखताकोसखिदूनोदुखदे तहैं ॥ केशौदासकान्हरकनेरहीकेकोरकसे अंगरंगराते रंगअंगअतिसेतहैं । देखिदेखिहरिकीहरनिताहरिननै नोंदेखनहींदेखोनहींहियोहरिलेतहैं ६ ॥

नायका वचन सखीसों लोक संसार ताकी जो मर्याद ताकी जो लाज पश्चात लोक नहीं करनहै ऐसो काम किये लोग हँसेंगे प्रीतिको नहीं निबाहियो इत्यादि ताकी जो लाज ताको लीलत से लक्षणासों छोड़त है नेवर... लीलाविलासके निकेत हैं लोकमें लोगनि में ... ताको शोचत नहीं है सखि जो सुखदेत है ताको दुख देत है एक तो मिले नहीं दूसरे मिले तो या ... संयोग ... सों युक्त मिले कनेर फूल पूरबमें कनेर फूल ... ताके कोरक कली सारीवे हैं जाके अंग रंगीन है जाके ... भीतर अति सेतरंग है शेष रंगकेहैं भीतरि ओरि ... और यह अर्थ है हरिणनैनी सखि तू हरिकी हरनता मन को हरन वा तुम देखो देखतही मनको नहीं हरिलेतिहै ... रसों हरिलेतिहै जानो देखतके चोरी नहीं ... तके चोरतहै यह हरनता दूनो दुखदेतहै या ... देतहै ऐसो पढ़े ओठ नहीं लागे ६ ॥

(मात्रारहित) दो० ॥ एकैस्वरजहँवरणिये अक्षर रूपअवर्ण ॥ कहियेमात्रारहितसोमित्राचित्रअभर्ण ७ ॥

एक अवर्ण स्वरसहित अक्षर राखै ... है यह जानो ७ ॥

कवित्त ॥ जगजगमगलभगतजनरतनरसनवनव हरकरकरतअचरचर । कनकअमनतनअमनअनन बडवटदलवसनसजलथलथलफर ॥ अजरअमर ... वरदचरनधरपरमधरमगनवरनशरनपर । अमल ... लवरवदनसदनजसहरनमदनमदमदन ... ८ ॥

जिन भगवान् के रस अनुराग ताके वश अनुरागमें भा-

भक्त भए अर्थ भगतजन विष्णु परायण सो जगत में जगम-
गात हैं प्रकाशमान होतहैं शोभतहैं यह भावार्थ किंवा रस
बस भगतजन सो जगत में भगवान् जगमगात हैं भासत हैं
सबमें भगवान् को देखतहैं ऐसो भगवान् है फेरि भव संसार
तामों जो भय ताको हर कहिये हरनो ताको करैहैं करनवा-
लो है कहूं पाठहै भवहर सहकर भवसंसार ताको हरनवालो
अशुद्धेश सो जाको सहकर सहकारी फेरि कैसे हैं चिरंजीव
मात्र अनेक योनिमें फिरहै फेरि स्वर्गजात है नरक जात है
ताको मुक्तिदेइ करि अचलकरत हैं दास ध्रुवको अचलपदवी
दानको दरबान एसो तेरो भजनको परवान फेरि कनक सोना
सो पीत किंवा सोना युक्त जाको वसनहै तन शरीरमें पीतां-
बरहै फेरि बड़ो जो अनल दावाग्नि ताको जिनने अशनभो-
जन कियो है वट अक्षयवट ताके दल पत्रमें प्रलय काल में
जाको बसन वास है फेरि जाको ऐसी सामर्थ्य है सजल थल
सदा जामें जल रहै ऐसो जो थल ठेकाना समुद्र ताको चाहै
तो थल करिडारे अंभोधि स्थल तास्थल जलधि तामित्यादि
फेरि कैसो है अजर जो कबहूं वृद्ध नहीं होय औ अमर मरै
नहीं ऐसो जो ब्रह्मा और को वरको देनवालो सो जाकेचरण
को धरनवालो है श्रीवामनजी को चरण हाथमें लेके धोयोहै
कहूं बचनधर यह भी पाठहै बचन जाकीआज्ञा ताको धारन
करन है परम श्रेष्ठ जो धर्म ताको जो गन समूहहै ताको ऐसे
जे वर्ण ब्राह्मण आदि ताको शरण देनेको पर तत्परहै किंवा
श्रेष्ठ है किंवा परम श्रेष्ठ अप्राकृति वर शरीर है तामें मगन
सानंद रहत है और विषै आसक्त नहीं आत्मारामहै वरनकी
श्रेणि इंद्रादिकनिकी शरनरक्षा तामें पर है अच्छो है फेरि
अमल जो कमल तासों वर श्रेष्ठहै वदनमुख जाको औ यशके
सदन घरहै फेरि हरन मदन मद मदन जो काम ताको सुंदर
तो है मद गर्व ताको आपनी सुंदरता करिकै हरनवाले हैं फेरि

मदन को भयो जो कदन नाश शिवने बगयो ताके दहन पा-
लेहैं फेरि काम को उपजायो ८ ॥

(अथएकाक्षर) दो० ॥ एकआदिदैवरणबहुवरणौं शब्दबनाय ॥ अपनेअपनेबुद्धिबल समझौनवकवि राय ९ ॥

अथ एक अक्षरके शब्द दोय अक्षर के शब्द तीनि अक्षर के शब्द चारि अक्षरके शब्द पांच अक्षरके शब्द ऐसो कहत हैं एक आदिदै इति एक अक्षर आदि दैके एक अक्षर दोय अक्षर तीनि अक्षर ऐसे बहुत वरण जे शब्द सो बनायकै वरणौं ६ ॥

(एकाक्षरशब्दयथा) दो० ॥ गो गो गं गो गो अ आ श्री धी ह्री भी भानु ॥ भूविस्व ज्ञा द्यो हि ह्रा नो नौ सं भं मानु १० ॥

कोई काहूसों कहतहै अकारको अर्थ भगवान [illegible] अर्थ में आहै लोग ऐसो भी बोलतहैं भगवान [illegible] यह जो एकाक्षरको नाम है सो कहिये भगवान [illegible] वासुदेवः स्यात् एकाक्षर कोषहै औ गीतामें [illegible] मक्षरं वाणीमें एक आखर इसमें भगवान [illegible] हिये दशदिशा औ गो कहिये गऊमात्र [illegible] वज्र सो वज्र कैसो गतो अर्थ चलनवाला जो [illegible] चलैहै इंद्र चलावैहै [illegible] गंगाजीको भी नाम [illegible] गो कहिये जल औ गो कहिये वाणी औ [illegible] ह्रीलाज औ भी भय औ भा प्रकाश औ [illegible] फेरि भू पृथ्वी भी कहिये वि कहिये पक्षी [illegible] न ज्या धनुषको गुनयो [illegible] अर्थ [illegible] दुख नौका अर्थ नाव औ [illegible] अर्थ पुरुष औ [illegible] औ

...एकाक्षर कोषमें मानाम मृत्युको भी है औ तुको अर्थ प्रस्तुत कोई प्रसंग एकाक्षर शब्द लिख्यो है ताते अर्थ में जानिये किंवा मानु यह शेषद अच्चरको नामहे याबातको मानों एकाक्षरमें क्रियाको दोष नहीं आगिले दोहामें वाकी पद आयो है या पद एक अक्षरको नाम है या बातको मानों एकाक्षरमें क्रियाको दोष नहीं आगिले दोहामें वाकी पद आयो है या पद एक अक्षरको जुदोहै दोयअक्षरके नाममें १० ॥

(द्व्यक्षरशब्द) दो० ॥ रमाउमावाणीसदाहरिहरविधिसंगवाम ॥ क्षमादयासीतासती वाकीरामाराम ११ ॥

रमा जो लक्ष्मीजी सो हरिके संगमें रहति है औ वाणी सरस्वती सदा विधिके संगमें औ वामा सुंदरि जो क्षमादया युक्त सीताजी सती पतिव्रता है वाकी वाको अर्थ वाको की को अर्थ कीनी रामने वाको रामास्त्रीकी करी कहूं कीतीरामाराम यह भी पाठहै ११ ॥

(त्र्यक्षर) दो० ॥ श्रीधरभूधरकेसिहाकेशवजगतप्रमाण ॥ माधवराघवकंसिहापूरणपुरुषपुराण १२ ॥

मा श्री शोभाके हरणहारहैं औ पूर्ण पुरुषहैं पुराणमुनिके जगत प्रमाण करतहै किंवा जनविषे जगत प्रमाण है सत्यहै भगवान् में संसार है १२ ॥

(चतुरक्षर) कवित्त ॥ सीतानाथसेतुनाथसत्यनाथरघुनाथजगनाथब्रजनाथदीनानाथदेवगति । देवदेवपञ्चदेवविश्वदेवबासुदेव वसुदेवादिव्यदेवदक्षदेवदीनरति ॥ रणवीररघुवीरयदुवीरव्रजवीरबलवीरवीरवीरराम चन्द्रचारुमति । राजपतिरामापतिरमापतिराधापति रत्नपतिरामपतिरसापतिरामपति १३ ॥

देवतनिकी गतिहै आठ जे वसु सो [illegible]
करनवारेहैं जो स्वर्गमें होय सो दिव्य [illegible]
जीतनवारेहैं देव देव यह अर्थ दीन दुर्बल [illegible]
प्रीति दीनदयालुहै रसा पृथ्वीको प्रतिपाल [illegible] ॥

(अथपड्विंशतिअक्षरादिगकारान्तवर्णनम्) [illegible]
अक्षरपड्विंशतिसबैभाषावर्णिबनाय ॥ [illegible]
कलगिकेशवदाससुनाय १४ ॥

छब्बीस अक्षरसों [illegible] एक एक अक्षर [illegible]
आखर रहे १४ ॥

दो० ॥ चोरीमाखनदूधर्कीहूँढ़नहटगोपाल ॥ [illegible]
नजलथलभटकिफिरिझगरतहोनंदलाल १५ ॥

कोई ब्रज देवीकोनन्दन [illegible]
तुम जल थलमें भटकिके फिरिके [illegible]
तरहसों झगरतहो इहां तीनि आखर [illegible]
र धकार ३ चारि चवर्गके चछजझ ४ टवर्गके [illegible]
४ तवर्गके ५ त थ द ध न पवर्गके [illegible]
रेफ लकार सकार षकार ५ [illegible]
आखर दोयबार तीनिबार [illegible]

(अथपचीसअक्षर) दो० ॥ [illegible]
झिचढ़ायोगात ॥ विकलकीतिघरदि [illegible]
नमात १६ ॥

चेरी कुबिजा ताके हाथके [illegible]
कृष्णचंद्र तिनने आपने [illegible]
कपटकरि शिशु बालक [illegible]
भर जो कंस सो विकल [illegible]
है या देखि श्रीकृष्ण [illegible]

…कार घकार गकार खकार ३ चवर्ग के चकार जकार २ टवर्गके टकार डकार ढकार ३ तवर्गके पांचौ आखर ५ पवर्ग के पांचौ आखर ५ औ यकार रेफ लकार विहल इहां हकार है नकारको आगिलो आखर वकार है औ श ष ह शिशुको दूनो तालव्य शकार है भाषामें दंत्यलिखत हैं १६ ॥

(अथचौबीसअक्षर) दो० ॥ अघबकशकटप्रलंब हनिमारयोगजचाणूर ॥ धनुषभंजिदृढ़दौरिपुनिकंसमथे मदमूर १७ ॥

अघासुर बकासुर शकटासुर प्रलंबासुर गज कुवलयापीड़ चाणूरमल्ल दृढ़जोहै धनुष ताको तोरिकै कंस कैसोहै मदको मूलहै अकार स्वरहै ताकी गति नाहीं १७ ॥

(अथतेईसअक्षर) दो० ॥ सूधीयशुमतिनंदपुनि भोरेगोकुलनाथ ॥ माखनचोरीझूठहठ पढ़ेकवनके साथ १८

नंदजी भी भोरे कवर्गके ककार गकार २ चवर्गके चकार झकार२ टवर्गके टकार ठकार२ तवर्ग पंच पवर्गके चारि पुनि की ठौर फुनि है यशुमति इहां यकार है औ शकार तालव्य जानिये रेफ लकार वकार सकार षकार हकार जानिये १८ ॥

(अथबाईसअक्षर) दो० ॥ हरिदृढ़वलगोविन्दवि भुमायकसीतानाथ ॥ लोकपविह्वलशंखधरगरुड़ध्वज रघुनाथ १९ ॥

मायिक जाके साथमें माया रहै विह्वल भी नाम भगवान् को है कोई कहतहै विह्वल इनके गुरु हैं ताको भगवान् करि कह्यो ऐसे और भी जानिलेहुगे १९ ॥

(अथइक्कीसअक्षर) दो० ॥ जैसेतुमसवजगरचेदि

येकोलकेहाथ ॥ तैसेअबदुखकाटुबलि करमफन्ददृढ़ नाथ २० ॥

हे नाथ जैसे तुम सब जगत को रचिके काल यम ताके हाथ दिये तैसे तुम सब दुखको काटौ हे बलि कर्म के फंद बंधनको काटौ २० ॥

(अथबीसअक्षर) दो० ॥ थकेजगतसमझायस बनिपटपुराणपुकारि ॥ मेरेमनवेचुभिरहे मधुमर्दनमुर हारि २१ ॥

कोई ब्रजदेवीको वचन पुराणको पुकारि कहिकरि परपतिसों प्रीतिकरनी पुराण विरुद्ध है मुर दैत्यके हरनवाले मारनवाले चुभिरहे गड़िरहे २१ ॥

(अथउन्नीसअक्षर) दो० ॥ कोजानैकोकहिगयोरा धासोंयहबात ॥ करीजुमाखनचोरिबलि उठतबड़ेपर भात २२ ॥

हे बलि बड़े परभात उठतके तुम्हारे घर श्रीकृष्ण माखनचोरी करी २२ ॥

(अथअठारहअक्षर) दो० ॥ यतनजमायोनेहतरु फूलतनन्दकुमार ॥ खण्डतकसकतजानअब कपटकठो रकुठार २३ ॥

कोई ब्रजदेवीको वचन नायकसों हेनंदकुमार तुमयतनसों हमारे हृदयमें नेहको वृक्ष उपजायो सो फूलत है ताहि समय कपट सोई कठोर कुठार कुल्हाड़ा तासों अब खंडतहौ काटतहौ सो जान जोहै जीव ताको अब कसकत है २३ ॥

(अथसत्रहअक्षर) दो० ॥ बालापनगोरसहरेबड़े

नयेत्रिमिचित्त ॥ तिमिकेशवहरिदेहहूँ जोनामिलौतुम नित्त २४ ॥

नागकलीं सखी वचन केशवने बालापनमें गोरसचोरे वड़े भये चित्तचोरे तिमि ताहीतरह देहको हरो जो तुम मित्रसों नहीं मिलो २४ ॥

(अथसोरहअक्षर) दो० ॥ तुमघरघरमड़रातअतिबलिभुकसेनंदलाल ॥ जाकीमातितुमहीलगीकहाकरैवहबाल २५ ॥

हे बलि तुम भुक नाम भोक्ता सो परायेकी वस्तु पर तुम वाके भोक्तासे मड़रातहो किंवा बलिभुक देवतासे तुम्हैं कोई देखि नहीं सके बलिभुक काकको अर्थ कुरे हीनोपमादोपहोय केशव की मूर्खता आवै २५ ॥

(अथपन्द्रहअक्षर) दो० ॥ जोकाहूतेवहसुनैढूंढ़तडोलतसांझ ॥ तौसगरोव्रजबूड़िहैवाकेआंशुनिमांझ २६ ॥

सखी वचन सखीसों सांझ समय और नायकाको ढूंढ़त खोजत तू फिरत है २६ ॥

(अथचौदहअक्षर) दो० ॥ ढकाढाकीदिनकरौटकाटकीअरुरैनि ॥ यामेंकेशवकौनसुखघेरुकरैपिकबैनि २७ ॥

नायका वचन किंवा सखीवचन नायकसों ढकिके छपिके देखतहो दिनमें औ रैनि रातिमें टकाटकी लगावतहो पिकबैनी नायका घेरुचवाव करतीहैं २७ ॥

(अथतेरहअक्षर) दो० ॥ कह्योपरायोमैंसुन्योंमनदीनोहरिहाथ ॥ वादिनतेवनवनफिरै कोजानैकिहिसाथ २८ ॥

परायेको कह्यो मैंने सुन्यो औरने निंदाकरी मैं सहीवा-दिनते वनिकै वनाव करिके वनि वनिके में फिरेंहैं किंवा वन में फिरैंहै २८ ॥

(अथवारहअक्षर) दो० ॥ काहूवैरिनिकेकहेजीजुरिगयोसनेहु ॥ तोरेतेटूटैनहींकहाकरूंअवलेहु २९ ॥

सखीसों नायका को वचन सखीने पहिले मनावन कियो है तू प्रीति मतकर जीव में नेह जुरिगयो लागिगयो सखीव-चन अव लेहु विरहको दुख भोगकरो २९ ॥

(अथग्यारहअक्षर) दो० ॥ केशवसोंहैकालिकी विसरीगोलकराज ॥ मुखदेखौलैमुकुरकर करीकलेवा लाज ३० ॥

हे गोकुलराज गोकुल में शोभरतहो कालिहकी वे सौं हैं शपथ सब तुम्हैं विसरी हाथमें मुकुर दर्पणलेके आपनो मुख देखौ रातिके चिह्नलागेहैं लाजको तुम कलेवाकरी विहानहीं के पहर खायगये ३० ॥

(अथदशअक्षर) दो० ॥ लैवाकोमनमानिकहि कतकाहूपैजात ॥ जवकोऊजियजानिहै तवकैहैकोउ वात ३१ ॥

वा नायकाको मन सोई है मानिक ताको लेके कन क्यों तवकै तासमैकी कौन वात कहिवेकोहै क्या कहै तुम्हारोदोष छवै सो कहौ सखी कहतिहै इहां मणिको णकार टवर्ग को है ताको लैकै दश वर्णभये ३१ ॥

(अथनवअक्षर) दो० ॥ चंचुनिचुगैंअगारगनजा कोकरजियजोर॥सोऊजोजारैजियकैसेजियेचकोर ३२॥

अंगारको गण समूह ताको चंचुलों चुगैहै जिन चंद्रमाको

कर किरण ताको जोर जीवमें राखिके चंद्रमाके करमें अमृत है याते सोऊ चंद्रमा जीवकोजोरे उकारसहित नवअक्षर ३२॥

(अथआठअक्षर) दो० ॥ नैननिनैनवहुनैनकहूकमल नैननयननाथ॥बालनिकेमनमोहिलैवेचेमनमथहाथ३३॥

हे नयन हे नाथ थोरे भी नैननिको निनै वहुनीचे करो लाजकरो यह अर्थ बालनिके मन मोहिलेके काम के हाथवे-च्यो चोरायकरि वेचिवेकी लाज ३३ ॥

(अथसातअक्षर) दो० ॥ रामकामवशशिवकरेवि वुधकामसवसाधि ॥ रामकामवरवशकरे केशवश्रीआ राधि ३४॥

श्रीरामजीने कामको औ महादेवको वशकिये विवुधदेवता ताके कार्य सिद्धकरिकै देवतनिके कार्य साधे शिव राजी भये यह अर्थ कामसों सुंदर जो श्रीरामजी तिनको बलसों वश करे श्रीसीताजीने आराधनकरिकै सेवाकरिकै कहूं पाठहै । राम कामसवशिवकरे । श्रीरामजीने शिव कहिये कल्याण सो कल्याण युक्त सव काम किये ३४ ॥

(अथपटअक्षर) दो० ॥ कामनाहिनैकामकेसवमो हनकेकाम॥वशकीनोमनसवनिकोवामाकावाम ३५॥

काम के यह काम कार्य नहीं है यह सव मोहन श्रीकृष्ण के कार्यहैं वामनाम सुंदरको औ दुष्टको सवको वशकिये ३५॥

(अथपंचअक्षर) दो० ॥ कमलनैनकेनैनसोनैननि कोनोकाम॥कौनकौनसोनेमकेमिलनश्यामसकाम ३६ ॥

सखी फेरि मिलायो चाहतिहै तासों नायकावचन कमल नैन जो नायक तिनके नैनसों तिनको मुख देखिवेको यह भावार्थ हमारे नैननिको कोनोकामहै कोई काम नहीं यहअर्थ

सकामजोहैं श्यामसो कौन कौनसों नियमकरि प्रतिज्ञाकरिकै वा नायकासों मैं अवश्य मिलौं जो ऐसी प्रतिज्ञा नासों नहीं मिलैं यह अर्थ किंवा नियमकरिकै हमारे आगे प्रतिज्ञाकरिकै हम तुमहीसों मिलैंगे औरसों नाहीं ऐसी प्रतिज्ञाकरिकै कौन कौन नायकासों न मिलै अनेक नायकनसों मिलै याते उनके वचनको विश्वास नहीं ३६ ॥

(अथचारिअक्षर) दो० ॥ वनमालीवनमेंमिलेव नीनलिनवनमाल ॥ नैनमिलीमनमनामिली वैननामिलीनवाल ३७ ॥

सखीसों सखीको वचन वनमाली श्रीकृष्ण जोहैं सो वा नायकाको वनमें मिले भेंटभयो जाको नलिन कमल ताकी माला औ वनके-फूलकीमाला वनीहै फवीहै आपने मनकरि नायकके मनसों मिली दोऊ राजी भये ऐसो देखिवेमें आवै वैननिकरि वचन करिकै वाला नहीं मिली ३७ ॥

(अथतीनिअक्षर) दो० ॥ लगालगीलोपांगली लगेलागलैलाल ॥ गैलगोपगोपीलगे पालागोंगोपाल ३८ ॥

सखीको वचन सखीसों नायकने जान्यो हमनीं इनसों लगालगीहै हमारी इनकी लगनिलागी है लकार रेफ एक है लोपौं याको अर्थ रोपौं राखौं याको गलीमें विलँवाय राखौं ऐसी लाग मनमें लैकै लाल कहिये लार लार नाम संगको है चाललैकै संगलगे दैवयोगते गोप गोपी गैललगे भीर भई तब नायकाने कह्यो हे गोपाल हमारो प्रणामहै अब मिलवो नहीं वनै किंवा कोई वहिरंग सखी संगमें है तासों नायका कहतिहै सो या वात और सखीसों और सखी कहतिहै जो मैं भाजौं तो नायक पकारिलेइगो याते लगालगी करिकै वे

हमारे संगलगे जबसे सरहिं जातहौं तबते फेरि नजदीकआ-
य आनिनिहै पूछबसे हाथाछोपी कहतहै या गलीको भलो सो
तोसों लाल हमारे संग लागसों चाहतों पीछे हमारे लगे तब
मैं कह्यो है गोपाल मैं पायँ लागतिहौं जातिहौं यह भई बात
जहां सो कहतिहै कहूं पाठहै लगालगी लोगोलगी लगे लाग
लोगनिको लगालगी लगी है एक वे एक हमें औ
नायकको मिलत देख्यो चाहत हैं ३८ ॥

(अथद्वयअक्षर) दो० ॥ हरिहीराराहीहरयोहेरिर
हीहीहारि ॥ हरिहरिहौंहाहाररौं हरेहरेहरिरारि ३९ ॥

हरि चंद्रमा सोहै हीरा ताको राही हरयो राहुहीने हयो
लीन्यो हेरिरही हीहारि याको अर्थ चंद्रमा कैसोहै हीहारि ही
कहिये हृदय जो मन ताको हारी हरनवालोहै चंद्रमा देखिकै
मन राजीहोतहै मनोहर है ताको मैं हेरि रहे राहु याको कब
छोड़ैगो कि नहीं छोड़ैगो हरिहरिहौं हाहाररौं सखीसों कहति
है हरिहरि दुखसोंहौं मैं हरे हरे आहिस्ते आहिस्ते हाहा हा-
य हाय ररौं हौंहुं रटौंहौं जासमे चंद्रमासों राहुसों रारिकराई
रही किंवा नायका वचन सखीसों राही जोहै हरि राहमें च-
ल्योजात जोहै हरि ताते हीरा कहिये हियरा हृदय मन ताको
हरयो चोरयो ही कहिये हृदय मन ताको मैं खोजिरही हेरि
रही हमारो मन कहां गयो तब हारि बैठी तब मैंजान्यो श्री
कृष्णही लियो है हरि हे हरि मैं तुमसों हाहाररौंहौं करोहौं
हमारो मनदेव यह अर्थ हरे हरे आहिस्त आहिस्ते हमें उन्हैं
रारि झगरा रसको रच्यो ये कहैं तुम हमारो मन हरयो मैं
कह्यो तुम हमारो मन हरयो ३९ ॥

(अथएकअक्षर) दो० ॥ नोनीनोनीनोनिनैनोनैनो
नोनैन ॥ नानाननतानाननैननूननैननैनन ४० ॥

नोनी नोनी सुंदरि जे नायका हैं ते सब नोनिनै समता

नै लिये ताके मोने नोने सुंदर सुंदर नेत्र हैं नानानन याको अर्थ तिनके नानाप्रकार नेन नाहीं नाहीं करनो है सो नाना ननै याको अर्थ इहां नायक पद न एक पद आनन एक पद कोई काहूसों कहत है हे ना हे पुरुष न नाहीं करनो सो आनन मुखविषै है ननुको अर्थ मोलकरतहौं निश्चय नहीं है मुखसों नाहीं करतहै स्त्रीको स्वभावहै मनमें चाहैहै यह अर्थ न आगे आन संधिहोतहै किंवा नानाननै याको अर्थ नाना नहीं नाहीं करनो है सो ननै सो नै नीति नहीं है काकुस्वर सों कहा उनकी यह नीतिहै स्त्रीको नाहीं करनी यह नीति विहार क्यों बसिये क्यों निबहिये नीतिनेह पुरमाहिं दूसर अर्थ में नेह पुरमें नाहीं करनो सोई नीतिहै ४० ॥

(अथाएकाक्षर यथा) दो० ॥ केकीकेकाकीकका कोककीककाकोक ॥ लोललालिलोलैललीलाललीला लोल ४१ ॥

विरहिनीकी उक्ति सखीसों औरनिको विहारकरतो देखि जैसो हमें दुखहोतहै तैसो उरउद्दीपनसों नहीं लकार औ उकार औ रकार एक है लोल नाम चंचलको औ लाल नाम चाहभरयोहोय ताको केकी आदि उद्दीपन विभावहैं सो विरहीको दुखदायक है संयोगीको सुखदायकहै हेममें कोकनाम चकवाको औ दादुरको भी है केकी जो मोर ताकी जो केका वाणी ताकी जो कीक ध्वनि कोलाहल सो काहे कछु नहीं बहुत दुख दायक नहीं यह अर्थ कोकनाम चकई ताकी कीक कुलाहलसो काहे कुछ नहीं बहुत दुखदेय नहींसके कहूं कोकों ऐसो पाठहै तहां चकवाजानिये कोकदादुर ताको जो कीककोलाहल सोकोनहै दुखदेनेको असमर्थहै एसको देखिके हमें दुख होतहै लोलकहिये चाहभरी लाल कहिये तारि संगमें लोलै है डोलैहै फिरैहै ऐसो जो ललीनायका ताकेसंगमें ऐसो जोलाला

नायिका नायक ताकी जो लीला विलास किंवा क्रिया सो हमें लोग चंचल करनिहै दौरिदौरि आय नायककी गैल देखति है किंवा नायकसों मिलवेकी चाहभरो करतिहै ४१ ॥

दो० ॥ गोगोगीगोगोगगजजीजैजीजीजोहि ॥ रूरूरेरूररिहाहाहूहूहोहि ४२ ॥

गज ग्राह लरतहैं तहां कोई जगसों कहतहै हूहूनाम गंधर्व देवगमनिके शापसों ग्राहभयोथो फारसीमें गो शब्दको अर्थ कह्यो है गज गो कहिये जलमें गोग जेहैं गोविंद गोगको औ गोविंदको एक अर्थ है तासों गोगी याके अर्थ में गो कहिये गायनसों ऐसी गी कहिये वाणी ताको गो कहे प्रथम गोको अर्थ कह्यो नगी सहायकरेगो गोवचन है गो ब्राह्मण हितायच जो जै जो तू जीवैचाहै जीजी याको अर्थ जीवके जीव सजीवके जीवन मूल जो भगवान् तिन तू जोहि हृदय में देखो रूरे रूरे रूरु ररि अरूको ठौर रू चरण पूरण के लिये रेगज रूरे भले जेहैं ताहि सबते रूरे भले ऐसे जे भगवान् ताहि तू रटि वारवार कहो कहूं ररि ऐसो पाठहै ररो रटो पुकारो हाहाखाहू भगवान्सों यह ग्राह नहीं है हूहूगंधर्व होहिको अर्थ है हूहू है पहले चरणके अंतमें एक अक्षर और जकार है दूसरे के अंतमें हकार तीसरेकेअंतमें टकार चौथेकेअंतमें हकार ४२ ॥

(वहिर्लापिकाअन्तर्लापिका) दो० ॥ उत्तरवरणजु वाहिरेवहिर्लापिकाहोय ॥ अंतरअंतरलापिकायहजानै सबकोय ४३ ॥

जहां उत्तरको चरण कविता के वाहरहोय अंत कविताके बीचमें होय तहां दोऊ क्रम सो जानिये ४३ ॥

(वहिर्लापिका) दो० ॥ अक्षरकौनविकल्पकोयुवति वसतिकिहिअंग ॥ बलिराजाकोंनेछल्यो सुरपतिकेपर संग ४४ ॥

विकल्प को अक्षर वा यह है युवती कौन अंगमें रहति है वा सहिति मकारलिये वामभागमें वाको छोड़िलीजिये तमन मेंवसतिहै,वलिकोकौनेनेछल्यो उत्तरवाहरसोंदियोवामन ४४॥

(अन्तर्लापिका) दो० ॥ कौनजातिसीतासतीद ईकौनकहतात ॥ कौनग्रन्थवरण्योहरी रामायणअव दात ४५ ॥

रामायण उत्तर सीतासती कौन जातिहै रामा स्त्रीहै तात जनकजीने कौनको दीनी रामाय रामको कौन ग्रंथमें सीता-हरण वरण्यो है रामायण में अवदात शुद्ध उज्ज्वल ४५ ॥

(अथगूढ़ोत्तर) दो० ॥ उत्तरजाकोअतिदुरयो दीजैकेशौदास ॥ गूढ़ोत्तरतासोंकहत वरणतवुद्धिवि लास ४६ ॥

गूढ़ गुप्तहै उत्तर जाको ४६ ॥

सवैया ॥ नखतेशिखलौंसुखदैकैशृंगारशृंगारनकेश वएकवच्यो । पहरायमनोहरहारहियेपियगातसमूहसु गन्धसच्यो ॥ दरशायसिरीकरदर्पणलैकपिकुंजरज्योंव हुनाँचनच्यो । सखिपानखवावतहीकहिकारणकोपपि यापरिनारिरच्यो ४७ ॥

सुखदै राजी करिकै शृंगारे पिय जो वाको नायक ताने सुगंध सच्यो अंगनिमें राख्यो लगायो यह अर्थ कोप पियापर नायकपर क्यों नारिने रच्यो इह उत्तर पर नारिसों रच्यो है अनुरक्त है पानखवावत में इत्यादि आयो तादिन नायकके पलकपर पानकी पीकलगी सुखदियेसों पहिले नहीं नजरिमें आयो किंवा भूलिगई कुंजर हाथीको लखो आगे नाच्यो याते किंवा पानको नागर वेलहै वह वेली लतासी कोमल जो ना-

वक्ता है ताकौं नागर नायक है किंवा दलौ याको नाम है ताकौं नागर है ४७ ॥

सवैया ॥ हासविलासनिवासनुकेशवकेलिविधान
निधानकुलीनें । देवरज्येठपितासुतमोदरहैसुखहीनिन
दानप्रवीनें ॥ साजनभोजनभूषणभौनभरेयशपावनदं
वप्रवीनें । क्योंसबयामिनिरोवतिकामिनिकन्तकरैशुभ
गानगुनीनें ४८ ॥

कोउसखी सखीसौं पूछतिहै कि हे सखी तेरे केलि के विधान किंवा ताको निधानहै प्रवीणहै न जन इनि ताके भौनमें सबहैं भरेहैं साजन अनप्राण के लिये पावन पवित्र निहार दिन यश वाके भरेहैं जैसे गंगाजीमें अनेक यशहै केत जाको शुभ अष्ठोगान बखान गुनी के करैं तासों कन्तहै उत्त रमें सुनगा सुंदरी नहीं वह यानमें गुनीहै विचारिहै ४८ ॥

सवैया ॥ नाहनवोनिननेहनवोपरिनाग्रिनोकेशौकहूं
नाहिंनोवे । रूपअनूपमनूपमभूपसोआनंदरूपनहींगुन
गोवे ॥ भौननरीमवसंपतिदंपतिश्रीपतिज्योंसुखसिंधु
मेंसोवै । देवलोदेवरप्राणसोपूतसुकौनदशासुदतीनि
हिरोवे ४९ ॥

नहीं याको गुण कोउ गोवैहै छपावैहै वह ऐसो भलो है ताको सब बस करतहै किंवा गुन जो याको अर्थ गुनको कहनवारो वह नायक आपने गुनको कहनवारो नहीं है ऐसो काहू आपनो नाविक आप नहीं कहतहै ऐसो सुंदर है तान जाको सो कुवनो उत्तर नंद लाल दत्तो रहतिहै तान चढ़ाय रहतिहै सोनदिन रहतिहै त्यागि रहतिहै ४९ ॥

दोहा ॥ एकहिउत्तरमेंजहांउत्तरगूढ़अनेक ॥ उत्तर
एकनिरूपहूवरणतमतिमानविवेक ५० उत्तरएकअनेक

कोऽयस्तअनेकनिमानि ॥ जोरिअंतकेवर्णसोंकमहीं वर्णबखानि ५१ ॥

गूढ़ गुप्त ५० समस्त मिल्योरहै व्यस्त जुदा ५१ ॥

षटपद॥कहाजुसज्जनकुवतकहामुनिगोपीमोहित। कहादासकोनामकवितमाहिकहियतकोहित ॥ कोप्यारोजगमाहिंकहाक्षतलागेआवत । कोवासरकोकहतकहासंसारहिभावत ॥ कहिकाहिदेखिकायरकंपतआदिअंतकोहैसरन । इहउत्तरकेशवदासदिय सबैजगतशोभाधरन ५२ ॥

उत्तर सबै जगत शोभाधरन अंतको अक्षर नकारहै तासों आदिके अक्षर एक मिलाइये फेरि छोड़िये दूसरो लीजिये सो जानिये सनबैन बांसुरी जन धन गन मगन आदि तन शरीर क्षत घावलागे सोन रुधिर आवैहै भान सूर्य घन और न आदिमें अंतकालमें कौन शरन है सब जगत में तीनिहूं लोकमें किंवा तीनिहूं लोककी शोभाको जो धारणकरनवाले श्रीकृष्ण सो शरण रक्षक हैं समस्तको अक्षर काढ़िके उत्तरदियं ५२॥

दो० ॥ मिलैआदिकेबरणसोंकेशवकविउच्चार ॥ उत्तरव्यस्तसमस्तसोसांकरकेअनुहार ५३ ॥

आदि के वर्णसों उच्चारणकरो सो व्यस्त समस्त सांकरि की तरह ५३ ॥

षटपद ॥ कौशुभअक्षरकौनयुवतियोधनवशकीनो । बिजयसिद्धिसंग्रामरामकहकौनेदीनो ॥ कंसराजयदुवंशबसतकैसेकेशवपुर । बटसोंकहियेकहानामजानहुअपनेउर ॥ कहिकौनजननिजगजगतकीकमलनयनसूक्ष्म

मवगनि । मुनिवेदपुराणनिमेंकही सनकादिकशंकरत
रुनि ५४ ॥

शंकर तरुनि यह उत्तर है शुभ आखर कौनहै संमुखबाच
कहू कोन युवती सो ताको योधा जेहैं शूर ताने बशकरी है
शंक शंका स्त्रीलिंग है याते युवती कही राम परशुराम शंकर
महादेव केशव पुर मथुरा तामें कंसके राजमें यदुवंशी कैसे थे
शंकरने त्रास युक्त वट वृक्षको नाम शंकर तरु सूक्षम थोरा
करिके हमसों बरणों जगत की जननी कौनहै कमल से जाके
नेत्रहैं ऐसी कं शंकरकी तरुणी पार्वती सनकादिकनने वेदपु-
राणनिमें कही है ५४ ॥

कवित्त ॥ कोलकोहैधरीधरिधीरजधरमाहितमारेकि
हिमूतबलदेवजोरयवसो । याचैकहाजगजगदीशपैके
शोदासगायोकौनेरामपदगीतशुभरवसो ॥ जवअंगअ
वदातजातवनतातनिसोंकही कौनकुंतीमातबातनेहनव
सो । वामग्रामदूरिकरिदेवकामपूरिकरिमोहेरामकौनसों
संग्रामकुशलवसो ५५ ॥

कुश लवसो यह उत्तरहै धरम हित धर्म के लिये धीरजध
रि कोल शूकररूप भगवान्कीकोहै कुपृथ्वी बलदेवजी जोरके
यव वेगसों सूतपौराणिक कौन अस्त्रसों नैमिषारण्यमें मारयो
कुश चलायके संसार जो सो जगदीश भगवान् सो कहा मां-
गत हैं कुशल कल्याण शुभ वर बड़े शुभसों रामायणके पद
के गान कौनने गायो रामायण गीत यह भी पाठ है यज्ञमें
आय कुश लवने गायो यश करिके जाके अवदात शुद्ध अंग
हैं वनको पांडवनिको जातके कुंतीने कौन बात कही कुशलव
सो वामकरो रामवाम श्रीसीताजी ताको ग्राम अयोध्यातहां सों

वनवास करायो संग्राम में श्रीरामजी कौनसों मोहे आश्चर्य मान्यो कुशलवसों ५५ ॥

दो० ॥ एकएकतजिवरणकोयुगयुगवरणविचारि ॥
उत्तरव्यस्तगतागतिनिएकसमस्तनिहारि ५६ ॥

एक एक आखरको छोड़तजाय दूसरेसों मिलावतो जाय जुदा जुदा उत्तर निकरै सो व्यस्तगत आगत वाहीतरह पीछे को फिरै संपूर्ण सो उत्तर सो समस्त ५६ ॥

कवित्त ॥ कैहैरसकैसैलईलंककाहेपीतपटहोतकेशों दासकौनशोभियेसभामेंजन । भोगनिकोभोगवनकौने गनैंभागवतजीतेकोयतीनिकौनहैप्रणामकेवरन ॥ कौने करीसभाकौनयुवतीअजीतजग गावैकहागुणीकहाभरे हैभुजंगगन । कोहैमोहैपशुकहांकरैतपीतपइन्द्रजीतजी वसतकहांनवरंगरायमन ५७ ॥

उत्तर नवरंगराय मनकै केतनेरसहैं नवलंका श्रीरघुनाथजी ने कैसेलीनी नकारको छाडयो वकारको आगिले रेफसों मिलायो वरवलसों लीनी यहवस्तु जुदाजुदाहे औ गतागत एक पीछिला अक्षरगयो आगिलो अक्षरआयो काहेसों कपड़ापीतहोत है रंगसों सभा में कौनशोभे है गरागरवो पुरुष तुच्छ नहीं शोभै भोगानि को सुखनिको कौन भोगे है राय सरदार भागवत श्रीभगवानके भक्त कौनको गनतहैं यस यम भक्तहैं यतियोग तिन कौनको जीत्यो मनको प्रणाम करवे के वरण अक्षर कौनहैं नम नमस्कार युधिष्ठिरकी सभा कौनने वनाई व्यस्त आगतपीछेकोफिरयो याते मय विश्वकर्माकोपुत्र असुर है जरा वुढ़ाई राग गावत है भुजंग सर्पके गन कहाभरेहैं गर विषभरे हैं वह कौन है जो पशुहरन औ सर्प ताको मोहित करत है रवशब्द तपस्वी तपस्या कहां करत हैं वननें इन्द्र

कौन कहां चलत है समस्तसों उत्तर नवरंगराय मन नवरंग राय के मनसें ५७ ॥

दो० ॥ केशवदासविचारकोभिन्नपदारथज्ञान ॥ उत्तरव्यस्तसमस्तकोदुवोगतागतजान ५८ ॥

पदको अर्थ भिन्नहोय दोयवार व्यस्त उत्तरलागे दोयवार समस्त उत्तरलागे ताको उदाहरण पहिले ५८ ॥

सवैया ॥ दासनिसोंपरसोंपरमानकीवातसोंवातकहाकहियेनय । भूपनिसोंउपदेशकहाकहिरूपभलेकहिनीतितजैभय ॥ आपुविषैनिसोंक्योंकहियेविनुकाहिभयेक्षितिपालनिकेक्षय । न्यायकेवोल्योकहायमकेशवकेअहिमेधकरोंजनमेजय ५९ ॥

उत्तर जनमेजय इहां यकार जकार एकहै यासों चित्रभंग नहीं दाससों कहा कहिये जनपर शत्रुसो कहाकहिये नमें तुम नम्रभये अवतो बराबरी नहीं करोगे परमानकी वातसो मय गनीगनाई वात भूपनिसों उपदेश जयकरौ जीतिकरौ यह सूधो व्यस्तलाग्यो अव उलटो व्यस्तकहि कहौ काहेसों रूप भलो लागतहै यज कहिये दान तासों। भवांहरितनिम्राशोभं नेगलितविभवाश्चार्थियुजना।अर्थ याचकको दानदेत संपत्ति गईहै जाकी ऐसे ज नरसे शोभत है जो नीतिको तजेतो कहिको अर्थकहो कौनसों भय उपजे यमे यमसों आपने विषय के लोग हैं स्त्री पुत्र भाई बंधु तासों क्योंकरि कहिये बोलिये मेन मोनसों होयके नरमहोयके कहनावति है फजानेका मोम दिलहै कौन वातभये विना क्षितिपालनको नाशहोत है नय नीति विना जनके जकारनको मकारपढ्यो ऐसे जयके जकार को पापीको न्यावकरिके जमकहा वोल्यो तू जनमेजयहै जन लोग ताको तू कंपावत है डरपावत है दुखदेत है किंवा दुख

दियो यहअर्थ एकबार समस्तलग्यो दूसरो फेरि समस्तलग्यो कैको अर्थ कौनने अहिमेधयज्ञ कियो सर्पनिको होम्यो उत्तर जनमेजय राजापरीक्षित के पुत्र ५९ ॥

चतुःपदी॥कैग्रहक्योंमधुहन्योप्रेमकहिपलुहतप्रभुमन । कहाकमलकोगेहसुनतमोहतकिहिंमृगगन ॥ कहां बसतसुखासिद्धकविनकौतुककिहिबर्नन । किहिसेयेपितुमातकह्योकविकेशवसरवन ६० ॥

इहां अंतकी ओरसों उत्तर एतना बीच पाहिला कवित्तसों उत्तर नव क्योंकरिकै मधुदैत्यको भगवानने मारयो नरकहिये बलसों प्रभुके मनमें प्रेम किहिबातसों पलुहत है पल्लवित होय उपजै रस अनुरागसों अब सूधा कमलको घर कौन है सर सरोवर मृग हरिणके गण समूह कहा सुनतके मोहित होत हैं रवशब्द गायके वशकरत हैं सुखसों सिद्धकहां कौन कौनठौरमें बसत हैं वनवन में कविनकौतुक है कौनको वरणतहैं समस्त नवरस नवरतकै कौनने पिता माताको सेवन कियो फेरिसमस्तसरवन जाको दशरथजीनेमारयो ताने ६०

सोरठा ॥ कंठबसतुकोसातकोकहाबहुविधिकहै ॥ कोकहियेसुरतातकोकामीहितसुरतरसु ६१ ॥

उत्तरै सुरतरु सुकंठमें कौनबसतहै उत्तर सुर निषादआदि आदिसों बांचे तो सुर निकरै अंतसों बांचौ तौ सुरनिकरै ऐसे जानिये कोकशास्त्र बहुततरहसों कहा कहतहैं सुरत औ सुरतात सुरदेवतनि के तात दयापात्र जाहिपर बहुतदया कीजिये हेममें कह्यो है जाहिपर बहुतदया कीजिये सो तातकहावै सुरतरुकहिये कल्पवृक्ष देवताकल्पवृक्षपै बहुतदया करत हैं किंवा सुरतात सुरदेवतानिके तात पिता कश्यप तिन्हैं कहा कहिये सुरतरु याको अर्थ सुर श्रेष्ठ कामीको हित कौनहै सुर तरस ६१ ॥

दो० ॥ उत्तरव्यस्तसमस्तकोदुवोगतागतजानि ॥ एकहिअर्थसमर्थमतिकेशवदासवखानि ६२ ॥

इहां उत्तरव्यस्त समस्तसों समस्तसो दूनौवेरे गतागत तथा उलटा आदिसों जो बांचिये तौ वही अर्थ निकरै अन्त सों बांचिये तो वहीअर्थ निकरै ६२ ॥

(शासनोत्तर) दो० ॥ तीनितीनिशासननिकोएकहिउत्तरजानि ॥ शासनउत्तरकहतहैं वुधजनताहिवखानि ६३ ॥

तीनि तीनि आज्ञा को एक एक उत्तर होय सो शासनोत्तर ६३ ॥

पटपद ॥ चौकचारुकरिकूपढारुघरियारबांधिघर । मुक्तिमोलकरिखड्गखोलिसिंचिहिनिचोलवर ॥ हयकुदावदैसुरकुदावगुनगावरंकको । जानुभावाशिवधामधावधनल्यावलंकको ॥ इककहतमधूकरशाहकहरह्योसकलदीवानदवि । तवउत्तरकेशवदासदियघरीनपान्योजानकवि ६४ ॥

उत्तर वरी न पान्यो जान कवि चारु सुंदर विवाहादि के लिये चौक क्यों नहीं पूरयो उत्तर घरीने अवहीं शुभघरी नहीं है कूपमों पानी ढारो रहँट चलावतहैं तामें माटीकी घरीला-गी रहतिहै सो नहीं है औ घरमें घरियार बांधौ राखो घरी कटोरी जो पानी में बूडेहै सो नहीं यह तीनि शासनको ज-वाव एकही ये घरी नहीं फेरि मोतीको मोलकरो उत्तर पान्यो नहीं मोतीमें पानी चमक नहींहै खड्ग तरवारको खोलो म्यानते निकारो पान्यो पानिप नहीं है क्याखोलें किंवा पाननाम जोस्को भी है नें शत्रुपै खड्ग काढ़ों मोमें पानिप जोर नहीं है फेरि नर श्रेष्ठ संबोधन किंवा नर श्रेष्ठ जोहै निचोलत्र शत्र

ताको सीधो पानीन्यो पानी नहीं है तीनिभये फेरि यह जोहै घोड़ा ताको कुदावो जानु जांघ नहींहै मेरे नहीं किंवा घोड़ा को पांव लंगराहै फेरि कुकहेभूमिमें आपनो दावँ देखो तैसो सुरदेहु तैसो वोलौ यह अर्थ किंवा सुर कुयाको अर्थ सुर कंठ को स्वरकु को अर्थको स्वरको दावँ दगादेहु शत्रुको वाकेहितकी तरह रातिमें वोलै शत्रु जव नजदीक आवै तव दावँ दगाकरौ दावँ दगाको भी नामहै फलाना दावँ करिगयो जैसे मारीचने श्रीलक्ष्मणजीसों स्वरको दगाकियो श्रीरामजी की तरह वोल्यो उत्तर जाननहीं में प्रवीण नहीं मोमें इतनी प्रवीणता नहीं गुणगाव रंकको याको अर्थ हेम। रंक कृपण मल्लयो। रंक नाम कृपणको औ मल्लको रंक जो मल्ल पहलवान ताको जो गुण क्रियामोसों कोई कुश्तीलरै ताको पछारिडारौं ऐसे गुणको गावो कहो जान नहीं जाननाम जोरको जोर नाम जीवको भी है हमारे वोझ उठाइवेको जीव नहीं है जान नहीं जोर नहीं यह अर्थ तीनि भये फेरि भावतैंतीस संचारी आठ सात्विक ताको तू जान उत्तर में कवि नहीं भाव जानिवेको कवीश्वरको काम है शिवके धाम घरको धाव सुधिकरौ मंदिर वनावैहै तव मंदिरको संस्कारकरैहै तव प्रतिमाथापैहै कवि नहीं हेममें कवि नाम विचक्षणकोहै जो सव वातमें प्रवीण सो विचक्षण मैं मंदिरके संस्कारकरिवेमें कवि नहीं विचक्षण नहीं तू लंकाको धन ल्याव कवि नहीं कवि शुक्रको नाम है सो असुर के गुरु हैं उन्हें असुर धनदेत हैं एक काहूने मधुकरशाहसों प्रश्नकियो तव सकल जो दीवान सभा सो दविरह्यो किंवा सकल संपूर्ण सभा जानिये ६४ ॥

(प्रश्नोत्तर) दो० ॥ जोईआखरप्रश्नकेतेईउत्तरजान ॥ इहिविधिप्रश्नोत्तरसदाकहैसुवुद्धिविधान ६५ ॥

वही प्रश्नवादीसों उत्तर ६५ ॥

दो० ॥ कोदंडग्राहीसुभटकोकोकुमाररतिवन्त ॥ को कहियेशशितेदुखीकोमलमनकोसंत ६६ ॥

को कौन सुभट दण्डग्राही है जो लोगनिसों दंडलेतहै जो सुभटको दंड धनुषको राखतहै को कुमार रतिवन्त कौन कुमार सुन्दर पुरुष रतिवन्त है स्त्री विषयक प्रीतियुक्त है कोक शास्त्र और विकास इनविषयक जाको रतिहै प्रीतिहै को कौन को शशिते दुखी कहिये है हे मित्र कोकहि चकवाको शशिते दुखी कहिये है हे सन्त कोमल मनको कौन है उत्तर कोमल मनको दयालुमनको सन्त साधुजन हैं ६६ ॥

दो०॥ कालिकाहिपूजेअलीकोकिलकंठहिनीक॥को कहियेकामीसदाकालीकाहैलीक ६७ ॥

हे अली कालि तू काहि कौनकोपूजै कालिका जो भवानी है ताहिको कौन किल निश्चय केनहीं करिकै नीक अच्छा है उत्तर,कंठकरिकै कोकिल नीक अच्छा है रूपकरिकै नीकनहीं है सदाकामीको कौनको कहिये हे मित्र कोक चकवाको कामी कहिये सदा जोड़ा रहत है काली श्यामलीक निशानी की है कालीलीक कलंकहै ६७ ॥

(गतागतयथा) दो० ॥ सूधोउलटोबांचियेऔरहि औरहिअर्थ॥एकसवैयामेंसुकविप्रगटतहोयसमर्थ६८॥

एकही अर्थ निकरै ६८ ॥

दो० ॥ सूधोउलटोबांचियेएकाहिअर्थप्रमान ॥ कहत गतागतताहिकविकेशवदाससुजान ६९ ॥

सूधोबांचे और अर्थ उलटो बांचे और अर्थ ६९ ॥

(यथा) सवैया ॥ मासममोहसजैवनवीननवीनवजै सहमोमसमा । माररतानिवनावतिसारिरिसातिवना

वनितालरमा ॥ मानवहीराहिमोरदमोददमोदरमोहिर हीवनमा । मालवनीवलिकेशवदाससदावशकेलिवनी बलमा ७० ॥

नायकके पक्षकी सखीको वचन नायकासों तू मा लक्ष्मी सम शोभतिहै फेरि तूसजैहै सौतिनसों जीति उत्कर्षण पायो है ताहि सहित हैं वनमें बीना नवीनरीतिसों बजै बजायके ऐसीतरह तेरीसौति कोई नहीं बजायसके जैसो तेरे हाथसों बजै है यह उत्कर्ष किंवा हे वनवनी दुलही नवीनरीति की वीना बजायके तू आपने पियको सजैकरै है उत्कर्ष सहित करत है नायका कहतहै हमारीसी नायका औरके नहीं यह उत्कर्ष सहसोमसमा याको अर्थ सहसा जो राबरीसों लोग तोहिं उमा पार्वतीकी समा बरोवरिकी कहत हैं तू अधिक है यहअर्थ पार्वतीको वीना बजाइबो प्रसिद्ध नहीं तूबीना बजा-वैहै याते किंवा उमाको उमछन्दके लिये जैसे बालाको बाल सहको अर्थ विद्यमानभी है सहकहिये विद्यमान सोम चंद्रमा है असूनहीं भयो तूसमी है एकाक्षरकोशमेंमानाम बुद्धिको भीहै । मदिरामेद्ययोसेनावेलयोरापिदृश्यते । माशब्द मदिरा विषे बुद्धि विषे जानिये चांदनी को समयो है तू बुद्धिमान है समुझति है तोहिंबिना तेरोनायक व्याकुल है तू चलिमिलि जायकै यहध्वनि मार लतानि बनावत याको अर्थ फारसी में मारनाम सांपकोहै ताकी लता पान नागवल्ली कहतहैं ताको तू बनावतिहै बैठी वीरी लगावतिहै किंवा पानको तू बनावति है शोभादेति है जबतू पानखातिहै तबतेरी सुन्दरतासों पान शोभापावत है विहारी मनोगलूचंद लालको लाललाल द्युति कालीक किंवा मारलयाको अर्थ ऐसीतू तानको बनावति है तेरीतान जोहै सो मार जो काम ताकोलको अर्थ ग्रहणकरति है पकारिलेति है सुनिकै वामभी चालिनहीं सकतिहै पशहोत

है किंवा नारकाम सो जाकोरहै सो मारला स्त्री भयाहू स्व मारलक हरिकहतहैं जैसे बालाको बालकहतहैं वामाको वाम कहतहैं हे मारल हे कामिनि तू तानको बनावतिहै दोऊअर्थ व्याकरण रीतिसों जानिये इहां अप्रयुक्तनिहतार्थ दोष नहीं जानिये किंवा मारलैकी ठौरमें मारल है समुझवारको मारि लेनिहैं वश करलेतिहै लक्षणासों जानिये सारिरिसातबनावनि याकोअर्थ रीसखी तू लातजेहैं सारि सारिका बीनाकी घोड़ी बीनामें लागतिहै सो सारिका कहावतिहै कोई गुटिका कहत हैं ताकी तू बनावनिहारि है तू अच्छा बनावति है तालरमा याकोअर्थ बनावनि पदको अन्वय दूनोंठौर बनावना कहिये बनावनो रचना सारिकी बनावन औ रमातालकी बनावनि नाहिं आछी आवतिहै रमातालमें तू आछी नाचत है आछी गावतिहै अठारह तालकी ताल हैं बहुत कठिन है श्रीताल लक्ष्मी ताल वाको कहत हैं किंवा हे सखी तू मारि लतानि को बनावति है रिसानवनावनतालरमा याको अर्थ जयतासों कोई रमातालकी बनावनि रचना करिबे को कहत है तबतू रिसातिहै कोपकरतिहै हमारे आगे ताल क्याकठिनहै औरनि को कठिनहै हमैं कठिननहीं है किंवा कठिनहै तासों रिसाति है नायकके पक्षकी सखी कहतिहै मोरकहिये हमारो जो दमो- दर श्रीकृष्ण सो कैसोहै मानवहीरहै मानव मनुष्य तिनविषे हीरहै हीराहै रत्नहै किंवा हीरासारीषो दुर्लभहै दमोद याको अर्थ ताहि मानव हीरही मानव हीराको तू मोददयाको अर्थ मोद आनन्दकोदेइसो मोददकहावै श्रीकृष्णको तूचलिकै मो- ददै आनन्ददायकहा किंवा देको अर्थहै चिनके लिये एकार नहीं पढ्यो औ छन्दकेलिये भी नहींपढ़तहै विहारी उनदोही अन्वियांककै केकै ऐसो चाहिये नाहि दमोदरको तूचलि सं- मोददै फेरि दमोदर श्रीकृष्णको तू मोहिरही है बनमा बन नहीं किंवा हेमनें बननाम घरकोभीहै तूकैसी है बनकहियेघर

ताकी मा लक्ष्मी सी है किंबा तू वन की मा लक्ष्मी शोभा सी है केशवदास कवि हे वलि तेरे माल वनी है शोभै है तेरो वल्लभ नायक तेरे बश है तासों तेरी केलि क्रीड़ा सदा वनी है अच्छी लागति है किंबा हे बलि केशव की वनाई जो माला है सो तेरे गर में अवहीं वनी है कुम्हिलानी नहीं है औ वल्लभ तेरो दास सरीखो बश है तासों तेरी केलि सदा वनी है ७० ॥

अनिलोमयथासवैया॥ सैननि माधव ज्यों सर के सब रेख सुदेश सुवेश सबै। नैनव कीत चिजी तरुणी रुचि चीर सबै निगि काल फबै॥ तैंन सुनी जस भीर भरी धरि धीर वरी न सुकौन वहै। मैन मनी गुरु चाल चलै शुभ सो बन में सरसी वलसै ७१

नायका रूठि आई है ताको नायक के पक्ष की सखी नायक सों मिलायो चाहत है हे सबै हे सखि सबिवन में सखी को है तोहिं बिना माधव जो है सो और नायकन के सैनन इशारन को सरसो जानत हैं और नायका उनको इशारा करति है सो इशारा माधव को ज्यों जैसे शर वाण लागै तैसे लागत है अच्छो नहीं लागत है यह अर्थ हे स में रेख नाम थोरे को भी है औ कपट को भी है रेख कहिये थोरी सुदेश सुंदरि है तू बहुत सुंदरि है जो भी सुवेश है अच्छा बेष बनाये है अच्छे २ भूषण बस्त्र पहिरि आई है वह नायक तोहीं सो आसक्त है किम्बा हे सबै हे सखी और नायका माधव को सैन करि इशारा करि सैन निबद्ध बचन है तासों कटाक्ष आदि जानिये ज्यों जात रह सरहोय जीत्यो जाय आपनो बश होय ऐसो कियो चाहति है यहि अर्थ सों आक्षेप कीजिये कैसी है आगे वही अर्थ औ तरुणी ने बिरह सों काम सों किम्बा जीव में तचि के तप्त होय के चाप बस्त्र समान माधव की रुचि कांति नैननि को की को अर्थ करी है बकार वरण पूरणार्थ अव की ठौर है जैसे बस्त्र अंग सों ताप्यो

रहत है तैसे माधव की रुचि नैननि सों लागी रहति है यह नायका सबकाल कहिये श्याम श्री छया तिनको नीम का फल है नीम को फल जैसे अच्छी नहीं लागत है तैसे वह अच्छी नहीं लागति है श्याम कहि काल कहिये मेचक कहिये श्यामल कहिये छया कहिये सखी नायका सों कहति है तैं सुनी नहीं है नायक को देखिबे को जसको अर्थ जैसी धीर भरी थी नायकनी की धीरज को धरि के रीति जो है कुल वधू कुल की रीति छांड़ि देति है ऐसो मनोहर है व अवपाद पूरणार्थ फेरि कैसो है मैन काम ताको मणि है प्रकाशक है प्रकाश करनो मणि को धर्म लिये याहि देखे काम को प्रकाश होत है फेरि कैसो है गुरु बड़ो लोग ताकी जो शुभ अच्छी चाल रीति तामें चले है सो नायक वचन में सर कहिये सरोवर ताकी जहां सीच सीमा तट तहां लसे है शोभै है तू उहां चलि एकान्त है मिलिजाय के यह निर्जन देश सो श्वानि ॥७२॥

सवैया ॥ शीलबसी रस सैन बशोभ सुले चल चारु गुणी मन मैं। है वन को सु,लि,री,वर,धीर,धरी,भर,भी सजनी सुन तैं ॥ लै,फल,कामिनि,वैस रची,चिरु,नीरु तजी चित की-यन नै। बैस सुबेश सदै सु स्वरै बस कै रस ज्यों ववसान नसै ७३

नायका सों सखी को उपदेश बचन पौल पर्वतओं गोबई न तहां तू बसी है राति ऐसे ही है सैन में बड़े सुख में चमत्कारी जो सुख सो रसकावत है नव शोभ सुले याको अर्थ नवशो जो है नायक नई अवा नी ताकी भई है शोभा जाको ताको अच्छी तरह सो लै करिके अब तू घर को चलि चलो काकु स्वर सों कहति है या बात कोय आपने मन में चारु अच्छी गुणी है विचारी है सो अच्छी नहीं है तू परकीया है याते किंवा सैन करिबे गई थी तहां तू बसी राति रहि गई दूसरी तुक तिरिया को अर्थ ति को अर्थ लौ री सम्बोधन

रीति है सखी है नायका इहां सों बन जो घर सो कोश है हेम में व-
न नाम घर को भी है हे सजनी तू या बात को तैं सुन सुनो भी क-
हिये भय ताको जो भर कहिये भार सो तो पै पस्यो है बड़त डर
पस्यो है याते वर अच्छो अचल जो धीर धैर्यता को तू धरि धा-
रणा करो डरो मति किंवा हे सजनी तैं मेरी बात सुन सुनो इहां
सो बन घर कोश भर कहिये हे असावधानी राति तू पहार में
वस्तिही यह नहीं जान्यो मैं परकीया हौं अभिसार करि आई
हौं मोहिं घर जानो है परकीया अभिसारका को लक्षण है
कंप बुद्धि बलानिपुनता असावधानी सों जो उपजी है भी क-
हिये भय वर बड़ो जो धीर धीर्यता ताकों धरिके तिरि पार जाइ
भय को लांघो भय को छोड़ो यह अर्थ जैसे कहत हैं विपत्ति-
को तिरो तीसरी तुक हे कामिनि तू वैस कहिये वयस युवा
तासों तू रची है अनुरक्त भई है चिर बहुत काल सों ताका फ-
ल जो है संभोग सुख ताको तू ले ऐसी ठौर में फल लेइ नीरुत-
जी याको अर्थ जहां कोई जीव को रुत शब्द नीको अर्थ नहीं मान्य
एकांत ठौर में विहार करी तू परकीया है जो जीव की होय जी-
व की प्यारी मन की होय मन में तू होय ऐसी सखी को तू वन
मैं नै को अर्थ पहुँचाव संग में ले जाइ जीव की ऐसी प्यारी को
कहिये है जी जैरी जीव की नाना करै चूनो चौथी तुक तू बैस जु
आनि है पूरव में जुआनि को वैस कहति हैं फेरि तू सुबेश है-
वेष भूषण औ सुन्दर बस्त्र ताहि सहत हैं फेरि सुदेश तेरो औ
नायक को समान देश है एक देश है एक गांव में रहति है कब-
ही वियोग नहीं होय फेरि सय कहिये सय करा मानद नआदर
सो अब जो तेरो पति सो खरे अतिरस के बश में ज्यों या तरह होय
सो करो यह अर्थ ७२॥

अथ कपाट बद्ध दोहा॥ इन्द्रजीत संगीत लै किये रास रस

लीन। सुद्रुगीत संगीत लै भये कामवश दीन ७३॥

अर्थ स्पष्ट है यह दोहा कपाटबद्ध गोमूत्रिका अश्वगति चर-
णगुप्त इतने चक्र में चलत है ॥७३॥

कपाटबद्ध

रं	द्रु		द्रु	सु
जी	त		त	गी
सं	गी		गी	सं
त	लै		लै	त
कि	ये		ये	भ
रा	म		म	का
र	स		श	ब
ली	न		न	दी

गोमूत्रिका चक्र

रं	द्रु	जी	त	सं	गी	त	लै	कि	ये	रा	म	र	स	ली	न
सु	द्रु	गी	त	सं	गी	त	लै	भ	ये	का	म	ब	श	दी	न

अश्वगति चक्र

रं	द्रु	जी	त	सं	गी	त	लै
कि	ये	रा	म	र	स	ली	न
सु	द्रु	गी	त	सं	गी	त	लै
भ	ये	का	म	ब	श	दी	न

चरणगुप्त

रं	जी	सं	त	कि	रा	र	ली
द्रु	त	गी	लै	ये	म	स	न
सु	गी	सं	त	भ	का	ब	दी

राकाराज-नराकारा-माससास-ससासमा॥
राधामीत-तमीधारा-सालसीसु-सुसीलसा ७४

श्रीकृष्ण को वचन विरह में सखी जो राधा मीत है ताको रा-
का जो पूर्णमासी को जो राजा चन्द्र है सो नराकार स्वरूप
सो लागत है मासमास में महीना महीना में औ ससानास च-
रय को है चरयचाय में औ तमी जो राति है धारा राका तरवार-
आदि की धार ताको जो शाल शालिवो सो सुको अर्थ अच्छी
तरह होति है औ राधिका जी कैसी हैं सा को अर्थ जो राधा सुशी-
ल सुन्दर जाको चरित्र है चारि अक्षर फेरि के पढ़े तुक पूरी होति
है राका राज फेरि पढ़ें नराकार भये ऐसो जानिये ७४ ॥

रा	का	रा	ज
मा	स	मा	स
रा	धा	मी	त
सा	ल	सी	सु

दोहा त्रिपदी॥ रामदेव नरदेव गति परशु धरन मद धारि
वामदेव गुरुदेव गति परकु धरन हद धारि॥ ७५॥

यह त्रिपदी है तीनि हू पंक्ति के चरण में एक एक अक्षर छोड़ि
के लिखे आदि पंक्ति के अक्षरनि सों मिलाय के पढ़े इसी प्रकार
अंत की पंक्ति के अक्षर को चोथी पंक्ति सों मिलाय के पढ़े रामदेव
श्रीरामचन्द्र जी कैसे हैं हैं तो परब्रह्म पै नरदेव राजा की गति तरह
लिये हैं फेरि कैसे हैं वे परशु धरन परशुराम जी जिनके आगे मद गर्व
तिनके धरन वाले नहीं भये परशुधर कैसे हैं वामदेव जो महादेव
सो जाके अस्त्र विद्या के गुरु हैं फेरि परशुराम जी कैसे हैं देवतानि

त्रिये गति है तिनकी देवतनि में नात हैं फेरि कैसे हैं भूरत
धरन राजा को कहिये पर शत्रु जो पृथ्वी ताके धरनवाले राजा
सब तिनकी हद मर्यादा ताके धरावनवाले हैं किंवा श्रीराम-
जी कैसे हैं नर कुधर हरन हद धारि ऐसे जानिये ७५ ॥

द्विपदी

रा	दे	न	दे	ग	प	श	र	म	धा
म	व	र	व	ति	र	ध	न	द	रि
ना	दे	गु	दे	ग	प	कु	र	ह	धा

त्रिपदी

राम	वन	देव	तिय	शुध	नम	धा
दे	र	ग	र	र	द	रि
नाम	पशु	देव	तिय	कुध	नह	धा

त्रिपदी

राम	नर	गति	शुध	मद
देव	देव	धर	रन	धारि
नाम	गुरु	गति	कुध	हद

चरणगुप्त

५ ४ ३

	रा	ज	त	अं	ग	र	स	वि	र	
	स	अ	ति	स	र	स	स	र	स	
	र	स	भे	व॥	प	ग	प	ग	प्र	
	ति	द्यु	ति	ब	ढ़	ति	अ	ति	ब	२
६	य	न	ष	म	न	म	ति	दे	व॥	
	शु	व	र	रा	व	र	रा	शु	शु	
	य	र	रा	नि	र	चि	त	रु	चि	
	र	रु	चि	ली	न	त	न	म	म	
७	प्र	क	ट	प्र	वी	न	म	ति	न	१

८ ९

चरणगुप्त दोहा॥ राजत अंग रस विरस अति सरस सरस रसभेव। पग पग प्रति द्युति बढ़ति अति बयनष मन-मति देव॥ ७७ ॥

नव रंग राय के अंग रस में प्रीति में विरस में मान में अति राज-त हैं फेरि नवरंग राय कैसी है सरस वैस जे नाचनवाली स्त्री हैं तिन ते सरस है अधिक है औ रस को जो भेव भेद ताको जाने है औ पग पग प्रति जेतनी दार पग धरति हैं नाचत में किंबा चलत में अति द्युति बाढ़त है फेरि नवजाकी बय कमिरि है ता-को मन औ मति देवता में है औ गुरु देवता को पूजन करनो पदमिनी को है पदमिनी यह अर्थ॥ ७७ ॥

चरण गुप्त दोहा॥ सुवरण वरण सुसुवरणनि रचित रुचिर रुचि लीन॥ तन मन प्रकट प्रवीण मति नव रंग राय प्रवीन॥ ७७ ॥

सुवरण वरण सु याको अर्थ सुवर्ण के वरण रंग सों याको वर्ण रंग सु को अर्थ सुन्दर है फेरि सुवरण सों रचित जे भूषण सो जरी के वस्त्र ताकी जो रुचिर सुन्दर जो रुचि कांति ताहि विषे लीन मिल्यो है तन जाको किंवा जाके तन की रुचिर रुचि भूषण वास सों मिली है फेरि जाके मन में नवीन मति नई बुद्धि प्रकटति है ऐसी नव रंग राय प्रवीण है एकासी को बामें नव२ की पंक्ति करि दोऊ दोहा लिखे नव रंग राय प्रवीण चहूं फेर में निकरे हैं यह भी चरणगुप्त को भेद है ॥७७ ॥

इति चरण गुप्त समाप्त

ण	नतप्र	ग	रसवि	र
सु र ति	प्रतिस णभेव ॥ सुनिव	र प ट	ससर मपवा तिगति	सु प्र व
ध	ननघ	न	मतिद्र	व
सु व र	नरणा रणनि रुचिली	वं र न	रणासु चितरु तनमे	सु चि न
प्र	कटप्र	नी	ममति	न

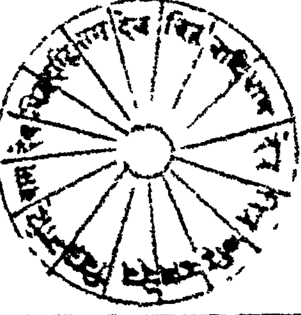
अथ चक्रबंधदोहा॥ मुरलीधर मुख दरसि मुख संमुख मुख श्रीधाम॥ सुनि सारसनैनी सिखैजी सुख पूजे काम ७८॥

सखीवचन नायका सों- तेरे मुख के संमुख साम्हने ठाढ़े जे हैं मुरलीधर तिनके मुख को तू दरशि देखो दर्शन करो कैसो है मुख श्री शोभा ताको मुख कहिये श्रेष्ठ धाम घर है हे सारसनैनी कमलनैनी तू मेरी सिख शिक्षा नीके सुनो तेरे जीव में जो काम इच्छा है सो पूजैगी किंवा जीव में सुख होय कामना पूजै हेम में नाम मुख को उपाय को प्रारम्भ को कहत हैं श्रेष्ठ को कहत हैं चक्रबंध श्री वर्त्तलबंध याको कहत हैं॥ ७८॥

चक्रबंध



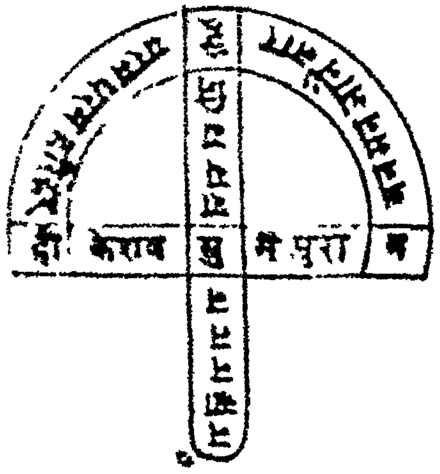
सर्वतोमुखभद्र॥ कामदेव वित्तजाहि। वामदेव मित्तदाहि रामदेव चित्त चाहि। धामदेव नित्त ताहि॥७६॥



कामदेव करिके तू विख्यात है लोग तोहिं बहुत कामी कहत हैं इहां सों तू जाहि जा तो रहो किंवा जाहि कामदेव को तो को वित्त संपत्ति है तो को बहुत काम है ता

कामदेव श्री महादेव महादेव को मित्र करिके प्रसन्न करिके नाहिं वारिद गुरु शिष्य को कहति है धामदेव श्री राम जी को चित में धारो देखो ताहि श्री राम जी को देखे देवतानि के धाम में न निन्द हो अमर हो सोरह दल के चक्र में लिखे नाम सर्वतोभद्र जहाँ सो पढ़ै तहाँ सो तुकान्त मिलै ॥ ७९ ॥

अथ अनुलोम चक्र ॥ दो० ॥ परम धरम हरि हेरहो केशव सुनै पुरान । मन मन जानै नार है जिय यश गुन तन आन ८०



केशवदास कहत हैं कवि कोयान को सुनो कपटी लोग जे हैं तिनके देखाइबे के लिये पुराण में हरि भगवान को परम उत्कृष्ट धर्म्म को हेरत है मन मन में दोय नार नारि स्वकीया परकीया याही को जानत है यही दोय पदार्थ हैं और नहीं निन्दा परकीया औ सामान्या स्वकीया को त्याग करत हैं इनहीं के यश को गुनै है विचारै है आन और नहीं विचारै ८०

अथ कमलबंध को मूल ॥ दो० राम राम रम छेम छम सम दम यम श्रम धाम । दाम काम क्रम प्रेम वम जम जम दम श्रम वाम ॥ ८१ ॥

काहू काहू सों उपदेश करत है राम श्री रामचन्द्र औ राम श्री बलदेव जो तिन सें तुम रमौ तिनके रूप को ध्यान करौ गुण गान करौ याही बात की क्रीड़ा करौ कैसे हैं छेम कल्याण देने में समर्थ हैं सम शांति दम बाहर की इन्द्रियन को रोकिबो यमनियम ये जितने योगिन के क्रम कहे क्रिया हैं सो मन अन में इनानि ताके धाम।

घर हैं दाम जो पैसा तिनकी जो काम कामना ताको जो क्रम सो भयो तो कमल-बन्ध हजार हो तो भये हजार होय तो लाख होय यह जो क्रम है ताहि विषे जो प्रेम ताको तू वम उगि-लि दे मन में मति राखे जस जस कहिये सदा धामा स्त्री विषे सुख मानत हैं भूलि के ताहि

कमलबन्ध

भ्रम को तू दम दमन करो उपशांत करो दूरि करो यह अर्थ किंवा यम नाम संयम को भी है संयम कर विषे को मति भोग वाम क-हिये सुन्दर जो अच्छी तरह जबलों दम प्राण रहे तब तांई तू बनन कर फिर तो फिर तीर्थनि में यह फलितार्थ यह धनुषबन्ध में ल-गता है औ बीच में एक मकार नहीं लिखे कमलबन्ध में तो भी पढ़्यो जाय ॥ ८१ ॥

अथ सर्वतोभद्र मूल ॥ श्लोक ॥ सीतासीननसीतासीता रमा-रमारता ॥ सीमाकलीलीकमासीनरलीननलीरन ८२

कोई काहू सों पूछति है सीता जैसी स्त्री है ता सीताहि सीताजी सरीखी और स्त्री है कोई उत्तर दे-त है नन नहीं हैं नहीं है तारा सुग्रीव की स्त्री सो भी ऐसी नहीं है मार-कहिये माला ताकी भी उपमा सी-को देत हैं सो भी ऐसी सुन्दर नहीं लगै किंवा तार तारागण तिनकी

सर्वतोभद्र ॥

सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
न	र	ली	न	न	ली	र	न
न	र	ली	न	न	ली	र	न
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी

भी उपमा स्त्री की देत हैं ताको जो सार कहिये साला समूह सो भी ऐसी नहीं अनेक राजा इन पै वारिये सो मा लक्ष्मी सो भी ऐसी नहीं और रतारति काम की स्त्री सो भी ऐसी नहीं चित्रभंग के लिये रति को रता पद्यो सोभाकलीया को अर्थ कहिये सुख आनंदता की सीमा मर्यादा जाने लीकों अर्थ लीनो है सीता जी सरीसी सुखो किंबा सुखदायक और नहीं फेरि लीकमा सीनरलीन पाको अर्थ फेरि श्री सीता जी कैसी हैं मा लक्ष्मी की सी जाके वक्षस्थल में रेखा है कोई भृगलता कहत हैं ऐसे जो सारूप धारी। श्री रामचन्द्र जी तिन सो सीन रहति है किंबा आसक्त रहत हैं श्री रामचन्द्र जी कैसे हैं रण थिये नली हैं लंका की लराई में नल संग में रहैं नल नील बानर हैं नल जाको रहै सो नली किंबा नावक के तीर रावति हैं नावक को तीर नल में होय कै चलत है यह सर्वतोभद्र चौंसठि कोठा में सूधो उलटो लिख्यो जात है ॥ ८२ ॥

अथ पर्वत बंध ॥

र
या
म
य
रा गे सु
तो हि त चो र
टी का म म नो ह र
है अ भ या मी त अ मी त
नि को दु ख दे त द या ल क हा
प त हीं न द आ स त्य क हीं क ता औ
ठ मं पा व त रे लो धे ई जि न रे ती क मा
ला

मूल पर्वत बंध चित्र ॥ सवैया ॥ यामय रागे सु तो हित चोर टी काम मनोहर है अभया। मीत अमीतनि को दुख देत दयाल ॥

कहावत हीन दया ॥ सत्य कहौ कहा झूंठ में पावत देखौ वेई जिन रेखी कया। यामें जे तुम मीत सबै सब वे सत-मीमत गेयमया ॥ ८२ ॥

कोई काहू सों उपदेश करत हैं तुम जाहि नायका मय होय के रागी अनुरक्त भये आठों पहर वाही नायका को स्मरण करे ये याते नायकामय कहे किंधा जाहि नायका सों तुम मय करि ये मदिरा ताके वश होय के रागी अनुरक्त भये सो नायका तो तेरे हित की चोरटी है तेरो कियो जो प्रेम ताको जाहिर नाहीं करति है उन सों क्या प्यार किधो ऐसे कहत हैं तुम सों पहरू सी रहति है याते नायका सों आसक्त अच्छी नहीं औ काम जेसो मनोहर है मनको हरै है काहू सों डरै नहीं जो कोई काहू की वस्तु हरै है सो वासों डरत है यह तो अभय है फेरि काम कैसो है मीत जो कामी सदा काम को सेवै है अमीत जो योगी ताको दुःख देत है कामी को बिरह में दुःख देत है काम को अर्थ जो सबको चाहै याते आशु दयालु कहावत हैं औ दया करिके नहीं किंवा जो दयालु कहावत है ताको भी दुःख देत है औ दया करि के हीन है ताको भी दुःख देत है याते अविवेकी है तुम हम सों सत्य कहौ यह जो झूंठ पदार्थ स्त्री तासों काम को व्यवहार में कहा पावत हौ वेई भगवान को देखो जिनने काया शरीर रेखी है उरेहिके बनाई है हे मीत तुम जाहि नायका के संग में सुपद की डोर सकार है चित्र पुरुषार्थ सब याम पहर में तुम जागे हौ वह नायका तुम्हारी सबै सहे समान उमिरि की है औ तमी राति में जागे हौ किंवा तुम तमी क्यों न होऊ ग्लानि क्यों नहीं मन में आनो जिन भगवान की मया कहिये दया गेय है गान करिये को योग्य है तारीफ करिबे को योग्य है प्रह्लाद पै गज पै दया करी है सोई गान है इष्ट है और अनिष्ट है यह अर्थ कोई याको बहुबंध कहत हैं कोई

मल्हार बन्ध कहत हैं ॥ ८३ ॥

मूलसवैया ॥ काम · अरै · तन · लाज · मरै · कच · मानि · लिये · रति · गान · गहै · सुख । बाम · बरै · गृह · लाज · करै · अब · कानि · किये · पति · प्रान · दहै · दुख ॥ धाम · धरै · धन · राज · हरै · तब · बानि · बिये · मति · दान · लहै · सुख । राम · ररै · मन · काज · सरै · सब · हानि · हिये · अति · आन · कहै · मुख ॥ ८४ ॥

कोऊ काहू को उपदेश करत है जो तू आपने मन सों रामको नाम ररै रटै तो तेरो सब काज सरै सिद्ध होय आनको नाम मुखसों कहै तो हृदय में अति हानि नुकसान जानो काम जो है सो तनको अरै हटै लागै कचहू को रति मानि लिये काहू सो रति किये तप लोग जे हैं ते गान को प्रसिद्ध कथन को गहै अंगीकार करै फेरि वाको लाज भूषण वस्त्र ताको करै फेरि लोग जानि जाय अब तब स्त्री के कुलकानि के किये जो आपनी स्त्री कुलकानि को करै में कुलवधू हों और के पास क्यों करि जाउँ तब वाको पति जारै जो आपने प्राण को दुःख सो दहै जरावै फेरि धाम में घर में जो धन जो धरै राखै तब धन को राजा हरै हे मति दान बुद्धि के दाता तुम और न को सुख के दाता हो बानि बिये याको अर्थ बिये कहिये दूसरी बानि सों दूसरी तरह सों राम भजन बिना काहू स्वर सों मानिये न सुख को लहै पावै नहीं पावै यह अर्थ सूरदास भगवंतभजन बिन सुख तीन लोक नहीं काम सों और मो औ तन सो औ लाज सों आदि तुक में तहां सो पढ़ै तहांई तुकांत मिले चक्राकार भी लिखत हैं सब सुख है ८५ ॥

मूलछंद · उत्तबंध · मूल · दोहा ॥ हरिहारि हरि ररि दौरि दुरि फिरि फिरि कारि करि आरि । मरि मरि जरि जरि हारि परि परि

हरि ओरि तरि तारि ॥ ८५ ॥

कोऊ काहू सों उपदेश करत है हरि कहिये चाह हरि जो है विषय की चाह ताको तू ताह ताको तू दूरि करि औ हरि जो भगवान ताको तू रटि रटि फेरि फेरि आरहन करि करि दौर तू भगवान के दूरि जे तीर्थ है तहा को घर के लोग नहीं जाने देहितौ भी हठि करि जाहु मरी मरि बहुत श्रम करि करि किंवा जन्मान्तर ले करि एक जन्म में सिद्ध नहीं होति है जरि जोरि तपस्या में जरि जरि के किंवा मरी जो मृत्यु ताको तू मरि को अर्थ मारि। गुरु लघु लघु गुरु होत है निज इच्छा अनुसार। और मृत्यु की जो जरि है विकर्म ताको तू जारि फेरि हारि में परो तीर्थ करत थाकि जाहु औ अरि जे तेरे हैं काम क्रोध लोभ मोह वाको तू परिहरि छोड़ि दे औ तू तरि और को भी उपदेश करि तारो राम राम रम यह दोहा एक है और पीछे काहू ने बनाय के लिखे हैं केतने श्लोक भी लोगनि ने राखे हैं ॥ ८५ ॥

रा	म	क	हो	न	र	ज्ञा	न	हि	ये	मृ	त	ला	ज	स	बै	ध	रि	मौ	न	ज	ना	व	त
ना	म	ग	हो	उ	र	मा	न	कि	ये	कृ	त	का	ज	त	बै	क	रि	तौ	न	ब	ना	व	त
का	म	द	हो	ह	र	आ	न	हि	ये	ह	त	रा	ज	ज	बै	भ	रि	भौ	न	अ	ना	व	त
जा	म	च	हो	व	र	पा	न	पि	ये	ध	त	आ	ज	अ	बै	ह	रि	क्यौं	न	म	ना	व	त

अथ संत्री गति चित्र -मूल सवैया- राम कहो नर जान हिये मृत लाज सबै धरि मौन जनावत। नाम गहो उर मान किये कृत काज तबै करि तौन बनावत॥ काम दहो हर आन हिये हत राज जबै भरि भौन अनावत। जाम चहो वर पान पिये धृत आज अबै हरि क्यों न मनावत॥ ८६ ॥

कोई काहू को उपदेश करत है हे नर राम कहो आपना जीव में मृत्यु कहिये मृत्यु जानि के एक दिन मरेंगे तब कौन के लोक जायेंगे याते किंवा अकार को लोप चित्र के लिये मृत को अर्थ मृत

मानिये जैसे भ्रम की ठौर कार कहिये है राम को नाम अमृत है यह अर्थ सब जो विषय है तासों तू लाज धरि लाज राखे आपु को मौन जनावत लोग आने यह मौनी है यह विषय सो निवृत्त है यह फलितार्थ जो तुम कृत कहिये करनी या पाप को किये हो ताको उर में मन में मानि के मोहि भगवान् बिना शरण और नहीं पावे भगवत के नाम को गहो तब पीछे और काज को करो श्री भगवान् को तो न कहिये सावन स्तुति ताको बनावत के करत के श्री हर भ्रम महादेव तिनको वृत बात को कामदेव विष ने बाख्यो है ताको हृदय में आनि के काम को दहो बरावो रान को भरि भरन पोषन करो जबे जब ताई भी कहिये यमराज सों डर नहीं मन में बनावत हो ल्यावत हो जाम जो पहर ताको वहो बितावो पूरो करो किंवा भूख लागे तो बरसो बल सो पानी को पिये पानी पीके प्राण को धृत धारण करो आज अब या समय में हरि को क्यों नहीं मनावत हो राजी करत हो कितने चित्र और लोगनि ने बनाय के धरे हैं आमारिणक पोथिन में नहीं हैं इन्कजीत संगीत लै या दोहा की तरह जानो ९८

अथ डमरू बद्ध चौकिबन्ध यत॥ नर सर बर श्री सदा तन मन सरस सुर बसि करन। नर कसि बिरसु सकल सुरब दुरब हीन जीवन मरन॥ नर मन जीवन हीन रदय सदय मति मति हरन। नरहत मति मय जगत केशवदास श्री वरसरन॥

इति श्री केशवदासकृत कविप्रिया संपूर्णः कोई काहू सों उपदेश करत हैं हम मैं नर नाम मनुष्य को श्री भगवान को भी अर्जुन को नर जो भगवान सो कैसो है सरस संपूर्ण जो श्री शोभा ताके सदा तन में रहति है मनसा को सरस उत्तम है ऐसी शोभा है श्री सुर देवता को बश करन वालो है तिन सो आसक्त हो और विषयनि को त्यागो करो यह अर्थ किंवा सुर कहिये कण्ठ को

स्वरसो जाको वश करनवारो है भगवान तिन और विलास आदि सुख है ताको तजरक को सिविर डेरा मान्यो सुर्ग को वास है सुख में गयो औ नरक सों मिल्यो सुख सम्पत्तिक दुःख करिके हीन भासत है ये जीवनि को मनवामें जानों रा- ज्य के लोभ में मार्यो जात है औ आगे यमदण्ड देत है हे नर- निर्दयमन हे जीव नहीं जीवतो शुद्ध परमात्मा है सबकार यात दूसरा अर्थ मन केसो है मति जो बुद्धि ताको जो मत इच्छा ताको हर- नवालो है बुद्धि तो भगवान में लागै मन वह काय के विषय में डारि देत है मन को वश करो यह अर्थ है नर जगत संसार हत मतिमय है पाप की मारी बुद्धिमय है केशवदास कहत है श्री भगवान को शरण करो ८७ ॥ डमरूबद्ध चित्रम् ।

य	जगत केशव	दा
द स य द र न	मतिमतहरन / रहरबरश्रीस / रकेशिबरहु / नख श्री नखर	त न म म स र
ही	ख दुख सु ल क	के

इति चित्रकाव्यअथ कविकी स्थिति ॥ दोहा ॥ गंगराज सुंद बिहार में है सारन सिरकार। सालग्रामी सुरसरित सरयु गां- भअपार १ सालग्रामी सरयु जहँ मिली गंगसों जाय। अन्त- राल में देश सो हरिकवि को सुखदाय २ पर्सागमा गोष्ठ तहं गांव

चैनपुर नाम। गंगा सों उत्तर तरफ तहँ हरि कवि को धाम ३॥ सरयू पारी द्विज सरस बासुदेव श्रीमान। ताको सुत श्रीराम धन ताको सुत हरि जान ४ नवापार में ग्राम है बढ़या अभिजनताम। विश्वसेन कुलभूप नरकरत राज रविभास ५ मारवाड़ में कथागार तहँ नित हु कविनिवास। भूप बहादुर राम है सिरदसिंह युवराज ६ राधा तुलसी हरि चरण हरि कवि चित लगाय। तहँ कविप्रिया भरनयह टीका करी बनाय ७ सत्रह सौ व्यासादि सहा कविका जन्म विचार। कठिन में यह शुद्धा कियो लेहैं सुकवि निहारि ८ पानदान ललिता लिये वृंदा लिये सुवास। राजत यमुना तीर में मोहन राधा पास ९ तुमसे बनको पाइये राधा श्रीघनश्याम। हरै अमंगल संत को मधुमंगल तू वनाम १० वाणी जाके मुख बसै लक्ष्मी उर के माहिं। गंगा जाके चरण की सुता सु भूलो नाहिं ११ वृंदावन को चंद जो नंदतने अभिराम। खेलत मंजुल कुंज में बसौ सुहिय घनश्याम १२ हमारे कियो मोहन लीला ग्रन्थ को कवित्त॥ जाके तीरबासी मत आन तन कासी चित्त लावति उदासी विधि हू की राजधानी में। रवि की कुमारी ऐसी मोहन की प्यारी सब सरिता ते भारी यश जाको मुनिबानी में जाकी धार होत तरवार कर्मबंधन को लागत न वार भव पार जात जानी में। छूवै नेक तीर पावै पुण्य को शरीर पाप रहै एक मासा न बतासा जैसे पानी में २३ संवत अठारह से बिते पै तिस अधिके लेखि शाका सत्रह सौ जवै कियो ग्रंथ हरि देखि २४ माघमास तिथि पंचमी शुक्ला कवि को वार। हरि कवित्त सों प्रीति हो राधानंदकुमार २५ पुरोहित श्रीनंद के मुनि सांडिल्य महान। हैं तिन के हम गोत में मोहन सो यजमान २६॥ इति श्रीहरिचरणदासकृतायां कविप्रिया भरणाख्यायां कविप्रिया टीकायां चित्रकाव्यव्याख्या सम्पूर्णम् शुभम्

इति

पहेलाव्यकी बहुतसीबातें रागोंकेस्वरूप वर्णनकियेगये हैं यतक असंख्यही छपी हैं और पाठशालाओंके प्रचार के यहैं ॥

तुलसीशब्दार्थप्रकाश ॥

लदासजी रचित जिसमें सर्वपुराणों और षट्शास्त्रों के सर्वप्रकारके गूढ़ाशयों का कथन और जातकता-जकचुन्द्रिककी मुख्यबातें गणित, योग, शास्त्र, और विवाह औरत्रादिके मुहूर्त्त और इसी प्रकार के असंख्य विषय हैं जो तकपढ़ने से जानेजाते हैं ॥

प्रेमरत्न ॥

जा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की दादीरत्नकुँवरिरचित केवल श्रीकृष्ण और श्रीरामचन्द्रजीकी भक्तिपक्षका विषय दोहा चौपाई में है ॥

चित्रचन्द्रिका ॥

काशिराजकवि रचित जिसमें पहिले अनेक छन्दोंमेंनाय काभेदवर्णनकरके फिरउनको चित्रवद्धकरके रूपदिखायाहै॥

पीयूषलहरी ॥

पण्डित जगन्नाथजी त्रिशूलीकृत अति मनोहर औरपुण्य दायककाव्य में श्री गंगाजीकी स्तुति है ॥

गंगालहरी॥

पद्माकर कविकृत जिसमें संस्कृतगंगालहरीसे गंगास्तु तेंकोविषय जिनसेमनुष्य भवसागरपारउतरे अपूर्वकविताहै॥

यमुनालहरी ॥

ग्वालकविरचित जिसमें काव्यालंकारयुक्त यमुनाजीकी स्तुति है ॥

रसचन्द्रोदय, व रसदृष्टि ॥

उदयनाथ जी व शिवनाथ रचित इसमें सबप्रकारकीनायिकाओंका भेद और उनके सबप्रकारके अलंकार रचितहैं॥